

विषय-सूची

पाठ्यक्रम (Syllabus)

इकाई-1 : इतिहास (भारत और समकालीन विश्व-2) 1-115

खण्ड-I : घटनाएँ और प्रक्रियाएँ

1. यूरोप में राष्ट्रवाद 1-22
2. भारत में राष्ट्रवाद 23-50

खण्ड-II : जीविका, अर्थव्यवस्था एवं समाज

3. भूमंडलीकृत विश्व का बनना 51-76
4. औद्योगीकरण का युग 77-96

खण्ड-III : रोजाना की जिंदगी, संस्कृति और राजनीति

5. मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया 97-115

इकाई-2 : भूगोल (समकालीन भारत-2) 1-122

1. संसाधन और विकास 1-19
2. वन एवं वन्य जीव संसाधन 20-36

(नोट: अध्याय वन और वन्य जीव संसाधन का केवल आवधिक परीक्षाओं में मूल्यांकन किया जाएगा। बोर्ड परीक्षाओं में मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।)

3. जल संसाधन 37-52

(नोट: अध्याय जल संसाधन का केवल आवधिक परीक्षाओं में मूल्यांकन किया जाएगा। बोर्ड परीक्षाओं में मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।)

4. कृषि 53-69
5. खनिज एवं ऊर्जा संसाधन 70-86
6. विनिर्माण उद्योग 87-103
7. राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाएँ 104-122

इकाई-3 : राजनीति विज्ञान (लोकतांत्रिक राजनीति-2) 1-120

1. सत्ता की साझेदारी 1-16
2. संघवाद 17-32
3. लोकतंत्र की विविधता 33-45

(नोट: अध्याय लोकतंत्र की विविधता का केवल आवधिक परीक्षाओं में मूल्यांकन किया जाएगा। बोर्ड परीक्षाओं में मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।)

4.	जाति, धर्म और लैंगिक मसले	46-62
5.	जन-संघर्ष और आन्दोलन	63-76
	(नोट: अध्याय जन संघर्ष और आन्दोलन का केवल आवधिक परीक्षाओं में मूल्यांकन किया जाएगा। बोर्ड परीक्षाओं में मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।)	
6.	राजनीतिक दल	77-96
7.	लोकतंत्र के परिणाम	97-110
8.	लोकतंत्र की चुनौतियाँ	111-120
	(नोट: अध्याय लोकतंत्र की चुनौतियाँ का केवल आवधिक परीक्षाओं में मूल्यांकन किया जाएगा। बोर्ड परीक्षाओं में मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।)	

इकाई-4 : अर्थशास्त्र (आर्थिक विकास की समझ) 1-79

1.	विकास	1-14
2.	भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक	15-34
3.	मुद्रा और साख	35-48
4.	वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था	49-64
5.	उपभोक्ता अधिकार	65-79
	(नोट: अध्याय उपभोक्ता अधिकार परियोजना कार्य के रूप में किया जाएगा।)	

भारत और समकालीन विश्व-2

(India and the Contemporary World-II)

इस इकाई में सम्मिलित खंड एवं अध्याय

खण्ड-I : घटनाएँ और प्रक्रियाएँ

1. यूरोप में राष्ट्रवाद
2. भारत में राष्ट्रवाद

खण्ड-II : जीविका, अर्थव्यवस्था एवं समाज

3. भूमंडलीकृत विश्व का बनना
4. औद्योगीकरण का युग

खण्ड-III : रोजाना की जिंदगी, संस्कृति और राजनीति

5. मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया

यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 1789 की क्रांति का संबंध किस देश से है?

- (a) फ्रांस से
- (b) जर्मनी से
- (c) स्विट्जरलैंड से
- (d) संयुक्त राज्य अमेरिका से

उत्तर (a) फ्रांस से

2. फ्रेड्रिक सॉरयू निम्नलिखित में से कौन था?

- (a) एक ब्रिटिश कलाकार
- (b) एक अमेरिकी कलाकार
- (c) एक फ्रांसीसी कलाकार
- (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (c) एक फ्रांसीसी कलाकार

3. फ्रांसीसी कलाकार फ्रेड्रिक सॉरयू के चित्रों का विषय था—

- (a) निरंकुश संस्थानों के ध्वस्त अवशेष
- (b) स्वतंत्रता की प्राप्ति
- (c) ज्ञान का उदय
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

4. सॉरयू के चित्रों में किन देशों के लोग दिखाई दे रहे हैं?

- (a) संयुक्त राज्य अमेरिका
- (b) जर्मनी
- (c) फ्रांस
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

5. काल्पनिक दुनिया की विचारधारा को निम्नलिखित में से कहा जाता है—

- (a) राष्ट्रवाद
- (b) साम्राज्यवाद
- (c) लोकतंत्र
- (d) युटोपिया (कल्पनादर्श)

उत्तर (d) युटोपिया (कल्पनादर्श)

6. निम्नलिखित में से किस घटना के साथ राष्ट्रवाद की प्रथम अभिव्यक्ति हुई?

- (a) अमेरिकी क्रांति
- (b) रूसी क्रांति
- (c) फ्रांसीसी क्रांति
- (d) जर्मनी क्रांति

उत्तर (c) फ्रांसीसी क्रांति

7. नेपोलिन बोनापार्ट निम्नलिखित में से किस देश का शासक था?

- (a) इटली का
- (b) जर्मनी का
- (c) ब्रिटेन का
- (d) फ्रांस का

उत्तर (d) फ्रांस का

8. 1790 के दशक में फ्रांसीसी सेनाओं ने निम्नलिखित में से किस देश पर हमला किया था?

- (a) हॉलैंड एवं बेल्जियम पर
- (b) स्विट्जरलैंड पर
- (c) इटली पर
- (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

9. फ्रांसीसी क्रांति कब हुई?

- (a) 1779 में
- (b) 1789 में
- (c) 1799 में
- (d) 1889 में

उत्तर (b) 1789 में

10. 1789 की क्रांति के बाद फ्रांस के संविधान में व्यवस्थाएँ की गईं—

- (a) भू-भाग में रहने वाले सभी नागरिकों के लिए समान कानून
- (b) केंद्रीय प्रशासनिक व्यवस्था का लागू किया जाना
- (c) a और b दोनों
- (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (c) a और b दोनों

11. स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व की भावना को जन्म दिया—

- (a) अमेरिकी क्रांति ने
- (b) रूसी क्रांति ने
- (c) फ्रांसीसी क्रांति ने
- (d) जापानी क्रांति ने

उत्तर (c) फ्रांसीसी क्रांति ने

12. 1804 की फ्रांस की नागरिक संहिता को प्रायः निम्नलिखित में से किस नाम से पुकारा जाता है?

- (a) हिटलर की संहिता (b) वियना संहिता
(c) बिस्मार्क की संहिता (d) नेपोलियन की संहिता

उत्तर (d) नेपोलियन की संहिता

13. नेपोलियन संहिता कब जारी की गई?

- (a) 1803 में (b) 1804 में
(c) 1805 में (d) 1806 में

उत्तर (b) 1804 में

14. नेपोलियन संहिता की विशेषता थी-

- (a) प्रशासनिक विभाजनों का सरलीकरण
(b) सामंती व्यवस्था का खात्मा
(c) एक-समान राष्ट्रीय मुद्रा का प्रचलन
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

15. लाईपज़िग की लड़ाई किस वर्ष हुई?

- (a) 1789 ई. में (b) 1797 ई. में
(c) 1813 ई. में (d) 1815 ई. में

उत्तर (c) 1813 ई. में

16. किस वर्ष को नेपोलियन के पतन के रूप में देखा जाता है?

- (a) 1812 को (b) 1813 को
(c) 1814 को (d) 1815 को

उत्तर (d) 1815 को

17. 18वीं सदी में ऑस्ट्रिया-हंगरी पर शासन करने वाला साम्राज्य निम्नलिखित में से था-

- (a) रूसी साम्राज्य (b) जर्मनी साम्राज्य
(c) हैब्सबर्ग साम्राज्य (d) इटालियन साम्राज्य

उत्तर (c) हैब्सबर्ग साम्राज्य

18. अठारहवीं सदी में यूरोप में कौन-सा राष्ट्र-राज्य विद्यमान था?

- (a) इटली (b) जर्मनी
(c) स्विट्जरलैंड (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (d) इनमें से कोई नहीं

19. यूरोप के कुलीन वर्ग की विशेषता थी-

- (a) वे जमीन के मालिक थे
(b) वे एक साझा जीवन-शैली से बँधे थे
(c) वे फ्रेंच भाषा का प्रयोग करते थे
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

20. उदारवाद यानी Liberalism शब्द मूलतः Liber शब्द से लिया गया है। यह शब्द निम्नलिखित में से किस भाषा का है?

- (a) फ्रेंच (b) लातिन
(c) अंग्रेजी (d) यूनानी

उत्तर (b) लातिन

21. उदारवाद किस प्रकार की सरकार पर बल देता है?

- (a) सहमति से बनी सरकार पर (b) निरंकुशवाद पर
(c) सामंती सरकार पर (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (a) सहमति से बनी सरकार पर

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

22. यूरोपीय महाद्वीप का सबसे शक्तिशाली वर्ग निम्नलिखित में से कौन था?

- (a) मध्यम वर्ग (b) निम्न वर्ग
(c) मजदूर वर्ग (d) कुलीन वर्ग

उत्तर (d) कुलीन वर्ग

23. उदारवादी प्रजातंत्र का पहला राजनीतिक प्रयोग निम्नलिखित में से हुआ था-

- (a) इटली में (b) क्रांतिकारी फ्रांस में
(c) इंग्लैंड में (d) अमेरिका में

उत्तर (b) क्रांतिकारी फ्रांस में

24. जॉलवेराइन शुल्क संघ की स्थापना कब की गई?

- (a) 1830 ई. में (b) 1831 ई. में
(c) 1834 ई. में (d) 1844 ई. में

उत्तर (c) 1834 ई. में

25. 1815 में किस देश ने नेपोलियन को पराजित किया था?

- (a) ब्रिटेन ने (b) रूस ने
(c) प्रशा और ऑस्ट्रिया ने (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

26. नेपोलियन ने कितने राज्यों को मिलाकर जर्मन महासंघ बनाया

था?

- (a) 19 (b) 29
(c) 39 (d) 49

उत्तर (c) 39

27. ज्युसेपे मेत्सिनी और ज्युसेपे गैरीबाल्डी का संबंध किस देश से था?

- (a) इटली से (b) जर्मनी से
(c) फ्रांस से (d) ब्रिटेन से

उत्तर (a) इटली से

28. यंग इटली संगठन का संस्थापक था—

- (a) मेत्सिनी (b) गैरीबाल्डी
(c) बर्न (d) नेपोलियन

उत्तर (a) मेत्सिनी

29. यूरोप में यूनानियों का आजादी के लिए संघर्ष कब प्रारंभ हुआ?

- (a) 1811 ई. में (b) 1819 ई. में
(c) 1820 ई. में (d) 1821 ई. में

उत्तर (c) 1820 ई. में

30. यंग यूरोप का संस्थापक था—

- (a) मेत्सिनी (b) गैरीबाल्डी
(c) बर्न (d) नेपोलियन

उत्तर (c) बर्न

31. कौन-सा दशक यूरोप में भूख, कठिनाइयाँ और विद्रोह लेकर आया?

- (a) 1800 का दशक (b) 1810 का दशक
(c) 1820 का दशक (d) 1830 का दशक

उत्तर (d) 1830 का दशक

32. फ्रैंकफर्ट संसद का गठन कब हुआ?

- (a) 1847 में (b) 1848 में
(c) 1849 में (d) 1850 में

उत्तर (b) 1848 में

33. 19वीं सदी के मध्य में कौन-सा प्रदेश सात राज्यों में बँटा था?

- (a) इटली (b) जर्मनी
(c) फ्रांस (d) स्विट्जरलैंड

उत्तर (a) इटली

34. वियना संधि के पश्चात् निम्नलिखित में से कौन-सा राजवंश फ्रांस में सत्ता में आया?

- (a) मार्सेइ वंश (b) रोमन वंश
(c) बूर्बो वंश (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (c) बूर्बो वंश

35. यूनान को एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में मान्यता कब और कैसे मिली?

- (a) 1815 की वियना संधि द्वारा
(b) 1819 की वर्सेय की संधि द्वारा
(c) 1804 की नागरिक संहिता द्वारा
(d) 1832 की कुस्तुनतुनिया संधि के द्वारा

उत्तर (d) 1832 की कुस्तुनतुनिया संधि के द्वारा

36. लुइजे ऑटो-पीटर्स निम्नलिखित में से कौन थी?

- (a) एक शासिका
(b) एक कलाकार
(c) एक संगीतकार
(d) एक राजनीतिक कार्यकर्ता

उत्तर (d) एक राजनीतिक कार्यकर्ता

37. जब फ्रांस छींकता है तो बाकी यूरोप को सर्दी, जुकाम हो जाता है। ये शब्द निम्नलिखित में से किसने कहे थे?

- (a) बिस्मार्क ने (b) मैटरनिख ने
(c) कावूर ने (d) नेपोलियन ने

उत्तर (b) मैटरनिख ने

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

38. जर्मनी के एकीकरण के लिए निम्नलिखित में से किस सम्मेलन को बुलाया?

- (a) लास्तीन (b) वियना
(c) फ्रैंकफर्ट पार्लियामेंट (d) इयूमा

उत्तर (c) फ्रैंकफर्ट पार्लियामेंट

39. जर्मनी के एकीकरण का प्रयास निम्नलिखित में से किस देश के द्वारा किया गया?

- (a) फ्रांस (b) ऑस्ट्रिया
(c) प्रशा (d) इटली

उत्तर (c) प्रशा

40. जर्मनी के एकीकरण की प्रक्रिया के जनक कौन थे?

- (a) ऑटो वॉन बिस्मार्क (b) जनरल वॉन
(c) विलियम प्रथम (d) विलियम द्वितीय

उत्तर (a) ऑटो वॉन बिस्मार्क

41. जर्मनी के एकीकरण के पश्चात् किसे जर्मनी का सम्राट घोषित किया गया ?

- (a) बिस्मार्क को (b) विलियम प्रथम को
(c) विलियम द्वितीय को (d) विलियम तृतीय को

उत्तर (b) विलियम प्रथम को

42. उन्नीसवीं सदी के मध्य में इटली कितने राज्यों में बँटा हुआ था ?

- (a) 3 (b) 5
(c) 7 (d) 9

उत्तर (c) 7

43. इटली के एकीकरण का मुख्य कर्णधार निम्नलिखित में से कौन है ?

- (a) मैजिनी (b) गैरीबाल्डी
(c) कावूर (d) उपर्युक्त तीनों

उत्तर (d) उपर्युक्त तीनों

44. एकट ऑफ यूनियन (1707) किसके बीच एक समझौता था ?

- (a) इंग्लैंड एवं स्कॉटलैण्ड
(b) इंग्लैंड एवं हंगरी
(c) इंग्लैंड एवं अमेरिका
(d) इंग्लैंड एवं स्कॉटिश हाइलैंड्स

उत्तर (a) इंग्लैंड एवं स्कॉटलैण्ड

45. इंग्लैंड में राष्ट्र-राज्य स्थापित करने का श्रेय निम्नलिखित में से किसे जाता है ?

- (a) जनता को (b) सरकार को
(c) संसद को (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (c) संसद को

46. इंग्लैंड में शानदार क्रांति कब हुई ?

- (a) 1588 ई. में (b) 1688 ई. में
(c) 1788 ई. में (d) 1888 ई. में

उत्तर (b) 1688 ई. में

47. इंग्लैंड में शानदार क्रांति ने निम्नलिखित में से किसकी शक्तियाँ छीनी थीं ?

- (a) लोकतंत्र की (b) राजतंत्र की
(c) धनिकतंत्र की (d) गणतंत्र की

उत्तर (b) राजतंत्र की

48. निम्नलिखित में से किस एकट के द्वारा यूनाइटेड किंगडम ऑफ ग्रेट ब्रिटेन की स्थापना हुई ?

- (a) एकट ऑफ लॉ (b) एकट ऑफ यूनियन
(c) एकट ऑफ रूलज (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (b) एकट ऑफ यूनियन

49. लाल टोपी या टूटी जंजीर निम्नलिखित में से किसका प्रतीक है ?

- (a) गुलामी का (b) दासता का
(c) स्वतंत्रता का (d) भू-दासता का

उत्तर (c) स्वतंत्रता का

50. फ्रांस में स्वतंत्रता का प्रतीक किसे माना गया है ?

- (a) मारीआन को (b) जर्मनिया को
(c) शासक को (d) डाक टिकट को

उत्तर (a) मारीआन को

51. निम्नलिखित में से जर्मन राष्ट्र का रूपक या प्रतीक थी-

- (a) मारीआन (b) जर्मनिया
(c) पेड़ की पत्तियाँ (d) डाक टिकट

उत्तर (b) जर्मनिया

52. जर्मन बलूत को निम्नलिखित में से किसका प्रतीक माना गया ?

- (a) कायरता का (b) वीरता का
(c) अन्याय का (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (b) वीरता का

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

53. जर्मनिया किस वृक्ष के पत्तों का मुकुट पहनती है ?

- (a) बबूल के (b) नीम के
(c) पीपल के (d) बलूत के

उत्तर (d) बलूत के

54. काला सागर और एड्रियाटिक सागर के मध्य क्षेत्र को क्या कहा जाता है ?

- (a) बाल्कन क्षेत्र (b) रुमानी क्षेत्र
(c) ऑटोमन क्षेत्र (d) जर्मन क्षेत्र

उत्तर (a) बाल्कन क्षेत्र

55. इटली के शासक इमेनुएल द्वितीय की पत्नी का क्या नाम था ?

- (a) फिगारा (b) ला टालिया
(c) ला टिकिया (d) लालिया

उत्तर (b) ला टालिया

56. वाटर लू की लड़ाई कब हुई?

- (a) 1811 ई. में (b) 1814 ई. में
(c) 1815 ई. में (d) 1819 ई. में

उत्तर (c) 1815 ई. में

57. इतिहास में किसे लौह और रक्त नीति का जन्मदाता माना जाता है?

- (a) मुसोलिनी को (b) हिटलर को
(c) बिस्मार्क को (d) माओ को

उत्तर (c) बिस्मार्क को

58. गॉड सेव अवर नोबल किंग निम्नलिखित में से कहाँ का राष्ट्रीय गान है?

- (a) जापान का (b) इंग्लैंड का
(c) इटली का (d) चीन का

उत्तर (b) इंग्लैंड का

59. ज्युसेपी मेत्सिनी का जन्म कहाँ हुआ था?

- (a) रोम (b) पीडमाण्ट
(c) सैक्सनी (d) जेनोआ

उत्तर (d) जेनोआ

60. अन्स्टेन रेनन ने किस विश्वविद्यालय में व्याख्यान दिया?

- (a) सॉर्बान (b) पेरिस
(c) वर्साय (d) मिलान

उत्तर (a) सॉर्बान

61. आयरलैंड को बलपूर्वक यूनाइटेड किंगडम में कब शामिल किया गया?

- (a) 1798 ई. में (b) 1801 ई. में
(c) 1707 ई. में (d) 1688 ई. में

उत्तर (b) 1801 ई. में

62. कुस्तुनतुनिया की संधि कब हुई?

- (a) 1833 ई. में (b) 1821 ई. में
(c) 1832 ई. में (d) 1887 ई. में

उत्तर (c) 1832 ई. में

63. जर्मनी के एकीकरण की आधारशिला किसने तैयार की?

- (a) विलियम प्रथम (b) बिस्मार्क
(c) नेपोलियन बोनापार्ट (d) नेपोलियन III

उत्तर (c) नेपोलियन बोनापार्ट

64. फ्रांस की क्रांति का अग्रदूत किसे कहा जाता है?

- (a) नेपोलियन (b) रूसो
(c) दिदरो (d) वॉल्टेयर

उत्तर (b) रूसो

65. सामाजिक उपबंध नामक पुस्तक का लेखक कौन था?

- (a) रूसो (b) मॉन्टेस्क्यू
(c) नेकर (d) दिदरो

उत्तर (a) रूसो

66. विश्व कोश नामक ग्रंथ की रचना किसने की थी?

- (a) रूसो (b) वॉल्टेयर
(c) दिदरो (d) नेकर

उत्तर (c) दिदरो

67. 1789 ई. में फ्रांस की क्रांति के समय किसका शासन था?

- (a) लुई XIV (b) लुई XVI
(c) लुई XV (d) नेपोलियन

उत्तर (b) लुई XVI

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

68. क्रांति के दौरान जन-कल्याण के लिए सबसे अधिक काम किस समय हुआ?

- (a) संविधान सभा (b) आतंक-राज्य
(c) व्यवस्थापिका सभा (d) डायरेक्टरी

उत्तर (b) आतंक-राज्य

69. फ्रांस की क्रांति में मुख्य भूमिका किस वर्ग की थी?

- (a) कृषक वर्ग (b) कुलीन वर्ग
(c) मध्यम वर्ग (d) मजदूर वर्ग

उत्तर (c) मध्यम वर्ग

70. बैंक ऑफ फ्रांस की स्थापना किसने की?

- (a) नेपोलियन बोनापार्ट (b) लुई XVI
(c) लुई XIV (d) जॉर्ज III

उत्तर (a) नेपोलियन बोनापार्ट

71. मानव और नागरिक अधिकारों की घोषणा किस सभा ने की?

- (a) नेशनल कन्वेंशन (b) व्यवस्थापिका सभा
(c) डायरेक्टरी (d) संविधान सभा

उत्तर (d) संविधान सभा

72. ऑस्ट्रिया के साथ प्रशा का युद्ध कब हुआ?

- (a) 1860 ई. (b) 1863 ई.
(c) 1865 ई. (d) 1866 ई.

उत्तर (d) 1866 ई.

73. प्रशा का ऑस्ट्रिया के साथ किस संधि के द्वारा युद्ध विराम हुआ?

- (a) वियना की संधि (b) वर्साय की संधि
(c) पेरिस की संधि (d) लंदन की संधि

उत्तर (a) वियना की संधि

74. फ्रांस और प्रशा का युद्ध कब हुआ?

- (a) 1865 ई. (b) 1870 ई.
(c) 1872 ई. (d) 1880 ई.

उत्तर (b) 1870 ई.

75. प्रथम इस्टेट कौन होते थे?

- (a) कुलीन (b) पादरी
(c) दास (d) कृषक

उत्तर (b) पादरी

76. मांटेस्क्यू ने किस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया?

- (a) राजतंत्र (b) समाजवाद
(c) प्रजातंत्र (d) अधिकार विभाजन

उत्तर (d) अधिकार विभाजन

77. क्रांति के बाद नाप-तौल की कौन-सी प्रणाली लागू की गई?

- (a) मेट्रिक प्रणाली (b) प्राचीन प्रणाली
(c) नेपोलियन कोड (d) कोई भी नहीं

उत्तर (a) मेट्रिक प्रणाली

78. बिस्मार्क जर्मनी का चांसलर कब बना?

- (a) 1848 ई. (b) 1856 ई.
(c) 1860 ई. (d) 1862 ई.

उत्तर (d) 1862 ई.

79. आइडिआज ऑन फिलॉसफी ऑफ हिस्ट्री ऑफ मैनकाइंड नामक पुस्तक की रचना कब और किसने की?

- (a) 1784 ई. में जी.सी. हरडर
(b) 1789 ई. में हीगेल
(c) 1792 ई. में फिक्टे
(d) 1798 ई. में गेटे

उत्तर (a) 1784 ई. में जी.सी. हरडर

80. फ्रेडरिक हीगेल कौन था?

- (a) जर्मन दार्शनिक (b) जर्मन कवि
(c) जर्मन अर्थशास्त्री (d) जर्मन शासक

उत्तर (a) जर्मन दार्शनिक

81. 1848 ई. के फ्रैंकफर्ट सभा में संयुक्त जर्मनी का ताज किसे प्राप्त हुआ?

- (a) फ्रांस के शासक को
(b) ऑस्ट्रिया के शासक को
(c) प्रशा के शासक को
(d) इटली

उत्तर (c) प्रशा के शासक को

82. टैली क्या थी?

- (a) भूमि कर (b) सामंती कर
(c) धार्मिक कर (d) नमक कर

उत्तर (a) भूमि कर

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

83. टाइथ किस प्रकार का कर था?

- (a) व्यापार कर (b) नमक कर
(c) धार्मिक कर (d) उपज कर

उत्तर (d) उपज कर

84. दि स्पीरिट ऑफ लॉ नामक पुस्तक का लेखक कौन था?

- (a) वॉल्टेयर (b) दिदरो
(c) मांटेस्क्यू (d) रूसो

उत्तर (c) मांटेस्क्यू

85. द्वितीय इस्टेट किसे कहते थे?

- (a) पादरी वर्ग को (b) किसान वर्ग को
(c) दास वर्ग को (d) कुलीन वर्ग को

उत्तर (d) कुलीन वर्ग को

86. सामंतवाद का अंत कब हुआ?

- (a) 21 मई, 1789 ई. (b) 4 अगस्त, 1789 ई.
(c) 24 सितंबर, 1789 ई. (d) 18 नवंबर, 1789 ई.

उत्तर (b) 4 अगस्त, 1789 ई.

87. 1861 ई. में संयुक्त इटली का शासक कौन बना?

- (a) विक्टर इमैनुएल (b) बिस्मार्क

(c) विक्टर इमैनुएल II (d) कावूर

उत्तर (c) विक्टर इमैनुएल II

88.इटली का एकीकरण कब पूरा हुआ ?

- (a) 1871 ई. (b) 1873 ई.
(c) 1876 ई. (d) 1889 ई.

उत्तर (a) 1871 ई.

89.इटली को रोम किस युद्ध के बाद मिला ?

- (a) सार्डिनिया-फ्रांस (b) ऑस्ट्रिया-प्रशा
(c) फ्रांस-प्रशा (d) ऑस्ट्रिया-सार्डिनिया

उत्तर (c) फ्रांस-प्रशा

90.गैरीबाल्डी कहाँ का निवासी था ?

- (a) वेनेशिया (b) सार्डिनिया
(c) नेपुल्स (d) प्राग

उत्तर (b) सार्डिनिया

91.नेपुल्स और सिसली को गैरीबाल्डी ने किसे दिया ?

- (a) जे.सी. हरडर (b) विक्टर इमैनुएल
(c) फर्डिनेंड (d) नेपोलियन III

उत्तर (b) विक्टर इमैनुएल

92.कावूर की मृत्यु कब हुई ?

- (a) 1852 ई. (b) 1855 ई.
(c) 1858 ई. (d) 1861 ई.

उत्तर (d) 1861 ई.

93.जर्मनी के एकीकरण के बाद चांसलर कौन बना ?

- (a) बिस्मार्क (b) मेटर्निख
(c) नेपोलियन III (d) फ्रेडरिक जॉर्ज

उत्तर (a) बिस्मार्क

94.जर्मनी का एकीकरण कब पूरा हुआ ?

- (a) 1878 ई. (b) 1879 ई.
(c) 1861 ई. (d) 1871 ई.

उत्तर (d) 1871 ई.

95.यंग इटली सोसाइटी की स्थापना किसने की थी ?

- (a) कावूर (b) बिस्मार्क
(c) मेजिनी (d) गैरीबाल्डी

उत्तर (c) मेजिनी

96.इटली के एकीकरण से पूर्व दक्षिणी इटली पर किसका अधिकार था ?

- (a) पोप (b) सार्डिनिया
(c) फ्रांस (d) ऑस्ट्रिया

उत्तर (a) पोप

97.कावूर सार्डिनिया का प्रधानमंत्री कब बना था ?

- (a) 1855 ई. (b) 1858 ई.
(c) 1862 ई. (d) 1867 ई.

उत्तर (b) 1858 ई.

98.जुरिच की संधि कब हुई ?

- (a) 1851 ई. (b) 1854 ई.
(c) 1856 ई. (d) 1859 ई.

उत्तर (d) 1859 ई.

99.ऑस्ट्रिया और सार्डिनिया का युद्ध कब हुआ ?

- (a) मार्च, 1854 ई. (b) जनवरी, 1856 ई.
(c) अप्रैल, 1859 ई. (d) जून, 1860 ई.

उत्तर (c) अप्रैल, 1859 ई.

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

100.गेस्टीन के समझौते के द्वारा क्या निर्णय लिया गया ?

- (a) शेल्सविग पर प्रशा का और होल्सटीन पर ऑस्ट्रिया का अधिकार हुआ
(b) शेल्सविग पर फ्रांस और होल्सटीन पर ऑस्ट्रिया का अधिकार हुआ
(c) शेल्सविग पर ऑस्ट्रिया और होल्सटीन पर प्रशा का अधिकार हुआ
(d) शेल्सविग और होल्सटीन पर प्रशा का अधिकार हुआ

उत्तर (a) शेल्सविग पर प्रशा का और होल्सटीन पर ऑस्ट्रिया का अधिकार हुआ

101.जर्मनी का एकीकरण किस युद्ध के बाद पूरा हुआ ?

- (a) ऑस्ट्रिया-प्रशा युद्ध द्वारा (b) फ्रांस-प्रशा युद्ध द्वारा
(c) फ्रांस-ऑस्ट्रिया युद्ध द्वारा (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (b) फ्रांस-प्रशा युद्ध द्वारा

102.फ्रांसीसी क्रांति के दौरान कलाकारों ने स्वतंत्रता, न्याय और गणतंत्र जैसे विचारों को व्यक्त करने के लिए नारी रूपक का प्रयोग किया। इस नारी रूपक का नाम क्या है ?

- (a) मारीआन (b) जर्मनिया

(c) यूनियन जैक (d) नोबल किंग

उत्तर (a) मारीआन

103. ज्यूसेपे मेत्सिनी ने एकीकृत इतालवी गणराज्य के लिए एक सुविचारित कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए किस गुप्त संगठन का निर्माण किया था ?

(a) सेलिसिया संघ (b) क्रांतिकारी मोर्चा
(c) यंग इटली (d) राष्ट्रीय मोर्चा

उत्तर (c) यंग इटली

104. जर्मन का राष्ट्र रूपक क्या है ?

(a) मारीआन (b) जर्मनिया
(c) आर्यान (d) कैरियान

उत्तर (b) जर्मनिया

105. इस आंदोलन ने तर्क-वितर्क और विज्ञान के महिमामंडन की आलोचना की और उसकी जगह भावनाओं, अंतर्दृष्टि और रहस्यवादी भावनाओं पर जोर दिया-

(a) रुमानीवादी (b) उदारवाद
(c) राष्ट्रवाद (d) साम्यवाद

उत्तर (a) रुमानीवादी

106. जॉलवेराइन किसका संघ था ?

(a) शुल्क संघ (b) किसानों का संघ
(c) विद्रोहियों का संघ (d) व्यापारियों का संघ

उत्तर (a) शुल्क संघ

107. जॉलवेराइन द्वारा किए गए मुख्य कार्य क्या थे ?

(a) संघ ने शुल्क अवरोधों को समाप्त कर दिया
(b) मुद्राओं की संख्या दो कर दी जो उससे पहले तीस थी
(c) रेलवे के जाल के विस्तार से राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ावा मिला
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

108. नेपोलियन को किन देशों ने मिलकर हराया ?

(a) ब्रिटेन (b) रूस और प्रशा
(c) ऑस्ट्रिया (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

109. वियना संधि का मुख्य उद्देश्य था-

(a) मेटरनिख को आस्ट्रिया की सत्ता सौंपना
(b) नेपोलियन बोनापार्ट को फाँसी देना

(c) उन कई सारे बदलावों को खत्म करना जो नेपोलियाई युद्धों के दौरान हुए थे

(d) फ्रांस के साम्राज्य का विस्तार करना

उत्तर (c) उन कई सारे बदलावों को खत्म करना जो नेपोलियाई युद्धों के दौरान हुए थे

110. कल्पनादर्श का शाब्दिक अर्थ है-

(a) काल्पनिक समाज जो इतना आदर्श है कि उसका साकार होना लगभग असंभव होता है
(b) किसी समाज का स्वर्गलोक की कल्पना
(c) किसी व्यक्ति के द्वारा कल्पना करना
(d) किसी राज्य का कल्पना में भटकना

उत्तर (a) काल्पनिक समाज जो इतना आदर्श है कि उसका साकार होना लगभग असंभव होता है

111. वियना संधि हुई थी-

(a) 1805 ई. में (b) 1810 ई. में
(c) 1815 ई. में (d) 1819 ई. में

उत्तर (c) 1815 ई. में

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. 1707 का संघ अधिनियम और के बीच था।

उत्तर : इंग्लैंड और स्कॉटलैंड

2. दृष्टांत फ्रांस देश का प्रतिनिधित्व करते हैं।

उत्तर : मैरिएन

3. जैकब क्लब थे।

उत्तर : राजनीतिक क्लब

4. 1871 के बाद यूरोप में सबसे गंभीर राष्ट्रवादी तनाव थे।

उत्तर : बाल्कन

5. जब रुढ़िवादी शासन सत्ता में बहाल हो गए थे, तो कई उदारवादी लोग के डर के कारण भूमिगत हो गए थे।

उत्तर : दमन

सही या गलत बताइए

1. जैकोबिन क्लबों ने जर्मन सेना को प्रभावित किया।

उत्तर : गलत

2. ब्रिटेन में, एक राष्ट्र-राज्य का गठन एक लंबी संसदीय प्रक्रिया थी।
उत्तर : सही
3. नेपोलियन संहिता ने सुधारों और समानता को बरकरार रखा।
उत्तर : सही
4. मेजिनी रोमन का एक महान क्रांतिकारी नेता था।
उत्तर : गलत
5. 1848 से प्रशिया ने राष्ट्रीय एकीकरण के आंदोलन का नेतृत्व किया।
उत्तर : सही

अति लघु उत्तरात्मक प्रश्न

1. नेपोलियन कानून कब लागू हुआ?
उत्तर :
1804 में।
2. फ्रेडरिक सारयू कौन था?
उत्तर :
एक फ्राँसीसी चित्रकार।
3. वियना की कांग्रेस का किसने आतिथ्य किया?
उत्तर :
मैटरनिख ने।
4. ब्रिटेन के एकीकरण के कानून पर कब हस्ताक्षर हुए?
उत्तर :
1707 में।
5. 1861 में एकीकृत इटली का राजा किसे घोषित किया गया था?
उत्तर :
1861 में इमेनुएल द्वितीय को एकीकृत इटली का राजा घोषित किया गया था।
कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।
6. फ्रैंकफर्ट पार्लियामेंट कब बुलाई गई?
उत्तर :
1848 में।
7. कौन-सा समझौता महान समझौता कहा गया?
उत्तर :
कॉन्स्टेन्टीनोपल का समझौता।
8. इटली का एकीकरण कब हुआ?
उत्तर :
1859-1871 के बीच।

9. 18वीं शताब्दी के किस सिद्धांत ने यूरोप के साथ-साथ सारे विश्व को प्रभावित किया?
उत्तर :
उदारता, समानता और भाईचारे ने।
10. यातना शिविरों का क्या अर्थ है?
उत्तर :
यातना शिविर एक प्रकार की जेल होती है, जिसमें बिना किसी कानूनी प्रक्रिया के लोगों को कैद में रखा जाता है। यहाँ पर काफी अत्याचार किए जाते हैं।
11. यदि फ्रांस को छींक आती है तो शेष यूरोप को ठंड लग जाती है। यह किसने कहा?
उत्तर :
मैटरनिख ने।
12. आयरलैंड, यू. के. में कब मिलाया गया?
उत्तर :
1803 में।
13. किस घटना के साथ यूरोप में राष्ट्रवाद के स्पष्ट उत्थान की गाथा जुड़ी हुई है?
उत्तर :
1789 की फ्रांस की क्रांति।
14. निरंकुशवाद से आप क्या समझते हैं?
उत्तर :
एक ऐसी सरकार या शासन व्यवस्था जिसकी सत्ता पर किसी प्रकार का कोई अंकुश नहीं होता। शासक द्वारा जनता के अनुकूल नहीं, बल्कि अपने अनुकूल शासन चलाया जाता है। इस तरह की शासन व्यवस्था को निरंकुशवाद कहा जाता है।
15. 1790 के दशक में फ्रांस की सेनाओं ने किस देश पर आक्रमण नहीं किया?
उत्तर :
इंग्लैंड।
16. यूरोप में फ्रांसीसी क्रांति से राजनीतिक और संवैधानिक परिदृश्य में हुआ प्रमुख बदलाव क्या था?
उत्तर : पूरे यूरोप में निरंकुश राजतंत्र के विरुद्ध आवाज उठाई जाने लगी और गणतंत्र सरकारों का महत्व बढ़ने लगा।
17. 1804 की सिविल कोड को साधारणतया किस नाम से जाना जाता है?
उत्तर :
नेपोलियन कोड।
18. जनमत संग्रह क्या है?
उत्तर :

एक प्रत्यक्ष मतदान, जिसके जरिए एक क्षेत्र के सभी लोगों से एक प्रस्ताव को स्वीकार या अस्वीकार करने के लिए पूछा जाता है।

19. फ्रांसीसी क्रांतिकारियों का मुख्य उद्देश्य क्या था ?

उत्तर :

राजतंत्र को समाप्त करके प्रभुसत्ता फ्रांसीसी नागरिकों को सौंपना।

20. राष्ट्र राज्य किसे कहते हैं ?

उत्तर :

राष्ट्रीयता की धारणा पर आधारित राज्य को राष्ट्र राज्य कहते हैं।

21. यूरोप में सामाजिक और राजनीतिक विचार से समाज का कौन-सा वर्ग सर्वाधिक महत्वपूर्ण था ?

उत्तर :

कुलीन और अमीर वर्ग।

22. पूरे यूरोप में 1830-1848 में शिक्षित अभिजात वर्ग के मध्य राष्ट्रीय भावनाओं का संचार करने वाली घटना का नाम लिखिए।

उत्तर :

यूनान के स्वतंत्रता संग्राम ने पूरे यूरोप के शिक्षित अभिजात वर्ग में राष्ट्रीय भावनाओं का संचार किया।

23. ओटोमन साम्राज्य को किस नाम से जाना जाता है ?

उत्तर :

तुर्की का साम्राज्य।

24. फ्रांसीसी क्रांति की ऐसी घटनाओं का वर्णन कीजिए जिन्होंने यूरोप के अन्य भागों में रहने वाले लोगों को प्रभावित किया।

उत्तर :

1. 1789 की फ्रांसीसी क्रांति ने लोगों को स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी।
2. स्वतंत्रता, समानता तथा बंधुत्व का नारा जनसामान्य के लिए युद्ध का शंखनाद हो गया।
3. यूरोप में क्रांतिकारी युद्धों की शुरुआत के साथ ही फ्रांसीसी सेना तथा उसके सैनिक, राष्ट्रवाद के विचार के वाहक बन गए।

25. औद्योगिक क्रांति का प्रारंभ कौन से देश में सर्वप्रथम हुआ था ?

उत्तर :

इंग्लैंड में।

26. रूपक से क्या अभिप्राय है ? इसके स्पष्टीकरण के लिए एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर :

जब किसी अमूर्त विचार जैसे- लालच, ईर्ष्या, स्वतंत्रता, मुक्ति को किसी व्यक्ति या किसी चीज के माध्यम से इंगित किया

जाता है, तो उसे रूपक कहते हैं। एक रूपकात्मक कहानी के दो अर्थ होते हैं- एक शाब्दिक और दूसरा प्रतीकात्मक।

27. इटली के एकीकरण के मुख्य कर्णधार कौन-कौन थे ?

उत्तर :

मैजिनी, गैरीबाल्डी तथा सार्डीनिया का शासक विक्टर इमैनुएल द्वितीय।

28. 1868 के स्कॉलर्स रिवोल्ट (विद्वानों का विद्रोह) का मुख्य उद्देश्य क्या था ?

उत्तर :

1868 का स्कॉलर्स रिवोल्ट (विद्वानों का विद्रोह) फ्रांसीसी कब्जे तथा ईसाई धर्म के प्रभाव को कम करना चाहता था।

29. मताधिकार की सही परिभाषा क्या है ?

उत्तर :

वोट देने का अधिकार।

30. नृजातीय से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर :

नृजातीय से तात्पर्य एक साझा नस्ली, जनजातीय या सांस्कृतिक उद्गम अथवा पृष्ठभूमि से है, जिसे कोई समुदाय अपनी पहचान मानता है।

31. 1832 की उस संधि का नाम लिखिए जिसने यूनान को एक स्वतंत्र राष्ट्र की मान्यता दी।

उत्तर :

1832 की कुस्तुनतुनिया की संधि ने यूनान को एक स्वतंत्र राष्ट्र की मान्यता दी।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

32. जर्मनी के एकीकरण के मुख्य निर्माता कौन थे ?

उत्तर :

प्रशिया का शासक विलियम प्रथम तथा प्रशिया का चांसलर बिस्मार्क।

33. 1815 के बाद के वर्षों में यूरोप के क्रांतिकारियों का मुख्य उद्देश्य क्या था ?

उत्तर :

1815 के बाद के वर्षों में यूरोप के क्रांतिकारियों का मुख्य उद्देश्य था- स्वतंत्रता और मुक्ति। इटली का ज्युसेपी मोत्सिनी ऐसा ही एक क्रांतिकारी था जिसने इटली को एकीकृत गणतंत्र बनाने के लिए क्रांतिकारी संघर्ष किया।

34. नेपोलियन कहाँ का शासक था ?

उत्तर :

फ्रांस का।

35. बाल्कन क्षेत्र के निवासियों को क्या कहा जाता था ?

उत्तर :

बाल्कन क्षेत्र के निवासियों को स्लाव कहा जाता था।

36. जनवरी, 1871 में वर्साय में हुए एक समारोह में किसको जर्मनी का सम्राट घोषित किया गया था?

उत्तर :

18 जनवरी, 1871 को वर्साय में हुए एक समारोह में प्रशा के काइजर विलियम प्रथम को जर्मनी का सम्राट घोषित किया गया था।

37. ऐले क्या था?

उत्तर :

ऐले कपड़ा मापने का पैमाना था।

38. जॉलवेराइन नामक शुल्क संघ की स्थापना कब हुई थी?

उत्तर :

1834 में।

39. लाल टोपी अथवा टूटी जंजीर किस बात की प्रतीक है?

उत्तर :

स्वतंत्रता की।

40. यूनियन जैक क्या है?

उत्तर :

ब्रिटेन के झंडे को यूनियन जैक कहा जाता है।

लघु उत्तरात्मक प्रश्न

1. यूरोप में उन्नीसवीं सदी के दौरान नारी की छवि किस प्रकार राष्ट्र का रूपक बनी? विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :

राष्ट्रवादी आंदोलन में महिलाओं ने कई वर्षों से बड़ी संख्या में सक्रिय भाग लिया था। महिलाओं ने अपने राजनीतिक संगठन स्थापित किए, समाचार पत्र शुरू किए और राजनीतिक बैठकों और प्रदर्शनों में भी हिस्सा लिया। इसके बावजूद उन्हें एसेंबली के चुनाव में मताधिकार से वंचित रखा गया। जब सेंट पॉल चर्च में फ्रैंकफर्ट संसद की सभा आयोजित हुई तो इसमें महिलाएँ केवल मूक-दर्शक ही बनाई गईं। उन्हें अपने तर्क रखने का अवसर नहीं दिया गया।

2. निम्न दो उल्लेखनीय व्यक्तियों का संक्षिप्त में परिचय दीजिए :

1. फ्रेडरिक सॉरयू।
2. ऐंड्रियास रेबमान।

अथवा

फ्रेडरिक सॉरयू कौन था? उसका संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर :

1. **फ्रेडरिक सॉरयू**— फ्रेडरिक सॉरयू एक फ्रांसीसी चित्रकार था। उसने फ्रांसीसी राज्यक्रांति (1789) के वर्षों में अतिविशिष्ट एवं विश्व राज्य की इन्द्रिय बोध से परे कल्पना करने वाला पेन्टर था।

फ्रेडरिक सॉरयू ने चार चित्रों की एक शृंखला बनाई। इन चित्रों ने विशेषकर फ्रांस के लोगों तथा सामान्य रूप से अन्य यूरोपवासियों के मन में राष्ट्र-राज्य बनाने की कल्पना जगाई थी।

2. **ऐंड्रियास रेबमान**— वह जेकोबिन क्लब (फ्रांस में कार्यशील) का सदस्य था। वस्तुतः उसे इतिहास में एक प्रसिद्ध जर्मन चित्रकार तथा पत्रकार रूप में ख्याति प्राप्त हुई। ऐंड्रियास को राष्ट्रीय घटनाओं के अति उत्तेजक चित्र तैयार करने तथा उनको एक संक्षिप्त शब्द-पुंज में अलंकृत करने (सजाने में) विशेष महारथ (कुशलता) प्राप्त थी।

3. इटली के एकीकरण की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

इटली के एकीकरण की प्रक्रिया को निम्नलिखित चरणों में वर्गीकृत करके उसका वर्णन किया जा सकता है जो निम्न प्रकार से हैं—

प्रथम चरण (सोपान)— सन् 1852 ई. में कावूर सार्डीनिया पीडमॉन्ट का प्रधानमंत्री बना। उसने इस राज्य की शक्ति बढ़ाई, क्रीमिया के युद्ध में भाग लिया और सार्डीनिया राज्य को एक बड़े देश के स्तर पर ला खड़ा किया। उसने फ्रांस से मिलकर लाम्बार्डी को सार्डीनिया पीडमॉन्ट राज्य में मिला लिया।

द्वितीय चरण (सोपान)— द्वितीय चरण में मोडेना, टस्कनी, पर्मा आदि राज्यों में जनमत संग्रह हुआ और उन्होंने सार्डीनिया में विलय की घोषणा कर दी।

तृतीय चरण (सोपान)— सन् 1860 ई. में गैरीबाल्डी ने सिसली और नेपल्स को विजय किया और विक्टर एमैनुअल ने चर्च राज्य के दो भागों पर अधिकार कर लिया।

चतुर्थ चरण (सोपान)— सन् 1860 ई. में ऑस्ट्रो-प्रशा युद्ध के परिणामस्वरूप वेनेशिया पर अधिकार हो गया और 1870 ई. में फ्रांस-प्रशा युद्ध के फलस्वरूप रोम पर अधिकार हो गया।

सन् 1871 ई. में पोप से समझौता हो गया और रोम दो भागों में विभक्त हो गया। इस प्रकार से एकीकृत इटली का जन्म हुआ।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

4. फ्रांस में नेपोलियन ने प्रजातंत्र को नष्ट किया था परन्तु प्रशासनिक क्षेत्र में उसने क्रांतिकारी सिद्धांतों का समावेश किया जिससे पूरी व्यवस्था अधिक तर्कसंगत और कुशल बन सके। तर्कों सहित इस कथन का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :

1. नेपोलियन ने प्रजातंत्र को नष्ट कर राजतंत्र की वापसी की और प्रशासन की पूरी व्यवस्था को अधिक तर्कसंगत और कुशल बनाया।
2. उसने नागरिक संहिता (या नेपोलियन संहिता) के द्वारा जन्म पर आधारित विशेषाधिकार समाप्त कर दिए और

कानून के सामने सभी को बराबरी देते हुए नागरिकों के संपत्ति के अधिकार को सुरक्षित बनाया।

3. नेपोलियन ने प्रशासनिक विभाजन को सरल बनाया।
4. सामंती व्यवस्था को समाप्त किया और किसानों को भू-दासत्व और जागीरदारी शुल्कों से मुक्ति दिलाई।
5. शहरों में गठित कारीगरों के श्रेणी संघों के नियंत्रण को समाप्त किया तथा यातायात और संचार व्यवस्था में सुधार किए।
6. पूरे साम्राज्य में एक जैसे मानकभार, नापतौल और एक राष्ट्रीय मुद्रा जारी की गई।
5. 19वीं सदी के दौरान यूरोप में उन परिस्थितियों की व्याख्या कीजिए जिन्हें नये वाणिज्यिक वर्ग आर्थिक विनियम और विकास में बाधक मानते थे।

उत्तर :

1. **विभिन्न उद्योगों का विकास**—नये वाणिज्यिक का यह मत था कि विभिन्न प्रकार के नये उद्योगों का विकास करने से पूँजी तथा संसाधनों में गतिशीलता बढ़ेगी जो देश के विकास में बाधक सिद्ध होगी।
2. **ज्ञान का विस्तार**—व्यापार में वृद्धि होने से कई देशों तथा उनके निवासियों के साथ संबंध में विस्तार होता है जिससे अपना ज्ञान अन्य देश में हस्तांतरित हो जाएगा जो देश के विकास में बाधक होगा।
3. **मुद्रा प्रसार पर नियंत्रण**— उनका मत था कि मुक्त बाजार क्षेत्र में पूर्ण प्रतियोगिता होगी जिसके कारण मूल्य निर्धारण होता है जिससे यह मुद्रा के प्रसार में बाधक होगा।
4. **मापतोल**— यूरोप के विभिन्न देशों में मापतोल के बाट तथा करेंसी भिन्न-भिन्न होने से वस्तु विनियम में बाधा उत्पन्न होगी तथा इससे देश का विकास भी बाधित होगा।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

6. यंग इटली क्या था? 18वीं सदी के यूरोप में प्रसिद्ध हुए उन तीन सिद्धांतों के केवल नाम लिखें जिन्होंने संपूर्ण यूरोपीय महाद्वीप को प्रभावित किया।

उत्तर :

यंग इटली— इटली के राष्ट्रीय एकीकरण से पूर्व महान राष्ट्रभक्त ज्युसेपे मेजिनी ने सन् 1832 में जिस संगठन की स्थापना फ्रांस के शहर मर्सीलिस में की थी उसे यंग इटली नाम से ख्याति प्राप्त हुई थी। यह एक नया दल अथवा संगठन था जिसे इटली में क्रांतिकारी कार्य करने थे।

ज्युसेपे मेजिनी ने इटली के अनेक हिस्सों में इस संगठन की कई शाखाएँ खोली थीं।

यंग इटली के उद्देश्य थे— ईश्वर, लोग और इटली की धारणा अर्थात् तीनों का समावेश। हैब्सबर्ग, पोप आदि द्वारा अलग-अलग शासित सात राज्यों के नागरिकों के हृदय में इस धारणा को जगाकर उन्हें एकीकृत इटली परिसंघ के रूप में

या गणराज्य अथवा राष्ट्र राज्य के रूप में इसी संगठन (यंग इटली) के द्वारा ही संगठित किया गया।

तीन सिद्धांत— अठारहवीं शताब्दी के यूरोप में प्रसिद्ध हुए उन तीन सिद्धांतों के नाम निम्नलिखित थे, जिन्होंने संपूर्ण यूरोप महाद्वीप को प्रभावित किया था—

1. मानवतावाद, 2. राष्ट्रवाद तथा 3. रुढ़िवाद।

7. काउंट कावूर कौन था? वह इतिहास में क्यों लोकप्रिय है?

उत्तर :

काउंट कावूर— इटली के एकीकरण के इतिहास में कावूर को एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। वह सार्डीनिया के राजा का प्रधानमंत्री था। वह एक महान प्रशासक और योग्य सुधारक था। उसने अन्य देशों से वाणिज्यिक संधियाँ कीं तथा व्यापार, कृषि और उद्योगों को बढ़ावा दिया।

अपनी कुशल नीति निर्माण के कारण ही वह इटली का बिस्मार्क कहलाता है। उसने पीडमांट को एक आदर्श राज्य बनाया और अधिकांश यूरोपीय राष्ट्रों ने उस राज्य के मामलों में गहरी रुचि ली। उसने फ्रांस के सम्राट नेपोलियन तृतीय की मदद से लॉम्बार्डी (इटली का एक राज्य) पर अधिकार किया।

8. विक्टर इमैनुएल कौन था? इटली के एकीकरण में उसकी भूमिका का वर्णन करो।

उत्तर :

विक्टर इमैनुएल एवं इटली के एकीकरण में उसकी भूमिका : विक्टर इमैनुएल सवाँय शाही परिवार (वंश) के राजा चार्ल्स अल्ब्रेट का पुत्र था। 1848 की क्रांति के कारण विक्टर इमैनुएल का पिता चार्ल्स अल्ब्रेट अपने राज्य पीडमांट से भाग गया और वह राज्य की सत्ता विक्टर इमैनुएल के पक्ष में छोड़ गया। वह सार्डीनिया का राजा बना लेकिन शीघ्र ही उसने पीडमांट पर भी अधिकार कर लिया।

उसका मुख्यमंत्री काउंट कावूर राज्य-कार्य और प्रशासन के क्षेत्र में विशेषज्ञ था। इस राजा ने कावूर की इटली के एकीकरण की योजना को भरपूर समर्थन दिया। यह ठीक है कि वह राजशाही का समर्थक और प्रजातंत्र का विरोधी था लेकिन उसने लोकतंत्र या गणतंत्र स्थापित करने वाले अपने मंत्री कावूर की योजना में कोई दखल नहीं दिया।

9. जर्मनी के एक एकीकरण की विभिन्न अवस्थाओं में बिस्मार्क की भूमिका का वर्णन करो।

उत्तर :

जर्मनी के एकीकरण की अवस्थाओं अथवा सोपानों में बिस्मार्क की भूमिका— जर्मनी का एकीकरण (सन् 1789 से 1871) जिन-जिन अवस्थाओं (सोपानों) से गुजर कर हुआ उनका विवरण इस प्रकार है—

1. **प्रथम सोपान या अवस्था**—एकीकरण से पूर्व 18वीं शताब्दी में जर्मनी अनेक छोटे-बड़े राज्यों जैसे कि प्रशिया, बावेरिया, सैक्सनी आदि में विभाजित था। इसलिए जर्मनी

का आर्थिक विकास बहुत ही धीमा था। राष्ट्रीय जागृति के साथ ही जर्मनी के एकीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई। 1815 ई. में जर्मनी के राज्यों को आस्ट्रिया के साथ मिलाकर एक जर्मन महासंघ की स्थापना की कोशिश की गई। इसी संदर्भ में फ्रैंकफर्ट में एक राष्ट्रीय पार्लियामेंट (संसद) बुलाई गई। जिसे संविधान निर्माण का कार्य सौंपा गया लेकिन इस पार्लियामेंट को आस्ट्रिया के विरोध के कारण सफलता नहीं मिली।

2. **दूसरा सोपान या अवस्था**—फ्रैंकफर्ट की पार्लियामेंट की असफलता के बाद जर्मनी के एकीकरण का कार्य लोकतंत्र के रूप में न होकर प्रशिया के चांसलर (प्रधानमंत्री) द्वारा सैन्य शक्ति एवं कूटनीति के सहारे होने लगा। बिस्मार्क ने अपनी **लहू एवं लोहे की नीति** द्वारा जर्मनी के एकीकरण का कार्य तीव्रता से पूरा किया। सर्वप्रथम 1864 ई. में बिस्मार्क के नेतृत्व में प्रशिया (जर्मनी का सर्वाधिक शक्तिशाली राज्य/प्रांत) एवं डेनमार्क में एक युद्ध हुआ जिसमें प्रशिया की विजय हुई और शैल्सविग का प्रदेश मिला।
3. **तीसरा सोपान या अवस्था**—1866 ई. में प्रशिया (या जर्मनी) का आस्ट्रिया के साथ युद्ध था। इस युद्ध में प्रशिया को जीत प्राप्त हुई और इस विजय के कारण प्रशिया को कई प्रदेश जैसे हैनोवर, होल्सटीन, लक्समबर्ग, कैसल तथा फ्रैंकफर्ट इत्यादि आ मिले। जर्मनी से आस्ट्रिया का प्रभाव अब सदैव के लिए समाप्त हो गया और इससे जर्मनी के एकीकरण का काम काफी आसान हो गया।
4. **चौथा सोपान या अवस्था**— सन् 1870 ई. में जर्मनी (प्रशा) का फ्रांस के साथ एक भयंकर युद्ध हुआ (याद रहे इसे विश्व इतिहास में प्रायः प्रशा-फ्रैंको युद्ध 1870 के नाम से ही जाना जाता है) जिसमें फ्रांस (जो उस समय प्रायः ब्रिटेन के बाद विश्व की सबसे बड़ी शक्ति जाना जाता था) की करारी हार हुई और उससे आल्सेस और लारेन के दो महत्वपूर्ण प्रदेश छीन लिए गए। इन विजयों से प्रभावित होकर बाकी बचे हुए जर्मन प्रदेश भी (जैसे बावेरिया, बर्टनबर्ग, बेडन आदि) जर्मन महासंघ में शामिल हो गए। प्रशिया के शासक विलियम प्रथम को 1871 ई. में संयुक्त जर्मनी का सम्राट घोषित कर दिया गया। बिस्मार्क अनेक वर्ष तक जर्मनी एवं यूरोप की राजनीति में सर्वाधिक सफल कूटनीतिज्ञ माना गया। उसी के प्रयत्नों से वस्तुतः जर्मनी के एकीकरण का कार्य 1871 में पूरा हुआ।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

10. नेपोलियन द्वारा विजित क्षेत्रों में स्थानीय लोगों ने फ्रांसीसी शासन के प्रति किस प्रकार प्रतिक्रिया व्यक्त की? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

युद्ध में नेपोलियन ने फ्रांस, पोलैंड, स्विटजरलैंड, इटली तथा जर्मनी आदि देशों पर विजय प्राप्त कर ली। इन देशों में नेपोलियन ने लोकतंत्र को राजशाही में बदल दिया। उसने सन् 1804 में एक नेपोलियन विधि संहिता का निर्माण किया जिसके आधार पर उसने विजित राष्ट्रों में शासन चलाया। इसने फ्रांसीसियों के जीवन में कई परिवर्तन किए। इन परिवर्तनों के फ्रांसीसियों में निम्न तीन कारण थे—

1. वहाँ की जनता पर कर-भार बढ़ा दिए गए।
2. समाचार पत्रों के प्रकाशन पर जाँच बैठा दी गई।
3. नवयुवकों को बलपूर्वक सेना में भर्ती कराया जाने लगा।

इन तीन कारणों के आधार पर वहाँ की जनता नेपोलियन को अपना शत्रु मानने लगी। कालांतर में ब्रिटेन, रूस, प्रशा तथा आस्ट्रिया (जर्मनी) की संयुक्त सेना ने नेपोलियन को **वाटरलू** के युद्ध में पराजित कर दिया। उसकी मृत्यु सेंट हेलेका नामक द्वीप में हो गई।

11. जर्मनी के एकीकरण की प्रक्रिया को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

जर्मनी के एकीकरण का आरंभ प्रशा के सिंहासन पर विलियम प्रथम के आसीन होने से हुआ। उसने बिस्मार्क को अपना प्रधानमंत्री नियुक्त किया। बिस्मार्क ने प्रशा को सैनिक शक्ति बनाया और जर्मनी के एकीकरण की भूमिका तैयार की।

जर्मनी का एकीकरण— जर्मनी के एकीकरण का विचार वियना कांग्रेस के बाद जोर पकड़ने लगा। वियना संधि के अनुसार जर्मनी को 30 राज्यों को एक ढीले-ढाले संघ में बदला गया। जर्मन देशभक्तों ने इस मंच को दृढ़ बनाने के अनेक प्रयास किए। 1848 की क्रांति के मध्य फ्रैंकफर्ट की पार्लियामेंट ने जर्मनी को एकता के सूत्र में बाँधने का प्रयास किया परंतु प्रशा के राजा के कारण यह लक्ष्य पूरा न हो सका।

वास्तव में जर्मनी के एकीकरण के मार्ग में अनेक बाधाएँ थीं। आस्ट्रिया इस एकीकरण के विरुद्ध था तथा फ्रांस के लिए संयुक्त जर्मनी एक खतरा था। स्वयं अनेक जर्मनवासी भी इस एकता के विरुद्ध थे।

इन सब बाधाओं को बिस्मार्क ने दूर किया। वह 1862 ई. में जर्मनी का प्रधानमंत्री बना। उसने जर्मनी की सैनिक शक्ति में वृद्धि की और आस्ट्रिया को अपना मित्र बनाया। दोनों ने मिलकर डेनमार्क से युद्ध किया और युद्ध से प्राप्त उपनिवेशों (डचियों) की आड़ लेकर उसने 1866 ई. में आस्ट्रिया से युद्ध किया। जर्मनी के एकीकरण में आस्ट्रिया ही सबसे बड़ी बाधा थी। बिस्मार्क ने विश्व की शक्तियों को तटस्थ किया और आस्ट्रिया को सेडोवा में पराजित कर दिया। युद्ध के पश्चात् मेन नदी के उत्तर में स्थित सभी जर्मन रियासतों को मिलाकर उत्तरी जर्मनी नामक एक राज्य संघ की स्थापना की। 1867 ई. में इसमें मकेलनबर्ग तथा सैक्सनी को भी मिला दिया गया।

1871 ई. में फ्रांस को पराजित करने के पश्चात् जर्मनी

के दक्षिणी राज्य बवेरिया, नडेन, व्यूर्तवर्ग आदि भी जर्मन साम्राज्य में सम्मिलित हो गए। प्रशा के राजा को समस्त जर्मनी का सम्राट घोषित किया गया। इस प्रकार जर्मनी यूरोप के मानचित्र में एक राष्ट्र के रूप में उभरा।

12. 1815-1914 के दौरान अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक विनिमय केंद्रों के साथ तीन प्रकार के प्रवाहों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

1815-1914 के दौरान अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक विनिमय के क्षेत्र में निम्नलिखित तीन तरह के प्रवाह देखे जा सकते थे-

1. **वस्तुओं का प्रवाह-** सामान्यतः यह वस्त्रों तथा कपड़ों तक ही सीमित था किन्तु भारत से ग्रेट ब्रिटेन को भेजे जाने वाले कच्चे मालों जैसे रेशम, कपास आदि के प्रवाह में तेजी देखी गई।
 2. **पूँजी का प्रवाह-** यह ऊपर वर्णित वस्तुओं के प्रवाह में ही सन्निहित था।
 3. **लोगों का प्रवाह-** हालांकि विकसित देशों ने इस पर रोक लगा रखी थी किन्तु पहले यह गुलामों के व्यापार तथा उसके बाद बंधुआ मजदूरों के रूप में नियमित बना रहा।
13. सन् 1815 के बाद क्रांतिकारियों ने यूरोप के बहुत से राज्यों में अपने विचारों का किस प्रकार प्रसार किया? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

1. वे मानते थे कि राज्य और समाज की स्थापित पारंपरिक संस्थाएँ जैसे- राजतंत्र चर्च, सामाजिक ऊँच-नीच, संपत्ति और परिवार को बनाये रखना चाहिए।
 2. अधिकांश रूढ़िवादी क्रांतिकारी संग्राम से पहले के दौर में वापसी नहीं चाहते थे। नेपोलियन द्वारा प्रारंभ किए गए परिवर्तनों से उन्हें यह ज्ञान हो गया था कि आधुनिकीकरण, राजतंत्र जैसी पारंपरिक संस्थाओं को मजबूत बनाने में सक्षम था। वह राज्य की शक्ति को अधिक क्रियाशील और मजबूत बना सकता था।
 3. एक आधुनिक सेना, कुशल नौकर-शाही, गतिशील अर्थव्यवस्था, सामंतवाद तथा भूदासत्व की समाप्ति- यूरोप के निरंकुश राजतंत्रों को शक्ति प्रदान कर सकते थे।
 4. 1815 में रूढ़िवादी शासन व्यवस्थाएँ निरंकुश थीं। वे आलोचना तथा असहमति सहन नहीं कर सकती थीं। वे निरंकुश सरकार की वैधता पर उठे प्रश्नों को दबाना चाहते थे।
14. संक्षेप में राष्ट्रवाद का अर्थ बताइए। 1830 के दशक के बाद यूरोप में विकसित राष्ट्रवाद की विशेषताओं को लिखिए।

उत्तर :

1. **राष्ट्रवाद का अर्थ-** किसी देश में रहने वाले लोगों की वह भावना जो उन्हें राष्ट्रहित और राष्ट्रभक्ति के लिए प्रेरित करती है। इस भावना के कारण ही लोग संकीर्ण धार्मिक, प्रजातीय या जातिगत भावनाओं से ऊपर उठकर राष्ट्रहित

में तन-मन-धन अर्पित करने के लिए तत्पर रहते हैं।

2. **1830 के बाद यूरोप में व्याप्त राष्ट्रवाद की विशेषताएँ-**

- i. **1789 की क्रांति का प्रभाव-** फ्रांसीसी क्रांति (1789) ने 1815 से लेकर 1870 तक सभी देशों के लोगों में राष्ट्रीयता की भावनाएँ जगाईं।
- ii. **लोकतंत्र तथा स्वतंत्रता के लिए हुए प्रयास-** यूरोप के ऐसे देशों में जिन्होंने राष्ट्रीय एकता एवं स्वतंत्रता पहले ही प्राप्त कर ली थी (जैसे- इंग्लैंड, फ्रांस, स्पेन, स्वीडन, रूस आदि।) लोगों ने लोकतंत्र के बुनियादी सुधारों पर ध्यान दिया। बेल्जियम, नार्वे, आयरलैंड, पोलैंड तथा बाल्कन राज्यों के लोगों ने स्वतंत्रता के लिए आंदोलन आरंभ कर दिए। भिन्न-भिन्न राज्यों में बँटे हुए लोगों ने एकीकरण के लिए आंदोलन किए। उदाहरण- इटली और जर्मनी।
- iii. **सीमाओं एवं जातिगत अहंकार से ऊपर-** यह राष्ट्रवाद राष्ट्र विशेष की सीमाओं और जातिगत अहंकार से परे था। क्रांतिकारी केवल अपने देश में अपनी स्वतंत्रता या नागरिक अधिकारों के लिए नहीं लड़ रहे थे बल्कि उन्होंने यूरोप के उन सभी देशों के राजनीतिक वातावरण के खिलाफ आवाज उठाई जो अधिनायकवादी राजतंत्र के अधीन घुट-घुट कर साँस ले रहे थे।
- iv. **शासकों के द्वारा जन-भावनाओं का ध्यान रखने का वायदा-** 1830 में फ्रांस का पहला शासक इंग्लैंड भाग गया और लुई फिलिप उसका उत्तराधिकारी बना। उसने लोगों को वायदा किया कि वह उसकी इच्छानुसार ही शासन करेगा। बेल्जियम के निवासियों ने भी स्वतंत्रता आंदोलन चलाए और दक्षिण नीदरलैंड के निवासियों ने फ्रांसीसी, स्पेनिश तथा कैथोलिक निवासियों के विरुद्ध जंग छेड़ दी।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

15. 19वीं सदी के अंतिम वर्षों में यूरोप में राष्ट्रवाद के स्वभाव में आए परिवर्तनों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

1. यह क्षेत्र भू-आकारिकी और मानव-जातियों की दृष्टि से अति-विभिन्नता और विविधता वाला था। यहाँ के लोग राजनैतिक अधिकारों के लिए इसको राष्ट्र-राज्य बनाने के इच्छुक थे।
2. विभाजन प्राइमरी पाठशाला में प्रवेश से आरंभ हुआ था। इस क्षेत्र के निवासी **स्लाव** कहलाते थे। इस समय के रोमानिया, बुल्गारिया, अल्बानिया, ग्रीस (यूनान), मैसोडोनिया, क्रोएसिया, बोस्निया, हरजेगोविना, सोल्वेनिया एवं मान्टेनीग्रो राष्ट्र उस समय संयुक्त नाम **बल्कन क्षेत्र** में समाए हुए थे। मनुष्य के निजवाद की राजनीति में यह पहली छलाँग थी।

3. जातीय विविधता क्रमशः विभेद को जन्म देती है क्योंकि इस विविधता को राजनैतिक रंग देते ही समाज-संगठन के संविधान में परिवर्तन आने लगते हैं अर्थात् राज-व्यवस्था तदनुसार परिवर्तित होती जाती है। व्यष्टि में जन्म देने वाली **मुक्त** मानसिकता ही उसको राजनीति के दुश्चक्र में फँसाकर राज्य स्तर पर साम्राज्यवादी शक्तियों और अति पूँजीवाद को जन्म देती है।

16. यूरोप में 1830 से लेकर 19वीं सदी के अंत तक राष्ट्रवाद की भावना को रूप प्रदान करने में संस्कृति की भूमिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

1. यूरोप में 1830 से लेकर 19वीं सदी के अंत तक राष्ट्रवाद की भावना प्रदान करने में कुछ कलाकारों एवं कवियों की भूमिका प्रमुख थी। उन्होंने यूरोप में राष्ट्रवाद के विचारों को व्यक्त करने हेतु विज्ञान एवं तर्क की गौरव गाथा को व्यक्त नहीं किया जा सकता था। अतः उन्होंने वहाँ की गौरवगाथा के रूप में लोगों के सम्मुख व्यक्त किया।
 2. उन्होंने भावना, अंतर्दृष्टि तथा रहस्यवादी भावनाओं पर जोर दिया।
 3. उन्होंने एक साझा सामूहिक विरासत की अनुभूमि तथा एक साझा सांस्कृतिक अतीत को राष्ट्र का आधार बनाने की कोशिश की।
 4. उन्होंने राष्ट्रवादी भावना को मजबूत बनाने के लिए विभिन्न सांस्कृतिक तत्वों का सहारा लिया।
- 17. औद्योगीकरण की वृद्धि ने किस प्रकार यूरोप के सामाजिक और राजनीतिक समीकरण बदल दिए ?**

उत्तर :

1. पश्चिमी और मध्य यूरोप के हिस्सों में औद्योगिक उत्पादन और व्यापार में वृद्धि से शहरों का विकास और वाणिज्यिक वर्गों का उदय हुआ जिनका अस्तित्व बाजार के लिए उत्पादन पर टिका हुआ था।
2. श्रमिक वर्ग और मध्य वर्ग जो कि उद्योगपतियों, व्यापारियों और सेवा क्षेत्र के लोगों से मिलकर बना था, का उदय हुआ।
3. शिक्षित और उदारवादी मध्य वर्गों के बीच राष्ट्रीय एकता तथा कुलीन विशेषाधिकारों की समाप्ति जैसे विचार लोकप्रिय हुए।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

18. हंगरी में राष्ट्रीय आंदोलन की सामान्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

1. कोसुथ और डीक नाम के क्रांतिकारियों ने हंगरी को स्वतंत्र राष्ट्र बनाने के लिए जन-नेतृत्व को संभाला।
2. मार्च, 1848 में आस्ट्रिया (स्वामी देश) से हंगरी के पृथक

संविधान की माँग की गई। इसको स्वीकार कर लिया गया, लेकिन हंगरी की दो प्रमुख जातियों (मग्यार और स्लाव) में फूट पड़ गई।

3. दोनों जातियाँ अलग-अलग राष्ट्र निर्माण की माँग करने लगीं। ऐसी दशा में आस्ट्रिया की सरकार ने इस क्रांति का दमन कर दिया।
4. कोसुथ ने हंगरी को गणतंत्र घोषित कर दिया, परंतु रूस के जार शासक ने निर्ममतापूर्वक दमनचक्र चलाया जिसमें बड़ी संख्या में लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया।
5. आस्ट्रिया और हंगरी पर रूस का शासन स्थापित हो गया।
6. प्रथम विश्व युद्ध के बाद आस्ट्रिया और हंगरी दो पृथक स्वतंत्र राज्य बने। जर्मनी की हार और बर्लिन की संधि से ऐसा हुआ था।
7. आस्ट्रिया तो एक स्वतंत्र राष्ट्र बना रहा लेकिन **सार्व** जाति के लोगों का बाहुल्य होने के कारण हंगरी 1991 तक सोवियत संघ के ही अधीन बना रहा।

19. यूनान में हुए राष्ट्रवादी आंदोलन की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

1. बाल्कन क्षेत्र को तुर्क शासन से स्वतंत्रता दिलाने के लिए 1814 में ओडेसा (यूनान) नामक स्थान पर **फिली** और **हतिरिया** नामक संगठन बनाए गए।
2. 1821 में यूनानियों की इन संस्थाओं ने विद्रोह छेड़ दिया क्योंकि उस समय जनीना के पाशा और तुर्क के सुल्तान के बीच युद्ध छिड़ा हुआ था। यह विद्रोह निर्ममता से कुचल दिया गया।
3. 1822 को मीरियाद्वीप में चलाया गया आंदोलन भी तुर्क सुल्तान महमूद ने बुरी तरह कुचल दिया।
4. 1829 में इंग्लैंड, फ्रांस तथा रूस ने आटोमन साम्राज्य पर यह दबाव डाला कि उसका सुल्तान यूनान का शासक नियुक्त करे और उसको वंशानुगत शासन का अधिकार दे लेकिन उसको एक करद राज्य (वार्षिक कर चुकाने वाला) का दर्जा दिया जाए।
5. 1832 में यूनान को स्वतंत्र राज्य का दर्जा मिला तथा बेवोरिया का राजकुमार ऑर्टो उसका शासक चुना गया।
6. यूनान के क्रांतिकारियों ने ही इंग्लैंड और फ्रांस को वे तरीके बताए जिससे वे कालांतर में ऑटोमन साम्राज्य का पतन सुनिश्चित कर पाए। ये लोग राजनीति और प्रशासन के मामले में अति चतुर थे।

20. बिस्मार्क और कावूर के आदर्शों और तरीकों (नीतियों) की तुलना कीजिए।

उत्तर :

1. **लक्ष्य एक-रास्ते अलग-अलग-कावूर** और बिस्मार्क दोनों ही अपने समय के सफल कूटनीतिज्ञ थे। दोनों का लक्ष्य अपने देश का एकीकरण था। दोनों का शत्रु

आस्ट्रिया था लेकिन दोनों की नीतियाँ भिन्न थीं। कावूर का विचार था कि बिना विदेशी सहायता के इटली का एकीकरण संभव नहीं जबकि बिस्मार्क विदेशी सहायता में विश्वास नहीं रखता था। वह **लोहे और रक्त** की नीति में विश्वास रखता था।

2. **अलग-अलग नीतियाँ**—कावूर की नीति जनमत-संग्रह और जनादेश के आधार पर कार्यक्रम को आगे बढ़ाने की थी। जबकि बिस्मार्क सैन्य-आक्रमण से एकीकरण करने में विश्वास रखता था।
3. **स्थान भक्ति**—कावूर ने सार्डीनिया-पीडमांट का विलय इटली में कर दिया जबकि वह सार्डीनिया का प्रधानमंत्री था। बिस्मार्क ने प्रशा का जर्मनी में विलय नहीं किया।
4. **अंतिम परिणाम**—जर्मनी में बिस्मार्क के पश्चात् कई संघर्षों का दौर चला जिसमें जन-धन की अपार क्षति हुई लेकिन कावूर द्वारा प्रतिष्ठित इटली अभी तक शांतिपूर्ण सामंजस्य में है।

21. जर्मनी और इटली में राष्ट्रीय एकता की उपलब्धि के बावजूद इन देशों में गणतंत्रीय शासन की स्थापना क्यों नहीं हो सकी ?

उत्तर :

गणतंत्रीय शासन के स्थापित न होने के कारण— यद्यपि इटली और जर्मनी दोनों में ही लगभग साथ-साथ राष्ट्रीय एकीकरण हुआ लेकिन दोनों देशों में ही गणतंत्र स्थापित नहीं हो सका। इसके मुख्य कारण निम्न दिए जाते हैं—

1. दोनों ही देशों के लोग विदेशी दासता को समाप्त कर स्वतंत्रता चाहते थे। वे अपने-अपने राजाओं के विरुद्ध नहीं थे क्योंकि दोनों ही देशों के नरेश जनता में लोकप्रिय थे और वे जनता की भावनाओं की कद्र भी किसी सीमा तक करते थे।
 2. दोनों ही देशों के एकीकरण में प्रधानमंत्री मुख्य व्यक्तित्व रहे लेकिन ये दोनों ही अपने-अपने शासकों के प्रति वफादार रहे। वे दोनों ही राजतंत्र को उखाड़कर गणतंत्र नहीं स्थापित करना चाहते थे।
 3. दोनों ही देशों के राष्ट्रभक्त और राष्ट्रीय स्तर के प्रमुख नेतागण ये मानते थे कि उनके देशों की संस्कृतियाँ, औद्योगिक व कृषि की प्रगति, सैन्य शक्ति की उन्नति राजाओं के हाथों में ही अधिक सुरक्षित रहेगी। ये लोग राष्ट्रीय एकता और देशभक्ति का उत्थान तो चाहते थे लेकिन किसी भी तरह से अपने राजतंत्रों को हानि नहीं पहुँचाना चाहते थे।
- 22. यूरोप में संस्कृति ने राष्ट्र के विचार के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस कथन की सोदाहरण पुष्टि कीजिए।**

अथवा

क्या आप सहमत हैं कि यूरोप में राष्ट्र के विचार के उदय में संस्कृति ने एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की? अपने उत्तर के औचित्य को सिद्ध कीजिए।

उत्तर :

हाँ, इस बात से सहमत हुआ जा सकता है कि यूरोप में राष्ट्र के विचार के उदय में संस्कृति ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इस संस्कृति में भाषा, लोकगीत, लोकनृत्य, संगीत, नाटक आदि शामिल हैं। आइए देखते हैं कि कैसे इन घटकों ने राष्ट्रवाद को आकार देने में अपनी भूमिका अदा की—

1. **भाषा**— पोलैंड में स्कूलों में पोलिस भाषा के प्रयोग पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। प्रतिक्रियास्वरूप चर्च में इकट्ठे होने वाले लोगों ने पोलिस भाषा का प्रयोग करना शुरू कर दिया। पोलिश भाषा का प्रयोग यूरोप में रूसी प्रभुत्व के विरुद्ध संघर्ष का प्रतीक बन गया।
2. **लोक कथा**— ग्रिम बंधुओं ने बहुत सारी लोक कथाओं का संग्रह किया तथा उनका जर्मनी में फ्रांसीसी प्रभुत्व के विरुद्ध हथियार के रूप में प्रयोग किया।
3. **संगीत**— पोलैंड में संगीत के माध्यम से राष्ट्रीय भावनाओं को जिंदा रखा गया।
4. **ऑपेरा तथा लोक नृत्य**— कैरोल कुर्पिस्की ने राष्ट्रीय संघर्ष को ऑपेरा के माध्यम से प्रदर्शित किया। पोलेनेस तथा माजुरका जैसे लोकनृत्यों का पोलैंड में राष्ट्रवादी प्रतीकों के रूप में प्रयोग किया गया।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

23. उदारवाद की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए। यूरोप में उन्नीसवीं शताब्दी में राजनीतिक रूप से उदारवाद ने किस बात पर जोर दिया ?

अथवा

उदार राष्ट्रवाद या उदारवाद से आप क्या समझते हैं? इन विचारों के विकास में राजनीतिक-आर्थिक आधारों की चर्चा कीजिए।

उत्तर :

1. उदारवाद या उदार राष्ट्रवाद—
 - i. उदार राष्ट्रवाद (उदारवाद) का विचार सहमति की सरकार की अवधारणा पर बल देता है। उसने व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा कानून के समक्ष लोगों की समानता पर जोर दिया।
 - ii. यूरोपीय भूमि के सांस्कृतिक रूप में भिन्न क्षेत्रीय सामाजिक समूहों के बीच से राष्ट्रवाद के इस विचार का उदय हुआ।
2. इस विचार के उदय के निम्नलिखित आधार थे—
 - i. **राजनीतिक आधार**—लोग निरंकुश शासन तथा पादरियों को प्राप्त विशेषाधिकारों से मुक्ति चाहते थे। वे एक संविधान तथा संसदीय व्यवस्था पर आधारित

एक प्रतिनिधिक सरकार की आवश्यकता महसूस करने लगे थे।

- ii. **आर्थिक आधार**—लोग मुक्त बाजार व्यवस्था चाहते थे। वे सरकार द्वारा सामानों तथा पूँजी के आवागमन पर लगाये गए प्रतिबंधों को खत्म करना चाहते थे। उनकी इच्छा थी कि एक समान भार एवं नाप की व्यवस्था सभी जगह लागू हो।

24. फ्रांसीसी लोगों के बीच सामूहिक पहचान की भावना पैदा करने के लिए फ्रांसीसी क्रांतिकारियों द्वारा प्रारंभ किए गए उपायों और कार्यों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :

1. फ्रांस को पितृभूमि और नागरिक की उपमा देकर लोगों में एकात्मकता के भाव जगाए।
2. फ्रेडरिक सारयू ने वर्ष 1848 में (अखिल विश्व लोकतांत्रिक और सामाजिक गणतंत्र का स्वप्न) नामक चित्र बनाया। इसमें विश्व के सभी देशों को परस्पर सहमति आधार पर शांतिपूर्ण स्थिति में दिखाया गया है।
3. राष्ट्रगीत, राष्ट्रगान और राष्ट्र के प्रति एकात्मकता जगाने वाली विविध साहित्यिक विधाओं को जन्म दिया गया।
4. जेकोबियन क्लब बनाए गए जिनमें फ्रांस की संस्कृति को विशिष्ट पहचान दी गई।
5. इस्टेट्स जनरल और राष्ट्र सभा में जन-प्रतिनिधित्व को सम्मान दिया गया।
6. क्षेत्रीय भाषाओं पर प्रतिबंध लगाकर फ्रेंच भाषा को जन भाषा का दर्जा दिया गया।

25. अठारहवीं शताब्दी में रुमानीवाद किस प्रकार एक विशेष प्रकार की राष्ट्रीय भावना का विकास करना चाहता था? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

राष्ट्रवादी आंदोलन के बारे में रुमानी कलाकारों तथा कवियों के क्या विचार थे? उन्होंने यूरोप में राष्ट्रवादी आंदोलन को मजबूत करने के लिए क्या किया? व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

1. रुमानीवाद तथा रुमानी कलाकार—
 - i. रुमानी कलाकारों ने महसूस किया कि विज्ञान एवं तर्क की गौरवगाथा से राष्ट्रवाद के विचार को व्यक्त नहीं किया जा सकता है।
 - ii. उन्होंने भावना, अंतर्दृष्टि और रहस्यवादी भावनाओं पर जोर दिया।
 - iii. उन्होंने एक साझा सामूहिक विरासत की अनुभूति तथा एक साझा सांस्कृतिक अतीत को राष्ट्र का आधार बनाने की कोशिश की।
2. उन्होंने राष्ट्रवादी आंदोलन को मजबूत बनाने के लिए विभिन्न सांस्कृतिक तत्वों का सहारा लिया।

- i. उन्होंने राष्ट्रवाद को उभारने के लिए भाषा को एक सांस्कृतिक बंधन के रूप में प्रयोग किया।
- ii. उन्होंने राष्ट्रवाद का संदेश देने के लिए ऑपेरा तथा संगीत का सहारा लिया।
- iii. उन्होंने राष्ट्रवादी भावना को फैलाने के लिए लोकनृत्य तथा लोक कथाओं का उपयोग किया।

26. यूरोप में 1830 के दशक को महान आर्थिक कठिनाइयों के रूप में क्यों जाना जाता था? कोई तीन कारण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

1. फ्रांस के लोग देश के भू-भाग को नहीं बल्कि उस भू-भाग में रहने वाले लोगों को वास्तविक राष्ट्र समझते थे। राजा समझौते के लिए तैयार नहीं है। अध्यादेश के घोषित होते ही एक बिजली-सी दौड़ गई। पेरिस में उपस्थित पत्रकारों और सभा के सदस्यों ने विरोध पत्र तैयार किया, मजदूरों ने आंदोलन शुरू कर दिया।
सड़कों पर भीड़ जमा होने लगी तथा मंत्रिमंडल का नाश हो, अधिकार पत्र चिरंजीवी हो के नारे सुनाई देने लगे। राजवंश के सफेद झण्डे के स्थान पर तिरंगे झण्डे को सच्चे अर्थ में राष्ट्रीय ध्वज मानते थे। राजा की सेवा के अधिकांश सैनिक जनता में आकर मिल गए।
2. जर्मनी सन् 1830 की क्रांति से प्रभावित हुआ। जर्मनी के कुछ भागों में क्रांतिकारियों ने विद्रोह का झण्डा उठाया। ब्रूसनिक के ड्यूक को सिंहासन छोड़कर भागना पड़ा। जनता ने उसके उत्तराधिकारी से उदारवादी संविधान प्राप्त किया। बावेरिया, बेडन तथा बदतेम्बर्ग में जहाँ संसदीय व्यवस्था विद्यमान थी चुनाव के बाद उदारवादी दल शक्तिशाली हो गए। समाचार पत्रों को भी स्वतंत्रता प्रदान हो गई।
3. पुर्तगाल और यूनान के विद्रोह मुख्यतः राष्ट्रीयता की भावना से प्रभावित थे जो विदेशी शासन को समाप्त करना चाहते थे। यहाँ के आंदोलनों को ब्रिटेन की भी सहानुभूति प्राप्त थी। पुर्तगाल में 1830 की फ्रांसीसी क्रांति का प्रभाव पड़ा। वहाँ 1830 में इंग्लैंड तथा फ्रांस के हस्तक्षेप से उदारवादी शासन समाप्त हो गया।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

27. अठारहवीं शताब्दी में कुलीन वर्ग, कृषक तथा नए मध्य वर्ग की स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

1. कुलीन वर्ग—

1. यह वर्ग सबसे अधिक प्रभावशाली था। इसके पास ग्रामीण क्षेत्रों में संपत्ति और शहरी हवेलियाँ थीं। इनकी एक साझा जीवनशैली थी।
2. यह राजनीतिक कार्यों तथा उच्च वर्गों के बीच फ्रेंच भाषा का प्रयोग करते थे।
3. आपस में वैवाहिक बंधनों में बंधे होते थे।

4. इनकी संख्या कम थी।

2. कृषक वर्ग-

1. इनकी संख्या अधिक थी।

2. यह जमीन पर किराएदार या छोटे काश्तकार या भूदास के रूप में काम करते थे।

3. **नया मध्य वर्ग**-औद्योगिक उत्पादन और व्यापार के परिणामस्वरूप नए मध्य वर्ग का उदय हुआ। इनका आकार छोटा था। विशेष अधिकारों की समाप्ति के पश्चात् शिक्षित व उदारवादी मध्य वर्ग में राष्ट्रीय भावना का विकास हुआ।

28. फ्रेडरिक सॉर्यू की तस्वीर के पीछे क्या विचार था? उस समय यह किस प्रकार का संदेश दे रही थी?

उत्तर :

- 1848 में फ्रेडरिक सॉर्यू नामक एक फ्रांसीसी कलाकार ने चार चित्रों की एक शृंखला बनाई, जिसमें यूरोप और अमेरिका के लोग दिखाए गए हैं, सभी उम्र और सामाजिक वर्गों के स्त्री-पुरुष एक लंबी लाइन में स्वतंत्रता की प्रतिमा की प्रार्थना (वंदना) करते हुए जा रहे हैं।
- स्वतंत्रता को महिला का रूप दिया गया तथा उसके एक हाथ में ज्ञानोदय की मशाल और दूसरे हाथ में मनुष्य के अधिकारों का घोषणापत्र लिए दिखाया गया है।
- प्रतिमा के सामने जमीन पर निरंकुश संस्थानों के ध्वस्त अवशेष बिखरे हुए पड़े दिखाए गए हैं।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. यूरोप में राष्ट्र राज्य की अवधारणा का विकास कैसे हुआ? राष्ट्र राज्यों के निर्माण में क्या यह सफल रही?

उत्तर :

- 19वीं सदी में राष्ट्रवाद एक ऐसी शक्ति के रूप में उभरा जिसने यूरोप के भौतिक और मानसिक स्वरूप को बदल डाला।
- इन परिवर्तनों का अंतिम परिणाम **राष्ट्र राज्य** के रूप में सामने आया।
- एक लंबे समय से आधुनिक राष्ट्र के निर्माण की प्रक्रिया चल रही थी जिसमें एक केंद्रीयकृत सत्ता एक परिभाषित निश्चित भू-भाग पर शासन करे।
- राष्ट्र राज्य** एक ऐसा राज्य था जिसमें इसके नागरिकों के बहुमत और शासक के साथ-साथ आम नागरिक में भी सामूहिक अपनेपन की भावना हो।
- यह सामूहिक अपनेपन की भावना, संघर्षों, नेताओं के कार्यों और आम आदमी द्वारा विकसित की गई।
- इस अवधारणा ने राष्ट्र राज्यों को एक समान भाषा, समान संस्कृति और एक पहचान दी और **करो या मरो** की भावना दी।

2. इटली के एकीकरण के मार्ग में आने वाली प्रमुख बाधाओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :

इटली के एकीकरण के मार्ग में आने वाली बाधाएँ-

- विदेशी आधिपत्य**- इटली के अधिकांश राज्यों पर विदेशियों का शासन था। उत्तरी इटली के लॉम्बार्डी और वेनेशिया, आस्ट्रिया के अधीन थे। टस्कनी, परमा और मोडेना पर सर्ब वंश के राजकुमारों का हाथ था, जो आस्ट्रिया से प्रभावित थे। दक्षिण में नेपल्स और सिसिली में बूर्बेन वंश के राजाओं का शासन था। रोम पर पोप का शासन था जिसके कारण इटली के एकीकरण में सबसे अधिक कठिनाई थी। एक प्रांत दूसरे का विरोधी था।
- इटली के शासकों की इच्छा**- इटली के शासकों की इच्छा थी कि वे जनता की स्वतंत्रता का अपहरण करके अपने निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी शासन को उस पर थोप दें। इस कारण इटली के देशभक्त अपनी भावनाओं को खुले रूप से प्रचारित नहीं कर पाते थे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए देशभक्तों ने गुप्त समितियों का गठन किया जिनको कार्बोनरीज कहा जाता था।

1815 से 1850 तक इन समितियों ने पूरे देश में देशभक्ति की लहर दौड़ा दी थी। इन समितियों में से प्रमुख भूमिका नेपल्स स्थित समिति की थी।

3. ज्युसेपे मेत्सिनी और इटली के अन्य देशभक्तों के विचारों का लगभग 150 शब्दों में वर्णन कीजिए।

उत्तर :

इटली के महान क्रांतिकारी और देशभक्त-

- इटली के दो महान देशभक्त ज्युसेपे मेत्सिनी और गैरीबाल्डी दोनों ही अपने देश को विदेशी शक्तियों की दासता से मुक्त कराना चाहते थे और वे देश में फैले हुए अनेक छोटे-छोटे राज्यों को एकता के सूत्र में बाँधकर इटली को एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाना चाहते थे। उन्होंने **युवा इटली** नामक एक आंदोलन चलाया और इसके माध्यम से अपने देश के युवकों को राष्ट्रहित के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित किया।
- 1848 में जब फ्रांस और यूरोप के अन्य देशों में निरंकुश राजतंत्र के विरुद्ध क्रांतियाँ भड़क उठीं तो इटली के क्रांतिकारियों और देशभक्तों ने अपने-अपने राज्यों के सत्ताधारी शासकों को लोकहित में लोकतांत्रिक सुधार करने के लिए विवश किया।
- एकीकरण के विचार से प्रेरित एक अन्य क्रांतिकारी सार्डीनिया के प्रधानमंत्री कावूर ने कृषि, उद्योग, व्यापार और सामाजिक सुधारों की ओर ध्यान दिया। उसने ब्रिटेन और फ्रांस की सहायता करके बदले में उनकी सहायता लेकर आस्ट्रिया जैसे शक्तिशाली राज्य को पराजित किया।

4. कावूर ने फ्रांस के शासक को आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध छेड़ने के लिए सहमत करके लोम्बार्डी नामक राज्य को इटली में मिला लिया, भले ही युद्ध में फ्रांस हार गया था।
 5. गैरीबाल्डी ने देश की एकता के लिए विदेशी सहायता प्राप्त करने का समर्थन नहीं किया। वह अपने देशभक्तों और इटली के नौजवानों के साथ मिलकर सिसिली राज्यों (इनकी संख्या दो थी) की ओर कूच किया और 1848 के नवम्बर माह के अंतिम दिनों तक दोनों सिसिली राज्यों को इटली में मिला लिया गया।
 6. मार्च, 1861 में इटली के राजा विक्टर इमेनुएल द्वितीय ने स्वयं को संयुक्त इटली का राजा घोषित कर दिया। कालांतर में पोप के छोटे से राज्य को छोड़कर शेष रोम को भी इटली में मिला लिया गया और रोम को ही संयुक्त इटली की राजधानी घोषित कर दिया गया।
4. फ्रेडरिक सॉरयू की कल्पनादर्शी दृष्टि क्या थी? उन तीन अभिव्यक्तियों की चर्चा कीजिए जिन्हें उसने अपने प्रसिद्ध **फर्स्ट प्रिंट** में दर्शाया है।

उत्तर :

1. फ्रेडरिक सॉरयू की कल्पनादर्शी दृष्टि में यूरोप के देश ऐसे राष्ट्र-राज्य हैं, जिनका अपना ध्वज तथा राष्ट्रीय पोशाक है।
 2. अपने **फर्स्ट प्रिंट** में उसने विभिन्न समूहों के लोगों की रैली को दर्शाया है जो स्वतंत्रता की मूर्ति के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट कर रहे हैं। इससे निम्नलिखित अभिव्यक्तियाँ प्रदर्शित होती हैं—
 1. अमेरिका की रैली यह प्रदर्शित करती है कि अमेरिका तथा स्विट्जरलैंड की तरह अन्य देशों को भी राष्ट्र राज्य बनना चाहिए।
 2. फ्रांस के लोगों के हाथ में तिरंगा झंडा अन्य देशों को क्रांति के लिए प्रेरित कर रहा है ताकि वे भी राष्ट्र राज्य बन सकें।
 3. जर्मनी के लोगों के हाथों में विभिन्न रंगों के झंडे एकता की आवश्यकता को प्रदर्शित कर रहे हैं।
 4. दूसरे देशों द्वारा निर्मित स्वतंत्रता की मूर्ति की ओर बढ़ रहा चौथा समूह राष्ट्र राज्य के निर्माण के अंतिम लक्ष्य को प्रदर्शित कर रहा है।
 5. ईसा मसीह, संत तथा देवदूतों को चित्र में दर्शाना विश्व के समस्त देशों के बीच बंधुता को प्रदर्शित करता है।
- कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।
5. राष्ट्रवाद साम्राज्यवाद के साथ मिलकर यूरोप को विनाश की ओर ले गया। इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर :

इस कथन की पुष्टि बाल्कन राज्यों के उदाहरण द्वारा की जा सकती है—

1. बाल्कन राज्यों में आधुनिक रोमानिया, बुल्गारिया, अल्बेनिया, यूनान, मेसिडोनिया, क्रोएशिया, बोस्निया-हर्जेगोविना, स्लोवेनिया, सर्बिया तथा मॉन्टेनिग्रो शामिल थे। उनमें से अधिकतर देश ऑटोमन साम्राज्य के अंग थे। रुमानी राष्ट्रवाद के प्रभाव में ऑटोमन साम्राज्य में अलगाव का एक दौर शुरू हुआ।
2. बाल्कन प्रदेश के लोगों ने अपनी राष्ट्रीयता के आधार पर स्वतंत्रता एवं राजनीतिक अधिकारों की माँग शुरू की। जैसे ही उन्हें स्वतंत्रता मिलती थी वे किसी न किसी विदेशी शक्ति द्वारा अधीन बना लिये जाते थे।
3. अब वे (अपने विदेशी संरक्षक के प्रभाव में) अपने क्षेत्र के विस्तार के लिए एक-दूसरे के साथ संघर्ष करने लगे। यह दरअसल साम्राज्यवाद की शुरुआत थी।
4. बड़ी शक्तियाँ जैसे रूस, जर्मनी, इंग्लैंड तथा ऑस्ट्रो-हंगरी के मध्य बाल्कन प्रदेश पर अपना नियंत्रण स्थापित करने के लिए प्रतिस्पर्धा होने लगी। इसी प्रतिस्पर्धा ने अंततः प्रथम विश्वयुद्ध को जन्म दिया तथा यूरोप को विनाश के कगार पर ला खड़ा किया।

6. जर्मनी की प्रारंभिक राजनीतिक स्थिति और उसके एकीकरण से संबंधित प्रमुख कदमों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

1. एकीकरण से पूर्व जर्मनी की राजनीतिक स्थिति— अठारहवीं शताब्दी में जर्मनी अनेक राज्यों में बँटा हुआ था, जिनमें से कुछ शहरों से बड़े आकार के न थे। नेपोलियन युद्ध के बाद भी जर्मनी में अड़तालीस (48) स्वतंत्र राज्य बचे रह गए थे। इनमें प्रशा, बर्तेंम्बर्ग, बावेरिया, बेडन और सैक्सोनी काफी बड़े राज्य थे। आकार और सैनिक शक्ति की दृष्टि से प्रशा सबसे शक्तिशाली था।

1845 ई. में जर्मनी के प्रत्येक राज्य में विद्रोह हुए और शासकों को लोकतंत्रीय संविधान बनाने पर मजबूर किया गया। जर्मनी को एक करने की दृष्टि से और संयुक्त जर्मनी के लिए संविधान बनाने के उद्देश्य से फ्रैंकफर्ट में एक सभा बैठी। फ्रैंकफर्ट की सभा ने जर्मनी के एकीकरण का प्रस्ताव रखा। इसके अंतर्गत एक संवैधानिक राजतंत्र का निर्माण होना था जो प्रशा के राजा के अधीन काम करता और यह राजा जर्मनी का सम्राट कहलाता लेकिन राजा ने इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया तथा इस प्रयास को सैन्य शक्ति से कुचल दिया।

2. जर्मनी के एकीकरण की प्रमुख अवस्थाएँ—

1. सैन्यशक्ति का प्रयोग करके एकीकरण की संभावना सुस्पष्ट हो गई थी।
2. जर्मनी के प्रधानमंत्री बिस्मार्क ने **रक्त और लोहे की नीति** या युद्ध का नेतृत्व किया। उसने आस्ट्रिया को जर्मन संघ से निकाल बाहर किया। फिर आस्ट्रिया का पक्ष लेकर उसने डेनमार्क पर हमला बोल दिया।

यह युद्ध श्लेषविग और होल्स्टीन के अधिकार को लेकर हुआ। इस युद्ध में डेनमार्क पराजित हुआ। इसके बाद उसने इटली का पक्ष लेकर आस्ट्रिया को पराजित किया। पुराने संघ के स्थान पर उसने 1866 में जर्मनी के 22 राज्यों को मिलाकर उत्तरी जर्मन संघ बनाया। संविधान में प्रशा के शासक का पद वंशानुगत रखा गया।

3. अंतिम युद्ध फ्रांस के साथ हुआ। फ्रांस की सेना पराजित हुई और नेपोलियन को बंदी बना लिया गया। जर्मनी के शेष राज्यों को भी संयुक्त जर्मनी में शामिल कर लिया गया। पराजय के बाद फ्रांस एक गणतंत्र हो गया और जर्मनी का एकीकरण भी पूरा हो गया।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

7. राष्ट्रवाद की भावना तब पनपती है, जब लोग यह महसूस करने लगते हैं कि वे एक ही राष्ट्र के अंग हैं। इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर :

राष्ट्रवाद की भावना तब पनपती है जब लोग यह महसूस करने लगते हैं कि वे एक ही राष्ट्र के अंग हैं, जब वे एक-दूसरे को एकता के सूत्र में बाँधने वाली कोई साझा बात ढूँढ़ लेते हैं। सामूहिक अपनेपन की यह भावना आंशिक रूप से संयुक्त संघर्षों के चलते पैदा हुई थी। इनके अलावा बहुत सारी सांस्कृतिक प्रक्रियाएँ भी थीं जिनके जरिए राष्ट्रवाद लोगों की कल्पना और दिलोदिमाग पर छा गया था। इतिहास व साहित्य, लोक कथाएँ व गीत, चित्र व प्रतीक, सभी ने राष्ट्रवाद को साकार करने में अपना योगदान दिया था। राष्ट्र की पहचान सबसे ज्यादा किसी तस्वीर में अंकित की जाती है। इससे लोगों को एक ऐसी छवि गढ़ने में मदद मिलती है जिसके जरिए वे राष्ट्र को पहचान सकते हैं। 20वीं सदी में राष्ट्रवाद के विकास के साथ भारत की पहचान भी भारत माता की छवि का रूप लेने लगी। यह तस्वीर पहली बार बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने बनाई थी। 1870 के दशक में उन्होंने मातृभूमि की स्तुति के रूप में **वंदे मातरम्** गीत लिखा था। बाद में इसे उन्होंने अपने उपन्यास आनंदमठ में शामिल कर लिया। यह गीत बंगाल में स्वदेशी आंदोलन में खूब गाया गया। राष्ट्रवाद का विचार भारतीय लोक कथाओं को पुनर्जीवित करने के आंदोलन से भी मजबूत हुआ। 19वीं सदी के आखिर में राष्ट्रवादियों ने भाटों व चारणों द्वारा गाई-सुनाई जाने वाली लोक कथाओं को दर्ज करना शुरू कर दिया। वे लोक गीतों व जनश्रुतियों को इकट्ठा करने के लिए गाँव-गाँव घूमने लगे। उनका मानना था कि यही कहानियाँ हमारी उस परंपरागत संस्कृति की सही तस्वीर पेश करती हैं जो बाहरी ताकतों के प्रभाव से भ्रष्ट और दूषित हो चुकी हैं। अपनी राष्ट्रीय पहचान को ढूँढ़ने और अपने अतीत में गौरव का भाव पैदा करने के लिए इस लोक परंपरा को बचाकर रखना बहुत जरूरी था।

8. यूरोप में राष्ट्र के विचार के निर्माण में संस्कृति ने किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभाई? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

राष्ट्रवाद का विकास केवल युद्धों तथा क्षेत्रीय विस्तार से ही नहीं हुआ। इसके विकास में संस्कृति ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कला, काव्य, कहानियाँ, किस्सों और संगीत ने राष्ट्रवादी भावनाओं को उभारने और व्यक्त करने में सहयोग दिया। इस संबंध में निम्नलिखित उदाहरण दिये जा सकते हैं—

1. **रुमानीवाद**—रुमानीवाद एक सांस्कृतिक आंदोलन था जो एक विशेष प्रकार की राष्ट्रीय भावना का विकास करना चाहता था। रुमानी कलाकारों तथा कवियों ने तर्क-वितर्क और विज्ञान की देन के स्थान पर अंतर्दृष्टि और रहस्यवादी भावनाओं पर बल दिया। उनका प्रयास था कि एक सांझी-सामूहिक विरासत की अनुभूति और एक साझे सांस्कृतिक अतीत को राष्ट्र का आधार बनाया जाए।

जर्मन दार्शनिक योहान गॉटफ्राइड जैसे रुमानी चिंतकों ने दावा किया कि सच्ची जर्मन संस्कृति उसके आम लोगों में निहित है। उनका विश्वास था कि राष्ट्र की सच्ची आत्मा लोकगीतों, जनकाव्य तथा लोक कथाओं से प्रकट होती है। इसलिए लोकसंस्कृति के इन घटकों को एकत्र और अंकित करना राष्ट्र के निर्माण के लिए आवश्यक है।

2. **स्थानीय बोलियाँ तथा लोक साहित्य**—राष्ट्रवाद के विकास के लिए स्थानीय बोलियों पर बल और स्थानीय लोक साहित्य को एकत्र किया गया। इसका उद्देश्य आधुनिक राष्ट्रीय संदेश को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाना था जिनमें से अधिकांश निरक्षर थे। यह बात विशेष रूप से पोलैंड पर लागू होती है। इस देश का 18वीं शताब्दी के अंत में रूस, प्रशा और आस्ट्रिया जैसी बड़ी शक्तियों ने विभाजन कर दिया था। भले ही पोलैंड अब स्वतंत्र भूक्षेत्र नहीं था तो भी संगीत और भाषा के माध्यम से वहाँ राष्ट्रीय भावना को जीवित रखा गया। उदाहरण के लिए कैरोल कुपिस्की ने अपने ओपेरा और संगीत से राष्ट्रीय संघर्ष का गुणगान किया और पोलेलेस तथा माजुरका जैसे लोकनृत्यों को राष्ट्रीय प्रतीकों में बदल दिया।

NCERT पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

1. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखें—

1. ज्युसेपे मेत्सिनी
2. काउंट कैमिलो दे कावूर
3. यूनानी स्वतंत्रता युद्ध
4. फ्रैंकफर्ट संसद
5. राष्ट्रवादी संघर्षों में महिलाओं की भूमिका

उत्तर :

1. **ज्युसेपे मेत्सिनी**—ज्युसेपे मेत्सिनी इटली का एक

क्रांतिकारी था जो उन राजतंत्रीय व्यवस्थाओं का विरोध कर रहा था जो वियना कांग्रेस के बाद स्थापित हुई थीं। उसका जन्म 1807 में जेनोआ में हुआ था और वह कार्बोनारी के गुप्त संगठन का सदस्य बन गया। चौबीस साल की युवावस्था में लिगुरिया में क्रांति करने के कारण उसे बाहर निकाल दिया गया। उसके बाद उसने दो और भूमिगत संगठन बनाए। पहला था मार्सेई में यंग इटली और दूसरा बर्न में यंग यूरोप, जिसके सदस्य फ्रांस, पोलैंड, इटली और जर्मन राज्यों में समान विचार रखने वाले युवा थे। मेत्सिनी का विश्वास था कि ईश्वर की इच्छा के अनुरूप राष्ट्र की मनुष्यों की प्राकृतिक इकाई थी। अतः इटली छोटे राज्यों और प्रदेशों के पैबंदों की तरह नहीं रह सकता था।

2. **काउंट कैमिलो दे कावूर**—वह इटली के एक प्रांत सार्डिनिया-पीडमॉण्ट के शासक विक्टर इमेनुएल द्वितीय का प्रमुख मंत्री था जिसने इटली के प्रदेशों को एकत्रित करने वाले आंदोलन का नेतृत्व किया, वह न तो एक क्रांतिकारी था और न ही जनतंत्र में विश्वास रखने वाला था। इतालवी अभिजात वर्ग के सभी अमीर और शिक्षित सदस्यों की तरह वह इतालवी भाषा से कहीं अच्छी फ्रेंच बोलता था। वह फ्रांस से सार्डिनिया-पीडमॉण्ट की एक चतुर कूटनीतिक संधि, जिसके पीछे कावूर का हाथ था, से सार्डिनिया-पीडमॉण्ट 1859 में ऑस्ट्रियाई बलों को हरा पाने में सफल हुआ।
3. **यूनानी स्वतंत्रता युद्ध**—पंद्रहवीं शताब्दी से यूनान ऑटोमन साम्राज्य का एक भाग था। यूरोप में क्रांतिकारी राष्ट्रवाद की प्रगति से यूनानियों का स्वतंत्रता के लिए संघर्ष 1821 में शुरू हो गया। यूनान में राष्ट्रवादियों को निर्वासन में रह रहे यूनानियों के साथ पश्चिमी यूरोप के अनेक लोगों का भी समर्थन मिला जो प्राचीन यूनानी संस्कृति के प्रति सहानुभूति रखते थे। कवियों और कलाकारों ने यूनान को यूरोपीय सभ्यता का पालना बता कर प्रशंसा की और एक मुस्लिम साम्राज्य के विरुद्ध यूनान के संघर्ष के लिए जनमत जुटाया। अंग्रेज कवि लॉर्ड बायरन ने धन एकत्रित किया और बाद में युद्ध में लड़ने भी गए जहाँ 1824 में बुखार से उनकी मृत्यु हो गई। अंततः 1832 की कुस्तुनतुनिया की संधि ने यूनान को एक स्वतंत्र राष्ट्र की मान्यता दी।
4. **फ्रैंकफर्ट संसद**—जर्मन क्षेत्रों में बड़ी संख्या में राजनीतिक संगठनों ने फ्रैंकफर्ट शहर में मिलकर एक सर्व-जर्मन नेशनल एसेंबली के पक्ष में मतदान का निर्णय लिया। 18 मई, 1848 को, 831 निर्वाचित प्रतिनिधियों ने एक सजे-थजे जुलूस में जाकर फ्रैंकफर्ट संसद में अपना स्थान ग्रहण किया। यह संसद सेंट पॉल चर्च में आयोजित हुई। उन्होंने एक जर्मन राष्ट्र के लिए एक संविधान का प्रालेख तैयार किया। इस राष्ट्र की अध्यक्षता एक ऐसे राजा को

सौंपी गई जिसे संसद के नियंत्रण में रहना था।

5. **राष्ट्रवादी संघर्षों में महिलाओं की भूमिका**—उदारवादी आंदोलन के अंतर्गत महिलाओं को राजनीतिक अधिकार प्रदान करने का मुद्दा विवादास्पद था। हालाँकि आंदोलन में वर्षों से बड़ी संख्या में महिलाओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया था। महिलाओं ने अपने राजनीतिक संगठन स्थापित किए, अखबार शुरू किए और राजनीतिक बैठकों और प्रदर्शनों में भाग लिया। इसके बावजूद उन्हें एसेंबली के चुनाव के दौरान मताधिकार से वंचित रखा गया था। जब सेंट पॉल चर्च में फ्रैंकफर्ट संसद की सभा आयोजित की गई थी, तब महिलाओं को केवल प्रेक्षकों की हैसियत से दर्शकों में खड़े होने दिया गया।

2. फ्रांसीसी लोगों के बीच सामूहिक पहचान का भाव पैदा करने के लिए फ्रांसीसी क्रांतिकारियों ने क्या कदम उठाए?

उत्तर :

1789 ई. में घटित फ्रांसीसी क्रांति के साथ राष्ट्रवाद की प्रथम स्पष्ट अभिव्यक्ति हुई। प्रारंभ से ही फ्रांसीसी क्रांतिकारियों ने ऐसे अनेक कदम उठाए, जिनसे फ्रांसीसी लोगों में सामूहिक पहचान की भावना बलवती हो सकती थी। ये कदम इस प्रकार थे—

1. पितृभूमि और नागरिक जैसे विचारों ने एक संयुक्त समुदाय के विचार पर जोर दिया, जिसे एक संविधान के अंतर्गत समान अधिकार प्राप्त थे।
2. एक नया फ्रांसीसी झंडा चुना गया, जिसने पहले के राष्ट्रध्वज की जगह ले ली।
3. इस्टेट जनरल का चुनाव सक्रिय नागरिकों के समूह द्वारा किया जाने लगा और उसका नाम बदलकर नेशनल एसेंबली कर दिया गया।
4. नई स्तुतियाँ रची गईं, शपथें ली गईं, शहीदों का गुणगान हुआ और यह सब राष्ट्र के नाम पर हुआ।
5. एक केन्द्रीय प्रशासनिक व्यवस्था लागू की गई, जिसने अपने भू-भाग में रहने वाले सभी नागरिकों के लिए समान कानून बनाए।
6. आंतरिक आयात-निर्यात शुल्क समाप्त कर दिए गए।
7. तौलने और नापने के लिए एक तरह की व्यवस्था लागू की गई।
8. क्षेत्रीय बोलियों के स्थान पर पेरिस की फ्रेंच भाषा ही राष्ट्र-भाषा के रूप में स्थापित हुई।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

3. मारीआन और जर्मनिया कौन थे, जिस तरह उन्हें चित्रित किया गया उसका क्या महत्व था?

उत्तर :

फ्रांस की क्रांति के समय कलाकारों ने स्वतंत्रता, न्याय और गणतंत्र जैसे विचारों को प्रकट करने के लिए नारी प्रतीकों का

आश्रय लिया। इन चित्रकारों में मारीआन और जर्मनिया प्रमुख थे। इन दोनों की छवि राष्ट्र रूपक की बन गयी।

मारीआन—19वीं शताब्दी में नारी रूपकों का आविष्कार कलाकारों ने किया। मारीआन एक लोकप्रिय ईसाई नाम है। अतः फ्रांस ने अपने स्वतंत्रता के नारी प्रतीक को यही नाम दिया। यह छवि जन राष्ट्र के विचार का प्रतीक थी। उसके चिह्न भी स्वतंत्रता और गणतंत्र के थे— लाल टोपी, तिरंगा और कलंगी।

मारीआन की प्रतिमाएँ सार्वजनिक चौराहे पर लगाई गई ताकि जनता को एकता के राष्ट्रीय प्रतीक की याद आती रहे और लोगों का विश्वास बना रहे। मारीआन की छवि सिक्कों और डाक टिकटों पर भी अंकित की गई। मारीआन की ये तस्वीरें फ्रांसीसी गणराज्य का प्रतिनिधित्व करती हैं।

जर्मनिया— जर्मनिया, जर्मन राष्ट्र का रूपक बन गई। चाक्षुष अभिव्यक्तियों में जर्मनिया बलूत वृक्ष के पत्तों का मुकुट पहनती है क्योंकि जर्मन बलूत वीरता का प्रतीक है। जर्मनिया की तलवार पर **जर्मन तलवार जर्मन राइन की रक्षा करती है** अंकित है। यह तस्वीर स्वतंत्रता, न्याय और गणतंत्र जैसे विचारों को प्रतीकात्मक रूप से व्यक्त करती है।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

4. जर्मन एकीकरण की प्रक्रिया का संक्षेप में पता लगाएँ।

उत्तर :

जर्मनी के मध्यवर्गीय लोगों ने 1848 में जर्मन महासंघ के अलग-अलग क्षेत्रों को जोड़कर एक निर्वाचित संसद द्वारा शासित राष्ट्र-राज्य बनाने का प्रयत्न किया था। मगर राष्ट्र निर्माण की यह उदारवादी पहल राजशाही और फौज की ताकत ने मिलकर दबा दी। उनका समर्थन प्रशा के बड़े भूस्वामियों ने भी किया। उसके बाद प्रशा ने राष्ट्रीय एकीकरण के आंदोलन का नेतृत्व भी संभाल लिया। उसका प्रमुख मंत्री, ऑटो वॉन बिस्मार्क इस प्रक्रिया का जनक था जिसने प्रशा की सेना एवं नौकरशाही की मदद ली। सात वर्ष के दौरान ऑस्ट्रिया, डेनमार्क और फ्रांस से तीन युद्धों में प्रशा की जीत हुई और जर्मनी के एकीकरण की प्रक्रिया पूरी हुई। जनवरी 1871 में वर्साय में हुए एक समारोह में प्रशा के राजा विलियम प्रथम को जर्मनी का सम्राट घोषित किया गया।

5. अपने शासन वाले क्षेत्रों में शासन व्यवस्था को ज्यादा कुशल बनाने के लिए नेपोलियन ने क्या बदलाव किए?

उत्तर :

प्रथम कौंसिल के रूप में नेपोलियन ने फ्रांस में अनेक सुधार किए। फ्रांस की क्रान्ति के उपरांत पुरानी सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक व्यवस्था समाप्त हो गयी थी। अतः नेपोलियन ने अपने शासन वाले क्षेत्रों में सुधार के उद्देश्य से निम्नलिखित परिवर्तन किए—

1. सामाजिक समानता को स्थापित करने के लिए उच्च व

निम्न वर्ग के बीच अंतर को समाप्त कर दिया गया।

2. प्राचीन सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक व्यवस्था को समाप्त कर दिया गया।
3. शहरों में कारीगरों के श्रेणी संघों के नियंत्रणों को हटा दिया गया। यातायात और संचार व्यवस्थाओं को सुधारा गया।
4. आर्थिक सुधार करने के उद्देश्य से **बैंक ऑफ फ्रांस** की स्थापना की गई।
5. उसने दंड विधान को कठोर बनाया तथा जूरी प्रथा व मुद्रित पत्रों को पुनः प्रारंभ किया।
6. शिक्षा की उन्नति के लिए **यूनिवर्सिटी ऑफ फ्रांस** की स्थापना की, जहाँ लैटिन, फ्रेंच भाषा, साधारण विज्ञान व गणित की मुख्य तौर पर शिक्षा दी जाती थी।
7. कैथोलिक धर्म को राजधर्म बनाया।
8. 1804 ई. की नेपोलियन संहिता ने जन्म पर आधारित विशेषाधिकार समाप्त कर दिए थे। उसने कानून के समक्ष समानता और संपत्ति के अधिकार को सुरक्षित बनाया।
9. समान कर प्रणाली लागू की गई।
10. सामंती व्यवस्था को खत्म किया और किसानों को भू-दासत्व और जागीरदारी शुल्कों से मुक्ति दिलाई। इस प्रकार नेपोलियन के सुधारों से किसानों, कारीगरों, मजदूरों और नए उद्योगपतियों ने स्वतंत्रता-प्राप्ति का उत्सव मनाया।

WWW.CBSE.ONLINE

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. गाँधी जी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे थे—

- (a) जनवरी 1913 में (b) जनवरी 1914 में
(c) जनवरी 1915 में (d) जनवरी 1916 में

उत्तर (c) जनवरी 1915 में

2. गाँधी जी ने निम्नलिखित में से कौन-सा आंदोलन चलाया ?

- (a) चंपारन के बागान किसानों का आंदोलन
(b) गुजरात के खेड़ा जिले के किसानों का आंदोलन
(c) अहमदाबाद के सूती कपड़ा मिल के मजदूरों का आंदोलन
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

3. गाँधी जी के सत्याग्रह का मूल आधार था—

- (a) हिंसा (b) अहिंसा
(c) मारपीट (d) धरना

उत्तर (b) अहिंसा

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

4. दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद गाँधी जी ने निम्नलिखित में से किस स्थान पर सत्याग्रह संबंधी आंदोलन किया ?

- (a) चंपारन (बिहार) (b) खेड़ा (गुजरात)
(c) अहमदाबाद (गुजरात) (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

5. 1916 में गाँधी जी ने निम्नलिखित में किस स्थान पर दमनकारी बागान व्यवस्था के खिलाफ किसानों के लिए संघर्ष किया ?

- (a) चंपारन
(b) खेड़ा
(c) अहमदाबाद
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (a) चंपारन

6. 1917 में गाँधी जी ने गुजरात के किस स्थान पर किसानों की मदद के लिए सत्याग्रह का आयोजन किया ?

- (a) अहमदाबाद
(b) दांडी
(c) खेड़ा
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (c) खेड़ा

7. 1918 में गाँधी जी किस स्थान पर सूती कपड़ा कारखानों के मजदूरों के बीच सत्याग्रह आंदोलन चलाने पहुँचे ?

- (a) सूरत (b) अहमदाबाद
(c) खेड़ा (d) दांडी

उत्तर (b) अहमदाबाद

8. प्रथम विश्वयुद्ध के परिणामस्वरूप निम्नलिखित में से कौन-सा बदलाव हुआ ?

- (a) रक्षा व्यय में वृद्धि हुई
(b) कीमतों में वृद्धि हुई
(c) सीमा शुल्क में वृद्धि एवं आयकर शुरू हुआ
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

9. रॉलेट एक्ट कब पास हुआ ?

- (a) 1919 में (b) 1920 में
(c) 1921 में (d) 1922 में

उत्तर (a) 1919 में

10. बम्बई में खिलाफत समिति का गठन कब किया गया था ?

- (a) 1915 में (b) 1917 में
(c) 1919 में (d) 1920 में

उत्तर (c) 1919 में

11. किस स्थान पर जलियाँवाला बाग हत्याकांड हुआ ?

- (a) दिल्ली में (b) अमृतसर में
(c) मुंबई में (d) कोलकाता में

उत्तर (b) अमृतसर में

12. जलियाँवाला बाग नरसंहार के लिए उत्तरदायी था-

- (a) वायसराय इरविन (b) जनरल डायर
(c) हैमिल्टन (d) वायसराय मेओ

उत्तर (b) जनरल डायर

13. हिंद स्वराज पुस्तक के लेखक थे-

- (a) महात्मा गाँधी (b) पं. जवाहरलाल नेहरू
(c) मोतीलाल नेहरू (d) भीमराव अंबेडकर

उत्तर (a) महात्मा गाँधी

14. कांग्रेस का कलकत्ता अधिवेशन कब हुआ ?

- (a) सितंबर, 1918 में (b) जुलाई, 1919 में
(c) सितंबर, 1920 में (d) जुलाई, 1922 में

उत्तर (c) सितंबर, 1920 में

15. कांग्रेस का नागपुर अधिवेशन कब हुआ ?

- (a) सितंबर, 1919 में (b) दिसंबर, 1920 में
(c) नवंबर, 1920 में (d) दिसंबर, 1919 में

उत्तर (b) दिसंबर, 1920 में

16. असहयोग आंदोलन शुरू हुआ ?

- (a) जनवरी, 1920 में (b) जनवरी, 1919 में
(c) जनवरी, 1918 में (d) जनवरी, 1921 में

उत्तर (d) जनवरी, 1921 में

17. इनलैंड इमिग्रेशन एक्ट कब पारित हुआ ?

- (a) 1858 में (b) 1859 में
(c) 1869 में (d) 1879 में

उत्तर (b) 1859 में

18. दलित वर्ग एसोसिएशन की स्थापना किसने की ?

- (a) महात्मा गाँधी ने (b) डॉ. अंबेडकर ने
(c) दादा भाई नौरोजी ने (d) जयप्रकाश नारायण ने

उत्तर (b) डॉ. अंबेडकर ने

19. चंपारन आंदोलन किसके द्वारा शुरू किया गया ?

- (a) महात्मा गाँधी के द्वारा
(b) डॉ. बी. आर. अंबेडकर के द्वारा
(c) पं. जवाहरलाल नेहरू के द्वारा
(d) शौकत अली के द्वारा

उत्तर (a) महात्मा गाँधी के द्वारा

20. गाँधी जी द्वारा चंपारन आंदोलन कब शुरू किया गया ?

- (a) 1915 में (b) 1916 में
(c) 1918 में (d) 1921 में

उत्तर (b) 1916 में

21. खिलाफत आंदोलन कब प्रारंभ हुआ ?

- (a) 1918 में (b) 1919 में
(c) 1920 में (d) 1921 में

उत्तर (b) 1919 में

22. सविनय अवज्ञा आंदोलन कब शुरू किया गया था ?

- (a) 1924 में (b) 1928 में
(c) 1930 में (d) 1932 में

उत्तर (c) 1930 में

23. चौरी-चौरा हत्याकांड का संबंध है-

- (a) किसानों के चंपारन आंदोलन से
(b) अहमदाबाद के मजदूरों के आंदोलन से
(c) असहयोग आंदोलन से
(d) दांडी मार्च से

उत्तर (c) असहयोग आंदोलन से

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

24. असहयोग आंदोलन के कार्यक्रम का हिस्सा था ?

- (a) पदवियाँ लौटाना
(b) सरकारी नौकरियाँ छोड़ना
(c) विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

25. कौन गिरमिटिया मजदूर रहा था ?

- (a) बाबा रामचंद्र (b) महात्मा गांधी
(c) सुभाषचंद्र बोस (d) लोकमान्य तिलक

उत्तर (a) बाबा रामचंद्र

26. चौरी-चौरा किस राज्य में स्थित है ?

- (a) बिहार में (b) झारखंड में
(c) पश्चिमी बंगाल में (d) उत्तर प्रदेश में

उत्तर (d) उत्तर प्रदेश में

27. दांडी किस राज्य में स्थित है ?

- (a) गुजरात में (b) महाराष्ट्र में

- (c) राजस्थान में (d) उत्तर प्रदेश में
- उत्तर** (a) गुजरात में
- 28.** 29 दिसंबर, 1929 को किस अधिवेशन में पूर्ण स्वराज्य का प्रस्ताव स्वीकार किया गया ?
- (a) नागपुर (b) कानपुर
(c) लाहौर (d) दिल्ली
- उत्तर** (c) लाहौर
- 29.** 26 जनवरी, 1930 को किसने लाहौर में रावी नदी के तट पर तिरंगा फहराया था ?
- (a) पं. जवाहरलाल नेहरू ने (b) महात्मा गाँधी ने
(c) सुभाषचंद्र बोस ने (d) मोतीलाल नेहरू ने
- उत्तर** (a) पं. जवाहरलाल नेहरू ने
- 30.** नमक यात्रा शुरू हुई—
- (a) 12 मार्च, 1930 को (b) 6 अप्रैल, 1930 को
(c) 27 अप्रैल, 1930 को (d) 12 मई, 1930 को
- उत्तर** (a) 12 मार्च, 1930 को
- 31.** निम्नलिखित में से कौन क्रांतिकारी था ?
- (a) भगत सिंह (b) बटुकेश्वर दत्त
(c) जतिन दास (d) उपर्युक्त सभी
- उत्तर** (d) उपर्युक्त सभी
- 32.** दांडी यात्रा में गांधी जी के साथ कितने सहयोगी गए ?
- (a) 60 (b) 70
(c) 78 (d) 80
- उत्तर** (c) 78
- 33.** दूसरा गोलमेज सम्मेलन हुआ—
- (a) दिसंबर, 1931 में (b) अक्टूबर, 1930 में
(c) मार्च, 1928 में (d) जून, 1929 में
- उत्तर** (a) दिसंबर, 1931 में
- 34.** कौन-सा कथन सही है ?
- (a) 1930—रेलवे कामगारों की हड़ताल
(b) 1930—छोटा नागपुर की टिन खानों के मजदूरों का बहिष्कार
(c) 1932—गोदी कामगारों की हड़ताल
(d) उपर्युक्त सभी
- उत्तर** (d) उपर्युक्त सभी

- 35.** लॉर्ड इरविन ने भारत के लिए **डोमीनियन स्टेट्स** का ऐलान कब किया ?
- (a) 1826 में (b) 1928 में
(c) 1929 में (d) 1932 में
- उत्तर** (c) 1929 में
- 36.** लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वराज के लिए संघर्ष की शपथ और स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाने के लिए निम्नलिखित में कौन-सा दिन निश्चित किया गया ?
- (a) 26 जनवरी, 1930 (b) 26 जनवरी, 1950
(c) 15 अगस्त, 1942 (d) 15 अगस्त, 1947
- उत्तर** (a) 26 जनवरी, 1930
- 37.** भारतीय औद्योगिक एवं व्यावसायिक कांग्रेस का गठन कब हुआ ?
- (a) 1918 में (b) 1919 में
(c) 1920 में (d) 1922 में
- उत्तर** (c) 1920 में
- 38.** भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग परिसंघ का गठन कब हुआ ?
- (a) 1920 में (b) 1925 में
(c) 1927 में (d) 1932 में
- उत्तर** (c) 1927 में
- कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।
- 39.** गाँधी जी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को कब वापस लिया ?
- (a) 1930 में (b) 1931 में
(c) 1933 में (d) 1935 में
- उत्तर** (b) 1931 में
- 40.** साइमन कमीशन भारत कब पहुँचा ?
- (a) 1924 में (b) 1926 में
(c) 1928 में (d) 1929 में
- उत्तर** (c) 1928 में
- 41.** मोहम्मद अली और शौकत अली ने निम्नलिखित में से कौन-सा आंदोलन शुरू किया ?
- (a) भारत छोड़ो आंदोलन (b) चंपारन आंदोलन
(c) असहयोग आंदोलन (d) खिलाफत आंदोलन
- उत्तर** (d) खिलाफत आंदोलन
- 42.** असहयोग आंदोलन कब शुरू हुआ ?
- (a) 1918 में (b) 1919 में

(c) 1921 में (d) 1924 में

उत्तर (c) 1921 में

43. गाँधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन को निम्नलिखित में से किस घटना के कारण रोक दिया गया था?

(a) जलियाँवाला बाग हत्याकांड (b) चौरी-चौरा
(c) तौरी-तौरा (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (b) चौरी-चौरा

44. डिस्कवरी ऑफ इंडिया के लेखक निम्नलिखित में से कौन हैं?

(a) महात्मा गाँधी (b) इंदिरा गाँधी
(c) पं. जवाहरलाल नेहरू (d) लाल बहादुर शास्त्री

उत्तर (c) पं. जवाहरलाल नेहरू

45. पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव कांग्रेस द्वारा किस अधिवेशन में पारित किया गया?

(a) नागपुर (b) बम्बई
(c) कलकत्ता (d) लाहौर

उत्तर (d) लाहौर

46. प्रान्तीय एवं केन्द्रीय विधायी परिषदों में अनुसूचित जातियों के आरक्षण संबंधी पूना समझौता कब हुआ?

(a) 1930 में (b) 1932 में
(c) 1936 में (d) 1938 में

उत्तर (b) 1932 में

47. गाँधी जी के राजनीतिक गुरु कौन थे?

(a) शहीद भगत सिंह (b) लाला लाजपतराय
(c) सुभाषचंद्र बोस (d) गोपाल कृष्ण गोखले

उत्तर (d) गोपाल कृष्ण गोखले

48. स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। यह किसने कहा था?

(a) महात्मा गाँधी ने (b) लाला लाजपतराय ने
(c) लोकमान्य तिलक ने (d) विपिन चन्द्र पाल ने

उत्तर (c) लोकमान्य तिलक ने

49. ब्रिटिश संसद द्वारा भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम कब पारित किया गया?

(a) 1945 में (b) 1946 में
(c) 1947 में (d) 1949 में

उत्तर (c) 1947 में

50. गाँधी जी द्वारा तैयार किए गए स्वराज के तिरंगे झंडे में कौन-

सा रंग नहीं था?

(a) सफेद (b) लाल
(c) हरा (d) पीला

उत्तर (d) पीला

51. गाँधी जी स्वराज के झंडे में रखे चरखे के प्रतीक का अर्थ क्या था?

(a) स्वतंत्रता (b) स्वावलंबन
(c) समानता (d) दासता से मुक्ति

उत्तर (b) स्वावलंबन

52. बंगाल में स्वदेशी आंदोलन के दौरान तैयार तिरंगे झंडे में निम्न में कौन-सा रंग नहीं था?

(a) हरा (b) सफेद
(c) लाल (d) पीला

उत्तर (b) सफेद

53. गाँधी जी की प्रसिद्ध पुस्तक हिंद स्वराज किस वर्ष प्रकाशित हुई?

(a) 1919 ई. में (b) 1922 ई. में
(c) 1909 ई. में (d) 1930 ई. में

उत्तर (c) 1909 ई. में

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

54. जलियाँवाला बाग की घटना कब हुई?

(a) 8 अप्रैल, 1919 ई. (b) 10 अप्रैल, 1919 ई.
(c) 13 अप्रैल, 1919 ई. (d) 25 अप्रैल, 1919 ई.

उत्तर (c) 13 अप्रैल, 1919 ई.

55. गाँधी जी ने साबरमती आश्रम की स्थापना कब की?

(a) 1914 ई. (b) 1916 ई.
(c) 1918 ई. (d) 1919 ई.

उत्तर (b) 1916 ई.

56. रौलट एक्ट क्या था?

(a) प्रेस पर प्रतिबंध से संबंधित कानून
(b) दहेज विरोधी कानून
(c) राजनीतिक कैदियों को दो साल तक बिना मुकदमा चलाए जेल में बंद रखने से संबंधित कानून
(d) हथियारों के लिए लाइसेंस से संबंधित कानून।

उत्तर (c) राजनीतिक कैदियों को दो साल तक बिना मुकदमा चलाए जेल में बंद रखने से संबंधित कानून

57. 31 जनवरी, 1930 ई. को गाँधी जी ने वायसराय इरविन को एक खत लिखा। इस खत में उन्होंने 11 माँगों का उल्लेख किया। निम्न में से कौन-सी माँग 11 माँगों में प्रमुख थी?

- (a) नमक कर को खत्म करना
- (b) नई शिक्षा नीति लागू करना
- (c) व्यापार कर को समाप्त करना
- (d) स्वतंत्रता की माँग करना

उत्तर (a) नमक कर को खत्म करना

58. काँग्रेस के किस अधिवेशन में पूर्ण स्वराज की माँग की गई थी?

- (a) बम्बई
- (b) नागपुर
- (c) गया
- (d) लाहौर

उत्तर (d) लाहौर

59. भारत माता की पहली तस्वीर किसने बनाई?

- (a) अवनींद्रनाथ टैगोर
- (b) रवींद्रनाथ टैगोर
- (c) बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय
- (d) राजा रवि वर्मा

उत्तर (c) बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय

60. 1929 ई. में भारत के लिए डोमीनियन स्टेट्स का गोलमाल-सा ऐलान किसने किया?

- (a) लॉर्ड हार्डिंग
- (b) लॉर्ड लिटन
- (c) लॉर्ड रिपन
- (d) लॉर्ड इरविन

उत्तर (d) लॉर्ड इरविन

61. दक्षिण अफ्रीका से भारत आने के बाद गाँधी जी ने किन-किन स्थानों पर सत्याग्रह आंदोलन चलाया?

- (a) 1916 में बिहार के चंपारण जिले में
- (b) 1917 में गुजरात के खेड़ा जिले में
- (c) 1918 में अहमदाबाद के सूती कपड़ा मिलों के मजदूरों के पक्ष में सत्याग्रह आंदोलन चलाया
- (d) उपरोक्त सभी के मजदूरों के पक्ष में।

उत्तर (d) उपरोक्त सभी के मजदूरों के पक्ष में।

62. जलियाँवाला बाग में गोली चलाने की आज्ञा किसने दी थी?

- (a) जनरल डायर
- (b) लॉर्ड रिपन
- (c) जनरल विलियम
- (d) सर एडवर्ड

उत्तर (a) जनरल डायर

63. क्रिप्स भारत कब आया?

- (a) 1940 ई.
- (b) 1941 ई.
- (c) 1942 ई.
- (d) 1944 ई.

उत्तर (a) 1940 ई.

64. भारत छोड़ो आंदोलन कब शुरू हुआ?

- (a) जून, 1942 ई.
- (b) जुलाई, 1942 ई.
- (c) अगस्त, 1942 ई.
- (d) सितंबर, 1942 ई.

उत्तर (c) अगस्त, 1942 ई.

65. साइमन कमीशन की स्थापना कब हुई?

- (a) 1925 ई.
- (b) 1926 ई.
- (c) 1927 ई.
- (d) 1928 ई.

उत्तर (d) 1928 ई.

66. 1927 ई. में काँग्रेस और मुस्लिम लीग में किस बात को लेकर मतभेद थे?

- (a) अलग-अलग निर्वाचन क्षेत्र को लेकर
- (b) सविनय अवज्ञा आंदोलन को चलाने को लेकर
- (c) भावी विधानसभाओं में प्रतिनिधित्व को लेकर
- (d) पूर्ण स्वराज्य की माँग को लेकर

उत्तर (c) भावी विधानसभाओं में प्रतिनिधित्व को लेकर

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

67. पूना पैक्ट क्या था?

- (a) मौलाना आजाद और अंग्रेजों के बीच समझौता
- (b) जवाहरलाल नेहरू और अंग्रेजों के बीच समझौता
- (c) काँग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच समझौता
- (d) गाँधी जी और डॉ. भीमराव अंबेडकर के बीच समझौता

उत्तर (d) गाँधी जी और डॉ. भीमराव अंबेडकर के बीच समझौता

68. भारत में साइमन कमीशन का विरोध क्यों हुआ?

- (a) इस कमीशन में एक भी भारतीय सदस्य नहीं था
- (b) साइमन कमीशन भारत में भूमि लगान को बढ़ाना चाहती थी
- (c) यह कमीशन भारत में नई शिक्षा नीति लागू करना चाहती थी
- (d) साइमन कमीशन की नीतियाँ भारत विरोधी थीं

उत्तर (a) इस कमीशन में एक भी भारतीय सदस्य नहीं था

69. चौरी-चौरा में हिंसात्मक घटना कब हुई?

- (a) 5 फरवरी, 1922 ई.
- (b) 8 नवंबर, 1924 ई.
- (c) 10 फरवरी, 1927 ई.
- (d) 9 अप्रैल, 1930 ई.

उत्तर (a) 5 फरवरी, 1922 ई.

70. रौलट एक्ट के विरोध में देशव्यापी हड़ताल कब हुई?

- (a) 10 जनवरी, 1919 ई. (b) 13 मार्च, 1919 ई.
(c) 25 जून, 1919 ई. (d) 6 अप्रैल, 1919 ई.

उत्तर (d) 6 अप्रैल, 1919 ई.

71. गाँधी-इरविन समझौता कब हुआ?

- (a) 5 मार्च, 1931 ई. (b) 11 जून, 1932 ई.
(c) 10 मई, 1933 ई. (d) 22 जुलाई, 1934 ई.

उत्तर (a) 5 मार्च, 1931 ई.

72. महात्मा गाँधी की दांडी यात्रा कहाँ से प्रारंभ हुई?

- (a) दिल्ली (b) मद्रास
(c) नागपुर (d) सेवाग्राम

उत्तर (d) सेवाग्राम

73. कम्यूनल अवार्ड (सांप्रदायिक पंचाट) की घोषणा रैम्जे मैकडानॉल्ड ने कब की थी?

- (a) 10 अगस्त, 1932 ई.
(b) 10 सितंबर, 1932 ई.
(c) 10 अक्टूबर, 1932 ई.
(d) 10 नवंबर, 1932 ई.

उत्तर (a) 10 अगस्त, 1932 ई.

74. प्रथम गोलमेज सम्मेलन का आयोजन कब और कहाँ हुआ था?

- (a) दिल्ली, 1928 ई. (b) लंदन, 1930 ई.
(c) न्यूयार्क, 1931 ई. (d) मद्रास, 1932 ई.

उत्तर (b) लंदन, 1930 ई.

75. अपनी किस प्रसिद्ध पुस्तक में महात्मा गाँधी ने कहा था कि भारत में ब्रिटिश शासन भारतीयों के सहयोग से स्थापित हुआ था और यह शासन इसी सहयोग के कारण चल पा रहा है?

- (a) डिस्कवरी ऑफ इंडिया (b) एक्सपेरीमेंट विथ ट्रुथ
(c) हिंद स्वराज (d) सत्य और अहिंसा

उत्तर (c) हिंद स्वराज

76. दक्षिण अफ्रीका से गाँधी जी के भारत आने पर उनका सबसे पहला सत्याग्रह आंदोलन कौन-सा था?

- (a) खेड़ा आंदोलन
(b) बारदोली आंदोलन
(c) चंपारण आंदोलन
(d) व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन

उत्तर (c) चंपारण आंदोलन

77. प्रदर्शन या विरोध का एक ऐसा स्वरूप जिसमें लोग किसी दुकान, फैक्ट्री या दफ्तर के भीतर जाने का रास्ता रोक लेते हैं, कहलाता है-

- (a) पिकेटिंग (b) बहिष्कार
(c) सत्याग्रह (d) विरोध

उत्तर (a) पिकेटिंग

78. ये शब्द किसने कहे- अस्पृश्यता (छुआछूत) को समाप्त किए बिना सौ साल तक भी स्वराज की स्थापना नहीं की जा सकती।

- (a) जवाहरलाल नेहरू (b) डॉ. राजेंद्र प्रसाद
(c) सुभाषचंद्र बोस (d) महात्मा गाँधी

उत्तर (d) महात्मा गाँधी

79. गिरमिटिया मजदूर किसे कहते हैं?

- (a) बंधुआ मजदूर को
(b) खेत में काम करने वाले मजदूरों को
(c) एक अनुबंध के तहत काम करने वाले मजदूर को
(d) औद्योगिक मजदूरों को

उत्तर (a) बंधुआ मजदूर को

80. गुजरात के खेड़ा जिले में गाँधीजी ने सत्याग्रह आंदोलन की शुरुआत क्यों की थी?

- (a) किसानों को ऋण उपलब्ध कराने के लिए
(b) किसानों पर हो रहे जुर्म को लेकर
(c) लगान वसूली में ढील देने के लिए
(d) नमक कानून के खिलाफ

उत्तर (c) लगान वसूली में ढील देने के लिए

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

81. असहयोग आंदोलन चलाने का निर्णय किस काँग्रेस अधिवेशन में लिया गया?

- (a) 1920 ई. के नागपुर काँग्रेस अधिवेशन में
(b) 1919 ई. के मद्रास काँग्रेस अधिवेशन में
(c) 1922 ई. के गया काँग्रेस अधिवेशन में
(d) 1923 ई. में बम्बई काँग्रेस अधिवेशन में

उत्तर (a) 1920 ई. के नागपुर काँग्रेस अधिवेशन में

82. 1870 ई. के दशक में किसने मातृभूमि की स्तुति के रूप में वंदे मातरम् गीत लिखा था?

- (a) बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय (b) रवींद्रनाथ टैगोर

(c) अवनींद्रनाथ टैगोर (d) सत्येंद्रनाथ टैगोर

उत्तर (a) बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय

83. किस एक्ट के तहत बागानों में काम करने वाले मजदूरों को बिना इजाजत के बागान से बाहर जाने की छूट नहीं होती थी?

(a) इनलैंड इमिग्रेशन एक्ट (b) इंडिया लेबर एक्ट
(c) चार्टिस्ट एक्ट (d) इंडियन वर्कर एक्ट

उत्तर (a) इनलैंड इमिग्रेशन एक्ट

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

- महात्मा गांधी 1915 में से भारत लौटे।
उत्तर : दक्षिण अफ्रीका
- गांधीजी ने दलितों को कहा।
उत्तर : हरिजन
- आंदोलन में महिलाओं ने पहली बार बड़ी संख्या में भाग लिया।
उत्तर : सविनय अवज्ञा
- को 'पंजाब का शेर' कहा जाता था।
उत्तर : लाला लाजपत राय
- में एक हिंसक घटना के कारण गांधी जी ने असहयोग आंदोलन को स्थगित कर दिया।
उत्तर : चौरी-चौरा
कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

सही या गलत बताइए

- बाबा रामचंद्र ने सविनय अवज्ञा आंदोलन का नेतृत्व किया।
उत्तर : गलत
- गांधीजी ने नमक यात्रा में 300 मील की दूरी तय की गई थी।
उत्तर : गलत
- रौलट एक्ट ने राजनीतिक गतिविधि को दबाने के लिए ब्रिटिश सरकार को शक्ति प्रदान की।
उत्तर : सही
- ब्रिटिश शासन के तहत औपनिवेशिक शोषण यूरोप में राष्ट्रवाद का महत्वपूर्ण कारक था।
उत्तर : गलत
- अल्लूरी सीताराम राजू गुड्डेम पहाड़ियों में उग्रवादी गुरिल्ला आंदोलन के नेता थे।
उत्तर : सही

अति लघु उत्तरात्मक प्रश्न

- इंडियन नेशनल कांग्रेस की नींव कब पड़ी?
उत्तर :
1885 ई.।
- इंडियन नेशनल कांग्रेस के सबसे पहले अध्यक्ष कौन थे?
उत्तर :
व्योमेश चन्द्र बैनर्जी।
- भारतीय नेताओं ने 1919 में रॉलेट एक्ट का विरोध क्यों किया?
उत्तर :
इस एक्ट के तहत किसी भी भारतीय को बिना मुकदमा चलाए गिरफ्तार किया जा सकता था।
- 1922 में महात्मा गाँधी ने सत्याग्रह क्यों वापस ले लिया?
उत्तर :
चौरी-चौरा में हिंसात्मक घटना घटने के कारण।
- किस वर्ष में महात्मा गाँधी ने बिहार के चंपारण इलाके का दौरा किया और दमनकारी बागान व्यवस्था के खिलाफ किसानों को संघर्ष के लिए प्रेरित किया?
उत्तर :
1917 ई. में।
- किस तिथि को जलियाँवाला बाग हत्याकांड हुआ था?
उत्तर :
13 अप्रैल, 1919 को।
- हिंद स्वराज नामक पुस्तक की रचना किसने की थी?
उत्तर :
महात्मा गाँधी जी ने।
- ये शब्द किसने कहे थे, राजनीतिक अधिकारों के लिए लड़ना होगा?
उत्तर :
लोकमान्य तिलक ने।
- ये शब्द किसने कहे थे, हम सरकारी भवनों से अपना मुँह मोड़ना और उसे जनता के झोपड़ों की ओर मोड़ना चाहते हैं?
उत्तर :
लाला लाजपत राय।
- मुस्लिम लीग की स्थापना कब हुई?
उत्तर :
1906 ई. में।
- खिलाफत आंदोलन के आयोजक कौन थे? यह क्यों शुरू हुआ?
उत्तर :

मुहम्मद अली और शौकत अली, तुर्की के साथ हुई अन्यायपूर्ण संधि के कारण।

12. गाँधी जी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन का आरंभ किस महत्वपूर्ण घटना के साथ किया था?

उत्तर :

नमक कानून तोड़कर।

13. खिलाफत आंदोलन के आयोजक कौन थे और यह क्यों शुरू हुआ?

उत्तर :

प्रथम विश्व युद्ध समाप्त होने के बाद तुर्की के साथ जो अन्यायपूर्ण व्यवहार किया गया था, उसके विरोध में अली भाइयों (मुहम्मद अली और शौकत अली) और दूसरे लोगों ने खिलाफत आंदोलन की शुरुआत की।

14. 1918 में महात्मा गाँधी ने किस शहर में सत्याग्रह आरंभ किया था?

उत्तर :

अहमदाबाद में।

15. गाँधी जी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन का आरंभ किन महत्वपूर्ण घटनाओं के साथ किया था?

उत्तर :

गाँधी जी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन का आरंभ नमक कानून तोड़कर किया था। गाँधी जी ने साबरमती से दांडी तक पैदल यात्रा कर नमक को बनाकर नमक कानून को तोड़ा था।

16. रॉलट एक्ट क्या था?

उत्तर :

इस अधिनियम के जरिए सरकार को राजनीतिक गतिविधियों को कुचलने और राजनीतिक कैदियों को दो साल तक बिना मुकदमा चलाए जेल में बंद रखने का अधिकार मिल गया था।

17. भारतीय नेताओं ने 1919 में रॉलट एक्ट का विरोध क्यों किया?

उत्तर :

1919 ई. में ब्रिटिश सरकार ने एक अधिनियम पारित किया, जिसके तहत सरकार को किसी भी राजनीतिक कैदी को बिना मुकदमा चलाए जेल में बंद रखने का अधिकार था। इसलिए भारतीय नेताओं ने इस एक्ट का विरोध किया।

18. रॉलट एक्ट कब पारित हुआ?

उत्तर :

1919 में।

19. 1922 में महात्मा गाँधी ने सत्याग्रह क्यों वापस ले लिया?

उत्तर :

उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के चौरी-चौरा नामक स्थान पर हिंसात्मक घटनाएँ बढ़ने के कारण गाँधी जी ने असहयोग आंदोलन वापस ले लिया।

20. असहयोग खिलाफत आंदोलन कब शुरू हुआ?

उत्तर :

जनवरी, 1920 में।

21. 1929 के कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में लिए गए एक महत्वपूर्ण निर्णय की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

1929 के कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में प्रत्येक वर्ष 26 जनवरी को सारे देश में स्वतंत्रता दिवस मनाने का निर्णय लिया गया।

22. असहयोग आंदोलन के दौरान अवध में किसानों का नेतृत्व किसने किया?

उत्तर :

बाबा रामचंद्र।

23. गाँधी-इर्विन समझौता कब हुआ? इसकी किसी एक शर्त (प्रावधान) की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

गाँधी-इर्विन समझौता 1931 ई. में हुआ था। इस समझौते में सरकार ने वचन दिया कि हिंसा के आरोप में गिरफ्तार लोगों को छोड़कर सभी राजनीतिक बंदी रिहा कर दिए जाएँगे।

24. आंध्र प्रदेश की गुड्डेम पहाड़ियों में आदिवासी किसानों के विद्रोह का नेतृत्व किसने किया?

उत्तर :

अल्लूरी सीताराम राजू।

25. अल्लूरी सीताराम राजू को फाँसी कब दी गई?

उत्तर :

1924 में।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

26. किस नेता ने 1920 में अवध के गाँवों का दौरा किया था?

उत्तर :

जवाहर लाल नेहरू।

27. किस वर्ष इंग्लैंड में इमिग्रेशन एक्ट लागू किया गया?

उत्तर :

1859 ई. में।

28. वन्दे मातरम् राष्ट्रीय गीत किसने लिखा था?

उत्तर :

बंकिमचंद्र चटर्जी ने।

29. पूना पैक्ट क्या था?

उत्तर :

गाँधी जी और डॉ. भीमराव अम्बेडकर के बीच समझौता हुआ था।

30. बंगाल में **स्वदेशी आंदोलन** के दौरान किस प्रकार का झंडा तैयार किया गया था? इसकी मुख्य विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

बंगाल में स्वदेशी आंदोलन के दौरान एक तिरंगा झंडा तैयार किया गया था। यह हरा, लाल और रंग के थे। इसमें ब्रिटिश भारत के आठ प्रांतों को दर्शाया गया था। कमल के आठ फूल इसके प्रतीक थे। साथ ही एक अर्धचंद्र को भी दर्शाया गया था, जो हिंदुओं और मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करता था।

31. 1921 तक गाँधी जी ने स्वराज का झंडा तैयार कर लिया था। इस झंडे में कौन-कौन से रंग और प्रतीक थे?

उत्तर :

तिरंगा झंडा (सफेद, हरा, लाल), प्रतीक-चरखा।

32. साइमन कमीशन का विरोध करते समय किस भारतीय नेता को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा?

उत्तर :

लाला लाजपत राय।

33. सुप्रसिद्ध पुस्तक *Discovery of India* का लेखक कौन है?

उत्तर :

जवाहर लाल नेहरू।

34. किन दो क्रांतिकारियों ने केन्द्रीय विधानसभा में बम फेंका?

उत्तर :

भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने।

35. कांग्रेस के 1929 के लाहौर अधिवेशन में जिस माँग को औपचारिक रूप से मान लिया गया, वह थी।

उत्तर :

पूर्ण स्वराज की माँग।

36. दलित वर्ग एसोसिएशन की स्थापना किसने की?

उत्तर :

डॉ. अम्बेडकर ने।

37. असहयोग आंदोलन का एक मुख्य कारण बताइए।

उत्तर :

1919 ई. में जलियाँवाला बाग हत्याकांड में काफी लोग मारे गए थे। इस घटना के विरोध में गाँधी जी ने असहयोग आंदोलन चलाने का निर्णय लिया।

38. मुस्लिम लीग के सबसे प्रभावशाली नेता कौन थे?

उत्तर :

मोहम्मद अली जिन्ना।

39. शहरों में **असहयोग आंदोलन** धीमा क्यों पड़ने लगा था? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

1. **महंगी खादी**— खादी का कपड़ा प्रायः मिलों में भारी पैमाने पर उत्पादन की तुलना में अधिक महंगा था और निर्धन लोग इसे खरीदने में असमर्थ थे।

2. **कोई विकल्प नहीं**— ब्रिटिश संस्थाओं के बहिष्कार से एक समस्या उत्पन्न हो गई। आंदोलन को सफल बनाने के लिए यह आवश्यक था कि ब्रिटिश संस्थाओं के स्थान पर देशी संस्थाएँ विकल्प के रूप में स्थापित की जाएँ, परंतु यह कार्य बहुत धीमी गति का था। अतः विद्यार्थियों को पुनः सरकारी स्कूलों तथा वकीलों को सरकारी न्यायालयों में वापस जाने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं रह गया था।

40. पिकेटिंग से क्या तात्पर्य है?

उत्तर :

प्रदर्शन या विरोध का एक स्वरूप।

41. भारतीयों ने साइमन कमीशन का बहिष्कार क्यों किया? दो कारण बताइए।

उत्तर :

भारतीयों द्वारा साइमन कमीशन के बहिष्कार के कारण—

1. इस कमीशन में सात सदस्य थे, जिनमें से एक भी भारतीय नहीं था।
2. इस आयोग से जिन बातों पर विचार करने को कहा गया, उनसे भारतीय जनता को स्वराज्य पा सकने की जरा-सी भी आशा नहीं थी।

42. गिरमिटिया मजदूर किसे कहते हैं?

उत्तर :

एक अनुबंध के तहत काम करने वाले मजदूर को गिरमिटिया मजदूर कहा जाता है।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

43. सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान मुसलमान संयुक्त संघर्ष के आह्वान पर शामिल क्यों नहीं हुए? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान मुसलमानों ने संयुक्त संघर्ष के आह्वान पर अपनी सहमति व्यक्त नहीं की। इसका कारण यह था कि सन् 1933 में **रहमत अली** ने **पाकिस्तान** शब्द की उत्पत्ति कर मुसलमानों के मन में अपनी क्षुद्र भावना उत्पन्न कर दी थी जिसको मुहम्मद अली जिन्ना ने स्वीकार कर द्विराष्ट्र सिद्धांत को भारत के मुसलमानों के बीच रखा। इस सिद्धांत के आधार पर अधिकांश मुसलमानों ने सविनय अवज्ञा आंदोलन में शामिल न होने का फैसला कर लिया।

44. 13 अप्रैल, 1919 को जनरल डायर ने जलियाँवाला बाग में शांतिपूर्ण सभा पर गोली क्यों चलाई?

उत्तर :

वह सत्याग्रहियों में डर और भय की भावना पैदा करना चाहता था।

45. जब डॉ. बी. आर. अम्बेडकर ने दलितों के लिए पृथक निर्वाचन की मांग की तो गाँधीजी ने आमरण अनशन क्यों प्रारंभ किया ?

उत्तर :

गाँधी जी का मानना था कि पृथक निर्वाचन व्यवस्था से समाज में एकीकरण की प्रक्रिया धीमी पड़ जाएगी।

46. भारतीयों ने साइमन कमीशन का बहिष्कार क्यों किया ?

उत्तर :

इस कमीशन में सात सदस्य थे, जिनमें से एक भी भारतीय नहीं था।

47. बहिष्कार की परिभाषा लिखिए।

उत्तर :

किसी के साथ संपर्क रखने और जुड़ने से इंकार करना।

48. 1927 में कांग्रेस और मुस्लिम लीग में किस बात को लेकर मतभेद थे ?

उत्तर :

भावी विधानसभाओं में प्रतिनिधित्व के सवाल पर।

49. किस मुद्दे को लेकर गाँधी जी और डॉ. भीम राव अम्बेडकर के बीच विवाद छिड़ गया था ?

उत्तर :

पृथक निर्वाचन क्षेत्र के सवाल पर।

50. अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी विख्यात पेंटिंग भारत माता के चित्र में भारतमाता को किस तरह चित्रित किया ?

उत्तर :

एक संन्यासिनी के रूप में।

51. वन्देमातरम गीत किस उपन्यास का अंश है ?

उत्तर :

आनन्दमठ।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

लघु उत्तरात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए

1. दक्षिण अफ्रीका में चलाया गया नवम्बर 1913 का भारतीय मजदूर आंदोलन क्या था ?
2. महात्मा गाँधी द्वारा सुझाए गए असहयोग आंदोलन के संदर्भ में तीन मुख्य सुझावों का उल्लेख कीजिए।
3. पुणे और कोयम्बटूर किन-किन राज्यों में हैं ?

उत्तर :

1. दक्षिण-अफ्रीका में भारतीय मजदूर आंदोलन- महात्मा गाँधी जी के नेतृत्व में न्यूकैसल से ट्रांसवाल की ओर बढ़ रहे प्रदर्शनकारी दक्षिण अफ्रीका के भारतीय मजदूर जब वोल्कथर्स्ट पर पहुँचे तो गाँधी जी को गिरफ्तार कर लिया गया। 6 नवंबर, 1913 की इस घटना ने वहाँ अश्वेत

आंदोलन को ऐसी गति दी कि इस कानून को ही निरस्त कर दिया गया।

2. गाँधीजी द्वारा असहयोग आंदोलन के संदर्भ में दिए गए मुख्य सुझाव- गाँधी जी ने असहयोग आंदोलन के संदर्भ में निम्नलिखित तीन मुख्य सुझाव दिए थे-

1. खिलाफत आंदोलन और असहयोग आंदोलन एक साथ राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में चलाए जाएँ।
2. इस आंदोलन को क्रमिक चरणों में चलाया जाए।
3. प्रथम चरण में सभी क्रांतिकारी ब्रिटिश सरकार द्वारा दी गई उपाधियों का परित्याग करें और भारत के सभी लोग नागरिक सेवाओं, सेना, पुलिस, न्यायालय और विधान परिषदों, स्कूलों तथा विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करें।

3. पुणे महाराष्ट्र में है, इसका प्राचीन नाम पूना था। कोयम्बटूर तमिलनाडु में है।

2. भारत में प्रथम विश्व युद्ध ने किस प्रकार एक नई आर्थिक परिस्थिति पैदा की ? तीन उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

प्रथम विश्व युद्ध जहाँ मानवता के लिए विनाश का कारण बना वहाँ इसके कारण राष्ट्रवाद को भी बल मिला। भारत में राष्ट्रीय आंदोलन के विकास में प्रथम विश्व युद्ध के योगदान का वर्णन इस प्रकार है

1. **करों में वृद्धि**- विश्व युद्ध के कारण अचानक रक्षा व्यय में वृद्धि हो गई। इस व्यय को पूरा करने के लिए सरकार ने करों में वृद्धि कर दी। इसके अतिरिक्त सीमा शुल्क को भी बढ़ा दिया गया। आयकर के रूप में नया कर भी लगा दिया। इससे जनता में रोष फैल गया, जिसने राष्ट्रवाद को जन्म दिया।
2. **कीमतों में वृद्धि**- प्रथम विश्व युद्ध काल में खाद्य पदार्थों का भारी अभाव हो गया। फलस्वरूप कीमतें लगभग दुगुनी हो गईं। आम आदमी का जीवन कष्टमय हो गया। अतः लोग विदेशी शासन से मुक्ति के संबंध में सोचने लगे। यह बात राष्ट्रीय आंदोलन का आधार बनी।
3. **सिपाहियों की जबरन भर्ती**- विश्व युद्ध में अत्यधिक सैनिकों के मरने के कारण सरकार को अधिक-से-अधिक सैनिकों की आवश्यकता थी। अतः गाँवों में नौजवानों को जबरदस्ती सेना में भर्ती किया गया। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में सरकार के प्रति विशेष रोष था।

3. भारत में लोगों द्वारा **रॉलट एक्ट** का किस प्रकार विरोध किया गया ? उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

अप्रैल, 1919 को हड़ताल करके विभिन्न शहरों में रैली तथा जुलूसों का आयोजन किया गया। विभिन्न स्थानों पर हड़ताल की गई। लोगों में अपार उत्साह देखकर ब्रिटिश सरकार ने दमन की नीति अपनाई। अमृतसर में स्थानीय नेताओं को बंदी

बनाया गया। गाँधी जी को दिल्ली में प्रवेश करने से रोक दिया गया। अमृतसर में घटनाक्रम बड़ी तीव्र गति से चला। 10 अप्रैल को शांतिपूर्वक जुलूस पर पुलिस द्वारा गोली चलाने के बाद हिंसात्मक घटनाएँ हुईं। **मार्शल ला** लगा दिया गया तथा जनरल डायर को नगर की कमान सौंपी गई। जनरल डायर ने लोगों में भय व्याप्त करने के लिए 13 अप्रैल, बैसाखी पर्व के अवसर पर जलियाँवाला बाग में निहत्थे लोगों की भीड़ पर अंधाधुंध गोलियाँ चलाई। इस प्रकार रॉलेट एक्ट सत्याग्रह जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड तक जा पहुँचा जो असहयोग आंदोलन का कारण बना।

4. भारत में प्रथम विश्वयुद्ध द्वारा उत्पन्न हुई नई आर्थिक व्यवस्था के विषय में कोई तीन तथ्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

विश्वयुद्ध द्वारा उत्पन्न हुई नई आर्थिक व्यवस्था के विषय में तीन तथ्य निम्नलिखित हैं—

1. प्रथम विश्वयुद्ध ने विश्व के साथ-साथ भारत में नई आर्थिक और राजनीतिक स्थितियाँ उत्पन्न कर दी। प्रथम विश्व युद्ध के कारण रक्षा व्यय में भारी वृद्धि हुई। इस खर्च की भरपाई के लिए ब्रिटिश सरकार द्वारा ऋण लिए गए।
2. ऋणों को चुकाने के लिए भारत में करों में वृद्धि की गई। सीमा शुल्क बढ़ा दिया गया और आयकर लागू किया गया जिसके फलस्वरूप कीमतें तेजी से बढ़ने लगीं। जनसाधारण पर करो का अतिरिक्त भार पड़ने लगा। सन् 1913 से सन् 1919 तक कीमतें लगभग दोगुनी हो गई थी।
3. भारतीयों को पहले ही यह युद्ध अपने ऊपर थोपा हुआ लग रहा था इस पर गाँवों में सिपाहियों की जबरन भर्ती की गई जिससे ग्रामीण इलाकों में व्यापक रोष फैला।
4. देश के विभिन्न भागों में फसलें चौपट हो गई जिस कारण अनाज की कमी पैदा हो गई। इससे लोगों में बड़े पैमाने पर असंतोष पैदा हुआ। (कोई तीन)

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

5. महात्मा गाँधी भारत कब लौटे थे? उन्होंने 1915 से 1918 के मध्य भारत में क्या भूमिका निभायी थी?

अथवा

महात्मा गाँधी ने भारत पहुँचने के बाद विभिन्न स्थानों पर सत्याग्रह आंदोलन सफलतापूर्वक कैसे चलाए? स्पष्ट करें।

उत्तर :

गाँधी जी दक्षिण अफ्रीका से जनवरी 1915 में लौटे।

1915 से 1918 तक गाँधीजी की भूमिका— गाँधी जी ने 1915 से 1917 तक संपूर्ण देश का दौरा किया तथा सर्वसाधारण की स्थिति जानने की कोशिश की। उन्होंने प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटिश सरकार को मदद देने के लिए भारतीयों

को कहा। उन्हें कालांतर में केसरे हिंद की उपाधि दी गई। वे सत्य, अहिंसा, प्रेम व हिंदू-मुस्लिम एकता के समर्थक थे।

1. **चम्पारण सत्याग्रह (1917)–** गाँधी जी ने अपने विचारों पर आधारित छोटे स्तर पर सत्याग्रह का पहला प्रयोग 1917 में बिहार के चम्पारण नामक स्थान पर किया। गाँधीजी के चम्पारण आगमन से वहाँ जिलाधिकारी घबरा उठे और उन्हें चम्पारण छोड़ने का आदेश दिया। गाँधीजी ने आदेश मानने से इंकार कर दिया और संघर्ष के लिए तत्पर हो गए। सरकार ने परिस्थितियों को भाँपते हुए अपना आदेश वापिस ले लिया और एक जाँच समिति बिठाने का निश्चय किया। इसका एक सदस्य स्वयं गाँधीजी को भी बनाया गया। जाँच समिति ने किसानों के पक्ष में सुझाव दिया जिन्हें वहाँ के प्रशासन और अंग्रेज बागान मालिकों को मानना पड़ा।

1917 में गाँधीजी ने अहमदाबाद के वस्त्र मिल मजदूरों की माँगों का समर्थन किया। मालिकों ने उनकी 35 प्रतिशत मजदूरी (वेतन) बढ़ा दी।

2. **खेड़ा सत्याग्रह—** यहाँ पर गाँधीजी ने किसानों के भू-राजस्व की वसूली पर रोक लगवाई। लगातार फसल खराब हो जाने के कारण किसान इसका भुगतान करने में असमर्थ थे लेकिन उनसे जबरन वसूली की जा रही थी।

6. भारतवासी हथियार लेकर क्यों नहीं चल सकते? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

1. शारीरिक बल के प्रयोग द्वारा एक व्यक्ति अपने विरोधी को शारीरिक रूप से नुकसान पहुँचा सकता है। किंतु आत्मा के बल द्वारा सदैव दूसरे के प्रति प्यार एवं लगाव की भावना ही उत्पन्न होती है। अतः इस बल के उपयोग द्वारा कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के विश्वास को जीत सकता है।

2. 1. चंपारण सत्याग्रह।

2. खेड़ा सत्याग्रह।

3. बारदोली सत्याग्रह।

3. 1. सत्याग्रह से तात्पर्य हिंसा का सहारा लिये बिना विरोधियों के मन को बदलने से था।

2. प्यार, भावना तथा सत्य के माध्यम से मन को विध्वंसक विचारों से मुक्त किया जा सकता है।

अतः हथियार के किसी भी रूप में प्रयोग की आवश्यकता नहीं थी।

7. रॉलेट एक्ट जलियाँवाला बाग हत्याकांड से किस तरह जुड़ा हुआ था?

उत्तर :

1. जलियाँवाला बाग हत्याकांड के समय कांग्रेस नेता रॉलेट एक्ट से उत्पन्न सामाजिक उत्पीड़न का उचित उपचार खोजने की चिन्तन मुद्रा में थे।

2. रॉलेट एक्ट के अमानवीय प्रावधानों को लागू करके ही डॉ. सैफुद्दीन किचलू और डॉ. सत्यपाल जैसे अहिंसक नेताओं को गिरफ्तार किया गया था।
3. वस्तुतः उक्त एक्ट के अनुपालन में ही जनरल डायर ने प्रत्यायोजित शक्ति का दुरुपयोग किया था।
8. जलियाँवाला बाग की घटना का वर्णन कीजिए। इसके क्या प्रभाव पड़े?

उत्तर :

1. जलियाँवाला बाग की घटना का वर्णन—
 - i. 13 अप्रैल, 1919 को अमृतसर में जलियाँवाला बाग की घटना हुई।
 - ii. उस दिन जलियाँवाला बाग के बंद अहाते में गाँव वालों की एक भीड़ इकट्ठी हुई थी।
 - iii. शहर में पहले से ही मार्शल लॉ लगा दिया गया था।
 - iv. भारतीयों को सीख देने के लिए जनरल डायर उस क्षेत्र में प्रविष्ट हुआ, उसने बाहर निकलने के सारे द्वार बंद करवा दिए तथा निहत्थे लोगों पर गोलियाँ बरसाने का हुक्म दे दिया। इस घटना में सैकड़ों लोग मारे गए।
2. इस घटना के प्रभाव निम्नलिखित थे—
 - i. कई उत्तर भारतीय शहरों में लोग सड़कों पर उतर आए।
 - ii. हड़तालें आयोजित की गई, पुलिस वालों के साथ संघर्ष हुए तथा सरकारी भवनों पर हमले किए गए।
 - iii. सरकार ने बहुत निर्दयी तरीके से जबाब दिया। लोगों को अपमानित तथा आतंकित किया गया।
9. गाँधीजी ने प्रस्तावित रॉलेट एक्ट 1919 के विरुद्ध एक राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह आंदोलन चलाने का निर्णय क्यों किया? इस सत्याग्रह को किस प्रकार संचालित किया गया? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

गाँधी जी ने रॉलेट एक्ट के विरुद्ध आंदोलन इसलिए शुरू किया क्योंकि यह एक काला कानून अथवा अधिनियम था। इसने ब्रिटिश सरकार को अपार अधिकार दे दिए। वह किसी भी भारतवासी को सरकार विरोधी गतिविधियों के संदेह होने मात्र पर ही मनमाने तरीके से जेल में बिना बंदी किए जाने के कारण बताए ही जेल में डाल सकती थी। यह अधिनियम एक तरह से नागरिक अधिकारों को पूर्णतया हनन करने वाला और विरोधी था।

1. महात्मा गाँधी ने रॉलेट एक्ट के विरुद्ध अहिंसक नागरिक अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत की। इस एक्ट ने राजनीतिक दलों को दबाने के असीम अधिकार सरकार को दे दिए थे तथा उसे राजनीतिक कैदियों को बिना मुकदमा चलाए दो साल तक हिरासत में रखने का अधिकार भी दिया गया था।

2. पूरे देश में 1919 के रॉलेट एक्ट के विरुद्ध सत्याग्रह का आयोजन किया गया जबकि उससे पहले के सभी सत्याग्रह आंदोलनों की प्रकृति क्षेत्रीय या स्थानीय थी।
3. रॉलेट एक्ट के विरुद्ध सत्याग्रह अधिकतर शहरों तथा कस्बों तक ही सीमित रहा।
4. व्यापक हिंसा के कारण 1919 के दूसरे चरण में इस आंदोलन को गाँधीजी ने वापस ले लिया।

10. 1916 के लखनऊ समझौते का क्या महत्व था?

उत्तर :

पहली उपलब्धि थी—कांग्रेस के नरम दल और गरम दल का एक मंच पर आना। 1907 ई. में सूरत अधिवेशन में दो हिस्सों में बँटी कांग्रेस फिर से जुड़ गई।

दूसरी उपलब्धि थी—भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और मुस्लिम लीग का मिलाप— अब इन दोनों संगठनों ने एक तरह की संयुक्त माँगों को लेकर अंग्रेजी सरकार से टक्कर लेने की ठानी।

इस द्विदल और पुनः त्रिदल के समामेलन का श्रेय लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक को दिया जाता है। इसमें मिलकर स्वराज्य और प्रांतीय विधानमंडलों तथा वायसराय की कार्यकारिणी परिषद में सदस्य संख्या आदि के संबंध में सामंजस्य उत्पन्न करने की माँग भी उठाई गई।

11. 1921 तक किसने **स्वराज का झंडा** तैयार कर लिया था? स्वराज के इस झंडे की मुख्य विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

1921 तक गाँधीजी ने स्वराज का झंडा तैयार कर लिया था। यह भी तिरंगा था अर्थात् सफेद, हरा और लाल। इसके बीच में गाँधीवादी प्रतीक यानि चरखे को जगह दी गई थी लोगों द्वारा जुलूसों में यह झंडा थाम कर चलना शासन के विरुद्ध अवज्ञा का संकेत था।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

12. **सविनय अवज्ञा आंदोलन** असहयोग आंदोलन से भिन्न था। कथन की पुष्टि उदाहरणों सहित कीजिए।

उत्तर :

सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान चारों ओर हड़तालों, विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और प्रदर्शनों की गूँज से आसमान फटने लगा। सरकार द्वारा लगाए गए विभिन्न करों का विरोध किया गया। यहाँ तक कि किसानों ने भू-राजस्व और लगान देने से इंकार कर दिया। इस आंदोलन में महिलाएँ भी पुरुषों से पीछे न रही। उन्होंने विदेशी कपड़ों की दुकानों पर धरने दिए तथा वे ही सहर्ष जेल गईं।

दूसरी तरफ असहयोग आंदोलन के दौरान लोगों ने सरकार द्वारा दी गई पदवियाँ लौटा दीं। गाँधीजी का विचार था कि लोगों को सरकारी नौकरियों, सेना, पुलिस, अदालतों, विद्यार्थी परिषदों, स्कूलों और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार

करना चाहिए। यदि सरकार दमन का रास्ता अपनाती है तो व्यापक सविनय अवज्ञा अभियान शुरू किया जाना चाहिए।

- 13.** असम में बागानी मजदूरों की महात्मा गाँधी के विचारों और स्वराज के बारे में अपनी अलग अवधारणा थी। तर्क देकर कथन की पृष्टि कीजिए।

उत्तर :

1. 1859 के इंग्लैंड इमिग्रेशन एक्ट के अनुसार बागानों में काम करने वाले मजदूरों को बिना इजाजत बागान से बाहर जाने की छुट नहीं थी और इस प्रकार की अनुमति बहुत ही कम मिलती थी।
2. जब उन्होंने असहयोग आंदोलन के विषय में सुना तो हजारों मजदूरों ने अपने अधिकारियों की अवहेलना करनी प्रारंभ कर दी। वे बागान को छोड़कर अपने घर की ओर चल दिए।
3. उनका अनुमान था कि अब गाँधी राज आ गया है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को गाँव में जमीन दी जाएगी लेकिन वे अपनी मंजिल तक पहुँचने में असमर्थ रह गए।

- 14.** गाँधी जी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को वापस क्यों ले लिया था?

उत्तर :

1. जब भारतीय नेता बंदी बना लिए गए तो क्रुद्ध भीड़ ने पेशावर की गलियों में प्रदर्शन किया और बख्तरबंद गाड़ियों तथा पुलिस गोलीबारी का सामना किया। कई लोग मारे गए।
2. एक मास बाद जब गाँधी जी स्वयं गिरफ्तार हुए तो औद्योगिक कर्मियों ने पुलिस चौकी, सरकारी भवनों, न्यायालयों, रेलवे स्टेशनों तथा उन सभी ढाँचों पर हमला कर दिया जो अंग्रेजी सरकार के प्रतीक थे।

- 15.** भारत में कुछ मुस्लिम राजनैतिक संगठन सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रति उदासीन थे। इस कथन की परख कीजिए।

उत्तर :

भारत में सविनय अवज्ञा आंदोलन 9 अप्रैल, 1930 को महात्मा गाँधी द्वारा देशवासियों के समक्ष रखा गया। देश के कोने-कोने में इसकी सूचना पहुँच गई तथा लोगों ने आंदोलन के अंतर्गत न केवल सहयोग करने वरन औपनिवेशिक कानूनों का उल्लंघन शुरू कर दिया। विदेशी कपड़ों की होली जलायी, नमक कानून तोड़ा, किसानों ने लगान तथा चौकीदारी कर को चुकाने से मना कर दिया परंतु कुछ मुस्लिम राजनीतिक संगठनों ने इस आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग नहीं लिया। इसके निम्न कारण थे—

1. अंग्रेजों द्वारा चलाई गई **फूट डालो, शासन करो** की नीति ने मुस्लिम समुदाय को सदैव सशंकित रखा। वे मुख्य धारा से जुड़ नहीं पाए।
2. मुस्लिम लीग ने प्रचार किया कि हिंदू तथा मुसलमान अलग-अलग कौमे हैं। इस प्रचार से मुस्लिम राजनीतिक

संगठन सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग न लेकर उसके प्रति आसीन रहे।

3. मुसलमानों ने अंग्रेजी सरकार के सामने ऐसी-ऐसी माँगें रखीं जिसे पूरा करने में सरकार असमर्थ थी तथा जिनका हल केवल देश का विभाजन ही था।

- 16.** कांग्रेस अपने कार्यक्रम में औद्योगिक श्रमिकों की माँगों को समाहित करने में हिचकिचा रही थी। कारणों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :

1. पुरुषोत्तम दास ठाकुरदास तथा जी.डी. बिरला जैसे उद्योगपतियों ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को व्यापक समर्थन दिया। इसने मजदूर वर्गों को कांग्रेस तथा उसके द्वारा शुरू किये गये आंदोलन में भाग लेने से रोका।
2. नागपुर को छोड़कर अन्य किसी भी क्षेत्र के कामगारों ने सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग नहीं लिया।
3. इन सबके बावजूद कुछ कामगारों ने कम वेतन तथा काम करने की खराब परिस्थितियों के विरुद्ध अपने आंदोलनों में गाँधीजी के विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार की अवधारणा को स्वीकार किया।

- 17.** महात्मा गाँधीजी ने प्रस्तावित रॉलेट एक्ट के खिलाफ एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन चलाने का फैसला क्यों किया? कोई तीन कारण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

1. **क्यों शुरू किया गया?**— गाँधीजी ने रॉलेट एक्ट के विरुद्ध आंदोलन इसलिए शुरू किया क्योंकि यह एक काला कानून अथवा अधिनियम था। इसने ब्रिटिश सरकार को अपार अधिकार दे दिए। वह किसी भी भारतवासी को सरकार विरोधी गतिविधियों के संदेह होने मात्र पर ही मनमाने तरीके से जेल में बिना बंदी किए जाने के कारण बताए ही जेल में डाल सकता था। यह अधिनियम एक तरह से नागरिक अधिकारों को पूर्णतया हनन करने वाला और विरोधी था।

2. **रॉलेट एक्ट आंदोलन की विशेषताएँ—**

1. पूरे देश में 1919 के रॉलेट एक्ट के विरुद्ध सत्याग्रह का आयोजन किया गया जबकि उससे पहले के सभी सत्याग्रह आंदोलनों की प्रकृति क्षेत्रीय या स्थानीय थी।
2. रॉलेट एक्ट के विरुद्ध सत्याग्रह अधिकतर शहरों तथा कस्बों तक ही सीमित रहा।
3. व्यापक हिंसा के कारण 1919 के दूसरे चरण में इस आंदोलन को गाँधीजी ने वापस ले लिया।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

- 18.** भारत में बहुत सारी सांस्कृतिक प्रक्रियाओं ने राष्ट्रवाद को साकार करने में किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है? उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

1. प्रतीको और चिह्नों व हमारे राष्ट्रीय ध्वज ने राष्ट्रवाद की भावना को विकसित किया।
2. बंगाल के स्वदेशी आंदोलन के दौरान एक तिरंगा झंडा तैयार किया गया।
3. इसमें ब्रिटिश भारत के आठ प्रांतों का प्रतिनिधित्व करते कमल के आठ फूल और हिंदू और मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करता एक अर्धचंद्र दर्शाया गया था।
4. 1921 में गाँधीजी ने स्वराज का झंडा तैयार कर लिया था। यह भी तिरंगा (सफेद, हरा और लाल) था।
5. इसके मध्य में गाँधीवादी प्रतीक चरखे को जगह दी गई थी जो स्वावलंबन का प्रतीक था।
6. जैसे-जैसे राष्ट्रीय आंदोलन का विकास हुआ, राष्ट्रवादी इन चिह्नों और प्रतीकों का प्रयोग लोगों को एकजुट करने में करने लगे।

19. गाँधीजी ने खिलाफत आंदोलन का समर्थन क्यों किया ?

उत्तर :

1. रॉलेट सत्याग्रह केवल शहरों व कस्बों तक सीमित था। अतः गाँधीजी ने अनुभव किया कि इस आंदोलन को भारत में व्यापक आधार पर संचालित करने की आवश्यकता थी। परंतु वे सुनिश्चित थे कि ऐसा कोई भी आंदोलन हिंदुओं और मुसलमानों को निकट लाए बिना संचालित नहीं किया जा सकता। इसलिए उन्होंने खिलाफत मुद्दे का समर्थन किया।
2. मुहम्मद अली और शौकत अली बंधुओं जैसे मुस्लिम नेताओं की नई पीढ़ी ने महात्मा गाँधी के साथ इस मुद्दे पर संयुक्त जन कार्यवाही की संभावना के विषय में चर्चा करनी आरंभ कर दी। गाँधी जी ने इसे मुसलमानों को एकीकृत राष्ट्रीय आंदोलन की छत्रछाया में लाने के अवसर के रूप में देखा

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

20. सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रति लोगों और उपनिवेशिक सरकार ने किस प्रकार प्रतिक्रिया व्यक्त की ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रति लोगों की प्रतिक्रिया-

1. देश के विभिन्न भागों में हजारों लोगों ने नमक कानून तोड़ा तथा सरकारी नमक कारखानों के सम्मुख प्रदर्शन किए।
2. किसानों ने लगान और चौकीदारी कर चुकाने से साफ इंकार कर दिया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रति उपनिवेशिक सरकार की प्रतिक्रिया-

1. आंदोलन से चिंतित होकर औपनिवेशिक सरकार कांग्रेसी नेताओं को गिरफ्तार करने लगी।
2. शांतिपूर्वक आंदोलन कर रहे सत्याग्रहियों पर लाठियाँ बरसाई गईं। औरतों व बच्चों को मारा-पीटा गया तथा

लगभग एक लाख लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया।

21. नीचे दिए गए अनुच्छेद को पढ़िए और उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

हमारा विश्वास है कि किसी भी समाज की तरह भारतीय जनता का भी यह एक अहरणीय अधिकार है कि उन्हें आजादी मिले, अपनी मेहनत का फल मिले और जीवन की सभी आवश्यकताएँ पूरी हों जिससे उन्हें आगे बढ़ने के परिपूर्ण अवसर मिलें। हमारा यह भी विश्वास है कि यदि कोई भी सरकार अपनी जनता को इन अधिकारों से वंचित रखती है और दबाती है तो जनता को भी सरकार को बदलने या उसे समूल समाप्त करने का अधिकार है। भारत में ब्रिटेनी सरकार ने न केवल भारतीय जनता को स्वतंत्रता से वंचित किया है बल्कि उसने जनता का शोषण किया है और देश को आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक स्तर पर नष्ट कर दिया है। इसलिए हमारा विश्वास है कि भारत को अनिवार्य रूप से ब्रिटेन के साथ अपने सभी संबंधों को समाप्त करके पूर्ण स्वराज प्राप्त करना चाहिए।

1. यह शपथ कब ली जानी थी ?
2. भारतवासियों के उन अधिकारों की व्याख्या कीजिए जो उन्हें मिलने चाहिए थे।

उत्तर :

1. 26 जनवरी, 1930 को।
2. 1. समानता का अधिकार,
2. स्वतंत्रता का अधिकार,
3. धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार,
4. सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकार,
5. शोषण के विरुद्ध अधिकार तथा
6. सांविधिक उपचारों का अधिकार अर्थात् मूल अधिकार या मानव जीवन के प्राथमिक अथवा आधारभूत अधिकार।

कुछ विचारों के अनुसार सम्पत्ति का अधिकार भी उस समय भारतीयों को मिलना ही चाहिए था। याद रहे यह अधिकार स्वतंत्रता के बाद अनेक वर्षों तक भारतीयों को मौलिक अधिकार के रूप में प्राप्त रहा था।

22. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए।

1. नेहरू रिपोर्ट कमेटी का गठन कौन-सी प्रमुख ऐतिहासिक घटना के बाद किस महान नेता की अध्यक्षता में किया गया ?
2. इस रिपोर्ट का क्या महत्व था ?
3. मोहम्मद अली जिन्ना ने नेहरू कमेटी रिपोर्ट को क्यों अस्वीकार कर दिया था ?
4. नेहरू कमेटी रिपोर्ट के बारे में सुभाषचन्द्र बोस का क्या रुख था ?

उत्तर :

1. परिस्थितियाँ- नेहरू कमेटी का गठन साइमन कमीशन के

बहिष्कार और भारतीयों की तरफ से उसकी पूर्ण उपेक्षा किए जाने के बाद सन् 1929 में श्री मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में किया गया।

2. **महत्व-** नेहरू कमेटी रिपोर्ट का महत्व यह था कि राष्ट्र के नेता अंग्रेजी सरकार को यह बताना चाहते थे कि वे अपने देश के लिए साइमन कमीशन के सुझावों से बेहतर संविधान या उसकी रूपरेखा बना सकते हैं। वस्तुतः यह रिपोर्ट भावी संविधान की उद्देशिका जैसी थी। अतः इसका महत्वपूर्ण होना स्वाभाविक ही था।
 3. **जिन्ना द्वारा नेहरू कमेटी रिपोर्ट को अस्वीकार करने के कारण-** मोहम्मद अली जिन्ना के प्रदूषित मन-मस्तिष्क में द्विराष्ट्र सिद्धांत का कीड़ा कुलबुला रहा था विशेषकर जब से अप्रैल 1933 में रहमत अली ने **पाकिस्तान** शब्द की उत्पत्ति अपनी संकीर्ण और क्षुद्र कल्पना के आयाम से कर दी थी।
 4. **नेताजी सुभाष का नेहरू रिपोर्ट के प्रति रुख-** भारत को केवल एक अधिराज्य रूप में स्वीकार कर लेना और पूर्ण स्वतंत्रता को इतनी घटनाओं के बाद भी दूर रखना उन्हें पसंद न आया। रिपोर्ट में संशोधन करने का उनका प्रस्ताव कुछ मतों से जब विफल रहा तो उन्होंने अपने सत्याग्रह को आजाद हिंद फौज का गठन करके पूर्णता प्रदान की। यह उनके शौर्य का धवल चित्र है।
23. सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रति भारतीय व्यापारियों और उद्योगपतियों द्वारा अपनाए गए रुख को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

पहले विश्व युद्ध के दौरान भारतीय व्यापारियों और उद्योगपतियों ने भारी मुनाफा कमाया था। अतः वे काफी शक्तिशाली हो चुके थे। अपने व्यवसाय को फैलाने के लिए उन्होंने ऐसी औपनिवेशिक नीतियों का विरोध किया जिनके कारण उनकी व्यावसायिक गतिविधियों में बाधा आती थी। वे विदेशी वस्तुओं के आयात से सुरक्षा चाहते थे और रुपया-स्टर्लिंग के विदेशी विनिमय अनुपात में परिवर्तन चाहते थे, ताकि आयात में कमी लाई जा सके।

संघों का गठन- अपने व्यावसायिक हितों की सुरक्षा के लिए उन्होंने 1920 में **भारतीय औद्योगिक एवं व्यावसायिक कांग्रेस** (इंडियन इंडस्ट्रियल एंड कमर्शियल कांग्रेस) और 1927 में **भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग परिसंघ** (फैडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री-फिक्की) का गठन किया।

पुरुषोत्तम दास ठाकुर और जी.डी.बिड़ला जैसे जाने-माने उद्योगपतियों के नेतृत्व में उद्योगपतियों ने भारतीय अर्थव्यवस्था पर औपनिवेशिक नियंत्रण का विरोध किया और पहले सिविल अवज्ञा आंदोलन का समर्थन किया। उन्होंने आंदोलन को आर्थिक सहायता दी और आयातित वस्तुओं को खरीदने या बेचने से इंकार कर दिया। अधिकतर व्यवसायी स्वराज को ऐसे युग के रूप में देखते थे जिसमें कारोबार पर औपनिवेशिक

प्रतिबंध नहीं होगा और व्यापार एवं उद्योग निर्बाध ढंग से फल-फूल सकेंगे।

24. देश के विभिन्न भागों में सविनय अवज्ञा आंदोलन किस प्रकार अस्तित्व में आया? उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

1. गुजरात के पाट्टीदार तथा उत्तर प्रदेश के जाट आंदोलन में सक्रिय थे। व्यापार में मंदी तथा गिरती कीमतों के कारण वे अधिक परेशान थे। इस स्थिति में उनके लिए सरकारी लगान चुकाना असंभव हो गया था।
2. चारों तरफ असंतोष का वातावरण फैला था। संपन्न किसानों ने सविनय अवज्ञा आंदोलन का बढ़-चढ़कर समर्थन किया। उन्होंने अपने समुदायों को एकजुट किया। उनके लिए स्वराज की लड़ाई भारी लगान के विरुद्ध थी।
3. व्यवसायी वर्ग के लोगों ने अपने कारोबार को फैलाने के लिए ऐसी औपनिवेशिक नीतियों का विरोध किया जिनके कारण उनकी व्यावसायिक गतिविधियों में रुकावट आती थी। वस्तुतः वे विदेशी वस्तुओं के आयात से सुरक्षा चाहते थे।
4. सविनय अवज्ञा आंदोलन में औरतों ने भी बड़े पैमाने पर हिस्सा लिया। उन्होंने जुलूसों में भाग लिया, नमक बनाया, विदेशी कपड़ों तथा शराब की दुकानों की पिकेटिंग की। गाँधीजी के आह्वान के बाद औरतों को राष्ट्र की सेवा करना अपना पवित्र दायित्व दिखाई देने लगा था।

कुछ मजदूरों ने भी सविनय अवज्ञा आंदोलन में हिस्सा लिया। उन्होंने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तथा खराब कार्य स्थितियों के खिलाफ अपने को इस लड़ाई से जोड़ लिया था। उदाहरण के लिए 1930 में रेलवे कामगारों एवं 1932 में गोदी कामगारों की हड़ताल। 1930 में छोटा नागपुर की टिन खानों के मजदूरों ने गाँधी टोपी पहनकर रैलियों में हिस्सा लिया।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

25. गाँधी जी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन क्यों प्रारंभ किया? सविनय अवज्ञा आंदोलन की किन्हीं चार विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

9 अप्रैल, 1930 को मोहनदास करमचंद गाँधी ने देशवासियों के समक्ष सविनय अवज्ञा आंदोलन का कार्यक्रम रखा।

सविनय अवज्ञा आंदोलन की विशेषताएँ-

1. इस आंदोलन के अंतर्गत लोगों ने न केवल अंग्रेजों का सहयोग न करने के लिए बल्कि औपनिवेशिक कानूनों का उल्लंघन करने के लिए भाग लिया।
2. सत्याग्रहियों ने नमक कानून को तोड़ा और सरकारी नमक कारखानों के सामने प्रदर्शन किए।
3. विदेशी कपड़ों का बहिष्कार किया गया और उन कपड़ों की होली जलाई गई। शराब की दुकानों की पिकेटिंग की गई।

4. किसानों ने लगान और चौकीदारी कर चुकाने से इंकार कर दिया। गाँव में तैनात कर्मचारियों ने त्यागपत्र देने आरंभ किए।

26. सविनय अवज्ञा आंदोलन असहयोग आंदोलन से किस प्रकार भिन्न था? व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

1. असहयोग आंदोलन 1920 से 1922 ई. तक चला जबकि सविनय अवज्ञा आंदोलन 1929 से 1934 ई. तक चलता रहा।
2. दोनों आंदोलनों के शुरु होने के हालात और कारण कुछ आपस में भिन्न थे। असहयोग आंदोलन मार्शल लॉ और जलियांवाला बाग के हत्याकाण्ड के विरुद्ध फैले रोष का परिणाम था, जब भारतीयों पर अत्याचार किए जा रहे थे और उन्हें गोली का निशाना बनाया जा रहा था। सविनय अवज्ञा आंदोलन के शुरु होने का मुख्य कारण लाला लाजपत राय की मृत्यु थी जो अंधाधुंध लाठी-चार्ज के कारण लाहौर में हुई थी। हाँ, दोनों घटनाएँ पंजाब से ही संबंधित थीं।
3. असहयोग आंदोलन का मुख्य उद्देश्य स्वराज्य था अर्थात् आंतरिक मामलों में स्वतंत्रता परंतु सविनय अवज्ञा आंदोलन का मुख्य उद्देश्य पूर्ण स्वतंत्रता की माँग थी।
4. सविनय अवज्ञा आंदोलन अपने विस्तार में असहयोग आंदोलन से कहीं अधिक व्यापक था। असहयोग आंदोलन जन-आंदोलन का आरंभ था जबकि सविनय अवज्ञा आंदोलन एक विशाल जन आंदोलन था।
5. कुछ विद्वानों की ऐसी सोच है कि असहयोग आंदोलन को महात्मा गाँधी ने 1922 ई. में स्वयं वापिस लिया था जबकि सविनय अवज्ञा आंदोलन धीरे-धीरे 1934 ई. में अपने-आप समाप्त हो गया।

परंतु निःसंदेह ये दोनों आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण पड़ाव थे।

27. क्रांतिकारी आंदोलन में महिलाओं की भूमिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

बंगाल की अनेक वीर औरतों ने क्रांतिकारी सूर्यसेन का साथ दिया। उन्होंने सेन के सुर-में-सुर मिलाकर घोषित किया कि **गाँधी जी का राज आ गया है।** इन वीरांगनाओं में **प्रीतिलता वाडेकर एवं कलपना दत्त** सर्वाधिक प्रसिद्ध थीं। 22 सितंबर, 1932 को प्रीतिलता वाडेकर के नेतृत्व में औरतों ने चिटगाँव स्थित यूरोपीय क्लब पर बमों तथा पिस्तौलों के साथ आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण के दौरान उन्हें बाहरी चोटें लगीं। शीघ्र ही उन्होंने आत्महत्या (प्रीतिलता वाडेकर ने) कर ली ताकि निर्दयी पुलिस के द्वारा कैद न कर ली जायें।

स्कूल में पढ़ने वाली लड़कियाँ जैसे कि **सुनीति चौधरी** एवं **शांति घोष** भी पीछे नहीं रहीं। उन्होंने त्रिपुरा के मजिस्ट्रेट स्टीवेन्स को गोली मार कर मृत्यु की नींद सुला दिया। एक

अन्य बहादुर लड़की **बीनादास** ने 1932 में बंगाल के गवर्नर **स्टानली जैक्सन** पर आक्रमण किया। इन वीरांगनाओं की क्रांतिकारी गतिविधियों एवं बलिदान से पूर्ण कार्यवाहियों ने अनेक भारतीयों को त्याग करने के लिए प्रेरित किया।

28. गाँधी जी द्वारा हरिजनों को उनके अधिकारों को दिलाने के लिए किए गए किन्हीं तीन प्रयासों का उल्लेख करिए।

उत्तर :

महात्मा गाँधी द्वारा हरिजनों को अधिकार दिलाने के प्रयास-

1. दलितों को **हरिजन** का नाम देने का सबसे पहले प्रयास महात्मा गाँधी ने किया। उनके अनुसार हरिजन का अर्थ है- **प्रभु की संतान।**
2. बहुत समय तक कांग्रेस ने भी दलित लोगों की अवहेलना की, इस डर से कि कहीं ऊँचे वर्ग के लोग उनसे रुष्ट न हो जाएँ परन्तु महात्मा गाँधी ने सबसे पहले इस धारणा को समाप्त किया। उन्होंने इस बात की घोषणा की कि जब तक छुआछूत दूर नहीं हो जाती तब तक स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं।
3. उन्होंने स्वयं हरिजन बस्तियों में रहकर उनके साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित किये ताकि अन्य लोगों को भी इस ओर प्रोत्साहन मिले।
4. उन्होंने समय-समय पर हरिजनों के मंदिरों में स्वतंत्र प्रवेश के लिए तथा जनसाधारण के कुओं और तालाबों से पानी भरने, स्कूल में उनके प्रवेश के उद्देश्य से भी कई बार सत्याग्रह किया और तब तक साँस नहीं ली जब तक उन्हें सम्मानजनक स्थान नहीं दिला दिया।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

29. असहयोग आंदोलन के विभिन्न चरणों का वर्णन कीजिए।

अथवा

महात्मा गाँधी द्वारा असहयोग आंदोलन के संदर्भ में सुझाए गए तीन मुख्य प्रस्तावों का उल्लेख कीजिए। किस घटना के कारण इस आंदोलन को वापस लिया गया ?

उत्तर :

1. असहयोग आंदोलन के प्रमुख चरण निम्नलिखित थे-
1. गाँधी जी का विचार था कि यह आंदोलन चरणबद्ध तरीके से आगे बढ़ना चाहिए।
2. इनकी शुरुआत लोगों को सरकार द्वारा दी गई पदवियाँ लौटाकर की जानी चाहिए।
3. उनका विचार था कि लोगों को सरकारी नौकरियों, सेना, पुलिस, अदालतों, विद्यार्थी परिषदों, स्कूलों और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना चाहिए।
4. यदि सरकार दमन का रास्ता अपनाती है तो व्यापक सविनय अवज्ञा अभियान भी शुरू किया जाना चाहिए।

5. अंततः 1920 में कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में असहयोग कार्यक्रम पर स्वीकृति की मोहर लगा दी गई।
2. 1922 में गोरखपुर स्थित चौरी-चौरा में बाजार से गुजर रहा एक शांतिपूर्ण जुलूस पुलिस के साथ हिंसक टकराव में बदल गया। इस घटना के बारे में सुनते ही महात्मा गाँधी ने असहयोग आंदोलन रोकने की घोषणा कर दी।
30. महात्मा गाँधी ने भारी आशंकाओं के बीच सविनय अवज्ञा आंदोलन को दोबारा शुरू क्यों किया?

उत्तर :

1. 5 मार्च, 1931 को गाँधीजी ने इरविन के साथ एक समझौता किया। इसे गाँधी-इरविन समझौता कहा जाता है।
2. इस समझौते के अनुसार लंदन में होने वाले दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के उद्देश्य से गाँधी जी को आमंत्रित किया गया। उन्होंने अपनी सहमति भी व्यक्त कर दी।
3. इसके बदले सरकार राजनीतिक कैदियों को मुक्त करने पर राजी हो गई लेकिन वार्ता बीच में ही टूट गई और उन्हें निराश होकर भारत लौटना पड़ा था।
4. इसके अतिरिक्त, देश में सरकार ने नए सिरे से दमन प्रारंभ कर दिया था। गण्धार खान तथा जवाहर लाल नेहरू दोनों जेल में थे और कांग्रेस को गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया था।
5. देश में सभाओं, प्रदर्शनों तथा बहिष्कार जैसी गतिविधियों पर रोक लगाने के लिए सख्त कदम उठाए जा रहे थे। यही कारण था कि अवज्ञा आंदोलन दोबारा शुरू करना पड़ा था।

31. देहात में असहयोग आंदोलन के फैलने का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

असहयोग आंदोलन का आरंभ राष्ट्रीय आंदोलन में शहरी मध्यमवर्ग के शामिल होने से हुआ लेकिन यह धीरे-धीरे अवध के किसानों तक फैल गया। इसका नेतृत्व बाबा रामचंद्र कर रहे थे। उनका आंदोलन ताल्लुकदारों और जमींदारों के विरुद्ध था जो देहात में किसानों से भारी-भरकम लगान और अनेक प्रकार के कर वसूलते थे। किसानों को बेगार भी करनी पड़ती थी। पट्टेदार के रूप में किसानों के पट्टे निश्चित नहीं होते थे। वे अपनी इन्हीं समस्याओं को लेकर असहयोग आंदोलन में शामिल हुए। उनकी मुख्य माँग थी कि लगान कम किया जाए, बेगार समाप्त हो और जमींदारों का सामाजिक बहिष्कार किया जाए। यह आंदोलन देहातों में आग की तरह फैलने लगा। अंत में स्थानीय नेताओं ने यह कहा कि महात्मा गाँधी जी ने घोषणा कर दी कि अब कोई लगान नहीं भरेगा और जमीन गरीबों में बाँट दी जाएगी।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

32. असहयोग आंदोलन धीरे-धीरे शहरों में मंद क्यों पड़ने लगा? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

असहयोग आंदोलन के शहरों में धीमा पड़ने के कारण-

1. खादी का कपड़ा मिलों में भारी मात्रा में बनने वाले कपड़े के मुकाबले में प्रायः महंगा होता था और गरीब लोग उसे खरीद नहीं सकते थे। अतः वे मिलों के कपड़े का लंबे समय तक बहिष्कार कैसे कर सकते थे?
2. ब्रिटिश संस्थानों के बहिष्कार से भी समस्या पैदा हो गई। आंदोलन की सफलता के लिए वैकल्पिक भारतीय संस्थानों की स्थापना आवश्यक थी ताकि ब्रिटिश संस्थानों के स्थान पर उनका उपयोग किया जा सके। परन्तु वैकल्पिक संस्थानों की स्थापना की प्रक्रिया धीमी थी। फलस्वरूप, विद्यार्थी और शिक्षक सरकारी स्कूलों में लौटने लगे और वकील दोबारा सरकारी अदालतों में दिखाई देने लगे।
3. काउंसिल के चुनावों का सभी वर्गों ने बहिष्कार नहीं किया। मद्रास की जस्टिस पार्टी ने काउंसिल चुनावों में भाग लिया।

33. नमक यात्रा की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

नमक का उपयोग प्रत्येक व्यक्ति के भोजन का प्रमुख अवयव है। इसका विरोध करने वाला मानव का शत्रु के समान है। अंग्रेजों ने भी भारत में नमक कानून बना कर तथा उसके बनाने का निषेध करते हुए उसके मूल्य में वृद्धि कर दी थी।

गाँधी जी ने इस संबंध में तत्कालीन वायसराय **लार्ड इरविन** को एक पत्र के माध्यम से सत्याग्रह का सिंहनाद बजा दिया। इस कार्यक्रम को औपचारिक आधार देने के लिए गाँधी जी ने अमेरिका तथा रूस के अखबारों के प्रतिनिधियों को भी बुलाया था।

कार्यक्रम के प्रारंभ में **केसरी** नामक समाचार पत्र में भविष्यवाणी की थी कि यदि अंग्रेज सरकार गाँधी जी तथा उनके अनुयायियों को गिरफ्तार करती है तो विश्व के देशों में इसकी निंदा होगी और ब्रिटिश सरकार पर दबाव बढ़ेगा। यदि गाँधी जी को गिरफ्तार करेगी तो नमक कानून के साथ-साथ अन्य कानूनों की भी धजियाँ उड़ जाएंगी। नमक कानून तोड़ने की घटना संपूर्ण भारतीयों को एक सूत्र में बाँध देगी। 25 दिन तक यह आंदोलन चला जिससे ब्रिटिश संसद में हड़कंप मच गया। लार्ड इरविन ने कांग्रेस को गोल मेज कांफ्रेंस में आमंत्रित किया तथा उनकी 11 माँगों में से 2 या 4 माँगों को स्वीकार कर लिया।

34. किस प्रकार इतिहास की पुनर्व्याख्या ने राष्ट्रवाद की भावना को जागृत किया?

उत्तर :

इतिहास की पुनर्व्याख्या राष्ट्रवाद की भावना पैदा करने का काम कर रही थी। उन्नीसवीं सदी के अंत तक आते-आते बहुत सारे भारतीय महसूस करने लगे थे कि राष्ट्र के प्रति गर्व का भाव जगाने के लिए इतिहास को अलग ढंग से पढ़ाया जाना चाहिए। अंग्रेजों की नजर में भारतीय पिछड़े हुए और आदिम लोग थे जो अपना शासन खुद नहीं संभाल सकते थे। जवाब में भारत के लोग अपनी महान उपलब्धियों की खोजों की ओर देखने लगे। उन्होंने उस गौरवमयी प्राचीन युग के बारे में गुणगान करना शुरू कर दिया जब कला और वास्तुशिल्प, विज्ञान और गणित, धर्म और संस्कृति, कानून और दर्शन, हस्तकला और व्यापार फल-फूल रहे थे। उनका कहना था कि इस महान युग के बाद पतन का समय आया और भारत को गुलाम बना लिया गया। इस राष्ट्रवादी इतिहास में पाठकों को अतीत में भारत की महानता व उपलब्धियों पर गर्व करने और ब्रिटिश शासन के तहत दुर्दशा से मुक्ति के लिए संघर्ष का मार्ग अपनाने का आह्वान किया जाता था।

35. आर्थिक मोर्चे पर असहयोग आंदोलन के प्रभावों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

असहयोग आंदोलन की शुरुआत शहरी मध्यवर्ग की हिस्सेदारी के साथ हुई। हजारों विद्यार्थियों ने सरकारी स्कूल-कॉलेजों का बहिष्कार किया। शिक्षक वर्ग ने भी अपने त्यागपत्र दे दिए। वकीलों ने न्यायालयों का बहिष्कार किया। सरकारी कर्मचारियों ने भी सरकारी नौकरियों से त्यागपत्र दे दिया।

आर्थिक मोर्चे पर असहयोग आंदोलन का प्रभाव अधिक देखा गया। विदेशी सामान का बहिष्कार किया गया। शराब की दुकानों की पिकेटिंग की गई और विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई। 1919 से 1922 के बीच विदेशी कपड़ों का आयात आधा रह गया था।

विदेशी व्यापार के बहिष्कार के परिणामस्वरूप स्वदेशी वस्तुओं की माँग में वृद्धि हुई तथा भारतीय उद्योग-धंधों को नया जीवन मिला।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

36. राष्ट्रवादियों पर शिकंजा कसने के लिए ब्रिटिश प्रशासन द्वारा उठाये गये तीन दमनकारी उपायों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

अंग्रेजी शासनकाल में भारतीय राष्ट्रवादियों ने सामूहिक एकता का सहारा लेते हुए अनेकों विधियों से देश को स्वतंत्र कराने के प्रयत्न किए। किसानों, श्रमजीवियों तथा दस्तकारों का अंग्रेजी सरकार ने अत्यधिक दमन किया। कुछ दमनकारी उपाय इस प्रकार थे।

1. किसानों को अपनी कृषि जोत पर अधिक मालगुजारी देनी पड़ती थी। मालगुजारी को निश्चित समय पर तथा पूरी संख्या में न दिये जाने पर उन्हें शारीरिक दंड के अतिरिक्त

उन्हें उनकी भूमि से बेदखल भी कर दिया जाता था।

2. भारतीय दस्तकारों को उनके द्वारा बनाई गई वस्तुओं को केवल उन्हीं को बेचने के लिए विवश किया जाता था तथा उन्हें सीमित मात्रा में ही कच्चा माल दिया जाता था। उन्हें कम मूल्य पर उत्पाद को बेचने के लिए विवश किया जाता था।
3. भारतीयों के साथ शिक्षा प्राप्त करने पर भी भेदभाव किया जाता था। भारतीयों की शिक्षा के लिए कुछ स्कूल ही निर्धारित थे। उन्हें कुछ सीमा तक ही शिक्षित किया जाता था जिससे वे केवल निम्न पदों पर ही सेवा कर सकें। बड़े एवं उच्च पदों के लिए उन्हें अयोग्य घोषित कर दिया जाता था।

37. असहयोग किस प्रकार आंदोलन बन सका? उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

1. प्रथम विश्व युद्ध में भारतीय सैनिकों ने बहुत सहयोग किया परन्तु युद्ध समाप्ति के पश्चात अंग्रेजी सरकार ने उनकी ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया तथा उनका खूब शोषण किया।
2. प्रथम विश्व युद्ध के बाद भारत को महामारियों ने घेर लिया परन्तु सरकार ने इस ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया।
गाँधी जी ने प्रथम विश्व युद्ध में भारतीयों से भाग लेने की सिफारिश इस कारण की थी कि अंग्रेज उन्हें स्वराज्य दे देंगे।

इन्हीं सब कार्यों को देखकर गाँधी जी ने भारतवासियों को अंग्रेजी सरकार के साथ सहयोग न करने की बात कही।

अब भारतीय सरकार के किसी भी आदेश का पालन नहीं करते थे तथा अपना दिया हुआ काम भी ठीक प्रकार से नहीं करते थे। अध्यापकों, वकीलों तथा अधिकारियों ने भी इन आदेशों का विरोध किया और गाँधी जी के अनुयायी बन गये। इस बात का प्रचार संपूर्ण भारत में आग की भाँति फैल गया। विद्यार्थियों ने विद्यालयों का बहिष्कार किया। श्रमिकों ने काम करने में उत्साह दिखाना बन्द कर दिया। इस प्रकार से इस असहयोग की भावना से संपूर्ण राष्ट्र में एक आंदोलन का रूप ले लिया।

38. गाँधी जी के अनुसार सत्याग्रह के विचार की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

गाँधी जी ने **सत्याग्रह** का अर्थ सत्य के लिए आग्रह लोगों की केवल मौखिक रूप से नहीं वरन व्यावहारिक रूप में उन्हें समझाया तथा अंग्रेजों के कानूनों को तोड़ने एवं न जानने के लिए विवश किया।

सन् 1917 में अंग्रेज सरकार ने गाँधी जी को बिहार के चंपारण नामक स्थान पर आगमन से वहाँ का कलक्टर घबरा गया। उसने गाँधी जी को वहाँ से चले जाने को कहा जिसे

गाँधी जी ने अस्वीकार कर दिया। सरकार ने इस संबंध में एक समिति गठित की। गाँधी जी ने किसानों के पक्ष में सुझाव दिये।

गाँधी जी ने भारतीयों पर अंग्रेजों द्वारा किये जा रहे अत्याचारों पर रोक लगाने के लिए सत्याग्रह का सहारा लिया। खेड़ा नामक स्थान पर किसानों की फसल नष्ट हो जाने पर वे भूराजस्व देने में असमर्थ थे परन्तु उनसे जबरन वसूली की जा रही थी। गाँधी जी ने इसका विरोध करते हुए सत्याग्रह किया।

39. महात्मा गाँधी ने 20 सितम्बर, 1932 को अनिश्चितकालीन उपवास क्यों किया ?

उत्तर :

16 अगस्त, 1932 ई. को ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ने जो घोषणा की थी उसे इतिहास में सांप्रदायिक पंचाट कहा जाता है। वस्तुतः यह ब्रिटिश सरकार द्वारा सांप्रदायिक दलों को प्रसन्न करने का एक प्रयास था। इसे देखने से यह भली-भाँति स्पष्ट होता था कि मुस्लिम लीग के मुहम्मद अली जिन्ना द्वारा द्वितीय गोलमेज में प्रस्तुत की गई 14 माँगों में से अधिकांश को स्वीकार कर लिया गया। इस निर्णय से हिन्दुओं, मुसलमानों, भारतीय ईसाइयों, महिलाओं, सिक्खों एवं सांप्रदायिक, जातिगत आदि संकीर्ण आधारों पर अपने-अपने प्रतिनिधियों का चयन करके उन्हें विधानसभाओं में भेजने का अधिकार दिया गया। महात्मा गाँधी ने इस निर्णय द्वारा सर्वाधिक घृणित व्यवस्था (हरिजनों के लिए पृथक् निर्वाचन व्यवस्था) के विरुद्ध पूना जेल में ही आमरण अनशन करने की घोषणा कर दी। शीघ्र ही बिड़ला परिवार के प्रमुख की कोशिशों के कारण डॉ. भीमराव अंबेडकर एवं महात्मा गाँधी में पूना जेल में ही बातचीत हुई तथा परिणाम स्वरूप पूना समझौता हुआ।

40. जनजातीय आंदोलनों के कारणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

जनजातीय आंदोलनों के कारण-

1. जनजातीय क्षेत्रों में ईसाई मिशनरियों ने अपने कार्यकलाप जारी रखे। उन्होंने आदिवासियों को धर्म परिवर्तित करने के लिए उकसाया या फुसलाया। इन मिशनरियों ने अंग्रेजी शिक्षा, संस्कृति का प्रचार-प्रसार कर उन्हें ईसाई बनाने के साथ-साथ उनकी संस्कृति को भी परिवर्तित करने की कोशिश की। इससे जनजातीय लोग चिढ़ गये।
2. अंग्रेजों ने आदिवासियों के क्षेत्रों के जंगल हड़प लिये तथा उनसे पशु चराने एवं कीमती लकड़ियाँ काटने एवं उनके उपयोग करने पर सख्ती से पाबंदी लगा दी गई।
3. कुछ ऐसे कानून आदिवासियों पर ब्रिटिश सरकार तथा अधिकारियों द्वारा थोप दिए गए जिन्हें आदिवासियों ने अपने व्यक्तिगत जीवन में हस्तक्षेप करने वाला माना तथा अंग्रेजों के विरुद्ध हो गये।
4. जनजातियों के विद्रोह जमींदारों द्वारा उनके शोषण किये जाने के खिलाफ प्रतिक्रिया भी मानी गयी।
5. सरकार ने उनकी झूम खेती पर जो पाबंदी लगाई थी

उससे भी जनजाति के लोगों ने विद्रोह किये।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. भारत में राष्ट्रवाद की भावना को सुदृढ़ बनाने में विभिन्न सांस्कृतिक प्रक्रियाओं ने किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ?

उत्तर :

1. **संयुक्त संघर्ष**-भारत में अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष में राष्ट्रवाद की भावना प्रेरित करने का मुख्य कारण संयुक्त संघर्ष था।
2. **सांस्कृतिक प्रक्रियाएँ**-विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक प्रक्रियाएँ ऐसी थीं जिनके द्वारा लोगों की कल्पना में राष्ट्रवाद के प्राण फूँके गए। इतिहास और कथाएँ, लोकगाथाएँ व गीत, लोकप्रिय छवियाँ व प्रतीक-सभी ने राष्ट्रवाद की भावना को सुदृढ़ बनाया।
3. **भारत माता**-भारत की पहचान भारत माता की छवि का रूप धारण कर गई जो पहली बार बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने बनाई थी जिन्होंने मातृभूमि की स्तुति के रूप में **वंदे मातरम्** गीत लिखा था। स्वदेशी आंदोलन की प्रेरणा से रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भारत माता की विख्यात छवि को चित्रित किया।
4. **भारतीय लोक कथाओं को पुनर्जीवित करना**- राष्ट्रवाद का विचार भारतीय लोक कथाओं को पुनर्जीवित करके भी विकसित किया गया। 19वीं सदी के अंत में राष्ट्रवादियों ने भाटों व चारणों द्वारा गाई-सुनाई जाने वाली लोक कथाओं को दर्ज (रिकार्ड) करना शुरू कर दिया। यह अपनी परंपरागत संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए किया गया जो पश्चिमी शक्तियों द्वारा भ्रष्ट व दूषित हो चुकी थी। अपनी राष्ट्रीय पहचान को ढूँढ़ने और अपने अतीत में गौरव का भाव पैदा करने के लिए इस लोक परंपरा को बचाकर रखना जरूरी था।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

2. भारत में जिन कारकों ने तर्कवाद को उदित एवं प्रोत्साहित किया उन पर विचार-विमर्श कीजिए।

उत्तर :

कारक- तर्कसम्मत चिन्तन या राजनीति का तर्कवाद निम्नलिखित कारकों से प्रोत्साहित हुआ-

1. 200 से भी अधिक वर्षों तक लगातार गुलामी झेलने के पश्चात तर्कबोध हुआ कि अंग्रेजों की **बाँटो और राज करो** नीति बनाम साम्राज्यवाद किस सीमा तक जन-पीड़ा का कारण बन सकता है।
2. ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, राजा राममोहन राय, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, अरबिन्दो घोष, ज्योतिबा फुले, ई.वी. रामास्वामी नैकर, श्री नारायण गुरु, अय्यान वली

आदि समाज सुधारकों ने समाज की कुरीतियों को हटाया, महिलाओं को समाज में सम्मानजनक स्थान दिलाने का प्रयास किया तथा उनकी शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया। दयानन्द सरस्वती जैसे विद्वानों ने **वेदों की ओर लौट चलो** का नारा देकर पाश्चात्य संस्कृति की कीचड़ से सने भारतीयों को अपनी गरिमामयी संस्कृति को पुनः समझने और मनन-चिन्तन करके स्वतंत्र जीवन जीने की प्रेरणा दी।

3. तर्कवाद का ही उदय था कि 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस बनी और मुक्ति संघर्ष में क्रमशः नए-नए प्रयोग और आविष्कार होने लगे।

निष्कर्ष—तर्क मनुष्य की प्रश्न पूछने की स्वाभाविक जिज्ञासा है जो व्यष्टि को आवरणरहित सत्य का ज्ञान कराती है। इसमें धर्म, भाषा, जाति के प्रति अंधभक्ति के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता है।

3. 19वीं शताब्दी के भारत में भारतीय साहित्य के विकास ने राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न करने में कैसे मदद की?

उत्तर :

भारतीय साहित्य का राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न करने में सहयोग— 19वीं शताब्दी के भारत में भारतीय साहित्य के विकास ने राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न करने में बड़ा योग दिया। 19वीं शताब्दी में एक बड़ी मात्रा में राष्ट्रीय साहित्य का सृजन हुआ। बंकिमचन्द्र चटर्जी, दीनबंधु मिश्रा, हेमचन्द्र बैनर्जी, नवीनचन्द्र सेन, रविन्द्रनाथ टैगोर आदि महान साहित्यकारों ने अपने लेखों द्वारा भारतीयों में एक नई जान फूँक दी। बंकिमचन्द्र के **आनन्द मठ** (Anand math) को बंगाली देशभक्ति का बाइबल माना जाता है। **वन्देमातरम्** का राष्ट्रीय गीत इसी पुस्तक की देन है।

अंग्रेजी भाषा के माध्यम से जब पश्चिमी साहित्य का अनुवाद हुआ तो धीरे-धीरे भारतीयों के मन पर पश्चिमी विचारधारा का बड़ी तीव्र गति से प्रभाव होने लगा। बर्क (Burke), मिल (Mill), मिलटन (Milton), रूसो (Rousseau), मोंटस्क्यू (Montesquieu), वाल्टेयर (Voltaire) आदि पश्चिमी विचारकों और क्रान्तिकारियों के लेखों ने भारतीय जनता में स्वतंत्रता और राष्ट्रीयता के भाव भर दिये और वे अपने देश को स्वतंत्र कराने के कार्य में लग गए।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

4. मुस्लिम लीग की स्थापना कब हुई थी? 1906 से 1914 तक मुस्लिम लीग की नीतियों का संक्षेप में वर्णन कीजिए। पाकिस्तान को एक पृथक् राज्य गठन कराये जाने का मुस्लिम लीग का मुख्य उद्देश्य कब बन गया?

उत्तर :

मुस्लिम लीग की स्थापना— मुस्लिम लीग की स्थापना 30 दिसम्बर, 1906 ई. को ढाका में हुई। इसका उद्देश्य भारतीय

मुसलमानों में ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादारी पैदा करना तथा भारतीय मुसलमानों के अधिकारों की रक्षा करना था।

मुस्लिम लीग की नीति में परिवर्तन के कारण—

1. तुर्की के सुल्तान के साथ ग्रेट ब्रिटेन का कठोरतापूर्ण व्यवहार भारतीय मुसलमानों को शर्मिन्दगी और अपमानजनक लगा। इसलिए उन्होंने इसके विरुद्ध खिलाफत कमेटी बनाकर आंदोलन करने का निश्चय किया।
2. 1911 ई. में मुस्लिम लीग से परामर्श लिए बिना ही ब्रिटिश सरकार ने बंगाल का विभाजन रद्द कर दिया था।
3. **हमदर्द** और **अल हिलाल** नामक समाचार पत्र अंग्रेजों द्वारा बन्द करवा दिए गए थे।

1933 में रहमत अली (कैम्ब्रिज का एक विद्यार्थी) ने **पाकिस्तान** शब्द की विभाजित राज्य-क्षेत्रों के रूप में कल्पना की। मुहम्मद इकबाल ने मुस्लिम लीग के अध्यक्षतात्मक भाषण में इसका गुप्त संदेश दिया। पाकिस्तान प्रस्ताव, 1940 ने रहस्यमय एवं द्विअर्थक दंश से पृथक् पाकिस्तान लेने की मंशा जता दी और 1946 के चुनाव पश्चात बनी अंतरिम सरकार के काम में रोड़े अटकाने तथा संविधान सभा की सदस्यता से बहिष्कार करने और सीधी कार्यवाही का दिवस घोषित करने के साथ ही जिन्ना की द्विराष्ट्र नीति का वीभत्स दृश्य नोआखाली, कलकत्ता, बंबई और बिहार में कत्लेआम या भीषण नर-संहार के रूप में दिखाई पड़ा।

5. 1920 के दशक में भारतीय राजनीति को आकार देने वाले दो अति महत्वपूर्ण कारकों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

1920 के दशक में भारतीय राजनीति को आकार प्रदान करने वाले कुछ कारक निम्नलिखित थे—

1. युद्ध के वर्षों के दौरान 1913 एवं 1918 के बीच वस्तुओं की कीमत लगभग दो गुनी हो गई। इससे आम आदमी को घोर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।
2. ग्रामीणों को सिपाहियों की आपूर्ति करने के आदेश दिए गए। ग्रामीण क्षेत्रों में इस तरह की बलपूर्वक बहाली ने लोगों के बीच सरकार के प्रति तीव्र क्रोध की भावना पैदा की।
3. 1918-21 के दौरान भारत के कई हिस्सों में फसलें खराब हो गईं, इसके कारण खाद्यान्नों की भारी कमी उत्पन्न हुई।
4. युद्ध के कारण हथियारों के निर्माण एवं आपूर्ति पर भारी खर्च हुआ जिसे युद्ध ऋण के द्वारा पुरा किया गया तथा इसकी क्षतिपूर्ति के लिए चुंगी कर में वृद्धि की गई तथा आयकर के रूप में एक कर आरोपित किया गया।
5. साइमन कमीशन जिसकी नियुक्ति भारत में संवैधानिक तंत्र के कार्य-कलाप के मूल्यांकन तथा आवश्यक परिवर्तन संबंधी सलाह देने के लिए की गई थी, में कोई भी भारतीय

सदस्य नहीं था।

इन सभी कारकों ने भारत में 1920 के दशक के दौरान एक नई आर्थिक-राजनीतिक परिस्थिति का निर्माण किया।

6. सर मोहम्मद इकबाल ने मुस्लिम लीग का अध्यक्ष चुने जाने पर जो भाषण दिया उसको आप पाठ्यपुस्तक में पढ़ ही चुके हैं। बताइए-

1. क्या आप सांप्रदायिकता के बारे में इकबाल के विचारों से सहमत हैं?
2. क्या आप सांप्रदायिकता को अलग प्रकार से परिभाषित कर सकते हैं?

उत्तर :

1. मैं सर मोहम्मद इकबाल के सांप्रदायिकता के विषय में प्रकट किए गए विचारों से सहमत नहीं हूँ। उन्होंने 1930 में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को धर्म तथा सांप्रदायिकता के नाम पर विभाजित करने की कोशिश की। वस्तुतः उस समय उनके मस्तिष्क में अंग्रेजों की **फूट डालो और शासन करो** (Divide and Rule) की नीति सफलतापूर्वक कार्य कर गई। इसीलिए उनके कट्टर राजनैतिक प्रतिद्वंद्वी यहाँ तक दावा करते हैं कि मोहम्मद इकबाल ने मुसलमानों के लिए अल्पसंख्यक राजनीतिक हितों की रक्षा के उद्देश्य से अलग निर्वाचन क्षेत्रों की जरूरत पर एक बार फिर जोर दिया। माना जाता है कि बाद के सालों में पाकिस्तान की माँग के लिए जो आवाज उठी उसका बौद्धिक औचित्य उनके इसी बयान से उपजा था।
2. हाँ, हम सांप्रदायिकता को अलग प्रकार से परिभाषित कर सकते हैं। सांप्रदायिकता एक संकीर्ण विचारधारा है जो धर्म के नाम पर एक मानव को दूसरे से अलग करती है। समाज में घृणा फैलाती है और धर्मांध तथा स्वार्थी नेतागण अपनी राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए इसकी आड़ में मत की राजनीति (Vote Politics) को अपनाते हुए अपनी राजनैतिक रोटिया सेंकते हैं।

भारत-पाक विभाजन के पीछे मूलतः धर्मान्धता और धर्म-अज्ञानता ही प्रमुख सक्रिय कारक रहा है।

7. राष्ट्रीय आंदोलन में महात्मा गाँधी की भूमिका का उसके द्वारा अपनाये गये तरीकों के संदर्भ में आकलन कीजिए।

उत्तर :

भारत में जब अंग्रेजों का राज्य था और भारतीय जनता उनके द्वारा प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सताई जा रही थी। ऐसे समय में महात्मा गाँधी ने दक्षिण अफ्रीका से भारत आकर यहाँ की जनता का बारीकी से अध्ययन किया। उन्होंने भारतीयों की दशा सुधारने हेतु अहिंसा का सहारा लिया। इसके अंतर्गत उन्होंने अपने विचारों को भारतीय जनता के समक्ष रखा तथा आंदोलनों के रूप में अंग्रेजों के सामने विरोध प्रकट किया।

इन आंदोलनों में से कुछ प्रमुख आंदोलन जो गाँधी जी द्वारा प्रतिपादित थे, निम्नलिखित हैं-

1. **असहयोग आंदोलन-** इस संबंध में गाँधी जी का सुझाव था कि खिलाफत आंदोलन तथा असहयोग आंदोलन एक साथ चलाये जायें। इन्हें क्रमिक चरणों में चलाया जाये तथा उनके द्वारा भारतीयों को प्रदान की गयी उपाधियों का बहिष्कार करें।
2. **चंपारण सत्याग्रह-** सन् 1917 में गाँधी जी ने बिहार के चंपारण नामक स्थान पर पहला सत्याग्रह प्रारंभ किया जो किसानों की दुर्दशा को सुधारने संबंधी था। इसे वहाँ के अंग्रेज बागान मालिकों तथा प्रशासन को मानना पड़ा।

गाँधी जी ने किसानों के भूराजस्व कर की वसूली के विरोध में 1918 में खेड़ा सत्याग्रह किया।

गाँधी जी ने मुसलमानों तथा हिंदुओं को अधिक निकट लाकर उनमें पारस्परिक सद्भावना उत्पन्न की।

उन्होंने रॉलट एक्ट के विरोध में असहयोग आंदोलन शुरू किया।

9 अप्रैल 1930 को गाँधी जी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारम्भ किया जिसका उद्देश्य विदेशी नमक का बहिष्कार करना था। सत्याग्रहियों ने विदेशी कपड़ों का भी बहिष्कार किया।

अंग्रेजों ने सभी आंदोलनों को रोकने के लिए गाँधी इरविन समझौता करने का निर्णय लिया।

8. गाँधी जी ने राष्ट्रीय आंदोलन को कैसे जन आंदोलन में परिवर्तित किया?

उत्तर :

गाँधी जी के व्यक्तित्व एवं जीवन शैली का लोगों के मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ा जिससे एक राष्ट्रीय आंदोलन को व्यापक आंदोलन में बदलने में सहायता मिली-

1. उनकी सादी और महात्माओं जैसी जिन्दगी तथा जनसमूह को अपनी बात समझा पाने की कौशल ने उन्हें बहुत लोकप्रिय बना दिया।
2. उनका अविवादित नेतृत्व एवं आकर्षक व्यक्तित्व।
3. उनकी अहिंसक सत्याग्रह की नीति।
4. असहयोग एवं सविनय अवज्ञा आंदोलन।
5. उनके द्वारा शुरू किए गए विभिन्न सामाजिक सुधार जैसे छुआछूत के खिलाफ संघर्ष।
6. हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

9. सविनय अवज्ञा आन्दोलन में दलितों की भागीदारी बहुत सीमित थी, इस कथन की जाँच कीजिए।

उत्तर :

सविनय अवज्ञा आन्दोलन में यद्यपि भारत के सभी वर्ग यथा किसान वर्ग, व्यवसायी वर्ग, मुस्लिम वर्ग, दलित वर्ग आदि ने

भाग लिया तथापि दलितों का योगदान इस आन्दोलन में बहुत कम अथवा सीमित था। इसके कारण निम्नलिखित थे—

1. एक लम्बे समय तक कांग्रेस रुढ़िवादी उच्च वर्ग के लोगों—सनातनियों से भयभीत होकर दलितों के हितों की उपेक्षा करती रही। इसी कारण से अधिकांश दलितों ने इस आन्दोलन में भाग नहीं लिया।
2. दलित अधिकांश रूप में अशिक्षित थे जो गाँवों में रहते थे। वे बहुत गरीब थे तथा वे भूपतियों (जमींदारों) तथा साहूकारों को अपना अन्नदाता मानते थे। अतः वे उनके आदेशानुसार आन्दोलन में भाग लेते थे।
3. सरकार में भारतीयों का हिस्सा बहुत कम था और जितना भी हिस्सा था वे सब सवर्ण जाति के थे अतः उन्होंने दलितों को अपने अधीन रखना ही उचित समझा। इस प्रकार से दलितों की सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भागीदारी बहुत सीमित थी।

10. भारत में कुछ मुस्लिम राजनैतिक संगठन सविनय अवज्ञा आन्दोलन के प्रति उदासीन थे। इस कथन की परख कीजिए।

उत्तर :

भारत में सविनय अवज्ञा आन्दोलन 9 अप्रैल 1930 को महात्मा गाँधी द्वारा देशवासियों के समक्ष रखा गया। देश के कोने-कोने में इसकी सूचना पहुँच गयी तथा लोगों ने आन्दोलन के अन्तर्गत न केवल सहयोग करने वरन् औपनिवेशिक कानूनों का उल्लंघन शुरू कर दिया। विदेशी कपड़ों की होली जलायी, नमक कानून तोड़ा, किसानों ने लगान तथा चौकीदारी कर को चुकाने से मना कर दिया परन्तु कुछ मुस्लिम राजनीतिक संगठनों ने इस आन्दोलन में बढ़-चढ़कर भाग नहीं लिया। इसके निम्न कारण थे—

1. अंग्रेजों द्वारा चलाई गई **फूट डालो शासन करो** की नीति ने मुस्लिम समुदाय को सदैव सशंकित रखा। वे मुख्य धारा से जुड़ नहीं पाए।
2. मुस्लिम लीग ने प्रचार किया कि हिन्दू तथा मुसलमान दो अलग-अलग कौम हैं। इस प्रचार से मुस्लिम राजनीतिक संगठन सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग न लेकर उसके प्रति उदासीन रहे।
3. मुसलमानों ने अंग्रेजी सरकार के सामने ऐसी-ऐसी माँगे रखीं जिसे पूरा करने में सरकार असमर्थ थी तथा जिनका हल केवल देश का विभाजन ही था।
4. हिन्दू महासभा द्वारा हिन्दू राष्ट्र की माँग के प्रचार ने मुस्लिम नेताओं को मुसलमान राज्य की माँग करने पर आग में घी डालने का काम किया।
5. सर सैयद अहमद खान जैसे लोगों ने भी मुसलमानों को किसी राजनीतिक आंदोलन में भाग न लेने के लिए कहा क्योंकि उनके अनुसार आंदोलन से इस कौम का कोई भला नहीं होने वाला था।

उपरोक्त कारणों के कारण कुछ मुसलमान राजनीतिक

संगठन सविनय आन्दोलन के प्रति उदासीन हो गये।

11. असहयोग आंदोलन के प्रभाव का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

असहयोग आंदोलन का प्रभाव— 1920 के असहयोग आंदोलन को अपार सफलता मिली। विधानमंडलों के चुनावों में लगभग दो-तिहाई मतदाताओं ने मतदान नहीं किया। शिक्षा-संस्थाएँ खाली हो गईं। राष्ट्रीय शिक्षा का नया कार्यक्रम आरंभ किया गया। जामिया मिलिया और काशी विद्यापीठ जैसी संस्थाएँ इसी दौर में स्थापित हुईं। अनेक भारतीयों ने सरकारी नौकरियाँ छोड़ दीं। विदेशी कपड़ों की होलियाँ जलाई गईं पूरे देश में हड़तालें हुईं। मालाबर में मोपला विद्रोह छिड़ गया। हिन्दू और मुसलमान एक होकर इस आंदोलन में शामिल हुए और पूरे देश में भाई-चारे के उदाहरण देखे गए। सिखों ने गुरुद्वारों से सरकार-समर्थक और भ्रष्ट महंतों का कब्जा खत्म कराने के लिए आंदोलन छेड़ा। हजारों लोगों ने स्वयंसेवकों में नाम लिखाया। आंदोलन के दौरान प्रिंस ऑफ वेल्स भारत आए। जब वह 17 नवम्बर, 1921 को भारत पहुँचे तो उनका स्वागत आम हड़तालियों और प्रदर्शनों द्वारा किया गया। अनेक जगहों पर पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर गोलियाँ चलाईं। दमन जारी रहा और साल के खत्म होने तक गाँधीजी को छोड़कर सभी बड़े नेता जेल में बंद किए जा चुके थे। 1922 के आरम्भ में लगभग 30,000 लोग सीखचों के पीछे थे।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

12. असहयोग आन्दोलन के परिणामों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

असहयोग आंदोलन का परिणाम—

1. इस आन्दोलन ने ब्रिटिश शासन व्यवस्था को झकझोर कर रख दिया। अंग्रेजों को लगने लगा कि बिना उदारवादियों के सहयोग से वे अब आगे नहीं चल पाएँगे।
2. सभी देशवासी एक झंडे के नीचे इकट्ठे हो गये। उनमें राष्ट्रीयता की भावना का संचार हो गया।
3. जनता अब अधिक-से-अधिक स्वदेशी वस्तुएँ खरीदने का प्रयास करने लगी। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करके ब्रिटिश अर्थव्यवस्था को धक्का पहुँचाया।
4. हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा मानकर इसको बढ़ावा दिया गया। अंग्रेजी के महत्व को नकारा गया।
5. कांग्रेस ने भी अपने दुष्टिकोण को बदलकर सक्रिय आन्दोलन और सविनय अवज्ञा आन्दोलन को अपना ध्येय समझा।
6. इस समय जो कांग्रेसी नेता जेलों में बंद थे उन्हें आन्दोलन रोके जाने की खबर सुनकर अप्रसन्नता हुई। स्वयं गाँधीजी गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हें छः साल की जेल की सजा सुनाई गई मगर उन्हें दो वर्षों के अन्दर ही रिहा कर दिया गया। तब उन्होंने चरखे को लोकप्रिय बनाने, हिन्दू-मुस्लिम एकता को बढ़ावा देने, छुआछूत का मुकाबला

करने तथा राष्ट्रीय शिक्षा को प्रोत्साहन देने के कार्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित किया। इससे आंदोलन की उपलब्धियों को स्थायी बनाने में सहायता मिली।

7. मोतीलाल नेहरू और चितरंजन दास के नेतृत्व में कांग्रेस के एक भाग ने स्वराज्य पार्टी बना ली और फैसला किया कि वे विभिन्न विधायी परिषदों के चुनावों में भाग लेकर उन कानूनों एवं योजनाओं को पारित नहीं होने देंगे जो भारतीयों के हित-विरुद्ध जाती हों।

13. आर्थिक मोर्चे पर असहयोग आंदोलन का प्रभाव नाटकीय रहा। उदाहरण सहित स्पष्ट करें।

अथवा

सन् 1922 के उपरान्त असहयोग आन्दोलन के कमजोर पड़ने (अथवा शिथिल पड़ने) के किन्हीं तीन कारणों की व्याख्या करें।

उत्तर :

असहयोग आंदोलन जनवरी 1921 में शुरू हुआ। आरंभ में असहयोग आंदोलन तेजी से फैला। हजारों विद्यार्थियों ने सरकारी स्कूलों-कॉलेजों का बहिष्कार कर दिया। अध्यापकों ने इस्तीफे दे दिए। विदेशी सामानों का बहिष्कार किया गया, शराब की दुकानों की पिकेटिंग की गई और विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई। व्यापारियों ने विदेशी चीजों के व्यापार में पैसा लगाने से इंकार कर दिया। फलस्वरूप भारतीय वस्तुओं की माँग में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई।

परन्तु कुछ समय बाद यह आंदोलन शिथिल पड़ने लगा। वस्तुतः असहयोग आंदोलन का प्रभाव आर्थिक क्षेत्र में अधिक व्यापक या प्रभावशाली नहीं रहा।

इसके निम्नलिखित कारण थे-

1. **महंगा कपड़ा-** भारत में तैयार खादी का कपड़ा मिलों में बड़े पैमाने पर बनने वाले कपड़े की तुलना में बहुत महंगा था। भारत की अधिकांश जनता गरीब थी। वह खादी का महंगा कपड़ा नहीं खरीद सकती थी। अतः विवश होकर उन्हें धीरे-धीरे सस्ते विदेशी कपड़ों की ओर जाना पड़ा।
2. **वैकल्पिक संस्थानों का अभाव-** असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाले लोग थे-विद्यार्थी, अध्यापक, वकील। इन्होंने ब्रिटिश संस्थानों को बहिष्कार किया था। आंदोलन की सफलता के लिए वैकल्पिक संस्थानों की स्थापना करना बहुत आवश्यक था, ताकि ब्रिटिश संस्थानों के स्थान पर उनका प्रयोग किया जा सके परन्तु यह प्रक्रिया बहुत धीमी थी। फलस्वरूप ये सभी लोग अधीर हो उठे और फिर से ब्रिटिश संस्थाओं की ओर लौटने को विवश हो गए।
3. **मजदूरों में बेरोजगारी-** विदेशी कपड़े के बहिष्कार से मिलों का उत्पादन कम हो गया तथा अनेक भारतीय मजदूर बेरोजगार हो गए। उनके लिए रोजगार के वैकल्पिक

साधन न होने के कारण असहयोग आंदोलन को गहरा झटका लगा।

अतः हम कह सकते हैं कि आर्थिक दृष्टि से असहयोग आंदोलन का प्रभाव नाटकीय रहा।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

14. असहयोग आंदोलन आरंभ किए जाने के क्या कारण थे? इसे आरंभ करने के पीछे गाँधीजी की पुस्तक **हिन्द स्वराज** में वर्णित विचार क्या था?

उत्तर :

असहयोग आंदोलन (1920-22) निम्नलिखित कारणों से चलाया गया-

1. भारतीयों ने प्रथम महायुद्ध में अंग्रेजों को पूरा सहयोग दिया था परन्तु महायुद्ध की समाप्ति पर अंग्रेजों ने भारतीय जनता का खूब शोषण किया।
2. प्रथम महायुद्ध के दौरान भारत में प्लेग आदि महामारियाँ फूट पड़ीं परन्तु अंग्रेजी सरकार ने इसकी ओर कोई ध्यान न दिया।
3. गाँधीजी ने प्रथम महायुद्ध में अंग्रेजों की सहायता करने का प्रचार इस आशा से किया था कि वे भारत को स्वराज प्रदान करेंगे परन्तु युद्ध की समाप्ति पर ब्रिटिश सरकार ने गाँधी जी की आशाओं पर पानी फेर दिया।
4. 1919 ई. में ब्रिटिश सरकार ने रौलेट एक्ट पास कर दिया। इस काले कानून के कारण जनता में रोष फैल गया।
5. रौलेट एक्ट के विरुद्ध प्रदर्शन के लिए अमृतसर के जलियाँवाला बाग में एक विशाल जनसभा हुई। अंग्रेजों ने एकत्रित भीड़ पर गोलियाँ चलायीं जिससे सैकड़ों लोग मारे गये।
6. सितंबर 1920 ई. में कांग्रेस ने अपना अधिवेशन कलकत्ता (कोलकता) में बुलाया। इस अधिवेशन में **असहयोग आंदोलन** का प्रस्ताव रखा गया जिस बहुमत से पास कर दिया गया।

हिंद स्वराज में वर्णित विचार- हिन्द स्वराज में महात्मा गाँधी ने कहा था कि भारत में ब्रिटिश शासन भारतीयों के सहयोग से स्थापित हुआ था और यह उन्हीं के सहयोग से टिका हुआ है। यदि वे अपना सहयोग वापिस ले लें तो एक साल के अन्दर ही ब्रिटिश सरकार का अंत हो जाएगा और स्वराज की स्थापना हो जाएगी।

15. स्वराज्यवादी कौन थे? उनका उद्देश्य क्या था?

उत्तर :

1. **स्वराज्यवादी-** वे लोग जो सन् 1922 में मोतीलाल नेहरू तथा चितरंजनदास के नेतृत्व में कांग्रेस में अलग गुट बनाकर चुनाव में भाग लेते रहे तथा विधानसभाओं में सरकार के काम में अड़चन डालकर राष्ट्रीय आन्दोलन के मंच रूप में उनका प्रयोग (विधानसभाओं) में करते रहे।

सी. आर. दास तथा उनके कुछ अन्य साथी गाँधीजी द्वारा असहयोग आन्दोलन वापस किए जाने तथा विधानसभाओं के चुनावों में भाग न लेने के प्रति असहमत थे। चूँकि अधिकांश क्रांतिकारियों ने सी. आर. दास के विचारों का विरोध किया इसलिए उन्होंने कांग्रेस पार्टी से त्यागपत्र देकर कांग्रेस पार्टी में ही नया गुट या दल स्वराज्य पार्टी के नाम से गठित किया ताकि 1919 के इंडियन कौंसिल एक्ट के अन्तर्गत विधानसभाओं के चुनावों में भाग लिया जाये तथा विधानसभाओं को ब्रिटिश सरकार के विरोधी मंच रूप में प्रयोग किया जा सके।

2. उद्देश्य-

1. स्वराज्य प्राप्त करना।
2. उस परिपाटी को समाप्त करना जो सत्ता के अधीन भारत में विद्यमान थी।
3. परिषदों में प्रवेश करके असहयोग के कार्यक्रम को अपनाना और इस तरह से असहयोग को सफल बनाना।
4. सरकार की नीतियों का विरोध करना तथा इसके कार्यों में बाधा पहुँचाना जिससे विवश होकर सरकार अपनी नीतियों को बदलने के लिए बाध्य हो जाए।

अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए स्वराज्य पार्टी ने निम्नलिखित कार्यक्रम बनाए-

1. विधानमंडलों में बजट को अस्वीकार करना।
2. उन सभी कानूनों या प्रस्तावों का विरोध करना जिनके द्वारा नौकरशाही की स्थिति मजबूत होती थी।
3. विधानमंडलों के बाहर कांग्रेस के रचनात्मक कार्यों में भाग लेना।
4. उन सारे प्रस्तावों, योजनाओं तथा कानूनों को परिषदों में प्रस्तुत करना, जिनके द्वारा राष्ट्र की जनता का हित होता हो।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

16. 19वीं शताब्दी के अंत तक भारत में लोगों को संगठित करने में आई विभिन्न समस्याओं का उल्लेख करें।

उत्तर :

1. **दलित वर्गों की समस्याएँ-** कांग्रेस ने लंबे समय तक दलितों पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि कांग्रेस रूढ़िवादी सवर्ण हिंदू सनातनपंथियों से डरी हुई थी। डॉ. अम्बेडकर ने 1930 में दलितों को दलित वर्ग एसोसिएशन में संगठित किया। दलितों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्रों के सवाल पर दूसरे गोलमेज सम्मेलन में महात्मा गाँधी के साथ उनका काफी विवाद हुआ।
2. **हिंदू-मुसलमानों के बीच बढ़ता फैसला-1920 के दशक के मध्य से कांग्रेस, हिंदू महासभा जैसे हिंदू धार्मिक राष्ट्रवादी संगठनों के काफी करीब दिखने लगी थी। जैसे-जैसे हिंदू-मुसलमानों के बीच संबंध खराब होते गए,**

दोनों समुदाय उग्र धार्मिक जुलूस निकालने लगे। इससे कई शहरों में हिंदू-मुस्लिम साम्प्रदायिक टकराव व दंगे हुए। हर दंगे के साथ दोनों समुदायों के बीच फासला बढ़ता गया।

3. **पृथक निर्वाचिका तथा दो राष्ट्र का सिद्धान्त-**मुस्लिम लीग के नेता मोहम्मद अली जिन्ना ने मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचिका की माँग की। उनको भय था कि हिंदू बहुसंख्या के वर्चस्व की स्थिति में अल्पसंख्यकों की संस्कृति और पहचान खो जाएगी। अनेक प्रमुख मुस्लिम नेताओं जैसे मोहम्मद इकबाल ने पृथक निर्वाचिका की जरूरत पर जोर दिया। उन्होंने भी दो राष्ट्रों के सिद्धान्त का प्रस्ताव रखा जिसके अन्तर्गत यह मान लिया गया कि दोनों समुदाय विभिन्न राष्ट्रों से संबंध रखते हैं।

17. स्वराज पार्टी किसने बनाई और क्यों?

उत्तर :

स्वराज पार्टी कांग्रेस के स्वराजवादी नेताओं ने बनाई जिनमें मोतीलाल नेहरू तथा चितरंजन दास प्रमुख थे। ये नेता कांग्रेस से अलग गुट बनाकर चुनाव में भाग लेना चाहते थे ताकि वे विधान परिषदों में सरकार के कामों में अड़चन डालकर राष्ट्रीय आन्दोलन के मंच के रूप में उनका इस्तेमाल कर सकें। सी.आर.दास तथा उनके कुछ साथी गाँधी जी द्वारा असहयोग आन्दोलन वापस लिए जाने तथा विधान परिषदों के चुनावों में भाग न लेने के प्रति असहमत थे। चूँकि अधिकांश आन्दोलनकारियों ने सी.आर.दास के विचारों का विरोध किया अतः उन्होंने कांग्रेस पार्टी से त्याग-पत्र देकर कांग्रेस में ही नया गुट (दल) स्वराज पार्टी के नाम से गठित किया जिससे कि 1919 के इण्डियन काउन्सिल एक्ट के अन्तर्गत विधायी परिषदों के चुनावों में भाग लिया जा सके तथा परिषदों को ब्रिटिश सरकार विरोधी मंच के रूप में प्रयोग किया जा सके।

स्वराज पार्टी के निर्माण के उद्देश्य-

1. उनका मुख्य उद्देश्य स्वराज्य प्राप्त करना था।
2. उस परिपाटी को समाप्त करना था जो सत्ता के अधीन भारत में विद्यमान थी।
3. परिषदों में प्रवेश करके असहयोग के कार्यक्रम को अपनाना तथा उसे सफल बनाना।
4. सरकार की नीतियों का विरोध करना तथा इसके कार्यों में बाधा डालना जिससे विवश होकर सरकार अपनी नीतियों को बदलने हेतु बाध्य हो जाये।

18. जनजातीय (आदिवासी) विद्रोह के कारणों तथा तीन चरणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :

1. आदिवासी विद्रोह के कारण-

- i. सरकार ने आदिवासी कबीलों के सरदारों को जमींदार का दर्जा प्रदान कर स्थाई बंदोबस्त, रैयतवाड़ी आदि भू-राजस्व वसूल करने की नई व्यवस्थाएँ लागू कर

दी गई। इनमें उनका शोषण होने लगा और जमींदारी की नीलामी होने लगी।

- ii. ईसाई मिशनरी आदिवासी इलाकों में जाकर उन्हें अपना धर्म परिवर्तन करने के लिए विलुब्ध करने लगे।
- iii. महाजनों, व्यापारियों तथा जमींदार के लगान वसूल करने वाले अधिकारियों द्वारा शोषण प्रारंभ करना और सरकार द्वारा इन तत्वों को संरक्षण दिया जाना।
- iv. वन क्षेत्रों में सरकार का कठोर नियंत्रण। ईंधन एवं पशुचारे के लिए भी आदिवासी आरक्षित वनों में प्रवेश नहीं कर सकते थे। उन्हें दंडित किया जाने लगा।

2. आदिवासी आंदोलनों का अवधि-वर्गीकरण

- i. **प्रथम चरण-1795 ई. से 1860 ई. तक-** विद्रोह का प्रथम चरण अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना और आदिवासियों के क्षेत्रों में प्रवेश व उनकी परंपराओं में अंग्रेजों द्वारा हस्तक्षेप किए जाने के विरुद्ध हुआ था। इन आंदोलनों को उन लोगों ने नेतृत्व प्रदान किया जिनके हित ब्रिटिश उपनिवेशीकरण के कारण प्रभावित हुए थे। प्रथम चरण के प्रमुख आंदोलन थे- पहाड़िया विद्रोह, खोंड विद्रोह, कोल विद्रोह, संधाल विद्रोह।
- ii. **द्वितीय चरण-1860 ई. से 1920 ई. तक-** द्वितीय चरण के दौरान आदिवासियों ने तथाकथित अलगाववादी आंदोलन प्रारंभ किया तथा राष्ट्रवादी और किसान आंदोलनों में भाग लिया। इस काल के प्रमुख विद्रोह थे-खाखाड़ विद्रोह, भील विद्रोह, नैकदा आंदोलन, कोया विद्रोह, मुंडा विद्रोह।
- iii. **तृतीय चरण - 1920 ई. के पश्चात्-** तृतीय चरण जो 1920 ई. पश्चात् प्रारंभ हुआ था, गाँधीवादी सामाजिक कार्यकर्ता तथा कुछ (अल्लूरी सीताराम राजू सदृश) गैर-आदिवासी भी इस काल के आंदोलनों के नेता थे। इस काल के आंदोलनों को जातीय तथा सांस्कृतिक आंदोलन, सुधार (संस्कृतिकरण) आंदोलन, कृषि व वन आधारित आंदोलन तथा राजनीतिक आंदोलन के रूप में विभाजित किया जा सकता है। इस चरण के प्रमुख आंदोलन थे- तानाभगत आंदोलन, चेंचू आंदोलन, रंपा विद्रोह, वन सत्याग्रह।

3. **विशेष-** सीमांत आदिवासियों के विद्रोह जैसे खासी विद्रोह, अहोम विद्रोह तथा नागा आंदोलन के नाम से बहुत चर्चित रहे।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

19. असहयोग आंदोलन गाँवों में किस प्रकार फैला? कोई पाँच बिन्दु स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

1. शहरों से आरंभ हुआ असहयोग आंदोलन गाँवों तथा

देहातों में भी फैल गया था। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद देश के विभिन्न भागों में चले किसानों व आदिवासियों के स्थानीय संघर्ष भी इस आंदोलन में समा गए।

2. गाँवों में किसानों का आंदोलन निरंकुश तथा भ्रष्ट ताल्लुकदारों व जमींदारों के विरुद्ध था जो किसानों से भारी-भरकम लगान और तरह-तरह के कर वसूल कर रहे थे। अतः कृषक वर्ग को अपने लक्ष्य की पूर्ति हेतु असहयोग आंदोलन से जुड़ना अधिक श्रेयस्कर लगा।
3. किसानों की माँगें थीं कि लगान कम किया जाए तथा बेगार खत्म हो। असहयोग आंदोलन के चलते किसानों की इन माँगों को बल मिला तथा उन्होंने जमींदारों का सामाजिक बहिष्कार किया।
4. स्थानीय नेताओं ने भी किसानों तथा खेतिहर मजदूरों में यह प्रचार किया था कि गाँधीजी ने ऐलान कर दिया है कि अब कोई लगान नहीं भरेगा और जमीनें भी गरीबों में बाँट दी जाएँगी।
5. महात्मा गाँधी का नाम लेकर लोग अपनी सारी कार्यवाहियों तथा आकांक्षाओं को सही ठहरा रहे थे।

NCERT पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

1. व्याख्या करें-

1. उपनिवेशों में राष्ट्रवाद के उदय की प्रक्रिया उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन से जुड़ी हुई क्यों थी?
2. पहले विश्वयुद्ध ने भारत में राष्ट्रीय आंदोलन के विकास में किस प्रकार योगदान दिया?
3. भारत के लोग रॉलट एक्ट के विरोध में क्यों थे?
4. गांधीजी ने असहयोग आंदोलन को वापस लेने का फैसला क्यों लिया?

उत्तर :

1. **उपनिवेशों में राष्ट्रवाद के उदय की प्रक्रिया में उपनिवेशवाद विरोध आंदोलन की भूमिका-** वियतनाम और दूसरे उपनिवेशों की तरह भारत में भी आधुनिक राष्ट्रवाद के उदय की परिघटना उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन के साथ गहरे तौर पर जुड़ी हुई थी। औपनिवेशिक शासकों के विरुद्ध संघर्ष के दौरान लोग आपसी एकता को पहचानने लगे थे। उत्पीड़न और दमन के साझा भाव ने विभिन्न समूहों को एक-दूसरे से बाँध दिया था। लेकिन प्रत्येक वर्ग और समूह पर उपनिवेशवाद का प्रभाव एक जैसा नहीं था। उनके अनुभव भी अलग थे और स्वतंत्रता के अर्थ भी भिन्न थे। महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने इन समूहों को एकत्रित करके एक विशाल आंदोलन खड़ा किया परंतु इस एकता में टकराव के बिंदु भी विद्यमान थे।

2. **पहले विश्व युद्ध का भारत में राष्ट्रवादी आंदोलन के विकास में योगदान-** मित्र राष्ट्रों-ब्रिटेन, फ्रांस, रूस, जापान, अमेरिका तथा धुरी राष्ट्रों-ऑस्ट्रिया, हंगरी, जर्मनी, तुर्की, इटली के मध्य प्रथम विश्वयुद्ध 1 अगस्त,

1914 ई. में शुरू हुआ। प्रथम विश्व युद्ध का भारत के राष्ट्रवादी आंदोलन पर व्यापक प्रभाव पड़ा, जो इस प्रकार है-

i. **भारत में राष्ट्रवादी आंदोलन के विकास पर प्रभाव-** प्रथम विश्व युद्ध में भारतीयों को बड़ी संख्या में सेना में भर्ती किया गया। युद्ध क्षेत्र में मिले अनुभवों से उनमें आत्मविश्वास का संचार हुआ। उन्हें स्वतंत्र वातावरण और लोकतंत्रीय संगठन के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। ऐसे में भारतीय सैनिक भारत में ऐसी ही स्थिति को विकसित करने को तत्पर हो गए। भारतीयों में राजनीतिक जागृति और आत्मविश्वास की प्रबल भावना का विकास हुआ।

ii. **भारत पर आर्थिक प्रभाव-** प्रथम विश्व युद्ध के दौरान विश्व स्तर पर नयी आर्थिक स्थिति उत्पन्न हुई। ब्रिटेन ने अपने बढ़ते रक्षा व्यय की पूर्ति के लिए अमेरिका से बड़े पैमाने पर ऋण लिया। इन ऋणों को चुकाने के लिए भारतीयों पर सीमा शुल्क एवं अन्य करों की दर बढ़ा दी गयी, जिससे भारतीयों पर आर्थिक दबाव बढ़ गया। युद्ध के समय वस्तुओं के मूल्य बढ़ जाने से भारतीयों की आर्थिक स्थिति और विपन्न हो गयी। ऐसे में आक्रोशित भारतीय औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय हो गए।

iii. **साम्प्रदायिक एकता-** मिस्र में खलीफा के प्रश्न पर भारत के प्रायः सभी मुसलमान अंग्रेजों के विरुद्ध हो गए। गाँधी जी ने अपने बंधुओं के साथ मिलकर खिलाफत आंदोलन शुरू किया। इससे देश में हिन्दू-मुस्लिम एकता को बल मिला। 1916 ई. में लखनऊ में काँग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच समझौता हुआ। काँग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों ने एक-दूसरे को स्वतंत्रता आंदोलन में सहयोग देने का निश्चय किया। काँग्रेस के गरम एवं नरम दल ने भी एक-दूसरे को सहयोग देने का निश्चय किया।

iv. **प्राकृतिक संकट-** भारत में 1918-21 ई. के दौरान भयंकर अकाल, सूखा, बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाएँ प्रकट हुईं, किंतु सरकार का दृष्टिकोण इस आपदा के प्रति उपेक्षापूर्ण रहा। जनसामान्य महामारियों से त्रस्त थे और सरकार से लोगों को सहायता नहीं मिल रही थी। ऐसे में भारतीय लोग ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार के विरुद्ध हो गए और राष्ट्रीय आंदोलन में बड़ी संख्या में शामिल हुए।

3. भारत में रॉलट एक्ट का विरोध-

i. अंग्रेजी सरकार ने 1918 ई. में रॉलट की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया। इस समिति को यह निर्देश दिया गया कि भारत में क्रांतिकारी आंदोलनों

को रोकने के लिए किस तरह के कानून बनाए जाएँ क्योंकि देश का कानून अपर्याप्त है।

ii. भारत में क्रांतिकारी आंदोलनों को रोकने के लिए दो कानून बनाए गए। इसके अनुसार सरकार को राजनीतिक गतिविधियों को कुचलने तथा राजनीतिक कैदियों को दो वर्ष तक बिना मुकदमा चलाए जेल में बंद रखने का अधिकार प्राप्त हो गया था। भारतीयों ने इसे काला कानून कहा तथा इसके विरोध में हड़ताल व प्रदर्शन किए।

iii. गाँधी जी ने देशवासियों का रॉलट एक्ट के विरुद्ध आंदोलन का आह्वान किया। गाँधीजी का यह रॉलट एक्ट विरोध असहयोग आंदोलन के रूप में प्रकट हुआ।

4. **असहयोग आंदोलन वापस क्यों लिया गया-** 12 फरवरी, 1922 ई. को गाँधी जी को असहयोग आंदोलन वापस लेना पड़ा। 5 फरवरी, 1922 ई. को गोरखपुर के चौरी-चौरा नामक स्थान पर लोगों की भीड़ ने पुलिस थाने में आग लगा दी जिसमें कई पुलिसकर्मी जलकर मर गए। यह घटना तब घटी जब एक शांतिपूर्ण जुलूस बाजार से गुजर रहा था, तब पुलिस के साथ हिंसक टकराव हुआ। चौरी-चौरा की घटना के बाद असहयोग आंदोलन ने हिंसक रूप धारण कर लिया। अतः गाँधी जी ने असहयोग आंदोलन वापस लेने की घोषणा कर दी। हिंसा का प्रायश्चित्त करने के लिए गाँधी जी ने पाँच दिन तक अनशन किया। 10 मार्च, 1922 ई. को सरकार ने गाँधी जी को गिरफ्तार कर लिया और उन्हें 6 वर्ष के कारावास की सजा दी गयी।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

2. सत्याग्रह के विचार का क्या मतलब है ?

उत्तर :

गांधी जी ने अंग्रेजों की नीतियों के खिलाफ जन आंदोलन के रास्ते पर चलते हुए संघर्ष किया। वे इस पद्धति को सत्याग्रह कहते थे। सत्याग्रह के विचार के मुख्य बिंदु निम्नलिखित थे-

1. सत्याग्रह के विचार में सत्य की शक्ति पर आग्रह और सत्य की खोज पर जोर दिया जाता था। इसका अर्थ यह था कि अगर आपका उद्देश्य सच्चा है, यदि आपका संघर्ष अन्याय के विरुद्ध है तो उत्पीड़क से मुकाबला करने के लिए आपको किसी शारीरिक बल की जरूरत नहीं है।
2. प्रतिशोध की भावना या आक्रामकता का सहारा लिए बिना सत्याग्रही केवल अहिंसा के सहारे भी अपने संघर्ष में कामयाब हो सकता है। इसके लिए दमनकारी शत्रु की चेतना को झिंझोड़ना चाहिए।
3. उत्पीड़क शत्रु को ही नहीं बल्कि सभी लोगों को हिंसा के द्वारा सत्य को स्वीकार करने पर मजबूर करने की अपेक्षा सच्चाई को देखने और सहज भाव से स्वीकार करने के

लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

4. इस संघर्ष में अंततः सत्य की ही जीत होती है। गांधी जी का विश्वास था कि अहिंसा का यह धर्म सभी भारतीयों को एकता के सूत्र में बाँध सकता है।

3. निम्नलिखित पर अखबार के लिए रिपोर्ट लिखें-

- जलियाँवाला बाग हत्याकांड
- साइमन कमीशन

उत्तर :

1. जलियाँवाला बाग हत्याकांड

संपादक

नवभारत टाइम्स

दिल्ली

महोदय,

13 अप्रैल, 1919 को जलियाँवाला बाग हत्याकांड में 1000 से अधिक लोग मारे गये। इस घटना ने मानवता को कलंकित किया है। यह घटना तब घटी जब डॉ. सैफुद्दीन किचलू और डॉ. सत्यपाल की गिरफ्तारी के विरुद्ध अमृतसर में सार्वजनिक हड़ताल हो गयी तथा प्रत्येक स्थान पर जनसभाओं का आयोजन हो रहा है।

13 अप्रैल, 1919 ई. को वैशाखी वाले दिन मेले में शामिल होने के लिए जलियाँवाला बाग में बड़ी संख्या में लोग एकत्रित हुए। इसी बाग में एक शांतिपूर्ण जनसभा चल रही थी। अचानक जालंधर डिवीजन का कमांडर जनरल डायर सेना की टुकड़ी के साथ यहाँ पहुँचा। उसने बाग के मुख्य द्वारों को बंद करवा दिया और बिना किसी चेतावनी के निहत्थी भीड़ पर गोली चलाने का आदेश दे दिया। लगभग 20 हजार लोग इस बाग में एकत्रित थे। इसमें से 1000 से अधिक लोग मारे गए जबकि सरकारी आँकड़ों में यह संख्या 379 बताई गयी।

इस घटना से लोगों में अंग्रेज सरकार के विरुद्ध आक्रोश व्याप्त है। इस स्थिति पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए 15 अप्रैल की सुबह अमृतसर तथा लाहौर, 16 अप्रैल को गुजरांवाला, 19 अप्रैल को गुजरात एवं 24 अप्रैल को लायलपुर में मार्शल लॉ लागू कर दिया गया है।

अतः मैं संपादक महोदय से यह आग्रह करता हूँ कि इस समाचार को अपने मुखपृष्ठ पर प्रकाशित करें जिससे देश-दुनिया के लोगों को इस घटना की जानकारी मिले और ब्रिटिश सरकार जिस जनरल डायर को ब्रिटिश साम्राज्य का रक्षक कहकर सम्मानित कर रही है उसे दंडित किया जा सके।

जय हिन्द।

भवदीय

संदीप हुड्डा

2. साइमन कमीशन

संपादक

हिन्दुस्तान

नई दिल्ली

महोदय,

ब्रिटिश सरकार ने सर जॉन साइमन की अध्यक्षता में सात सदस्यीय एक कमीशन 3 फरवरी, 1928 ई. को भारत भेजा। कमीशन का मुख्य उद्देश्य भारत में संवैधानिक व्यवस्था की कार्यशैली का अध्ययन करना तथा उसके बारे में सुझाव देना था। इस कमीशन में एक भी भारतीय सदस्य शामिल नहीं था। अतः मुम्बई पहुँचने पर इस कमीशन का विरोध किया गया। इसे काले झंडे दिखाए और साइमन वापस जाओ के नारे लगाए गए।

लाला लाजपतराय ने साइमन कमीशन विरोधी प्रदर्शन का नेतृत्व किया। इस रिपोर्ट में औपनिवेशिक साम्राज्य और अधिराज्य की स्थिति को स्पष्ट नहीं किया गया है। इसके साथ ही केन्द्र में उत्तरदायी सरकार की स्थापना का भी उल्लेख नहीं है।

साइमन कमीशन ने वयस्क मताधिकार की माँग को अव्यावहारिक बताकर ठुकरा दिया है। ऐसे में देशभर में इस कमीशन का विरोध हो रहा है। इस रिपोर्ट में साम्प्रदायिकता को बढ़ावा दिया गया है। कमीशन का यह कार्य भारत के प्रति ब्रिटिश सरकार के गलत उद्देश्यों को उजागर करता है।

अतः मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप अपने समाचार पत्र के मुखपृष्ठ पर इस आशय की सूचना प्रकाशित करें कि कमीशन की रिपोर्ट ने भारतीय भावनाओं और हितों को आहत किया है। साथ ही इस रिपोर्ट की तर्कसंगत कटु आलोचना करें।

जय हिन्द

भवदीय

रणदीप सिंह

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

4. इस अध्याय में दी गई भारत माता की छवि और अध्याय 1 में दी गई जर्मनिया की छवि की तुलना कीजिए।

उत्तर :

भारत माता और जर्मनिया की छवि की तुलना

	भारत माता की छवि	जर्मनिया की छवि
1.	अवनीन्द्र नाथ ने भारत माता की छवि 1905 ई. में बनाई थी।	चित्रकार फिलिप वेट ने जर्मनिया की छवि 1848 ई. में बनाई थी।
2.	इसमें भारत माता को अन्नपूर्णा देवी के रूप में प्रदर्शित किया गया है जिसके एक हाथ में माला, एक में पुस्तक, एक में कपड़ा है जो वह भारतीयों को प्रदान कर रही हैं।	जर्मनिया जर्मन राष्ट्र का रूपक प्रतीक बन गयी। चाक्षुष अभिव्यक्तियों में जर्मनिया बलूत वृक्ष के पत्तों का मुकुट पहनती है क्योंकि जर्मन बलूत वीरता का प्रतीक है।

	भारत माता की छवि	जर्मनिया की छवि
3.	भारत माता की दूसरी छवि में उन्हें संभासिनी के रूप में प्रदर्शित किया गया है जिसके एक हाथ में त्रिशूल, जिस पर झंडा लहरा रहा है। वह हाथी और शेर के बीच खड़ी है। ये दोनों पशु शक्ति और सत्ता के प्रतीक हैं।	जर्मनिया के हाथ में एक तलवार है जिस पर उत्कीर्ण है— जर्मन तलवार जर्मन राइन की रक्षा करती है।
4.	भारत माता की दोनों छवियों में उन्हें शांत, गंभीर तथा आध्यात्मिक एवं देवी गुणों से परिपूर्ण रूप में प्रदर्शित किया गया है।	जर्मनिया को एक वीर एवं साहसी स्त्री के रूप में प्रदर्शित किया गया है। इसकी छवि रौद्र गुणों से युक्त राष्ट्रीयता व देशभक्ति का प्रतीक है।
5.	अवनीन्द्रनाथ ने भारत माता की छवि को एक चित्र-शैली में विकसित किया है जिसमें मातृ छवि के प्रति श्रद्धा को राष्ट्रवाद में आस्था का प्रतीक स्वीकार किया गया है।	जर्मनिया के इस चित्र को चित्रकार ने सूती कपड़े के झंडे पर बनाया है क्योंकि इसे सेंट पॉल चर्च की छत पर लगाना था। क्योंकि इसी स्थान पर मार्च 1848 ई. में फ्रैंकफर्ट की संसद बुलायी गयी थी। जर्मनी में जर्मनिया की यह छवि आगे चलकर राष्ट्रीयता एवं देशभक्ति का प्रतीक बन गयी।

WWW.CBSE.ONLINE

भूमंडलीकृत विश्व का बनना

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्राचीन काल में लोग दूर-दूर की यात्राओं पर क्यों जाते थे?
- (a) ज्ञान प्राप्ति के लिए
(b) आध्यात्मिक शांति के लिए
(c) उत्पीड़न/यातनापूर्ण जीवन से बचने के लिए
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

2. प्राचीन काल में लोग अपनी यात्राओं में क्या साथ लेकर चलते थे?
- (a) हुनर, विचार और आविष्कार
(b) मूल्य-मान्यताएँ
(c) कीटाणु और बीमारियाँ
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

3. सिल्क रूट किस देश को अन्य देशों से जोड़ते थे?
- (a) चीन को (b) इंग्लैंड को
(c) दक्षिणी अफ्रीका को (d) अमेरिका को

उत्तर (a) चीन को

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

4. सिल्क रूट संबंधित थे-
- (a) जल मार्ग से (b) सड़क मार्ग से
(c) वायु मार्ग से (d) a और b दोनों से

उत्तर (d) a और b दोनों से

5. अर्थशास्त्रियों ने निम्नलिखित में से किसे अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक विनिमय का प्रवाह माना है?
- (a) पूँजी (b) श्रम
(c) व्यापार (d) उपर्युक्त तीनों

उत्तर (d) उपर्युक्त तीनों

6. निम्नलिखित में से किस यूरोपीय देश ने सबसे पहले अमेरिका

पर अधिकार किया था?

- (a) पुर्तगाल
(b) स्पेन
(c) पुर्तगाल एवं स्पेन दोनों
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (c) पुर्तगाल एवं स्पेन दोनों

7. अमेरिका पर पुर्तगाल एवं स्पेन ने कौन-सी शताब्दी में अधिकार किया?
- (a) 13वीं शताब्दी में (b) 14वीं शताब्दी में
(c) 16वीं शताब्दी में (d) 18वीं शताब्दी में

उत्तर (c) 16वीं शताब्दी में

8. अमेरिका में बागानों की स्थापना निम्नलिखित में से किसके द्वारा की गई थी?
- (a) भारतीयों के द्वारा (b) यूरोपीय लोगों के द्वारा
(c) अफ्रीकियों के द्वारा (d) स्पेनिश लोगों के द्वारा

उत्तर (b) यूरोपीय लोगों के द्वारा

9. कौन-सा खाद्य पदार्थ अमेरिका से यूरोप और एशिया आया?
- (a) शकरकंद (b) मक्का
(c) टमाटर (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

10. 1840 के दशक में किस फसल के अकाल के कारण आयरलैंड में लाखों लोग भूख से मर गए थे?
- (a) गेहूँ (b) आलू
(c) मक्का (d) चावल

उत्तर (b) आलू

11. स्पेनिश और पुर्तगाली सैनिकों ने अमेरिका में किस बीमारी के विषाणु फैलाए?
- (a) मलेरिया (b) डेंगू
(c) चेचक (d) प्लेग

उत्तर (c) चेचक

12. अमेरिका का शहर एल डोराडो जाना जाता था-

- (a) सोने का शहर (b) चाँदी का शहर
(c) मक्का का शहर (d) स्पैघेत्ती का शहर

उत्तर (a) सोने का शहर

13. अंग्रेजों द्वारा भारत में बसाई गई नहर बस्ती का संबंध निम्नलिखित में से किस क्षेत्र से था?

- (a) उत्तर प्रदेश (b) पश्चिम बंगाल
(c) बिहार (d) पंजाब

उत्तर (d) पंजाब

14. ब्रिटिश सरकार ने किस कानून के द्वारा मक्का के आयात पर प्रतिबंध लगाया था?

- (a) कॉर्न लॉ
(b) अन्न लॉ
(c) आपात कानून
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (a) कॉर्न लॉ

15. अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक विनियम के तहत कौन-सा प्रवाह का रूप है?

- (a) व्यापार प्रवाह (b) श्रम प्रवाह
(c) पूँजी प्रवाह (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

16. भारत से गिरमिटिया मजदूरों को भेजा जाता था-

- (a) कैरीबियाई द्वीप (b) मॉरिशस
(c) फिजी (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

17. 19वीं सदी में निम्नलिखित में से कौन-सा तकनीकी विकास का साधन नहीं था?

- (a) कम्प्यूटर (b) रेलवे
(c) भाप का इंजन (d) टेलीग्राफ

उत्तर (a) कम्प्यूटर

18. 1885 में अफ्रीका महाद्वीप का बंटवारा कर लिया-

- (a) एशिया के ताकतवर देशों ने
(b) यूरोप के ताकतवर देशों ने
(c) अफ्रीका के ताकतवर देशों ने
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (b) यूरोप के ताकतवर देशों ने

19. आर्थिक महामंदी का सबसे बुरा असर पड़ा-

- (a) ब्रिटेन पर (b) भारत पर
(c) रूस पर (d) अमेरिका पर

उत्तर (d) अमेरिका पर

20. गिरमिटिया मजदूर प्रथा को समाप्त कर दिया गया-

- (a) 1920 में (b) 1921 में
(c) 1922 में (d) 1923 में

उत्तर (b) 1921 में

21. अंग्रेजों ने नियति के उद्देश्य से किस फसल के उत्पादन को बढ़ावा दिया?

- (a) गेहूँ (b) कपास
(c) a और b दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (c) a और b दोनों

22. 1820 के दशक में किस देश को बड़ी मात्रा में अफीम का निर्यात किया जाता था?

- (a) चीन को (b) भारत को
(c) अमेरिका को (d) ब्रिटेन को

उत्तर (a) चीन को

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

23. हेनरी मॉर्टन स्टैनली निम्नलिखित में से क्या थे?

- (a) एक राजनेता (b) एक शासक
(c) एक व्यापारी (d) एक पत्रकार एवं खोजी

उत्तर (d) एक पत्रकार एवं खोजी

24. अफ्रीका में पशुओं में फैली प्लेग की बीमारी को क्या कहा जाता था?

- (a) रैंडरपेस्ट (b) विंडरपेस्ट
(c) सिंडरपेस्ट (d) किंडरपेस्ट

उत्तर (a) रैंडरपेस्ट

25. अफ्रीका में रैंडरपेस्ट नामक बीमारी किन देशों से पहुँची थी?

- (a) यूरोपीय देशों से (b) एशियाई देशों से
(c) अमेरिका से (d) अफ्रीकी देशों से

उत्तर (b) एशियाई देशों से

26. भारत में किस इलाके से अधिकांश अनुबंधित श्रमिक अन्य देशों में जाते थे?

- (a) बिहार से
(b) उत्तर प्रदेश एवं बिहार से

- (c) मध्यप्रदेश एवं तमिलनाडु से
(d) उपर्युक्त सभी क्षेत्रों से
उत्तर (d) उपर्युक्त सभी क्षेत्रों से

27. भारतीय अनुबंधित मजदूर विश्व के निम्नलिखित में से किस भाग में मुख्य रूप से जाते थे?

- (a) कैरीबियाई द्वीप समूह (b) मॉरिशस
(c) फिजी (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

28. श्रम की अनुबंध व्यवस्था को निम्नलिखित में से कौन-सा नाम दिया गया?

- (a) गुलाम व्यवस्था (b) नई दास प्रथा
(c) अप्रवासी व्यवस्था (d) नई औपनिवेशिक प्रथा

उत्तर (b) नई दास प्रथा

29. प्रथम विश्वयुद्ध कब प्रारंभ हुआ?

- (a) 1904 में (b) 1914 में
(c) 1918 में (d) 1924 में

उत्तर (b) 1914 में

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

30. प्रथम विश्वयुद्ध में निम्नलिखित में से कौन-सा देश मित्र-राष्ट्रों का हिस्सा नहीं था?

- (a) ब्रिटेन (b) फ्रांस
(c) जर्मनी (d) रूस

उत्तर (c) जर्मनी

31. प्रथम विश्वयुद्ध में निम्नलिखित में से कौन-सा देश केंद्रीय शक्तियों में सम्मिलित नहीं था?

- (a) जर्मनी (b) ऑस्ट्रिया-हंगरी
(c) ऑटोमन तुर्की (d) फ्रांस

उत्तर (d) फ्रांस

32. प्रथम विश्वयुद्ध का परिणाम था-

- (a) दुनिया के कुछ सबसे शक्तिशाली आर्थिक ताकतों के संबंध टूट गए
(b) 90 लाख लोग मारे गए
(c) 2 करोड़ लोग घायल हुए
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

33. 1929 की आर्थिक महामंदी का सबसे बुरा असर किस देश

पर पड़ा था?

- (a) भारत पर (b) ब्रिटेन पर
(c) अमेरिका पर (d) रूस पर

उत्तर (c) अमेरिका पर

34. अमेरिका पर 1929 की आर्थिक महामंदी का असर पड़ा-

- (a) हजारों बैंक दिवालिया हो गए
(b) किसान उपज नहीं बेच पा रहे थे
(c) 1,10,000 कंपनियाँ चौपट हो गईं
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

35. 1929-33 की आर्थिक महामंदी का असर भारत में किस क्षेत्र पर सबसे अधिक पड़ा?

- (a) ग्रामीण काशतकार (b) शहरी लोग
(c) कर्मचारी (d) उद्योगपति

उत्तर (a) ग्रामीण काशतकार

36. दूसरा विश्वयुद्ध कब प्रारंभ हुआ?

- (a) 1919 (b) 1929
(c) 1939 (d) 1943

उत्तर (c) 1939

37. दूसरा विश्वयुद्ध कब समाप्त हुआ?

- (a) 1939 (b) 1942
(c) 1944 (d) 1945

उत्तर (d) 1945

38. कोलंबस द्वारा निम्नलिखित में से किस महाद्वीप की खोज की गई थी?

- (a) एशिया (b) अमेरिका
(c) अफ्रीका (d) जापान

उत्तर (b) अमेरिका

39. अमेरिकी महाद्वीप की खोज कोलंबस द्वारा कब की गई थी?

- (a) 1478 ई. में (b) 1488 ई. में
(c) 1498 ई. में (d) 1598 ई. में

उत्तर (c) 1498 ई. में

40. अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की स्थापना कब की गई?

- (a) जुलाई, 1941 (b) जून, 1942
(c) जुलाई, 1944 (d) जून, 1945

उत्तर (c) जुलाई, 1944

(c) फ्रांस तथा अमेरिका (d) जापान

41. अमेरिका की खोज किसने की ?

- (a) मार्कोपोलो (b) मार्टिन लूथर
(c) कोलम्बस (d) उपर्युक्त सभी ने

उत्तर (c) कोलम्बस

42. किसे ब्रेटन वुड्स की जुड़वाँ संतान कहा जाता है ?

- (a) आई.एम.एफ. (b) विश्व बैंक
(c) जी-77 (d) a और b दोनों

उत्तर (d) a और b दोनों

43. जी-77 किन देशों का समूह है ?

- (a) विकसित (b) विकासशील
(c) अल्पविकसित (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (b) विकासशील

44. अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष एवं विश्व बैंक ने औपचारिक रूप से कार्य करना कब प्रारंभ किया ?

- (a) 1944 में (b) 1945 में
(c) 1947 में (d) 1949 में

उत्तर (c) 1947 में

45. नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था को स्थापित करने की माँग उठाने वाले देश हैं—

- (a) विकसित देश (b) विकासशील देश
(c) यूरोपीय देश (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (b) विकासशील देश

46. चटनी म्यूजिक का संबंध है—

- (a) अप्रवासी भारतीयों से (b) अफ्रीकियों से
(c) अमेरिकन लोगों से (d) चीनी लोगों से

उत्तर (a) अप्रवासी भारतीयों से

47. त्रिनिदाद में मुहूर्म के सालाना जुलूस के विशाल उत्सवी मेले को क्या नाम दिया गया था ?

- (a) सोले (b) होसे
(c) मोसे (d) माले

उत्तर (b) होसे

48. द्वितीय विश्वयुद्ध में मित्र राष्ट्रों में निम्नलिखित में कौन-सा देश सम्मिलित नहीं था ?

- (a) ब्रिटेन (b) सोवियत संघ

उत्तर (d) जापान

49. द्वितीय विश्वयुद्ध में धुरी-राष्ट्रों में निम्नलिखित में से कौन-सा देश सम्मिलित नहीं था ?

- (a) जापान (b) जर्मनी
(c) इटली (d) फ्रांस

उत्तर (d) फ्रांस

50. मानव अधिकार दिवस किस दिन मनाया जाता है ?

- (a) 10 जनवरी (b) 10 अगस्त
(c) 10 दिसम्बर (d) 10 जुलाई

उत्तर (c) 10 दिसम्बर

51. विश्व व्यापार संगठन की स्थापना कब की गई ?

- (a) 1995 ई. (b) 1997 ई.
(c) 1999 ई. (d) 2000 ई.

उत्तर (a) 1995 ई.

52. 1785 ई. में सूत कातने वाली नई मशीन का आविष्कार किसने किया ?

- (a) हारग्रीव्स (b) रिडले
(c) स्टैनली (d) जोहन

उत्तर (a) हारग्रीव्स

53. जीतने के लिए स्पेनिश सेनाओं द्वारा प्रयोग किया गया सबसे शक्तिशाली हथियार कौन-सा था ?

- (a) थल सेना (b) नौसेना
(c) रासायनिक हथियार (d) कीटाणु

उत्तर (d) कीटाणु

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

54. निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता 1929 ई. की महामंदी की नहीं है ?

- (a) कृषि उत्पादों की कीमतों में गिरावट
(b) काफी संख्या में काफी लोग बेरोजगार हो गए थे
(c) आय और व्यापार में काफी गिरावट आई
(d) नए-नए उद्योग स्थापित होने लगे थे

उत्तर (d) नए-नए उद्योग स्थापित होने लगे थे

55. प्रथम दो यूरोपीय देश जिन्होंने अमेरिका पर अधिकार किया—

- (a) स्पेन और पुर्तगाल (b) स्पेन और जर्मनी
(c) ऑस्ट्रिया और हंगरी (d) नीदरलैंड और ब्रिटेन

उत्तर (a) स्पेन और पुर्तगाल

56. वह संक्रामक बीमारी जो यूरोपीय लोगों के साथ दक्षिण अमेरिका पहुँची-

- (a) एड्स (b) प्लेग
(c) चेचक (d) हैजा

उत्तर (c) चेचक

57. वह उद्योगपति जिसने 1920 के दशक में लागत को कम करने का निर्णय किया-

- (a) विलगेड्स (b) जे.बी. फुल्टन
(c) हेनरी फोर्ड (d) एंड्रयू कार्नेगी

उत्तर (c) हेनरी फोर्ड

58. आई. एम. एफ. और विश्व बैंक ने कब से औपचारिक रूप से कार्यान्वयन किया?

- (a) 1947 ई. से (b) 1945 ई. से
(c) 1946 ई. से (d) 1948 ई. से

उत्तर (a) 1947 ई. से

59. निम्न में से किन राष्ट्रों को मित्र राष्ट्रों में शामिल किया गया था?

- (a) पुर्तगाल, स्पेन, स्वीडन
(b) ब्रिटेन, फ्रांस, रूस
(c) जर्मनी, आस्ट्रेलिया, हंगरी, तुर्की
(d) इटली, नीदरलैंड, रोमानिया

उत्तर (b) ब्रिटेन, फ्रांस, रूस

60. आर्थिक मंदी का सर्वाधिक दुष्प्रभाव किस औद्योगिक देश पर पड़ा?

- (a) जर्मनी (b) जापान
(c) फ्रांस (d) अमेरिका

उत्तर (d) अमेरिका

61. आर्थिक महामंदी की शुरुआत किस वर्ष हुई थी?

- (a) 1930 ई. में (b) 1931 ई. में
(c) 1929 ई. में (d) 1932 ई. में

उत्तर (c) 1929 ई. में

62. भारत के अनुबंधित मजदूरों को निम्न में से किन देशों में ले जाया जाता था?

- (a) मॉरीशस, फिजी (b) सिलोन, मलाया
(c) त्रिनिदाद, गुयाना, सूरीनाम (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

63. भारत के अधिकांश अनुबंधित मजदूर निम्न में से किन राज्यों से विदेश भेजे जाते थे?

- (a) केरल, तमिलनाडु (b) गुजरात, महाराष्ट्र
(c) पूर्वी उत्तरप्रदेश, बिहार (d) हरियाणा, पंजाब

उत्तर (c) पूर्वी उत्तरप्रदेश, बिहार

64. ट्रांसवाल (अफ्रीका) के स्वर्ण खानों तक पहुँचने में से किसे सफलता मिली थी?

- (a) स्टैनली (b) अल्फ्रेड क्रॉसबी
(c) रिडले (d) मार्को पोलो

उत्तर (a) स्टैनली

65. आयरलैंड में आलू का अकाल कब पड़ा?

- (a) 1820 ई. से 1835 ई. के बीच
(b) 1845 ई. से 1849 ई. के बीच
(c) 1855 ई. से 1862 ई. के बीच
(d) 1865 ई. से 1869 ई. के बीच

उत्तर (b) 1845 ई. से 1849 ई. के बीच

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

66. रैंडरपेस्ट क्या था?

- (a) मछली रोग (b) पुरुष रोग
(c) पशु रोग (d) स्त्री रोग

उत्तर (c) पशु रोग

67. गेट की स्थापना कब हुई?

- (a) 1940 ई. (b) 1942 ई.
(c) 1945 ई. (d) 1947 ई.

उत्तर (d) 1947 ई.

68. क्रिस्टोफर कोलंबस गलती से जिस अज्ञात महाद्वीप में पहुँच गया, उसका नाम क्या था?

- (a) ऑस्ट्रेलिया (b) अमेरिका
(c) चीन (d) सूरीनाम

उत्तर (b) अमेरिका

69. अमेरिका के किस क्षेत्र को सोने का शहर कहा जाता था?

- (a) बाल्टीमोर (b) न्यूजर्सी
(c) न्यूयार्क (d) एल डोराडो

उत्तर (d) एल डोराडो

70. 1923 ई. में विश्व पूँजी व ऋण उपलब्ध कराने वाला देश था—

- (a) जर्मनी (b) इंग्लैण्ड
(c) अमेरिका (d) फ्रांस

उत्तर (c) अमेरिका

71. वर्ष 1820 ई. से 1914 ई. के बीच विश्व व्यापार में 25 से 40 गुना तक वृद्धि हो चुकी थी। किन वस्तुओं का इस व्यापार में हिस्सा 60 प्रतिशत तक था?

- (a) चाय, मक्का, लोहा (b) गेहूँ, कपास, कोयला
(c) दलहन, तंबाकू, सोना (d) चावल, जूट, मैंगनीज

उत्तर (b) गेहूँ, कपास, कोयला

72. किस समझौते के तहत साम्राज्यवादी देशों ने अफ्रीका का बँटवारा किया?

- (a) बर्लिन समझौता (1885 ई.)
(b) म्यूनिख समझौता (1855 ई.)
(c) जेनेवा समझौता (1870 ई.)
(d) पेरिस समझौता (1810 ई.)

उत्तर (a) बर्लिन समझौता (1885 ई.)

73. निम्न में से ब्रेटन वुड्स संतान किसे कहा जाता है?

- (a) अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय व यूरोपीय संघ को
(b) संयुक्त राष्ट्र संघ व सुरक्षा परिषद् को
(c) विश्व व्यापार संगठन व अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य संगठन को
(d) अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष व विश्व बैंक को

उत्तर (d) अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष व विश्व बैंक को

74. 19वीं सदी में यूरोप में कितने लोग अमेरिका और आस्ट्रेलिया जाकर बस गए?

- (a) दो करोड़ (b) तीन करोड़
(c) चार करोड़ (d) पाँच करोड़

उत्तर (d) पाँच करोड़

75. उस कानून का नाम बताएँ जिसके अंतर्गत ब्रिटिश सरकार ने मक्का के आयात पर पाबंदी लगा दी थी?

- (a) एम्बीशन एक्ट (b) स्टांप एक्ट
(c) कॉर्न लॉ (d) रौलट एक्ट

उत्तर (c) कॉर्न लॉ

76. केनाल कॉलोनी किसे कहा जाता था?

- (a) व्यापारियों के निवास क्षेत्र को
(b) अधिकारियों के निवास क्षेत्र को

(c) मजदूर के आवासीय क्षेत्र को

(d) नहर के किनारे बसने वाले लोगों की कॉलोनी को

उत्तर (d) नहर के किनारे बसने वाले लोगों की कॉलोनी को

77. अर्थशास्त्रियों ने अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक विनियम में तीन तरह की गतियों या प्रवाहों का उल्लेख किया है। इनमें से कौन-सा आर्थिक विनियम का प्रवाह नहीं था?

- (a) व्यापार (b) श्रम
(c) पूँजी (d) संचार

उत्तर (d) संचार

78. वे मार्ग जो न केवल एशिया के विशाल क्षेत्रों को आपस में जोड़ते थे बल्कि एशिया को यूरोप और उत्तरी अफ्रीका से भी जोड़ते थे, कहलाते थे—

- (a) एक्सप्रेस-वे मार्ग (b) चतुष्कोणीय सड़क मार्ग
(c) रेशम मार्ग (d) व्यापारिक मार्ग

उत्तर (c) रेशम मार्ग

79. 18वीं सदी तक निम्न में से किन देशों को सर्वाधिक धनी देशों में गिना जाता था?

- (a) इटली व स्पेन (b) जापान व अमेरिका
(c) चीन व भारत (d) फ्रांस व ब्रिटेन

उत्तर (c) चीन व भारत

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

80. व्यापार अधिशेष से क्या तात्पर्य है?

- (a) व्यापार में निवेश करना
(b) व्यापार में घाटा
(c) वस्तुओं के आयात-निर्यात के मूल्य का अंतर
(d) व्यापारियों की वस्तुओं की कीमतों में अंतर

उत्तर (c) वस्तुओं के आयात-निर्यात के मूल्य का अंतर

81. 1820 ई. से 1914 ई. के बीच विश्व व्यापार में कितने गुना वृद्धि हो चुकी थी?

- (a) 5 से 10 गुना (b) 10 से 20 गुना
(c) 20 से 30 गुना (d) 25 से 40 गुना

उत्तर (d) 25 से 40 गुना

82. ब्रेटन वुड्स व्यवस्था का आधार क्या था?

- (a) एक व्यापारिक समझौता (b) विश्व में शांति व्यवस्था
(c) निश्चित विनिमय दर (d) विश्व बैंकिंग व्यवस्था

उत्तर (c) निश्चित विनिमय दर

83. ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में किस संस्था की स्थापना की गई थी?

- (a) अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (b) विश्व मजदूर संघ
(c) विश्व स्वास्थ्य संगठन (d) विश्व व्यापार संगठन

उत्तर (a) अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष

84. हमारी बहुत सारी खाद्य पदार्थ वाली फसलें मूलतः किन देशों से आई हैं?

- (a) चीन (b) आस्ट्रेलिया
(c) अमेरिका (d) अफ्रीकी देशों

उत्तर (c) अमेरिका

85. निम्नलिखित में से किस बीमारी से 1880 ई. के दशक में अफ्रीका के लोगों की आजीविका और स्थानीय अर्थव्यवस्था पर गहरा असर पड़ा?

- (a) चेचक (b) रेंडरपेस्ट
(c) हैजा (d) प्लेग

उत्तर (b) रेंडरपेस्ट

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. ब्रेटन वुड्स सम्मेलन ने अपने सदस्य राष्ट्रों के बाहरी अधिशेष और घाटे से निपटने के लिए की स्थापना की।

उत्तर : अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष

2. घातक बीमारियों के कारण हजारों लोगों ने के लिए छोड़ दिया।

उत्तर : अमेरिका, यूरोप

3. अफ्रीका का औपनिवेशीकरण 1885 में पूरा हुआ और इसे कहा गया।

उत्तर : पेपर विभाजन

4. प्रसिद्ध अर्थशास्त्री का मानना था कि भारतीय सोने के निर्यात से वैश्विक आर्थिक सुधार को बढ़ावा मिला।

उत्तर : जॉन मेनार्ड कीन्स

5. आंदोलन को महामंदी के चरम पर शुरू किया गया था।

उत्तर : सविनय अवज्ञा

सही या गलत बताइए

1. एल-डोराडो को फॉर्बर्ड सिटी ऑफ गोल्ड के नाम से जाना जाता है।

उत्तर : सही

2. द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पश्चिमी विश्व में ब्रिटेन एक वर्चस्वशाली ताकत बन चुका था।

उत्तर : गलत

3. महामंदी 1929 के आसपास शुरू हुई और 1930 के दशक के मध्य तक चली।

उत्तर : सही

4. कॉर्न लॉ के खत्म हो जाने के बाद ब्रिटेन में कम कीमत पर खाद्य पदार्थों को आयात किया जा सकता था।

उत्तर : सही

5. जर्मनी, ब्रिटेन और फ्रांस मित्र राष्ट्र थे।

उत्तर : गलत

अति लघु उत्तरात्मक प्रश्न

1. किस फसल के परिचय ने यूरोपीय निर्धनों के बेहतर भोजन और अधिक उम्र तक जीने की शुरुआत की थी?

उत्तर :

आलू।

2. उन्नीसवीं सदी की अनुबंध व्यवस्था को क्या कहा जाता था?

उत्तर :

नई दास प्रथा।

3. वैश्वीकरण के लिए उत्तरदायी तीन मुख्य कारक कौन-कौन से थे?

उत्तर :

वैश्वीकरण के लिए उत्तरदायी तीन मुख्य कारक निम्नलिखित थे।

1. व्यापार का प्रवाह।
2. श्रम का प्रवाह।
3. पूँजी का प्रवाह।

4. संसार भर में कपास तथा रबड़ की खेती को बढ़ावा दिया गया ?

उत्तर :

कपास तथा रबड़ का ब्रिटेन के कारखानों में कच्चे माल के रूप में प्रयोग होता था। अतः वहाँ इन पदार्थों की बहुत अधिक माँग थी। इसी माँग को पूरा करने के लिए ही संसार भर में कपास तथा रबड़ की खेती को बढ़ावा दिया गया।

5. किन देशों के समूह को यूरोप में मित्र देशों के नाम से जाना जाता था?

उत्तर :

ब्रिटेन, फ्रांस और रूस।

6. आलू का अकाल कब पड़ा था? इसका क्या प्रभाव हुआ?

उत्तर :

1840 के दशक के मध्य में किसी बीमारी के कारण आलू की फसल खराब हो गई तो लाखों लोग भुखमरी के कारण मौत के मुँह में चले गए।

7. 1820 से 1914 के बीच विश्व व्यापार में वृद्धि की जानकारी दीजिए।

1820 से 1914 के बीच विश्व व्यापार में 25 से 40 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई। इस व्यापार का लगभग 60 प्रतिशत भाग गेहूँ, कपास, कोयला जैसे प्राथमिक उत्पादों का था।

1845 से 1849 के बीच भयानक आयरिश आलू अकाल के दौरान आयरलैंड के लगभग 10,00,000 लोग भुखमरी के कारण मारे गए थे। इससे दुगने लोग काम की तलाश में घर-बार छोड़कर दूसरे इलाकों में चले गए थे।

8. चटनी म्यूजिक कहाँ लोकप्रिय था?

उत्तर :

चटनी म्यूजिक दक्षिणी अमेरिका के त्रिनिदाद और गुयाना में लोकप्रिय हुआ जो भारतीय आप्रवासियों के वहाँ आने के बाद सामने आया था।

9. ब्रिटिश सरकार को कार्न के आयात पर पाबन्दी लगाने की अनुमति किसने प्रदान की?

उत्तर :

कार्न ला।

10. यूरोप में माँस खाना एक महँगा सौदा था। क्यों?

उत्तर :

1. आयातित जानवरों के यूरोप पहुँचने तक उनका माँस खाने योग्य नहीं रहता था या उनका वजन कम हो जाता था।
2. ऊँची कीमतों के कारण माँस उत्पादों की माँग तथा उत्पादन कम रहता था।

इन्हीं कारणों से यूरोप में माँस खाना एक महँगा सौदा था।

11. 18वीं शताब्दी तक विश्व के सबसे संपन्न दो देश कौन-से थे?

उत्तर :

18वीं शताब्दी तक विश्व के सबसे संपन्न देश भारत और चीन थे।

12. अमेरिका पर स्पेनिश लोगों द्वारा विजय प्राप्त करने का सबसे शक्तिशाली हथियार कौन-सा था?

उत्तर :

कीटाणु।

13. अफ्रीका के कागजी विभाजन से क्या अभिप्राय है?

उत्तर :

1885 में यूरोप की शक्तियों की बर्लिन (जर्मनी) में एक बैठक हुई। इस बैठक में इन शक्तियों ने अफ्रीका को उसके नक्शे पर ही लकीरें खींच कर आपस में बाँट लिया। इसे अफ्रीका का कागजी विभाजन कहते हैं।

14. होसे से आप क्या समझते हैं?

उत्तर :

त्रिनिदाद में मुहर्रम के सालाना जुलूस को एक विशाल उत्सवी मेले के रूप में मनाया जाने लगा था। इस उत्सवी मेले को **होसे** (इमाम हुसैन के नाम पर) नाम दिया गया।

15. उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में व्यापार में वृद्धि तथा विश्व अर्थव्यवस्था की निकटता का क्या दुष्परिणाम निकला?

उत्तर :

19वीं शताब्दी के अंतिम दशकों में व्यापार में वृद्धि तथा विश्व अर्थव्यवस्था की निकटता से साम्राज्यवाद तथा औपनिवेशीकरण की प्रक्रिया आरंभ हो गई। परिणामस्वरूप विश्व के अनेक भागों में स्वतंत्रता तथा आजीविका के साधन छिनने लगे।

16. आधुनिक युग से पहले किसने सिल्क रूट का प्रयोग नहीं किया?

उत्तर :

ईसाई धर्म प्रचारक।

17. भारत से गए अनुबंधित मजदूरों के वंशजों का नाम बताइए।

उत्तर :

भारत से गए अनुबंधित मजदूरों के वंशजों के नाम निम्नलिखित हैं:

1. नोबेल पुरस्कार विजेता साहित्य वी.एस. नायपॉल।
2. वेस्ट इंडीज के क्रिकेट खिलाड़ी शिवनरैन चंद्रपॉल और रामनरेश सरवन।

18. लगभग 500 साल पहले किस फसल के बारे में हमारे पूर्वज नहीं जानते थे?

उत्तर :

आलू।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

19. विदेश में भारतीय उद्यमियों के नाम बताइए।

उत्तर :

विदेश में भारतीय उद्यमियों में शिकारीपुरी श्रॉफ और नट्टूकोट्टई चेट्टियारो, उन बहुत सारे बैंकरों और व्यापारियों में से थे जो मध्य एवं दक्षिण पूर्व एशिया में निर्यातानुमुखी खेती के लिए कर्ज देते थे।

20. रास्ताफारियानवाद क्या था?

उत्तर :

यह एक विद्रोही धर्म था जिसे जमैका के रैगे गायक बॉब मार्ले ने बहुत अधिक लोकप्रिय बना दिया था। इसने भारतीय अप्रवासियों तथा कैरीबियाई द्वीप समूह के लोगों के आपसी संबंधों को मजबूत बनाया।

21. चेचक की बीमारी फैलने का क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर :

1. चेचक की बीमारी से कई समुदाय पूरे समाप्त हो गए।

2. इससे हमलावरों की जीत का रास्ता साफ हो गया।

22. जमैका के रैगे गायक का नाम बताएँ।

उत्तर :

जमैका का रैगे गायक बॉब मार्ले था।

23. कौन-सा राष्ट्रों का समूह धुरी राष्ट्र के नाम से जाना जाता था?

उत्तर :

जर्मनी, जापान एवं इटली

24. अमेरिका की खोज के दो प्रभावों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :

1. पेरू और मैक्सिको में मौजूद खानों से निकलने वाली चाँदी आदि ने यूरोप की संपदा में वृद्धि की।
2. संपदा में वृद्धि के परिणामस्वरूप पश्चिम एशिया के साथ व्यापार को गति प्राप्त हुई।

25. हायर परचेज व्यवस्था क्या होती है।

उत्तर :

हायर परचेज व्यवस्था के अंतर्गत ऋण पर वस्तुएँ खरीद कर उनका भुगतान किशतों में किया जाता है।

26. किस देश के पास अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक में वीटो का प्रभावशाली अधिकार है?

उत्तर :

संयुक्त राज्य अमेरिका।

27. किसने अमरीका महाद्वीप की खोज की?

उत्तर :

क्रिस्टोफर कोलंबस।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

28. प्रथम विश्व युद्ध में मित्र राष्ट्र और केंद्रीय शक्तियों में कौन-कौन से देश शामिल थे?

उत्तर :

प्रथम विश्व युद्ध मित्र राष्ट्र और केंद्रीय शक्तियों के बीच हुआ था। मित्र राष्ट्रों में ब्रिटेन, फ्रांस और रूस थे। केंद्रीय शक्तियाँ जर्मनी, ऑस्ट्रिया, हंगरी और ऑटोमन तुर्क थे।

29. प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् अमेरिका की स्थिति किस प्रकार थी?

उत्तर :

प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् अमेरिका और इसके नागरिकों की अन्य देशों में इतनी पूँजी आदि थी जितनी अन्य देशों व नागरिकों की अमेरिका में नहीं थी। अमेरिका एक कर्जदार की जगह देने वाला देश बन गया।

30. विश्व की आर्थिक मंदी का भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर :

विश्व की आर्थिक मंदी से भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन भी प्रभावित हुआ। महात्मा गांधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन 1930 से 1934 तक चलाया।

31. किस देश ने मक्का के आयात पर पाबंदी लगाने के लिए कर्न ला लागू किए?

उत्तर :

ब्रिटेन।

32. प्रथम विश्वयुद्ध किस प्रकार का युद्ध था?

उत्तर :

प्रथम औद्योगिक युद्ध।

33. अर्थशास्त्रियों ने अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक विनिमय में किन तीन प्रवाहों का उल्लेख किया है?

उत्तर :

1. वस्तुओं का प्रवाह।
2. श्रम का प्रवाह।
3. पूँजी का प्रवाह।

34. भूमंडलीकृत विश्व के निर्माण में तकनीक की भूमिका का एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर :

पानी के जहाजों में रेफ्रिजेशन की तकनीक स्थापित करने से जल्दी खराब होने वाली चीजों, जैसे माँस को भी लंबी यात्राओं पर सुरक्षित ले जाया जा सकता था।

35. द्वितीय विश्व युद्ध कब हुआ?

उत्तर :

द्वितीय विश्व युद्ध 1939 से 1945 ई. तक हुआ था।

36. एशिया को यूरोप और उत्तरी अफ्रीका से जोड़ने वाले मार्गों को किस नाम से जाना जाता है?

उत्तर :

सिल्क मार्ग (रूट)।

37. द्वितीय विश्व युद्ध में मित्र राष्ट्र और धुरी शक्तियाँ कौन-कौन सी थीं?

1. **मित्र राष्ट्र :** ब्रिटेन, फ्रांस, अमेरिका, सोवियत संघ आदि थे
2. **धुरी शक्तियाँ :** जर्मनी, इटली और जापान थे।

38. ब्रिटिश सरकार भारत में अफीम की खेती क्यों करवाती थी ?

उत्तर :

1820 के दशक से चीन को बड़ी मात्रा में अफीम का निर्यात किया जाने लगा था। अतः ब्रिटिश सरकार भारत में अफीम की खेती करवाती थी और उसे चीन को निर्यात कर देती थी। अफीम के निर्यात से जो पैसा मिलता था उसके बदले चीन से चाय और दूसरे पदार्थों का आयात किया जाता था।

39. रिंडरपेस्ट नामक बीमारी से किस महाद्वीप के लोगों की आजीविका और स्थानीय अर्थव्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ा?

उत्तर :

अफ्रीका।

40. यूरोप की बड़ी शक्तियों ने अफ्रीका के नक्शे पर लकीरें खींचकर उसको आपस में बाँटने के लिए बर्लिन की बैठक किस वर्ष में की?

उत्तर :

1890

41. अमेरिका को आर्थिक क्षेत्र में प्राप्त वीटो के अधिकार से आप क्या समझते हैं?

उत्तर :

अमेरिका को अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (I.M.F) और विश्व बैंक के कार्यों में वीटो का अधिकार है।

42. रेशम मार्ग से क्या अभिप्राय है।

उत्तर :

एशिया को यूरोप और उत्तरी अफ्रीका से जोड़ने वाला मार्ग का जाल।

43. विश्व में कब आर्थिक महासंकट हुआ?

उत्तर :

1929-30

44. व्यापार क्या है?

उत्तर :

वस्तुओं का विनिमय।

45. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के आवश्यक अंग कौन-से हैं?

उत्तर :

निर्यात और आयात।

46. नई दास प्रथा अथवा अनुबंधित मजदूरी प्रणाली को कब और क्यों समाप्त किया गया?

उत्तर :

नई दास प्रथा को 1921 में समाप्त किया गया। इसे भारत के राष्ट्रीयवादी नेताओं के दबाव के कारण समाप्त किया गया, क्योंकि वे इसे एक अपमानजनक तथा क्रूर प्रथा कहकर इसका विरोध कर रहे थे।

47. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का क्या अर्थ है?

उत्तर :

दो अथवा अधिक देशों के मध्य व्यापार।

48. अमेरिका पर अधिकार करने वाले प्रथम दो यूरोपीय देशों के नाम बताइए।

उत्तर :

अमेरिका पर सर्वप्रथम अधिकार करने वाले यूरोपीय देश स्पेन और पुर्तगाल थे।

49. वे कौन व्यक्ति थे जिन्होंने प्राचीन समय को समीप लाने में भाग लिया?

उत्तर :

- 1 यात्री
- 2 व्यापारी
- 3 पुजारी
- 4 तीर्थयात्री।

50. अर्थशास्त्रियों के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक विनिमय का प्रवाह क्या है?

उत्तर :

- 1 व्यापार
- 2 श्रम
- 3 पूँजी।

51. नूडल्स पश्चिम में कहाँ से पहुँचे?

उत्तर :

चीन से।

52. क्रिस्टोफर कोलंबस द्वारा खोजे गए अमेरिका से क्या अभिप्राय है?

उत्तर :

- 1 उत्तरी अमेरिका
- 2 दक्षिणी अमेरिका
- 3 कैरीबियन द्वीप समूह।

53. विश्व बैंक तथा आई.एम.एफ. ने निम्न में से किस वर्ष औपचारिक रूप से काम करना प्रारंभ कर दिया था?

उत्तर :

1947 में।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

54. भूमंडलीय प्रक्रिया में खाद्य पदार्थों के आदान-प्रदान की क्या भूमिका थी?

उत्तर :

आलू, सोयाबीन, मूँगफली, मक्का, टमाटर, मिर्च, शकरकंद और ऐसे ही बहुत सारे दूसरे खाद्य पदार्थ यूरोप और एशिया में तब पहुँचे जब क्रिस्टोफर कोलंबस अज्ञात महाद्वीप में पहुँचा जो अमेरिका के नाम से जाना जाता है। बहुत सारे खाद्य पदार्थ अमेरिका के मूल निवासियों यानी अमेरिकन इंडियन से हमारे पास आए हैं।

55. वैश्वीकरण में आलू का क्या महत्व रहा?

उत्तर :

नई-नई फसलों के आने से जीवन में जमीन-आसमान का अंतर आता गया। लेकिन साधारण से आलू का इस्तेमाल शुरू करने पर यूरोप के गरीबों की जिंदगी आमूल रूप से बदल गई थी। उनका भोजन पहले से बेहतर हो गया और उनकी औसत आयु बढ़ने लगी। आयरलैंड के गरीब काश्तकार आलू पर ही

निर्भर थे। यूरोप और एशिया में यह भौगोलिक खोजों के साथ पहुँचा। अतः वैश्वीकरण में आलू का बहुत महत्व है।

56. कार्न लॉ का क्या अर्थ है?

उत्तर :

18वीं शताब्दी के आखिरी दशक में ब्रिटेन की आबादी तेजी से बढ़ने लगी। देश में भोजन की माँग बढ़ने लगी और कृषि उत्पाद महँगे होने लगे। सरकार ने बड़े भूस्वामियों के दबाव में मक्के के आयात पर पाबंदी लगा दी थी।

जिन कानूनों के द्वारा सरकार ने पाबंदी लगाई थी उसे ही **कार्न लॉ** कहा जाता था।

57. किस दशक में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की स्थापना की गई थी?

उत्तर :

1920 के दशक में।

58. विश्व व्यापार संघ की स्थापना कब हुई?

उत्तर :

1995 में।

59. प्रथम विश्व युद्ध में प्रयोग किए गये कुछ घातक हथियारों के नाम बताओ।

उत्तर :

मशीनगन, टैंक, हवाई जहाज तथा रासायनिक हथियार।

60. किस संगठन ने विश्व व्यापार संगठन को प्रतिस्थापित किया?

उत्तर :

गैट (GATT)।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

61. तथाकथित होम चार्जेज अथवा देसी खर्चे क्या थे? इनका निबटारा कैसे होता था?

उत्तर :

होम चार्जेज में—

- 1 ब्रिटिश अफसरों तथा व्यापारियों द्वारा घर भेजी जाने वाली निजी धनराशि।
- 2 भारतीय ऋण पर ब्याज।
- 3 भारत में काम कर चुके ब्रिटिश अधिकारियों की पेंशन शामिल थी।

इन खर्चों का निबटारा ब्रिटेन को व्यापार से मिलने वाले अधिशेष से होता था।

62. अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आई.एम.एफ.) की स्थापना कब हुई

उत्तर :

जुलाई, 1944 में।

63. हैदराबादी सिंधी व्यापारी कौन थे?

उत्तर :

हैदराबादी सिंधी व्यापारी यूरोपीय उपनिवेशों में पैसा लगाने वाले भारतीय महाजन थे। 1860 के दशक से उन्होंने विश्व

भर के बंदरगाहों पर अपने बड़े-बड़े एंपोरियम खोल लिए। इन दुकानों में पर्यटकों को आकर्षक स्थानीय और विदेशी वस्तुएँ मिलती थी। यह एक फलता-फूलता व्यवसाय था क्योंकि सुरक्षित और आरामदेह जलपोतों के आ जाने से पर्यटकों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही थी।

64. प्रथम विश्व युद्ध कब आरंभ हुआ? इसके दो विरोधी गुट कौन-कौन से थे?

उत्तर :

प्रथम विश्व युद्ध अगस्त 1914 में आरंभ हुआ। इसके दो विरोधी गुट निम्नलिखित थे:

- 1 **मित्र राष्ट्र**— ब्रिटेन, फ्रांस तथा रूस।
- 2 **केंद्रीय शक्तियाँ**— जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी तथा तुर्की।

65. विश्व बैंक की स्थापना क्यों की गई?

उत्तर :

युद्धोत्तर पुनर्निर्माण के लिए धनराशि का इंतजाम करने के लिए।

66. वह परिस्थिति क्या कहलाती है जिसके अंतर्गत निर्यात का मूल्य आयात से अधिक होता है?

उत्तर :

व्यापार अधिशेष।

लघु उत्तरात्मक प्रश्न

1. वैश्वीकरण और उदारीकरण को भारत में प्रोत्साहन देने के लिए क्या-क्या कदम उठाए हैं? किसी एक देश के लिए वित्तीय संकटों के एक महत्वपूर्ण परिणाम का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :

1. 1. श्रम कानूनों में ढील देना
 - 2 विशेष आर्थिक क्षेत्रों (SEZs) का बनाया जाना
 - 3 सभी तरह के व्यापार रोधकों (Trade Barriers) को हटाया जाना
 - 4 विश्व व्यापार संगठन के सचिवीय सम्मेलन में लिए गए निर्णयों को निःशर्त मान लेना।
2. विश्व बैंक से भारत ऋण स्थिति 2005-06 में 63,215 करोड़ रुपए की है। यही कारण है कि विश्व व्यापार संगठन के सचिवीय सम्मेलन में भारत प्रत्येक निर्णय को मानने के लिए मजबूर है।

2. नई आर्थिक नीति के मौलिक उद्देश्य बताइए। 1991 से भारत सरकार कौन-सी नई आर्थिक नीति पर चल रही है?

उत्तर :

नई आर्थिक नीति का मौलिक उद्देश्य देश की अर्थव्यवस्था को बदल कर इसे एक मजबूत, स्थायी एवं सक्षम प्रतियोगिता वाली अर्थव्यवस्था बनाने का है। अर्थव्यवस्था के भूमंडलीकरण की नीति।

3. भूमंडलीकरण की प्रक्रिया के चिह्न आधुनिक युग से पहले के समय में भी देखे जा सकते हैं। व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

- 1 प्राचीन समय से ही लोग लंबी दूरी की यात्रा करते थे। इन लोगों में यात्री, व्यापारी, संत-महात्मा तथा तीर्थयात्री आदि शामिल थे।
- 2 ये लोग ज्ञान तथा अवसर की प्राप्ति के लिये यात्राएँ किया करते थे। ये अपने साथ सामान, पैसा, मूल्य, मान्यताएँ, हुनर, विचार, आविष्कार और यहाँ तक कि कीटाणु तथा बीमारियाँ आदि भी लेकर चलते थे।
- 3 उदाहरण के लिये आज से लगभग 5000 वर्ष पहले सिंधु घाटी सभ्यता उस इलाके से भी जुड़ी हुई थी जिसे हम आज पश्चिमी एशिया के नाम से जानते हैं। अतः हम देखते हैं कि आधुनिक युग से सैकड़ों वर्ष पूर्व से ही दुनिया के विभिन्न हिस्सों के लोग एक-दूसरे से जुड़े हुए थे।

4. महामंदी के कारणों की व्याख्या करें।

उत्तर :

महामंदी 1929 में प्रारंभ होकर 1930 के दशक के मध्य तक चली। इस दौरान विश्व के लगभग सभी देशों में उत्पादन, रोजगार, आय और व्यापार में अत्यधिक गिरावट आई। महामंदी का समय विभिन्न देशों में अलग-अलग था। इसके अंतर्गत कृषि क्षेत्र और किसान अत्यधिक प्रभावित हुए क्योंकि कृषि उत्पादों की कीमते औद्योगिक उत्पादों की कीमतों से अधिक कम हुई। इस महामंदी के निम्नलिखित कारण थे:

1. **कृषि में अत्यधिक उत्पादन की समस्या :** कृषि क्षेत्र में अत्यधिक उत्पादन एक महत्वपूर्ण समस्या थी। कृषि उत्पादों की कीमतों में कमी के कारण यह समस्या और भी गंभीर हो गई। कीमतों में कमी के कारण, कृषि से आय में कमी आई तो किसानों ने अपनी आय को बनाए रखने के लिए उत्पादन में वृद्धि कर और अधिक उत्पादों को बाजार में लाने का प्रयत्न किया इससे स्थिति अधिक खराब हो गई। बाजार में अधिक उत्पादों के आने से कीमतों में और गिरावट आई। खरीददारों की कमी से अनाज आदि खराब होने लगे।
2. **अमेरिका का पूँजीनिवेश या अन्य देशों को आर्थिक सहायता में कमी करने का प्रभाव :** 1920 के दशक में कई देशों में अमेरिका से निवेश संबंधी कर्ज लिया परन्तु संकट के समय अमेरिकी उद्यमियों ने कर्ज देना बंद कर दिया। 1928 से एक साल के भीतर कर्ज एक अरब डॉलर से कम होकर केवल एक -चौथई रह गया। अमेरिकी पूँजी की वापसी से यूरोप आदि पर निम्नलिखित बुरे प्रभाव पड़े :

- 1 यूरोप के कई बैंक बंद हो गए।
- 2 ब्रिटिश पाउंड व अन्य मुद्राओं में गिरावट आई।

5. रेशम मार्गों के महत्त्व का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

- 1 सिल्क मार्ग के नाम से पता चलता है कि इस मार्ग से पश्चिम को भेजी जाने वाली चीनी रेशम का बड़ा महत्त्व था।
- 2 जमीन या समुद्र से होकर गुजरने वाले रास्ते न केवल एशिया के विशाल क्षेत्रों को एक-दूसरे से जोड़ने का काम करते थे बल्कि एशिया को यूरोप और उत्तरी अफ्रीका से भी जोड़ते थे।
- 3 ये मार्ग 15वीं शताब्दी तक अस्तित्व में रहे और इन्हीं रास्तों से चीनी पॉटरी जाती थी।
- 4 इन्हीं रास्तों से भारत व दक्षिण-पूर्व एशिया के कपड़े व मसाले दुनिया के दूसरे भागों में पहुँचते थे। वापसी में सोने-चाँदी जैसी कीमती धातुएँ यूरोप से एशिया पहुँचती थीं।
- 5 बौद्ध धर्म भी इन्हीं मार्गों से फैला और मुस्लिम धर्मोपदेशक भी इसी रास्ते से विश्व में फैले।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

6. 19वीं शताब्दी के अंत में उपनिवेशवाद का स्वरूप क्या था? उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

उत्तर :

19वीं सदी के अंत में उपनिवेशवाद के कारण व्यापार में उन्नति और बाजार में वृद्धि हुई परन्तु यह समय केवल व्यापार में वृद्धि और अधिक खुशहाली का ही नहीं था, इसका एक अंधकारमय पक्ष भी था जो कि निम्नलिखित था:

- 1 विश्व के कई भागों में व्यापार में वृद्धि और विश्व अर्थव्यवस्था के साथ संबंध के कारण लोगों की स्वतंत्रता समाप्त हो गई और आजीविका के साधन छिन गए।
- 2 19वीं शताब्दी के अंत तक यूरोपीय विजयों ने कई प्रकार के दर्दनाक-आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय परिवर्तन किए। उदाहरणतया अफ्रीका का विभाजन 1885 में बर्लिन की बैठक में किया गया। इसीलिए अफ्रीका के देशों की सीमाएँ समान सीधी रेखाओं की तरह हैं क्योंकि यह एक पैमाने से खींची गई थीं।
- 3 उपनिवेशवाद से ब्रिटेन और फ्रांस के उपनिवेशों में भारी वृद्धि हुई।
- 4 बेल्जियम और जर्मनी नई औपनिवेशिक शक्तियाँ बनीं।
- 5 1890 के दशक के अंत में अमेरिका ने भी कुछ उपनिवेशों पर, जो पहले स्पेन के पास था, अधिकार किया और औपनिवेशिक देश बन गया।

7. अमेरिका के नए समुद्री मार्ग की खोज ने पूर्व-औद्योगिक विश्व को बदल दिया। इस कथन की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

अमेरिका के नए समुद्री मार्ग की खोज ने पूर्व-औद्योगिक विश्व में निम्नलिखित परिवर्तन किए:

- 1 हमारे बहुत सारे खाद्य पदार्थ, जैसे -आलू, सोया, मूँगफली

आदि अमेरिका से यूरोप पहुँचे। इनसे जनसाधारण के जीवन में बड़ा परिवर्तन आया।

2. पेरू और मैक्सिको में मौजूद खानों से निकलने वाली कीमती धातुओं, विशेष रूप से चाँदी, ने यूरोप की संपदा में वृद्धि की। इससे पश्चिमी एशिया के व्यापार को गति प्राप्त हुई।
 3. दास प्रथा प्रारंभ हुई और यूरोपीय व्यापारियों ने अफ्रीका से दासों को पकड़ा और बेच दिया जिन्हें अमेरिका ले जाकर उनसे यूरोपीय बाजारों के लिए कपास और चीनी का उत्पादन करवाया जाने लगा।
 4. यूरोप व्यापार का केंद्र बन गया।
8. औद्योगिक क्रांति का भारत पर पड़े प्रभावों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

1. ब्रिटेन में कपास उद्योग के विस्तार के परिणामस्वरूप उद्योगपतियों ने कपास के आयात पर प्रतिबंध लगाने के लिए सरकार को विवश किया ताकि स्थानीय उद्योगों का बचाव हो सके।
2. ब्रिटेन में कपड़े के आयात पर सीमाशुल्क लगाया गया। इससे उत्तम श्रेणी की कपास का आयात कम हो गया।
3. 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में ब्रिटिश उद्योगपतियों ने समुद्रपार क्षेत्रों में अपने कपड़े के लिए नये बाजार ढूँढ़ने शुरू किए।
4. इस प्रकार भारतीय कपड़ा उद्योगों को एक जबरदस्त संघर्ष करना पड़ा इससे भारत का सूती कपड़े का निर्यात कम होने लगा जो 1800 में 30 प्रतिशत था, 1815 में 15 प्रतिशत रह गया। 1870 के दशक तक यह निर्यात 3 प्रतिशत से भी कम रह गया।
5. उत्पादों के स्थान पर अब कच्चे माल के निर्यात में वृद्धि हुई। 1812 और 1871 में मध्य कपास का निर्यात 5 प्रतिशत से 35 प्रतिशत हो गया।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

9. उन्नीसवीं सदी के अंतिम चरण में व्यापार फलने-फूलने में प्रौद्योगिकी की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

1. जनसंचार तकनीक के बिना 19वीं सदी में आये परिवर्तनों की कल्पना नहीं की जा सकती थी। इसमें रेलवे, भाप के जहाज, टेलीग्राफ आदि की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।
2. औपनिवेशीकरण के कारण यातायात तथा परिवहन साधनों में भारी सुधार आए। जगहों के बीच दूरियाँ कम होने लगी। तेज चलने वाली रेलगाड़ियाँ के भार को कम किया गया तथा जलपोतों का आकार बढ़ा।
3. उदाहरण के लिए 1870 के दशक तक अमेरिका से यूरोप को माँस का निर्यात नहीं किया जाता था, बल्कि जिंदा जानवर भेजे जाते थे जो अधिक जगह घेरते थे। नई तकनीक से स्थिति बदली तथा जहाजों में रेफ्रिजेशन

तकनीक लगा दी गई। अब माँस का निर्यात जल्दी, आसानी से और कम खर्चे में किया जा सकता था।

10. इतिहास के हर दौर में मानव समाज एक-दूसरे के ज्यादा नजदीक आते गए हैं। व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

इतिहास साक्षी रहा है कि प्राचीन काल में भी एक सभ्यता के लोग दूसरी सभ्यता के लोगों के साथ व्यापार करते थे। इन व्यापारों के अतिरिक्त सांस्कृतिक आदान-प्रदान भी हुआ करता था। मध्य काल में व्यापारिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में और भी तेजी आई जिससे एक देश के लोग दूसरे देश के लोगों से काफी नजदीक से जुड़ते गए। जैसे मध्य काल में भारत में इस्लाम धर्म का प्रवेश हुआ जिससे भारतीय संस्कृति काफी प्रभावित हुई। एक देश के लोगों ने दूसरे की वस्तुओं के आयात-निर्यात के द्वारा वहाँ की गई वस्तुओं के उपयोग के बारे में भी सीखा, जैसे-चीन में कागज का उपयोग, छपाई खाने द्वारा पुस्तकों को छापना, परीक्षा लेकर कर्मचारियों की नियुक्ति करना आदि। तेरहवीं सदी के बाद कई यात्रियों ने समुद्री मार्गों की खोज की जिससे दुनिया एक-दूसरे के और भी नजदीक आ गई।

11. भारत में अनुबंधित श्रमिक संबंधी प्रावधान को कब समाप्त किया गया? अप्रवासी भारतीय अनुबंधित श्रमिकों तथा गंतव्य स्थलों की संस्कृतियों के मिलान के कोई दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर :

भारत में अनुबंधित श्रमिक संबंधी प्रावधानों को 1921 में समाप्त कर दिया गया।

1. भारत में मुसलमानों द्वारा मुहर्रम का जुलूस निकाला जाता है यही जुलूस त्रिनिनाद में **होसे** नामक विशाल उत्सवी मेले में बदल गया।
2. आप्रवासी भारतीय अनुबंधित श्रमिकों द्वारा सांस्कृतिक मेलमिलाप का दूसरा अनूठा उदाहरण त्रिनिनाद एवं गुयाना का लोकप्रिय **चटनी म्यूजिक** है।

12. अफ्रीका में आने के लिए यूरोपीयों के लिए प्रमुख आकर्षण के कारण क्या थे?

उत्तर :

1. यूरोपीय बहुमूल्य खनिजों जैसे सोना, कोयला, चाँदी आदि की खोज में अफ्रीका की ओर आकर्षित हुए।
2. अफ्रीका के विशाल भूक्षेत्र को देखकर वे इस ओर आकर्षित हुए।
3. वे अफ्रीका में बागानी खेती करने और खदानों का दोहन करना चाहते थे।

13. उन्नीसवीं सदी में भारतीय व्यापार पर उपनिवेशवाद और वैश्वीकरण का क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर :

उन्नीसवीं सदी में भारतीय व्यापार पर उपनिवेशवाद और वैश्वीकरण के निम्नलिखित प्रभाव पड़े :

- 1 सन् 1800 के आस-पास निर्यात में सूती कपड़े का हिस्सा 30 प्रतिशत था, जो 1815 में घट कर 15 प्रतिशत रह गया। 1870 तक तो यह अनुपात केवल 3 प्रतिशत रह गया था।
- 2 1812 से 1871 के बीच कच्चे कपास का निर्यात 5 प्रतिशत से बढ़कर 35 प्रतिशत तक पहुँच गया था।
- 3 कपड़ों की रँगई के लिए इस्तेमाल होने वाले नील का भी कई दशक तक बड़े पैमाने पर निर्यात होता रहा।
- 4 1820 के दशक से चीन को बड़ी मात्रा में अफीम का निर्यात किया जाने लगा। कुछ समय तक तो भारतीय निर्यात में अफीम का हिस्सा सबसे ज्यादा रहा।

14. असेंबली लाइन (Assembly line) से क्या तात्पर्य है? इसके क्या-क्या लाभ हुए?

उत्तर :

- 1 **असेंबली लाइन-** जब एक मशीन के अलग-अलग कलपुर्जे अलग-अलग स्थानों पर बनाए जाते हैं और बाद में उन्हें एक स्थान पर इकट्ठा करके उन्हें एक पूरी मशीन का रूप दिया जाता है तो ऐसे ढंग को असेंबली लाइन कहा जाता है।
- 2 **असेंबली लाइन के लाभ-**
 - 1 इससे बड़े पैमाने पर उत्पादन करना आसान हो जाता है।
 - 2 इससे उत्पादन का खर्चा भी कम हो जाता है।
 - 3 इसके द्वारा कारीगरों को उच्च वेतन देना भी आसान हो जाता है।
 - 4 निपुण हाथों से जब विभिन्न कलपुर्जे बनकर आते हैं तो पूरी मशीन भी उत्तम श्रेणी की बनकर सामने आती है।
 - 5 इस पद्धति से कारों, वाशिंग मशीन, रेफ्रिजरेटरों आदि का बनाना आसान हो जाता है।

15. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार क्या है? अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के कौन-से दो प्रकार हैं ? प्रत्येक की एक विशेषता बताइए।

उत्तर :

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार- विभिन्न देशों के मध्य वस्तुओं तथा सेवाओं के आदान-प्रदान को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार कहते हैं। इसका आर्थिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व होता है। क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में संलग्न देश एक-दूसरे को अपनी सभ्यता एवं उपज तथा अन्य उत्पादों का आदान-प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए भारत में शकरकंद, आलू और टमाटर की फसलें अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की देन है जो शीतोष्ण कटिबंधीय देशों से भारत में लाई गई थीं। इसी प्रकार भारतीय व्यापारियों ने अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को दक्षिणी-पूर्वी एशियाई देशों तथा विश्व के अन्य देशों में पहुँचाया।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार दो प्रकार का होता है।-

- 1 **द्विपक्षीय व्यापार-** यह दो राष्ट्रों के बीच वस्तुओं का लेन-देन होता है। उदाहरणार्थ : भारत एवं यूनाइटेड किंगडम (U.K)(या ब्रिटेन) में व्यापार।
- 2 **बहुराष्ट्रीय व्यापार-** यह अनेक राष्ट्रों के बीच वस्तुओं एवं सेवाओं के विनिमय या लेन-देन से संबंधित होता है।

16. प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् ब्रिटेन को आर्थिक संकट क्यों झेलना पड़ा?

उत्तर :

युद्ध के पश्चात् आर्थिक स्थिति पर नियंत्रण पाना एक बहुत कठिन काम था। युद्ध से पहले ब्रिटेन संसार की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी परंतु युद्ध के बाद सबसे लंबा संकट उसी को झेलना पड़ा। इसके मुख्य कारण निम्नलिखित थे:

1. जिस समय ब्रिटेन युद्ध से जुझ रहा था उस समय भारत और जापान में उद्योग विकसित होने लगे थे। अतः युद्ध के पश्चात् ब्रिटेन के लिए भारतीय बाजार में पहली वाली स्थिति प्राप्त करना बहुत कठिन हो गया।
- 2 अब उसे जापान से भी मुकाबला करना था।
- 3 युद्ध के खर्च की पूर्ति करने के लिए ब्रिटेन ने अमेरिका से भारी कर्जे लिए थे। परिणामस्वरूप युद्ध के पश्चात् ब्रिटेन भारी विदेशी कर्जों में दब गया था।
- 4 ब्रिटिश सरकार ने अपने युद्ध संबंधी व्यय में भी कटौती शुरू कर दी थी ताकि कर्जों द्वारा ही उसे पूरा किया जा सके। इन प्रयासों से रोजगार के साधनों में कमी आई। 1921 में हर पाँच में से एक ब्रिटिश मजदूर के पास काम नहीं था।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

17. 1930 के दशक के दौरान यूरोप में छोटे-छोटे उत्पादकों और किसानों के समक्ष आई किन्हीं तीन प्रमुख कठिनाइयों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

1930 का दशक सारे विश्व के लिये बड़े संकट का दशक था। जब आर्थिक संकट (1929-1934) ने सब देशों के लिए अनेक समस्याएँ उत्पन्न कर दी थीं। इस संकट से यूरोप के छोटे-छोटे उत्पादक और किसान भी बच न सके। उनके सामने अनेक कठिनाइयाँ आयीं जिनमें तीन प्रमुख निम्नलिखित थी:

- 1 गिरते हुए कृषि उत्पादों के मूल्यों में आने वाली गिरावट ने जमींदारों को बर्बाद कर दिया क्योंकि जमींदारों को कर न चुका सकने के कारण उन्हें भूमि से बेदखल कर दिया गया।
- 2 ऐसी ही अवस्था यूरोप के छोटे-छोटे उत्पादकों की भी थी। उनका बना हुआ माल सड़ रहा था क्योंकि उन्हें खरीदने वाला कोई नहीं था। ऐसे में उन्हें अनेक कारखाने बंद करने पड़े।
- 3 दोनों छोटे-छोटे उत्पादकों और किसानों के लिये यह एक

कठिन समय था। कर्ज और भूख ने उनके जीवन को नरक बना रखा था। अपने सारे संचित साधनों का इस्तेमाल करके तथा अपनी संपत्ति को बेचकर भी वे अपने-आप को बचा न सके। उनके पास गरीबी और भुखमरी के सिवाय और कुछ न बचा।

18. वैश्वीकरण से आपका क्या आशय है?

उत्तर :

वैश्वीकरण का अर्थ- वैश्वीकरण की अवधारणा में राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आधार शामिल होते हैं। यहाँ पर हम वैश्वीकरण की अवधारणा पर उसके आर्थिक पहलू की दृष्टि से चर्चा करेंगे।

वैश्वीकरण से आशय है व्यापार, वित्तीय प्रवाह तथा प्रौद्योगिकी एवं सूचनाओं के नेटवर्क के माध्यम से विश्व की अर्थव्यवस्थाओं का समन्वय एवं एकीकरण। इस प्रकार वैश्वीकरण में वस्तुओं व सेवाओं के सीमापार सौदों, अंतर्राष्ट्रीय पूँजी प्रवाह एवं प्रौद्योगिकी के व्यापार एवं तीव्र प्रसार से विभिन्न देशों के बीच आर्थिक अंतर्निर्भरता बढ़ जाती है।

19. पूर्व-आधुनिक विश्व में बीमारियों के वैश्विक प्रसार ने अमेरिकी भूभागों के उपनिवेशीकरण में किस प्रकार मदद दी थी?

उत्तर :

- 1 अमेरिका का उपनिवेशीकरण किसी बड़ी सैनिक ताकत का परिणाम नहीं था। वास्तव में स्पेनिश विजेताओं के सबसे शक्तिशाली हथियारों में पंरपरागत किस्म का सैनिक हथियार तो कोई था ही नहीं। यह हथियार तो चेचक जैसे कीटाणु थे, जो स्पेनिश सैनिक अपने साथ लाए थे।
- 2 लाखों साल से दुनिया से अलग-थलग रहने के कारण अमेरिका के लोगों के शरीर में यूरोप से आने वाली इन बीमारियों से बचने की रोग प्रतिरोधी क्षमता नहीं थी। फलस्वरूप यहाँ चेचक बहुत मारक साबित हुई।
- 3 एक बार संक्रमण शुरू होने के बाद यह बीमारी पूरे महाद्वीप में फैल गई। जहाँ यूरोपीय लोग नहीं पहुँचे थे वहाँ के लोग भी इसकी चपेट में आने लगे। इसने पूरे समुदायों को खत्म कर दिया। इस तरह घुसपैठियों की जीत का रास्ता आसान हो गया।
- 4 बंदूकों को तो खरीद कर या छीन कर हमलावरों के खिलाफ भी इस्तेमाल किया जा सकता था पर चेचक जैसी बीमारियों के मामले में तो ऐसा नहीं किया जा सकता था, क्योंकि हमलावरों के शरीर में रोग प्रतिरोधी क्षमता विकसित हो चुकी थी।

20. 19वीं सदी में विदेश स्थित किन्हीं दो भारतीय व्यापारी समूहों के नाम बताइए। इन व्यापारियों की किन्हीं दो गतिविधियों के बारे में लिखिए।

उत्तर :

- 1 शिकारीपुरी श्रॉफ तथा नट्टूकोट्टई चेट्टियार विदेश

स्थित भारतीय बैंकर तथा व्यापारियों के दो प्रसिद्ध समूह थे।

2. व्यापारियों की गतिविधियाँ-

1. विदेश स्थित भारतीय व्यापारी मध्य एवं दक्षिण-पूर्व एशिया में निर्यातानुखी खेती के लिये कर्ज देते थे। यह राशि या तो उसकी अपनी होती थी या वे यूरोपीय बैंकों से कर्ज लेते थे।
- 2 कुछ व्यापारी, खासकर हैदराबादी सिंधी व्यापारी लोग व्यस्त बंदरगाहों पर आकर्षक स्थानीय और विदेशी चीजों की ब्रिकी किया करते थे।

21. डब्ल्यू.टी.ओ.(WTO) या विश्व व्यापार संगठन क्या है? इससे क्या उम्मीद की जाती है?

उत्तर :

- 1 **विश्व व्यापार संगठन (W.T.O) का अर्थ-** विश्व व्यापार संगठन एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है जो सदस्य राष्ट्रों के बीच व्यापार संबंधी नियमों को संचालित एवं विनियोजित करता है। इसकी स्थापना 1 जनवरी, 1995 में की गई। इसका मुख्यालय जेनेवा में है।

2 अपेक्षाएँ- विश्व व्यापार संगठन से निम्नलिखित कार्यों की उम्मीद की जाती है।

- 1 विश्व व्यापार संगठन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को संगठित करता रहे।
- 2 अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए कई तरह के नियम बनाता रहे तथा वे नियम सभी राष्ट्रों के यथासंभव हितों की बराबर रक्षा करते रहें।
- 3 विभिन्न देशों के बीच द्विपक्षीय समझौते करवाता है। इस संगठन को निष्पक्ष रूप से देखना चाहिए कि वह समझौता ईमानदारी से लागू हुआ या नहीं।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

22. उदारीकरण एवं प्रतिबंध (पाबंदियों वाली) नीति में अंतर बताइए।

उत्तर :

- 1 प्रतिबंध की नीति से अभिप्राय है कि निजी व्यक्तियों की आर्थिक क्रियाओं पर किसी-न-किसी अधिनियम द्वारा नियंत्रण रखना या प्रतिबंध लगाना जैसे विदेशी मुद्रा तथा तकनीक के प्रवाह पर रोक लगाना, लाइसेंसिंग प्रणाली को अपनाना, बड़े आकार के उद्योगों में निजी पूँजी के निवेश पर रोक लगाना आदि।
- 2 उदारीकरण की नीति प्रतिबंध की नीति से भिन्न है उदारीकरण की नीति के अंतर्गत उत्पादों की कीमतें बाजार की माँग और पूर्ति शक्तियों द्वारा पूर्ण प्रतिस्पर्धा में नियत होती हैं। सरकार द्वारा केवल उत्पादन की न्यूनतम या अधिकतम सीमा निर्धारित कर दी जाती है। उत्पादकों के वितरण पर किसी तरह की रोक नहीं लगाई जाती।

उद्योगों के विस्तार पर छूट दी जाती है।

23. व्यापार अधिशेष को परिभाषित कीजिए। अंग्रेजों ने भारत के साथ व्यापार से प्राप्त **व्यापार अधिशेष** का प्रयोग किस प्रकार किया?

उत्तर :

जब निर्यात का मूल्य आयात मूल्य से अधिक होता है तो यह व्यापार अधिशेष की अवस्था कहलाती है।

- 1 ब्रिटेन इस मुनाफे के सहारे दूसरे देशों के साथ होने वाले व्यापारिक घाटे की भरपाई कर लेता था। ब्रिटेन से जो माल दूसरे देशों को भेजा जाता था, उसकी कीमत ब्रिटेन भेजे जाने वाले माल की कीमत से हमेशा ज्यादा होती थी।
- 2 बहुपक्षीय बंदोबस्त ऐसे ही काम करता है। इसमें एक देश के मुकाबले दूसरे देश की होने वाले घाटे की भरपाई किसी तीसरे देश के साथ व्यापार में मुनाफा कमा कर की जाती है। ब्रिटेन के घाटे की भरपाई में मदद देते हुए भारत ने 19वीं शताब्दी की विश्व अर्थव्यवस्था का रूप तय करने में एक अहम भूमिका अदा की थी।
- 3 ब्रिटेन के व्यापार से जो अधिशेष हासिल होता था उससे तथाकथित **होम चार्ज** का निबटारा होता था। इसके तहत ब्रितानी अफसरों और व्यापारियों द्वारा अपने घर में भेजी गई निजी रकम, भारतीय बाहरी कर्ज पर ब्याज और भारत में काम कर चुके ब्रितानी अफसरों की पेंशन शामिल थी।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

24. भारतीय अर्थव्यवस्था के वैश्वीकरण के लिए क्या-क्या कदम उठाए गए हैं।

उत्तर :

- 1 **विदेशी पूँजी निवेश में वृद्धि**— आर्थिक सुधारों के अंतर्गत विदेशी पूँजी निवेश की सीमा 40 प्रतिशत से बढ़ाकर 51 प्रतिशत कर दी गई है।
- 2 **अवमूल्यन**— आर्थिक सुधारों में अपनाई जाने वाली वैश्वीकरण की नीति के अंतर्गत सरकार ने जुलाई 1991 में रुपये का औसतन 20 प्रतिशत अवमूल्यन किया था।
- 3 **अर्थव्यवस्था के खुलेपन का विस्तार**— भारतीय अर्थव्यवस्था के खुलेपन का विस्तार करने के लिए विदेशी निवेश तथा अत्याधुनिक तकनीक के प्रयोग को प्रोत्साहित किया गया है।
- 4 **निर्यात को प्रोत्साहन**— विदेशी व्यापार के भुगतान संतुलन के घाटे को पूरा करने के लिए निर्यात को प्रोत्साहित किया गया है। विदेशी व्यापार में भारत के निर्यात व्यापार को बढ़ाने के लिए निर्यातकों को विशेष सुविधाएँ दी गई हैं।

25. विनिवेश से आप क्या समझते हैं? इस कार्यक्रम में हमें कहाँ तक सफलता मिली है ?

उत्तर :

विनिवेश का अर्थ— विनिवेश से अभिप्राय है सार्वजनिक उद्यमों की संपूर्ण अथवा कुछ परिसंपत्तियों की बिक्री अर्थात् सरकारी उपक्रमों की पूँजी के एक भाग को निजी पूँजीपतियों को बिक्री करना है विनिवेश निजीकरण का एक रूप है। सार्वजनिक क्षेत्र के कितने प्रतिशत अंश बेचे जायेंगे, यह उन उपक्रमों की प्रकृति पर निर्भर करता है।

26. वैश्वीकरण और उदारीकरण के कुछ सकारात्मक पहलुओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :

वैश्वीकरण और उदारीकरण के कुछ सकारात्मक पहलू –

- 1 वैश्वीकरण और उदारीकरण ने देश के आर्थिक विकास को तीव्रता प्रदान की है। विशाल औद्योगिक आकार ने देश में औद्योगिक उत्पादन को बढ़ाया है।
- 2 निर्धनता रेखा से नीचे रहने वाले लोगों की संख्या में कमी आई है।
- 3 हम खाद्यान्न की दृष्टि से आत्मनिर्भर हैं।
- 4 लोगों की बचतों को गतिशील बनाया है।
- 5 देश ने विकास के लिए अपने संसाधन जुटा लिए हैं।
- 6 देश में वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक कार्यों में कुशल लोगों का एक बहुत बड़ा समूह तैयार हो गया है।
- 7 देश में निर्यात से जुड़े हुए उद्योग ज्यादा लगाए जा रहे हैं।

27. उदारीकरण द्वारा निजी क्षेत्र के उद्योगों को जो तीन स्वतंत्रता प्रदान की गई हैं, उनका उल्लेख कीजिए।

उत्तर :

उदारीकरण द्वारा निजी क्षेत्र के उद्योगों को दी गई तीन स्वतंत्रताएँ –

- 1 **उद्योगों को खोलने के लिए सरकारी अनुज्ञा की समाप्ति** – सुरक्षा, सामाजिक आवश्यकताओं एवं पर्यावरणीय आधार से संबंधित केवल 7 उद्योगों को छोड़कर शेष सभी उद्योगों के लिए लाइसेंस की आवश्यकता को समाप्त कर दिया गया है।
- 2 **व्यापारिक घराने निवेश के लिए पूरी तरह स्वतंत्र** – क्षमता का विस्तार करने अथवा विविधीकरण के लिए अब औद्योगिक और व्यापारिक घरानों (बड़ी कंपनियों) को किसी तरह की अनुमति नहीं लेनी है। वे पूर्णतः स्वतंत्र हैं। इसके लिए एकाधिकार और प्रतिबंधात्मक व्यापार व्यवहार अधिनियम में भी संशोधन कर दिया गया है।
- 3 **सार्वजनिक क्षेत्र के लगभग सभी उद्योग अब निजी क्षेत्र के हाथ में** – सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित क्षेत्र केवल सात उद्योगों तक सीमित कर दिया गया है। निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ाने के लिए कई कदम उठाये गये हैं और रियासत दी गई है।

28. अर्थव्यवस्था के उदारीकरण का क्या अभिप्राय है? अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के लिए क्या उपाय किए गए हैं।

उत्तर :

उदारीकरण – उदारीकरण से अभिप्राय है-सरकार द्वारा अर्थव्यवस्था (व्यापार, उद्योग आदि) पर लगाए गए नियन्त्रणों को पूर्णतः हटाया जाना। इसके अंतर्गत पूँजीगत पदार्थों तथा तकनीकी के आयात की छूट दी गई है। व्यापार पर प्रतिबंध हटा दिए गए हैं। लाइसेंस तथा पंजीकरण को समाप्त किया गया है। एकीकरण से छूट दी गई है। उद्योगों को विस्तार करने की पूरी स्वतंत्रता दी गई है।

29. नई आर्थिक नीति के अंतर्गत कौन-से वित्तीय सुधार किए गए हैं?

उत्तर :

वित्तीय सुधारों से अभिप्राय देश की मौद्रिक तथा बैंकिंग नीतियों में सुधार करने से है। नई आर्थिक नीति (1991) के अंतर्गत निम्नलिखित वित्तीय सुधार किए गए:

- 1 तरलता अनुपात में कमी कर दी गई।
- 2 बैंकों को ब्याज की दरों का निर्धारण करने की स्वतंत्रता दी गई।
- 3 बैंकिंग प्रणाली की पुनः रचना की गई। नये निजी बैंकों की स्थापना को प्रोत्साहन दिया गया।
- 4 अलग-अलग बैंकों के अधिकारियों की भर्ती के लिए स्वतंत्रता दी गई।

30. 1890 के दशक में अफ्रीका में वेतन के लिए काम करने वाले श्रमिकों की कमी क्यों थी? यूरोपवासियों ने श्रमिकों की भर्ती करने और उन्हें काम पर लगाए रखने के लिए किस प्रकार के प्रयास किए? किन्हीं दो तरीकों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

- 1 स्थानीय लोग वेतन पर काम नहीं करते थे क्योंकि अफ्रीका में अपार भूमि थी और आबादी कम थी। उनके जीवन का आधार जमीन और पालतू पशु थे। अतः उनको वेतन पर काम करने की आवश्यकता नहीं थी।
- 2 यूरोपीय देशों ने उनसे वेतन पर काम कराने के लिए निम्नलिखित तरीके अपनाए:
 - 1 स्थानीय लोगों पर अधिक कर लगाए गए जिनकी अदायगी केवल बागानों या खाद्यान्नों में काम करने की आय से ही संभव थी।
 - 2 काश्तकारों को उनकी जमीन से हटाने के लिए उत्तराधिकार कानून में परिवर्तन किया गया जिसके अनुसार अब परिवार का केवल एक सदस्य ही पैतृक संपत्ति प्राप्त कर सकता था। इसका परिणाम यह हुआ कि परिवार के शेष सदस्य श्रम करने पर विवश हो गए।
 - 3 खानों में काम करने वालों को बाड़ों में बंद कर दिया गया और उनके घूमने-फिरने पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया।

31. नई भूमि तथा मार्गों की खोज ने किस प्रकार आधुनिक काल से पहले के समय में व्यापार के फलने-फूलने में सहायता की? तीन उदाहरण दीजिए।

उत्तर :

- 1 16वीं सदी में यूरोप के नाविकों ने एशिया के लिये नये मार्ग की खोज की। उसने आधुनिक युग से पहले के विश्व के बीच दूरियों को कम कर दिया तथा यूरोप की ओर व्यापार के प्रवाह का विस्तार दिया।
- 2 अमेरिका की खोज के साथ ही, 16वीं सदी में, इसकी विस्तृत भूमि, प्रचुर फसल तथा खनिज संसाधनों हर जगह परिवर्तन आया।
- 3 नई भूमि जैसे पेरू तथा मैक्सिको आदि में पाई जाने वाली बहुमूल्य धातुओं ने यूरोप के धन भंडार में वृद्धि की तथा एशिया के साथ इसके व्यापार के लिये पूंजी उपलब्ध कराई।

32. 1870 के दशक तक मांस खाना एक महंगा सौदा था तथा यूरोप के गरीबों के सामर्थ्य से बाहर था।

उत्तर :

1870 के दशक से पहले अमेरिका से यूरोप को केवल जिंदा जानवर ही भेजे जाते थे, जिन्हें वहाँ काटा जाता था। लेकिन जिंदा जानवर बहुत ज्यादा जगह घेरते थे। बहुत सारे तो लंबे सफर से मर जाते थे या बीमार पड़ जाते थे, बहुतों का वजन गिर जाता था या वे खाने के लायक नहीं रह जाते थे।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

33. विश्व व्यापार संगठन की क्या भूमिका है? विश्व व्यापार संगठन का सदस्य बनने पर भारत को होने वाले दो लाभ क्या हैं?

उत्तर :

विश्व व्यापार संगठन की स्थापना 1 जनवरी, 1995 को की गई थी। यह संगठन गैट का उत्तराधिकारी है। इसका उद्देश्य व्यापार में लगे प्रतिबंधों तथा अन्य शुल्क को कम करके जीवन स्तर को बढ़ाना है। यह संगठन विश्व के आर्थिक मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विश्व व्यापार संगठन का सदस्य बनने पर भारत को निम्नलिखित लाभ होंगे:

- 1 इससे विश्व व्यापार में हिस्सेदारी बढ़ेगी।
- 2 भारत के आर्थिक विकास में वृद्धि होगी।

34. अर्थव्यवस्था के भूमंडलीकरण में आधुनिक तकनीक की भूमिका पर विचार कीजिए।

उत्तर :

- 1 रेलवे, भाप के इंजन वाले जलयान, तार एवं टेलीग्राफ जैसे तकनीकी परिवर्तन बहुत महत्वपूर्ण रहे। जब यूरोप के देशों ने एशिया और अफ्रीका महाद्वीपों के देशों को उपनिवेश बनाया तो इस तकनीक ने वहाँ भी कई तरह के

सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तनों को जन्म दिया। उदाहरणार्थ: भारत में भी रेलमार्ग बनाए गए, डाक-तार की व्यवस्था हुई।

- 2 तेज चलने वाली रेलगाड़ियाँ बनीं, बोगियों को हल्की परंतु मजबूत गुणवत्ता वाला बनाया गया तथा जलपोतों का आकार बढ़ा। अब कृषि उत्पादों को खेतों से दूर-दूर के बाजारों में कम लागत पर और ज्यादा आसानी से पहुँचाया जाने लगा।
 - 3 जलयानों के डिब्बों में शीत-संयंत्र लगाए जाने से मांस का आयात-निर्यात भी तेजी से बढ़ने लगा। कनाडा, अमेरिका, ब्राजील तथा ऑस्ट्रेलिया में मांस वाले पशुओं को मारकर उनका मांस डिब्बों में बंद करके यूरोप के देशों में भेजा जाने लगा।
35. भारत सरकार ने उदारीकरण के लिए कौन-से छः उपाय किए हैं?

उत्तर :

भारत सरकार द्वारा उदारीकरण के लिए उठाए गए कदम -

- 1 सामरिक और सामाजिक महत्त्व के कुछ उद्योगों को छोड़कर अन्य सभी के लिए औद्योगिक लाइसेंस को समाप्त कर दिया गया है।
- 2 एम.आर.टी.पी. कंपनियों की परिसंपत्ति सीमा को समाप्त करने के लिए एम.आर.टी.पी. अधिनियम में संशोधन किया गया है
- 3 प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए एक अधिक उदार विदेशी निवेश नीति को अपनाया गया। इस दृष्टि से विशिष्ट उच्च प्राथमिकता वाले उद्योगों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश 51 प्रतिशत तक स्वीकार किया गया।
- 4 उच्च प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में विदेशी टेक्नॉलोजी समझौतों में स्वतः अनुमोदन की प्रणाली शुरू की गई है। इसके अलावा, विदेशी तकनीशियन की सेवाएँ प्राप्त करने के लिए अब अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं है।
- 5 नई औद्योगिक नीति में सार्वजनिक उद्यमों के बारे में एक नया दृष्टिकोण अपनाया गया है। इस नीति के तहत अब सार्वजनिक क्षेत्र के लिए केवल चार प्रमुख उद्योगों को ही आरक्षित रखा गया है।
- 6 शेयरों के अधिग्रहण तथा अंतरण पर लगे प्रतिबंध हटा दिए गए हैं।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. **सांस्कृतिक समागम** का क्या अर्थ है? अनुबंधित मजदूरों ने सांस्कृतिक समागम के स्वरूप को किस प्रकार विकसित किया, दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर :

- 1 उन्नीसवीं शताब्दी के अनुबंधित मजदूरों को एक नई दास प्रथा का नाम दिया गया। इन मजदूरों की दशा शोचनीय

थी। कैरीबियाई द्वीप समूह में उनकी संस्कृति स्थानीय लोगों से भिन्न थी परंतु फिर भी उन्होंने वहाँ के लोगों के साथ **सांस्कृतिक समागम** करने का प्रयत्न किया जिसके अंतर्गत पुरानी और नई संस्कृति का मिश्रण किया गया। इसी को सांस्कृतिक समागम कहा गया है।

- 2 कठोर परिस्थितियों के बावजूद मजदूरों ने पुरानी और नई संस्कृति का मिश्रण करके अपनी व्यक्तिगत और सामूहिक आत्माभिव्यक्ति के निम्न तरीके ढूँढे :

- 1 त्रिनिदाद में मुहर्रम के वार्षिक जुलूस को एक विशाल उत्सवी रूप दिया गया। इस मेले को **होसे** (इमाम हुसैन के नाम पर) का नाम दिया गया। उसमें सभी धर्मों और नस्लों के मजदूर हिस्सा लेते थे।
- 2 **रास्ताफारियानवाद** नामक विद्रोही धर्म में भी भारतीय आप्रवासियों और कैरीबियाई द्वीप समूह के लोगों के संबंध की झलक दिखती है।
- 3 त्रिनिदाद और गुयाना में प्रसिद्ध **चटनी म्यूजिक** भी रचनात्मक अभिव्यक्ति का एक उदाहरण था। इस प्रकार विभिन्न क्षेत्रों की सांस्कृतिक का सम्मिश्रण हुआ और धीरे-धीरे उनका एक नया रूप विकसित हुआ।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

2. भारत के सूती कपड़े के उद्योग की गिरावट के मुख्य कारण एवं समस्याएँ कौन-कौन सी थीं।

अथवा

उन्नीसवीं सदी के आते-आते भारतीय कपास बुनकरों के समक्ष उपस्थित किन्हीं तीन समस्याओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

प्रस्तावना -18वीं शताब्दी तक भारतीय सूती कपड़े की माँग सारे विश्व में थी, परंतु 19वीं शताब्दी के आते-आते अनेक कारणों से इसमें गिरावट आती चली गई जिसके कारण भारतीय कपास बुनकरों के लिए अनेक समस्याएँ पैदा हो गईं।

समस्याएँ एवं कारण -

- 1 भारतीय सूती कपड़े के उद्योग की गिरावट का सबसे मुख्य कारण इंग्लैंड में आने वाली औद्योगिक क्रांति थी जिसके कारण अब उसने भारत से सूती कपड़ों को आयात करना बिल्कुल बन्द कर दिया।
- 2 इसके विपरीत उसने भारतीय बाजारों में मशीनों द्वारा निर्मित सूती कपड़ों की भरमार कर दी। ये कपड़े न केवल सस्ते थे वरन् चमक-दमक में आगे थे।
- 3 जबकि भारतीय सूती कपड़े के निर्यात पर और कर लगा दिए गए, अंग्रेजी कपड़े को निःशुल्क या बहुत कम टैक्स की दर पर भारत आने दिया गया ।
- 4 अंग्रेजी कंपनी थोक में भारत से रूई या कपास खरीद-खरीद कर अपने देश भेज देती थी जिसके कारण

भारतीय सूती कपड़े के निर्माताओं के लिए अच्छी कपास बाजार में उपलब्ध ही नहीं होती थी।

5 फिर भी जो लोग किसी न किसी ढंग से सूती कपड़े का निर्माण करते रहे उन पर ब्रिटिश सरकार द्वारा भारी उत्पादन कर लगा दिए गए।

6 रेलों को भी भारतीय कपास का निर्यात करने और ब्रिटिश सूती कपड़े का आयात करने के कामों में लगा दिया गया।

ऐसे में भारत में सूती कपड़ा और करघा उद्योग ठप्प पड़ गया।

3. भूमंडलीकरण के संदर्भ में स्पैघेत्ती और नूडल्स जैसे खाद्य पदार्थों की एक देश से दूसरे देश में पहुँचने की प्रक्रिया बताइए।

उत्तर :

भूमंडलीकृत विश्व एवं स्पैघेत्ती नामक खाद्य पदार्थ का एक

देश से दूसरे में प्रवाह- इतिहासकारों का विचार है कि पंद्रहवीं शताब्दी के अंत से ही आधुनिक काल भूमंडलीकृत विश्व का बनना शुरू हो गया था। इस संदर्भ में खाद्य-वस्तुओं की यात्रा अहम भूमिका रखती है। हमारे खाद्य पदार्थ दूर देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कई उदाहरण पेश करते हैं। जब भी व्यापारी और मुसाफिर किसी नये देश में जाते थे तो जाने-अनजाने वहाँ नई फसलों के बीज बो आते थे। संभव है कि दुनिया के विभिन्न भागों में मिलने वाले **तूरंता** या **रेंडी** खाद्य पदार्थों के भी साझा स्रोत रहे हों।

उदाहरण-

1 इस संदर्भ में हम पश्चिमी दुनिया के स्पैघेत्ती और नूडल्स का उदाहरण लेते हैं। माना जाता है कि नूडल्स चीन से पश्चिमी दुनिया में पहुँचे और वहाँ उन्हीं से स्पैघेत्ती का जन्म हुआ। यह भी संभव है कि पास्ता अरब यात्रियों के साथ पाँचवीं सदी में सिसिली पहुँचा जो अब इटली का ही एक टापू है।

2 इसी तरह के आहार भारत और जापान में भी पाये जाते हैं इसलिए हो सकता है कि हम कभी यह जान सकें कि उनका जन्म कैसे हुआ होगा। फिर भी, इन अनुमानों के आधार पर इतना जरूर कहा जा सकता है कि आधुनिक काल से पहले भी दूर देशों के बीच सांस्कृतिक लेन-देन चल रहा होगा।

4. प्रथम विश्व युद्ध के वर्षों में विश्व अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों को सामाजिक एवं राजनैतिक परिवर्तनों में लिखिए।

उत्तर :

1 **युवकों की जबरदस्ती सेना में भर्ती** - चूँकि पूरा विश्व दो प्रतिद्वंद्वी खेमों में बँट गया था अर्थात् मित्र राष्ट्र (ब्रिटेन, फ्रांस, रूस और अमेरिका) तथा धुरी राष्ट्र (जर्मनी, आस्ट्रिया-हंगरी) आटोमन के (तुर्की साम्राज्य) बीच यह टक्कर हुई। इसमें इन देशों की सरकारों ने ऐसे कानून पारित किए जिनके अनुपालन में 18 वर्ष के प्रत्येक

नागरिक (उसका व्यावसायिक काम चाहे जो भी हो) को जबरदस्ती सेना में भर्ती कर लिया गया इससे देश के आगे धंधों पर कुप्रभाव पड़ा।

2 **धन की बर्बादी-** इस युद्ध में यूरोप के सभी देशों और विशेषकर ब्रिटेन का बहुत धन व्यय हुआ। अमेरिका से ऋण लेकर युद्ध का खर्च पूरा किया गया परंतु युद्ध के तुरंत बाद अमेरिका ने ऋण देना बंद कर दिया और वसूली के कठोर कानून बनाए।

3 **युद्ध विराम के उपरांत आर्थिक उपाय-** सरकारी खर्च को घटाने के लिए कर्मचारियों की छुट्टी कर दी गई।

4 **खाद्यान्न उत्पादन की स्थिति-** युद्ध पूर्वी यूरोप के देश खाद्यान्न उत्पादन में बहुत आगे थे लेकिन युद्ध पश्चात् कनाडा ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका में खाद्यान्न उत्पादन बढ़ गया जबकि यूरोप में लोग खाद्यान्न अभाव से भूखे मरने लगे। गेहूँ की कीमतें अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बहुत नीचे गिर गई।

5 अंग्रेजों ने अपने उपनिवेशों में भू-राजस्व की दरें बहुत अधिक बढ़ा दी और वसूली की कार्यवाही बहुत कठोर बना दी गई। इससे वहाँ जन-जीवन बहुत ही त्रस्त और परेशान हो उठा।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

5. तीन उदाहरण देकर दर्शाएँ कि अमेरिका जाने वाले नए समुद्री रास्तों की खोज के बाद विश्व में बदलाव आया।

अथवा

उदाहरण देकर दर्शाएँ कि अमेरिका को जाने वाले समुद्री रास्तों की खोज के बाद आधुनिक युग से पहले के विश्व में बदलाव आया।

उत्तर :

1 आलू, सोया, मूँगफली, मक्का, टमाटर, मिर्च, शकरकंद और ऐसे ही बहुत सारे दूसरे खाद्य पदार्थ अमेरिका से यूरोप आए। इन फसलों ने जीवन और मृत्यु के बीच अन्तर उत्पन्न किया। साधारण से आलू का इस्तेमाल शुरू करने पर यूरोप के गरीबों की जिन्दगी आमूल रूप से बदल गई थी। उनका भोजन बेहतर हो गया और उनकी औसत उम्र बढ़ने लगी।

2 पेरू और मैक्सिको में मौजूद खानों से निकलने वाली कीमती धातुओं, खासतौर से चांदी ने भी यूरोप की संपदा को बढ़ाया और पश्चिम एशिया के साथ होने वाले उसके व्यापार को गति प्रदान की।

3 गुलामों का व्यापार शुरू हो गया। यूरोपीय व्यापारी अफ्रीका से गुलामों को पकड़कर अमेरिका ले जाते थे और वहाँ उनसे खेती करवाई जाती थी। यूरोप विश्व व्यापार का केन्द्र बन चुका था।

4 यूरोप में धार्मिक टकराव आम थे इस वजह से हजारों लोग यूरोप से बाहर अमेरिका चले गए।

- 5 चेचक जैसी बीमारी और उसके कीटाणु यूरोपीय सैनिकों के साथ अमेरिका लाए गए और यहाँ के लोगों के शरीर में इन कीटाणुओं से बचने की रोग प्रतिरोधी क्षमता नहीं थी इसने पूरे के पूरे समुदायों को खत्म कर डाला।
6. अनुबंधित श्रमिकों (गिरमिटिया मजदूरों) ने कैरीबियाई द्वीप समूहों में एक नई संस्कृति को जन्म दिया। कोई तीन उदाहरण देकर इस कथन की पुष्टि कीजिए।

अथवा

अनुबंधित मजदूरों का जीवन कठोर था। फिर भी उन्होंने जीवन बिताने के अपने तरीके ढूँढ़ निकाले। उदाहरण देकर इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

श्रमिकों के लिए नयी जगह का जीवन तथा कार्य स्थितियाँ कठोर थीं और उनके पास कानूनी अधिकार कहने भर को भी नहीं थे। फिर भी मजदूरों ने जीवन बिताने के अपने तरीके ढूँढ़ निकाले। कुछ मजदूर भाग कर जंगलों में चले गए। यदि ऐसे मजदूर पकड़े जाते थे तो उन्हें कठोर दंड दिये जाते थे। कुछ मजदूर वहाँ की संस्कृति में घुल-मिल गये। इसके निम्नलिखित उदाहरण दिए जा सकते हैं-

- 1 **होसे का मेला** - त्रिनिदाद में मुहूर्म के वार्षिक जुलूस को एक विशाल मेले का रूप दे दिया गया। इस मेले को इमाम हुसैन के नाम पर **होसे** का नाम दिया गया इसमें सभी धर्मों व नस्लों के मजदूर भाग लेते थे।
 - 2 **रास्ताफारियानवाद** - रास्ताफारियानवाद एक विद्रोही धर्म था। इसे जमैका के रैगे गायक बॉब मार्ले ने ख्याति के शिखर पर पहुँचा दिया था। इसमें भी भारतीय अप्रवासियों और कैरीबियाई द्वीप समूह के बीच के संबंधों की झलक देखी जा सकती थी।
 - 3 **चटनी म्यूजिक** - त्रिनिदाद और गुयाना का मशहूर **चटनी म्यूजिक** भी भारतीय अप्रवासियों के वहाँ पहुँचने के बाद सामने आई रचनात्मक अभिव्यक्ति था। सांस्कृतिक मेल-जोल के ये स्वरूप एक नयी वैश्विक दुनिया के उदय के प्रतीक थे। इसमें अलग-अलग स्थानों की चीजें आपस में इस प्रकार घुल-मिल गई थी कि उनकी मूल पहचान ही लुप्त हो गई। यही कारण था कि अधिकांश अनुबंधित श्रमिक अनुबंध समाप्त हो जाने के बाद भी वापस नहीं लौटे। जो वापस लौटे उनमें से भी अधिकांश केवल कुछ समय यहाँ बिताकर फिर वापस चले गए। इसी कारण इन देशों में भारतीय मूल के लोगों की संख्या बहुत अधिक पाई जाती है। कैरीबियाई द्वीपों में आज भी बहुत से लोगों के नाम भारतीयों जैसे हैं, क्योंकि वे भारत से गए अनुबंधित मजदूरों के ही वंशज हैं।
7. महामंदी के भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़े प्रभावों की चर्चा करें।

अथवा

बीसवी सदी की शुरुआत में भारतीय किसानों पर महामंदी के प्रभाव का वर्णन करें।

उत्तर :

- 1 **व्यापार पर प्रभाव** - महामंदी ने भारतीय व्यापार को तुरंत प्रभावित किया। 1928 और 1934 के मध्य भारतीय निर्यात और आयात लगभग आधे रह गए थे। अंतर्राष्ट्रीय कीमतें गिरने से भारत में कीमतें गिर गईं। इस अवधि में गेहूँ की कीमतें भारत में 50% गिर गई थीं।
- 2 **किसानों पर प्रभाव** - गिरती कीमतों का निर्धन किसानों पर बुरा प्रभाव पड़ा। कृषि उत्पादों की कीमतें गिरने के बावजूद उपनिवेशी सरकार ने किसानों के करों में कोई राहत देने से मना कर दिया। विश्व बाजार के लिए उत्पादन करने वाले कृषक बुरी तरह प्रभावित हुए।
 - 1 उनकी ऋणग्रस्तता बढ़ गई।
 - 2 उन्हें अपनी जमीन बेचनी या गिरवी रखनी पड़ी।
 - 3 लोगों को सोना और चाँदी जैसी अपनी संपत्ति बेचनी पड़ी।
 - 4 भारतीय पटसन उत्पादक व्यापक रूप से प्रभावित हुए थे।
- 3 **शहरी भारतीयों पर प्रभाव** - महामंदी भारत के शहरी लोगों के लिए अधिक दुखदाई नहीं रही। कीमतें गिरते जाने के बावजूद शहरों में रहने वाले ऐसे लोगो की हालत ठीक रही जिनकी आय निश्चित थी जैसे जमींदार, जिन्हे जमीन पर बंधा-बंधाया भाड़ा मिलता था या मध्यवर्गीय वेतनभोगी कर्मचारी। सभी वस्तुओं के दाम कम देने पड़ते थे। राष्ट्रीयवादी खेमे के दबाव में उद्योगो की रक्षा के लिए सीमाशुल्क बढ़ा दिए गए जिससे औद्योगिक क्षेत्र में भी निवेश में तेजी आई।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

8. 1929 की महामंदी का भारत की अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव हुआ ?

उत्तर :

- 1 जब अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में कीमतें गिरने लगी तो भारत में भी कीमतें नीचे आ गईं। 1928 से 1934 के बीच भारत में गेहूँ की कीमत 50% गिर गई। शहरी निवासियों के मुकाबले किसानों और काश्तकारों को ज्यादा नुकसान हुआ। यद्यपि कृषि उत्पादों की कीमत तेजी से नीचे गिरी लेकिन सरकार ने लगान वसूली में छूट देने से साफ इन्कार कर दिया जूट उत्पादको पर भी महामंदी का बुरा असर पड़ा। जब टाट का निर्यात बन्द हो गया तो कच्चे पटसन की कीमतों में अत्यधिक गिरावट आ गई।
- 2 पूरे देश में काश्तकार कर्ज में डूब गए। खर्च पूरे करने के चक्कर में उनकी बचत खत्म हो चुकी थी, जमीनें सूदखोरों के पास गिरवी पड़ी थी, घर में जों गहने-जेवर थे बिक चुके थे।

- 3 यह मंदी शहरी भारत के लिए इतनी दुखदाई नहीं रही। कीमतें गिरते जाने के बावजूद शहरों में रहने वाले ऐसे लोगों की हालत ठीक रही जिनकी आय निश्चित थी। इनमें शहर में रहने वाले जमींदार जिन्हें अपनी जमीन पर बँधा-बँधाया भाड़ा मिलता था या मध्यवर्गीय वेतनभोगी कर्मचारी शामिल थे।
 - 4 राष्ट्रवादी खेमे के दबाव में उद्योगों की रक्षा के लिए सीमा शुल्क बढ़ा दिए गए थे, जिससे औद्योगिक क्षेत्र में भी निवेश में तेजी आई।
9. द्वितीय विश्व युद्ध के उपरांत की वैश्विक अर्थव्यवस्थापर प्रकाश डालिए।

अथवा

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान घटित विनाशकारी घटनाओं के बारे में लिखें।

उत्तर :

1. अमेरिका में कार आदि उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन बढ़ा जिससे उपभोग में वृद्धि हुई और खाद्यान्न आदि के क्षेत्र में भी उन्नति करने के कारण अमेरिका का आर्थिक राजनैतिक और सैन्य वर्चस्व पश्चिमी देशों में बढ़ गया।
- 2 1949 में परमाणु परीक्षण के साथ ही सोवियत संघ विश्व की दूसरी महाशक्ति बना। इसने जर्मनी के नाजियों को हराकर उन वर्षों में अपनी कृषि अर्थव्यवस्था को उन्नत कर लिया जब पूँजीवादी देश महामंदी (1929) की मार झेल रहे थे।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

- 3 संयुक्त राष्ट्र संघ (1945) बनने से भी पहले 1944 में ब्रेटन वुड्स के माउन्ट वाशिंगटन होटल में एक सम्मेलन आयोजित हुआ। आर्थिक स्थिरता और पूर्ण रोजगार की स्थिति पर विचार करने के लिए यह सम्मेलन आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन के निष्कर्ष स्वरूप दो अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएँ -

- 1 अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और
- 2 अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक (विश्व बैंक) नामक दो संस्थाएँ बनाई गईं। पहले का काम सदस्य राष्ट्रों के विदेशी व्यापार के आधिक्य (लाभ) और घाटे में संतुलन लाने का था जबकि दूसरे का काम सदस्य राष्ट्रों को द्वितीय विश्व युद्ध से छिन्न-भिन्न अर्थव्यवस्था को पुनः सुधारने के लिए वित्तीय सहायता (ऋण) देने का था। अमेरिका को इन दोनों संस्थाओं द्वारा लिए गए निर्णयों का निषेध का अधिकार (Veto) प्राप्त है। इनके निर्णय भी विकसित राष्ट्रों द्वारा लिए जाते हैं। ब्रेटन वुड्स की यह व्यवस्था स्थिर विनिमय दर वाली थी (35 डालर = एक औंस सोना)।

- 4 ब्रेटन वुड्स की इन दोनों संस्थाओं ने पश्चिम के औद्योगिक राष्ट्रों और जापान के व्यापार तथा आय को अप्रत्याशित रूप से बढ़ाया और ये सभी देश आर्थिक रूप से अति-संपन्न हो गए। यहाँ बेरोजगारी भी पाँच प्रतिशत से नीचे रह गई अर्थात् पूर्ण रोजगार की स्थिति प्राप्त हुई।
- 5 विश्व में प्रौद्योगिकी और उद्यमों का विकास हुआ। विकासशील देशों ने भी इन वर्षों में विपुल पूँजी निवेश किया और अत्याधुनिक औद्योगिक संयंत्र खरीदे।

10. अफ्रीका में रिंडरपेस्ट अथवा मवेशी प्लेग के प्रसार के पड़े नकारात्मक प्रभावों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

- 1 अफ्रीका में 1890 के दशक में रिंडरपेस्ट नामक बीमारी बहुत तेजी से फैल गई। मवेशियों में प्लेग की तरह फैलने वाली इस बीमारी से लोगों की आजीविका और स्थानीय अर्थव्यवस्था बहुत प्रभावित हुई। 90 प्रतिशत मवेशी मर जाने के कारण अफ्रीका के कृषक समाज को अंग्रेजों की गुलामी स्वीकार करनी पड़ी।
- 2 रिंडरपेस्ट नाम की यह बीमारी सबसे पहले 1880 के दशक के आखिर सालों में फैली। उस समय पूर्वी अफ्रीका में एरिट्रिया पर हमला कर रहे इटली के सैनिकों का पेट भरने के लिए एशियाई देशों से जानवर लाए जाते थे। एशियाई देशों से आए उन्ही जानवरों के जरिये अफ्रीका में यह बीमारी पहुँची।
- 3 सबसे पहले यह अफ्रीका के पूर्वी भागों में फैली और फिर **जंगल की आग** की तरह पश्चिमी अफ्रीका की तरफ बढ़ने लगी। 1892 में यह अफ्रीका के अटलांटिक तट तक जा पहुँची। पाँच साल बाद यह केप (अफ्रीका का नितान्त दक्षिणी हिस्सा) तक भी पहुँच गई। रिंडरपेस्ट ने अपने रास्ते में आने वाले 90 प्रतिशत मवेशियों को मौत की नींद सुला दिया।
- 4 पशुओं के खत्म हो जाने से तो अफ्रीकियों की रोजी-रोटी के साधन ही खत्म हो गए। अपनी सत्ता को और मजबूत करने तथा अफ्रीकियों को श्रम बाजार में ढकेलने के लिए वहाँ के बागान मालिकों, खान मालिकों और औपनिवेशिक सरकारों ने बचे-खुचे पशु भी अपने कब्जे में ले लिये।
- 5 उपनिवेशवाद के प्रारंभिक वर्षों तक अफ्रीका में पैसे या वेतन पर काम करने का चलन नहीं था। अगर आप भी अफ्रीका के किसान होते और आपके पास जमीन और पालतू पशु होते-जिनकी वहाँ कोई कमी नहीं थी-तो शायद आपको भी यह बात समझ में नहीं आती कि वेतन के लिए काम करने की क्या जरूरत है।

11. व्यापार अधिशेष शब्द को परिमाणित कीजिए। भारत के साथ व्यापार अधिशेष से प्राप्त आय का ब्रिटेन किस प्रकार उपयोग करता था ?

उत्तर :

व्यापार अधिशेष का अर्थ है दो देशों के बीच आपसी व्यापार में एक राष्ट्र को मिलने वाला लाभ। ब्रिटेन भारत के साथ व्यापार अधिशेष के सहारे दूसरे देशों के साथ होने वाले घाटे की भरपाई कर लेता था।

- 1 औद्योगिकरण से पहले भारत से यूरोप को सूती वस्त्रों का निर्यात होता था लेकिन औद्योगिकरण के पश्चात् ब्रिटेन में सूती-वस्त्र बनाए जाने लगे। इसीलिए सीमा-शुल्क बढ़ाकर वहाँ सूती-वस्त्रों के आयात पर पाबंदी लगा दी गई।
- 2 सीमा शुल्क कानून के कारण ब्रिटिश बाजारों में सूती वस्त्र निर्यात समाप्त होने के बाद भारतीय कपड़ों को दूसरे अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में भी भारी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा। उदाहरण के लिए 1800 ई. में कुल उत्पादन का 30 प्रतिशत सूती-वस्त्र निर्यात होता था जो 1815 में घटकर 15% रह गया और 1870 में पुनः घटकर 3 प्रतिशत पर आ गया।
- 3 अब यूरोप की मिलों के लिए भारत से कपास का आयात किया जाने लगा। 1812 से 1871 के बीच कच्चे कपास का निर्यात 5 प्रतिशत से बढ़ कर 35 प्रतिशत तक पहुँच गया था।
- 4 भारतीय वस्त्रों की रँगई के लिए इस्तेमाल होने वाले नील का भी कई दशक तक बड़े पैमाने पर निर्यात होता रहा।
- 5 1820 के दशक से ब्रिटेन की सरकार भारत में अफीम की खेती करवाती थी और उसका निर्यात चीन को किया जाता था। अफीम के निर्यात से जो पैसा मिलता था उसके बदले चीन से ही चाय और दूसरे पदार्थों का आयात किया जाता था।
- 6 उन्नीसवीं शताब्दी में भारत से ब्रिटेन और यूरोप के अन्य देशों को खाद्यान्न व कच्चे माल का निर्यात बढ़ा। ब्रिटेन से भारत में निर्यात किए गए माल की कीमत भारत से ब्रिटेन भेजे जाने वाले माल की कीमत से बहुत ज्यादा होती थी।
- 7 उपनिवेश काल में ब्रिटेन का भुगतान-संतुलन हमेशा सकारात्मक और उसी के पक्ष में रहा।
- 8 यह बहुपक्षीय व्यापार करार का कमाल था क्योंकि इसमें एक देश के मुकाबले दूसरे देश को होने वाले घाटे की भरपाई किसी तीसरे देश के साथ व्यापार में मुनाफा कमा कर की जाती है।
- 9 अंग्रेज अधिकारियों और व्यापारियों द्वारा ब्रिटेन स्थित अपने-अपने घरों को भेजे गए रुपयों, भुगतान-संतुलन की नकारात्मक स्थिति दिखाकर उत्पन्न

किए गए कृत्रिम अंतर्राष्ट्रीय ऋणों तथा भारत से सेवानिवृत्त अंग्रेज अधिकारियों की पेंशन आदि के खर्च इसी लाभ में गृह-प्रभार (खाता-शीर्ष) नाम देकर समायोजित किए जाते थे।

12. प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् ब्रिटेन और अन्य कृषि आधारित अर्थव्यवस्थाओं की स्थिति का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :

प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था की दशा निम्न प्रकार से थी -

- 1 **अधिक कर्ज की स्थिति** - युद्ध से पूर्व ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था संसार की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी परंतु युद्ध के दौरान भारत और जापान में उद्योगों का विकास होने के कारण ब्रिटेन भारतीय बाजार में पहले वाली स्थिति नहीं पा सका था। इसके अतिरिक्त युद्ध के खर्च को पूरा करने के लिए ब्रिटेन ने अमेरिका से काफी कर्ज ले लिया। अतः ब्रिटेन पर अत्यधिक कर्ज था।
- 2 **बेरोजगारी में वृद्धि** - युद्ध के समय उत्पादन और रोजगारों में वृद्धि हुई परंतु युद्ध के पश्चात् उत्पादन में कमी आई। इसके साथ सरकार ने युद्ध संबंधी व्यय को कम करने के लिए व्यय में कटौती की जिससे बेरोजगारी में वृद्धि हुई। स्थिति यह थी कि 1921 में हर पाँच में से एक ब्रिटिश मजदूर बेरोजगार था।

इस प्रकार प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् ब्रिटेन की आर्थिक स्थिति शोचनीय थी।

कृषि आधारित अर्थव्यवस्थाओं की स्थिति निम्न प्रकार से थी -

1. युद्ध से पूर्व पूर्वी यूरोप विश्व बाजार में गेहूँ की आपूर्ति करता था परंतु युद्ध के परिणामस्वरूप यह आपूर्ति नहीं हो सकी। ऐसी स्थिति में कनाडा, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में पैदावार बढ़ी परन्तु युद्ध के पश्चात् एक बार पूर्वी यूरोप में गेहूँ की पैदावार के बढ़ने से विश्व बाजार में गेहूँ अत्यधिक मात्रा में उपलब्ध हो गया जिसके परिणामस्वरूप अनाज की कीमतों में कमी आई, ग्रामीण आय में कमी हुई और किसान गहरे कर्ज संकट में फँस गए।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

13. अनुबंधित श्रमिक कौन थे? भारत से उनके जाने के क्या कारण थे? भारत के किन क्षेत्रों से अनुबंधित श्रमिक किन-किन देशों में गए ?

उत्तर :

- 1 अनुबंधित श्रमिक वे लोग थे जो 19वीं शताब्दी में भारत और चीन से बागानों, खदानों और सड़क व रेलवे निर्माण परियोजनाओं में काम करने के लिए एक विशेष प्रकार के अनुबंध या एग्रीमेंट के अंतर्गत गए। उन अनुबंधों की शर्त यह होती थी कि यदि मजदूर अपने मालिक के बागानों में

पाँच वर्ष पूरे कर लेता है तभी वह स्वदेश लौट सकता है।

2 कारण -

- भारत से ये अनुबंधित श्रमिक मौजूदा पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य भारत और तमिलनाडु के सूखे क्षेत्रों से गए क्योंकि इन क्षेत्रों में कुटीर उद्योगों का अंत हो चुका था।
- जमीन के किराये में वृद्धि और बागानों को साफ करने से गरीबों की दशा खराब हो चुकी थी क्योंकि वह बैटाई पर जमीन तो ले लेते थे परंतु उसका भाड़ा नहीं चुका पाते थे।
- इस प्रकार उन पर कर्ज का बोझ बढ़ता जाता था। इसके परिणामस्वरूप उन्हें काम की तलाश में अपने घर-बार छोड़ने पड़े।

3 भारतीय अनुबंधित श्रमिक कैरीबियाई द्वीप समूह-त्रिनिदाद, गुयाना और सूरीनाम, मॉरीशस व फिजी गए। तमिल आप्रवासी सीलोन (श्रीलंका) और मलाया ले जाए गए।

14. ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था पर प्रथम विश्व युद्ध के प्रभाव की व्याख्या कीजिए।

अथवा

ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था पर प्रथम विश्व युद्ध के प्रभाव का आकलन कीजिए।

उत्तर :

ब्रिटिश अर्थव्यवस्था पर प्रथम विश्व युद्ध का गहरा प्रभाव पड़ा -

- युद्ध के बाद भारतीय बाजार में पहले वाली वर्चस्वशाली स्थिति प्राप्त करना ब्रिटेन के लिए मुश्किल हो गया था और अब उसे विश्व स्तर पर जापान से भी मुकाबला करना था।
- युद्ध के खर्च की भरपाई करने के लिए ब्रिटेन ने अमेरिका से जमकर कर्ज लिए थे। इसका परिणाम यह हुआ कि युद्ध खत्म होने तक ब्रिटेन भारी विदेशी कर्ज में डूब चुका था।
- युद्ध के कारण आर्थिक उछाल का माहौल पैदा हो गया था क्योंकि मांग उत्पादन और रोजगारों में भारी इजाफा हुआ था। पर जब युद्ध के कारण पैदा हुआ उछाल शान्त होने लगा तो उत्पादन गिरने लगा और बेरोजगारी बढ़ने लगी।
- इसी समय सरकार ने भारी-भरकम युद्ध सम्बन्धी व्यय में कटौती शुरू कर दी, ताकि शांति कालीन करो के सहारे उनकी भरपाई की जा सके। इन प्रयासों से रोजगार भारी तादाद में खत्म हुए।

NCERT पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

- सत्रहवीं सदी से पहले होने वाले आदान-प्रदान के दो उदाहरण दीजिए। एक उदाहरण एशिया से और एक उदाहरण अमेरिका महाद्वीपों के बारे में चुनें।

उत्तर :

चीन और अमेरिका में होने वाले आदान-प्रदान का विवरण इस प्रकार है-

चीन- विश्व के दूरस्थ देशों के साथ व्यापारिक एवं सांस्कृतिक सम्पर्कों का सर्वाधिक उपयुक्त उदाहरण सिल्क मार्ग के रूप में देखा जा सकता है। **सिल्क मार्ग** जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, इस मार्ग से पश्चिमी देशों को भेजे जाने वाले चीनी रेशम का कितना महत्त्व था। एशिया को उत्तरी अफ्रीका एवं यूरोप से जोड़ने में 15वीं शताब्दी तक इस मार्ग की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। चीनी पॉटरी का इसी मार्ग से निर्यात होता था। भारत एवं दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों से कपड़े व मसाले सिल्क मार्ग से ही विश्व के दूसरे भागों में पहुँचते थे। व्यापारी वापस लौटते समय सोना-चाँदी जैसी कीमती धातुएँ यूरोप से एशिया लाते थे। बौद्ध धर्म का भारत से विभिन्न देशों में प्रसार इस सिल्क मार्ग से ही हुआ। पश्चिमी देशों में स्पैघेत्ती और नूडल्स चीन से ही पहुँचा। इस तरह 17वीं शताब्दी से पहले तक चीन की व्यापारिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया साथ-साथ चलती रही।

अमेरिका- सोलहवीं शताब्दी में जब यूरोपीय जहाजियों ने एशिया तक का समुद्री मार्ग खोज लिया और वे पश्चिमी सागर को पार करते हुए अमेरिका तक पहुँच गए तो पूर्व आधुनिक विश्व बहुत छोटा प्रतीत होने लगा। पेरू और मेक्सिको में मौजूद खानों से निकलने वाली कीमती धातुओं विशेष रूप से चाँदी ने भी यूरोप की संपदा को बढ़ाया। 17वीं शताब्दी के आते-आते पूरे यूरोप में दक्षिणी अमेरिका की धन-संपदा के बारे में तरह-तरह के किस्से बनने लगे थे।

सोलहवीं शताब्दी के मध्य तक आते-आते पुर्तगाली और स्पेनिश सेनाओं ने अमेरिका को उपनिवेश बनाना शुरू कर दिया था। व्यापारिक एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान प्रारंभ हुआ। स्पेनिश विजेताओं के पास अमेरिकी लोगों से संघर्ष करने के लिए पर्याप्त अस्त्र-शस्त्र एवं हथियार नहीं थे। लेकिन अमेरिका जो वर्षों से अलग-थलग था, यूरोप से आने वाली बीमारी **चेचक** से जंग हार गया। चेचक एक महामारी के रूप में अमेरिकी समुदाय में फैल गयी। यूरोप के लोग जहाँ नहीं भी पहुँचे वहाँ के लोग चेचक से प्रभावित हुए। चेचक ने लगभग पूरे समुदाय को समाप्त कर दिया और इस तरह विदेशी शक्तियों की जीत का मार्ग प्रशस्त हुआ।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

2. बताएँ कि पूर्व-आधुनिक विश्व में बीमारियों के वैश्विक प्रसार ने अमेरिकी भू-भागों के उपनिवेशीकरण में किस प्रकार मदद दी।

उत्तर :

सोलहवीं शताब्दी के मध्य काल में पुर्तगाली और स्पैनिश सेनाओं ने अमेरिका को उपनिवेश बनाना आरंभ कर दिया था। इस कार्य में इन सेनाओं ने परंपरागत सैनिक हथियारों का प्रयोग न करके जैविक हथियारों का प्रयोग किया। इन्होंने चेचक के कीटाणुओं को अमेरिका में पहुँचा दिया। लाखों वर्षों से विश्व से अलग रहने के कारण अमेरिका के लोगों के शरीर में यूरोप से आने वाली इन बीमारियों से बचने की रोग-प्रतिरोधी क्षमता नहीं थी। इस कारण इस नए स्थान पर चेचक बहुत घातक बीमारी सिद्ध हुई। एक बार संक्रमण होने पर यह बीमारी पूरे महाद्वीप में फैल गई। जहाँ यूरोपीय लोग पहुँचे भी नहीं थे। वहाँ के लोग भी इस बीमारी के चपेट में आने लगे। इसने पूरे-के-पूरे समुदायों को समाप्त कर डाला जिससे घुसपैठियों की जीत का रास्ता और भी आसान होता चला गया।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

3. निम्नलिखित के प्रभावों की व्याख्या करते हुए संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखें-

1. कॉर्न लॉ के समाप्त करने के बारे में ब्रिटिश सरकार का फैसला।
2. अफ्रीका में रैंडरपेस्ट का आना।
3. विश्वयुद्ध के कारण यूरोप में कामकाजी उम्र के पुरुषों की मौत।
4. भारतीय अर्थव्यवस्था पर महामंदी का प्रभाव।
5. बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा अपने उत्पादन को एशियाई देशों में स्थानान्तरित करने का फैसला।

उत्तर :

1. **कॉर्न लॉ के समाप्त करने के बारे में ब्रिटिश सरकार का फैसला-** ब्रिटेन की जनसंख्या 18वीं सदी के अंतिम दशक में तेजी से बढ़ने लगी थी। इसके प्रभाव से ब्रिटेन में भोजन की माँग बढ़ी। फलस्वरूप भू-स्वामियों के दबाव में आकर ब्रिटेन की सरकार ने कॉर्न के आयात पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया। जिस कानून के माध्यम से सरकार ने कॉर्न के आयात पर प्रतिबंध लगाया, उसे **कॉर्न लॉ** कहा जाता था। खाद्य पदार्थों की ऊँची कीमतों से परेशान होकर देश के उद्योगपतियों और शहरी नागरिकों ने सरकार को इस बात के लिए विवश कर दिया कि वे कॉर्न लॉ को तत्काल निरस्त कर दें। **कॉर्न लॉ** के समाप्त होने के बाद बहुत कम कीमत पर खाद्य पदार्थों का आयात किया जाने लगा। आयातित खाद्य पदार्थों की लागत ब्रिटेन में पैदा होने वाले खाद्य पदार्थों से भी कम थी। ऐसे में ब्रिटिश किसान आयातित खाद्य पदार्थों की कीमत का मुकाबला नहीं कर सके। फलस्वरूप देश के विशाल भू-भाग पर खेती बंद हो

गयी और हजारों की संख्या में कृषक बेरोजगार हो गए। ऐसे में गाँवों से उजड़कर लोग शहरों या दूसरे देशों का रुख करने लगे।

2. अफ्रीका में रैंडरपेस्ट का आना-

1. 1890 ई. के दशक के अंतिम वर्षों में अफ्रीका में रैंडरपेस्ट नामक बीमारी फैली। मवेशियों (पालतू जानवरों) में प्लेग की तरह फैलने वाली इसी बीमारी से लोगों की आजीविका और स्थानीय अर्थव्यवस्था पर व्यापक प्रभाव पड़ा।
2. उस समय इरिट्रिया (पूर्वी अफ्रीका का देश) पर आक्रमण कर रहे इटली के सैनिकों के भोजन के लिए एशियाई देशों से मवेशी लाए जा रहे थे। रैंडरपेस्ट बीमारी ब्रिटिश आधिपत्य वाले एशियाई देशों से यहाँ पहुँची थी।
3. पूर्वी अफ्रीका में प्रविष्ट हुई यह बीमारी शीघ्र ही पश्चिमी अफ्रीका की ओर बढ़ते हुए 1892 ई. में अटलांटिक तट तक जा पहुँच गई। अफ्रीका में रैंडरपेस्ट के संक्रमण मार्ग में पड़ने वाले क्षेत्रों में 90% से अधिक मवेशी मारे गए।
4. बड़ी संख्या में पशुओं के मारे जाने के बाद अफ्रीकियों को श्रम बाजार की ओर ले जाने हेतु बागान मालिकों, खान मालिकों तथा औपनिवेशिक सरकारों ने शेष बचे मवेशियों को अपने नियंत्रण में ले लिया।
5. बचे हुए संसाधनों पर नियंत्रण से यूरोपीय उपनिवेशकारों को समस्त अफ्रीका को जीतने और गुलाम बनाने का अवसर मिल गया।

3. विश्वयुद्ध के कारण यूरोप में कामकाजी उम्र के पुरुषों की मौत-

1. प्रथम विश्वयुद्ध अगस्त, 1914 में आरंभ हुआ। तत्कालीन ज्यादातर सरकारों का ऐसा सोचना था कि युद्ध दो-चार माह में समाप्त हो जाएगा। किन्तु इस युद्ध के समाप्त होने में चार वर्ष से अधिक का समय लग गया। प्रथम विश्वयुद्ध के परिणाम अत्यन्त विनाशकारी हुए।
2. यह प्रथम औद्योगिक युद्ध था। इस युद्ध हेतु विश्वभर से बड़ी संख्या में सैनिक भर्ती किए गए। उन सैनिकों को जलपोतों एवं रेलगाड़ियों में भरकर युद्ध के मोर्चे पर लाया गया था। इस युद्ध में 90 लाख से अधिक लोग मारे गए और दो करोड़ से ज्यादा लोग घायल हुए।
3. मृतकों एवं घायलों में कामकाजी जनसंख्या के लोग अधिक थे। इस त्रासदी के कारण यूरोप में कार्यशील जनसंख्या में बहुत कमी आयी।
4. युद्ध के परिणामस्वरूप परिवार के सदस्यों की संख्या घट जाने से परिवार की आय में गिरावट दर्ज की गयी।

5. प्रथम विश्वयुद्ध ने सामाजिक संतुलन को प्रभावित किया। युद्ध में पुरुषों के मारे जाने व घायल होने से गिरती हुई परिवार की आय को फिर से पटरी पर लाने के लिए महिलाओं को काम करने के लिए घर की सीमा से बाहर निकलना पड़ा।
4. **भारतीय अर्थव्यवस्था पर महामंदी का प्रभाव-** 1929 ई. की विश्वव्यापी मंदी का पश्चिमी देशों के साथ-साथ उनके उपनिवेशों पर गंभीर प्रभाव पड़ा। भारतीय अर्थव्यवस्था भी इसके प्रभाव से अछूती नहीं रही। भारतीय अर्थव्यवस्था पर मंदी के प्रभाव का विवरण इस प्रकार है-
 1. **व्यापारिक क्षेत्र पर प्रभाव-** इस समय भारत एक कृषि वस्तु निर्यातक देश था। यह तैयार माल दूसरे देशों से आयात करता था। आर्थिक मंदी ने भारतीय व्यापार को प्रभावित किया। 1928 से 1934 के बीच भारत का आयात घटकर आधा रह गया था। अंतर्राष्ट्रीय बाजार की गिरती कीमतों का प्रभाव भारत पर भी पड़ा और यहां वस्तुओं की कीमतों में गिरावट आयी। 1928 से 1934 के बीच भारत में गेहूँ की कीमतों में 50% की गिरावट दर्ज की गयी।
 2. **किसानों की स्थिति पर प्रभाव-** ऐसे कृषि उत्पाद एवं निर्मित सामान जिनकी अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में बहुत माँग थी, माँग में गिरावट दर्ज की गयी। जूट और पटसन से बनी वस्तुओं की माँग घटने से उनका निर्यात बंद हो गया, फलस्वरूप कच्चे पटसन की कीमतें 60% से अधिक गिर गयीं। ऐसे में जिन किसानों ने पटसन की कृषि हेतु ऋण लिये थे उनकी स्थिति पर इसका बुरा प्रभाव पड़ा और वे पहले से अधिक कर्जदार हो गए।
 3. **शहरी और ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर प्रभाव-** मंदी का शहरी अर्थव्यवस्था पर अधिक प्रभाव इसलिए नहीं पड़ा क्योंकि वहाँ अधिकतर वेतनभोगी वर्ग के लोग रहते थे या फिर बड़े जमींदार वर्ग के लोग रहते थे जिन्हें भूमि का लगान प्राप्त होता था। राष्ट्रीय आंदोलन के प्रभाव के कारण ब्रिटिश सरकार ने उद्योगों की सुरक्षा हेतु सीमा शुल्क बढ़ा दिया था, जिससे उद्योगों को भी लाभ हुआ। सरकार द्वारा लगान कम न करने के कारण किसानों की स्थिति विपन्न हो गयी। एक ओर किसानों को उनके उत्पादों की उचित कीमत नहीं मिल रही थी तो दूसरी ओर उन पर लगान व ऋण का भारी बोझ था। इस तरह मंदी ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर भारी आक्रोश व्याप्त था।
 4. **वैश्वीकरण की प्रक्रिया का पुनर्जीवन-** मंदी के दौर से प्रभावित भारत बहुमूल्य धातुओं विशेषकर सोने का निर्यात करने लगा। अर्थशास्त्री कीन्स के अनुसार

भारतीय सोने के निर्यात से भी वैश्विक अर्थव्यवस्था को पुनः जीवित करने में सहायता मिली।

5. **बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा अपने उत्पादन को एशियाई देशों में स्थानान्तरित करने का फैसला-**

1. बहुराष्ट्रीय कंपनियों की स्थापना 1920 ई. के दशक में की गयी थी। अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों में 70 के दशक के मध्य में कई परिवर्तन किए गए। परिवर्तित नवीन परिस्थिति में विकासशील देश अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों से ऋण और विकास संबंधी सहायता ले सकते थे।
2. बहुराष्ट्रीय कंपनियों का विश्वव्यापी प्रसार 50-60 के दशक की एक प्रमुख विशेषता थी। इसका प्रमुख कारण था कि अधिकतर देशों की सरकारें देश में बाहर से आने वाले सामान पर भारी आयात शुल्क वसूलती थीं। ऐसे में बहुराष्ट्रीय कंपनियों को अपने संयंत्र उन्हीं देशों में लगाने को विवश होना पड़ा जहाँ वे अपने उत्पाद बेचना चाहते थे। इस तरह उन्हें घरेलू उत्पादकों के रूप में काम करना पड़ता था।
3. 1970 ई. के दशक में एशियाई देशों में बेरोजगारी बढ़ने लगी। ऐसे में बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने एशियाई देशों में उत्पादन इकाइयाँ स्थापित करने का प्रयत्न किया क्योंकि यहाँ उन्हें कर्मचारियों को कम वेतन देना पड़ता था। अन्य एशियाई देशों की तुलना में चीन में कम वेतन देना पड़ता था। अतः बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने चीन में अन्य देशों के तुलना में अधिक उत्पादक इकाइयाँ स्थापित की। इससे वैश्विक अर्थव्यवस्था परिवेश परिवर्तित हुआ।

4. खाद्य उपलब्धता पर तकनीक के प्रभाव को दर्शाने के लिए इतिहास से दो उदाहरण दें।

उत्तर :

तकनीकी विकास ने खाद्य उपलब्धता को सुगम और अति प्रभावी बना दिया। इसके दो उदाहरण इस प्रकार हैं-

1. यातायात और परिवहन साधनों में काफी सुधार किए गए। तेज चलने वाली रेलगाड़ियाँ बनाई गई एवं बोगियों का भार भी कम किया गया। जलपोतों का आकार बढ़ाया गया जिससे किसी भी उत्पाद को खेतों से दूर-दूर के बाजारों में कम लागत पर और अधिक आसानी से पहुँचाया जा सके।
2. माँस उत्पादों के व्यापार से इस प्रक्रिया का अच्छा अनुमान होता है। 1870 के दशक तक अमेरिका से यूरोप को माँस का निर्यात नहीं किया जाता था। उस समय केवल जिंदा जानवर ही भेजे जाते थे जिन्हें यूरोप ले जाकर ही काटा जाता था। लेकिन जिंदा जानवर जगह काफी घेरते थे। बहुत सारे जानवर लंबे सफर में ही मर जाते थे या बीमार पड़ जाते थे। बहुतों का वजन गिर जाता था या वे खाने

के योग्य नहीं रह जाते थे। इसी कारण से माँस खाना एक महंगा सौदा था और यूरोप के गरीबों की पहुँच से बाहर था। दूसरी ओर ऊँची कीमतों के कारण माँस उत्पादों की माँग और उत्पादन भी कम रहता था। नई तकनीक के आने पर यह स्थिति बदल गई। पानी के जहाजों में रेफ्रिजरेशन की तकनीक स्थापित कर दी गई जिससे जल्दी खराब होने वाली चीजों को भी लंबी यात्राओं पर ले जाया जा सकता था।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

5. ब्रेटन वुड्स समझौते का क्या अर्थ है?

उत्तर :

दो विश्वयुद्धों के बीच अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था को निर्धारित करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए जैसे— औद्योगिक विश्व में आर्थिक स्थिरता एवं पूर्ण रोजगार को बनाए रखा जाए। इस फ्रेमवर्क पर जुलाई, 1944 ई. में अमेरिका स्थित न्यू हैम्पशर के ब्रेटन वुड्स नामक स्थान पर संयुक्त राष्ट्र की मौद्रिक एवं वित्तीय सम्मेलन में सहमति बनी थी। इसे ब्रेटन वुड्स समझौते के रूप में जाना जाता है।

सदस्य देशों के विदेश व्यापार में लाभ और घाटे से निपटने के लिए ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में ही अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की स्थापना की गयी। युद्ध के पश्चात् पुनर्निर्माण हेतु धन का इंतजाम करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक का गठन किया गया। इसीलिए विश्व बैंक और आई.एम.एफ. को ब्रेटन वुड्स संस्थान या ब्रेटन वुड्स ट्रिवन भी कहा जाता है। इसी आधार पर युद्धोत्तर अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था को प्रायः ब्रेटन वुड्स व्यवस्था भी कहा जाता है।

WWW.CBSE.ONLINE

औद्योगीकरण का युग

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ई. टी. पॉल म्यूजिक कंपनी के चित्र **नयी सदी का उदय** में निम्नलिखित में से कौन-सा प्रतीक दिखाया गया है?

- (a) रेलवे (b) कैमरा और मशीनें
(c) प्रिंटिंग प्रेस और कारखाना (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

2. प्राच्य का संबंध किससे है?

- (a) आधुनिक (b) पूर्व-आधुनिक
(c) मशीनी (d) यूरोपीय

उत्तर (b) पूर्व-आधुनिक

3. आदि-औद्योगिक काल में निम्नलिखित में से कौन-सा कपड़ा उत्पादन के काम में भूमिका निभाता था?

- (a) स्टेपलर (b) फुलर
(c) कार्डिंग (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

4. औद्योगिक क्रांति का आरंभ किस देश में हुआ?

- (a) इंग्लैंड (b) फ्रांस
(c) अमेरिका (d) चीन

उत्तर (a) इंग्लैंड

5. इंग्लैंड में सबसे पहले किस दशक में कारखानों की स्थापना हुई?

- (a) 1730 में (b) 1740 में
(c) 1830 में (d) 1840 में

उत्तर (a) 1730 में

6. इंग्लैंड में सबसे पहले किस उद्योग का विकास हुआ?

- (a) रेलवे (b) कपड़ा
(c) लौह व इस्पात (d) सूचना प्रौद्योगिकी

उत्तर (b) कपड़ा

7. निम्नलिखित में से कौन-सा चरण कपड़ा उत्पादन की प्रक्रिया के साथ जुड़ा हुआ है?

- (a) कार्डिंग (b) ऐंठना
(c) लपेटना (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

8. स्टेपलर और फुलर किस व्यवसाय से जुड़े हुए थे?

- (a) सूती वस्त्र (b) लौह-इस्पात
(c) चाय (d) रबड़

उत्तर (a) सूती वस्त्र

9. भाप के इंजन का आविष्कार किसने किया?

- (a) थॉमस एडिसन (b) मार्कोनी
(c) न्यूकॉमेन (d) रुडोल्फ डीजल

उत्तर (c) न्यूकॉमेन

10. स्पिनिंग जेनी का आविष्कार कब हुआ?

- (a) सन् 1763 में (b) सन् 1764 में
(c) सन् 1765 में (d) सन् 1766 में

उत्तर (b) सन् 1764 में

11. सत्रहवीं शताब्दी में भारत की प्रमुख बंदरगाह थी-

- (a) सूरत (b) मछलीपटनम
(c) हुगली (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

12. ईस्ट इंडिया कंपनी ने सबसे पहले किस क्षेत्र पर राजनीतिक सत्ता स्थापित की?

- (a) बंगाल (b) बिहार
(c) पंजाब (d) कर्नाटक

उत्तर (a) बंगाल

13. गुमास्ता कौन थे?

- (a) अंग्रेजों के लिए कपास पैदा करने वाले किसान

- (b) सूती कपड़ा बुनने वाले बुनकर
(c) बुनकरों पर निगरानी रखने वाले वेतनभोगी कर्मचारी
(d) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

उत्तर (c) बुनकरों पर निगरानी रखने वाले वेतनभोगी कर्मचारी

14. बंबई में पहली कपड़ा मिल कब लगी ?

- (a) सन् 1853 में (b) सन् 1854 में
(c) सन् 1855 में (d) सन् 1856 में

उत्तर (b) सन् 1854 में

15. भारत में पहली जूट मिल कहाँ लगी ?

- (a) गुजरात में (b) बम्बई में
(c) बंगाल में (d) मद्रास में

उत्तर (c) बंगाल में

16. बंगाल में उद्योगों की स्थापना किसने की ?

- (a) द्वारकानाथ टैगोर ने (b) डिनशॉ पेटिट ने
(c) जे. एन. टाटा ने (d) जी. डी. बिड़ला ने

उत्तर (a) द्वारकानाथ टैगोर ने

17. कलकत्ता में पहली जूट मिल की स्थापना किसने की थी ?

- (a) द्वारकानाथ टैगोर ने (b) जी.डी.बिड़ला ने
(c) सेठ हुकुमचंद ने (d) जे. एन. टाटा ने

उत्तर (c) सेठ हुकुमचंद ने

18. जमशेदपुर में लौह एवं इस्पात संयंत्र की स्थापना किसने की थी ?

- (a) जे. एन. टाटा ने (b) जी. डी. बिड़ला ने
(c) द्वारकानाथ टैगोर ने (d) सेठ हुकुमचंद ने

उत्तर (a) जे. एन. टाटा ने

19. फ्लाई शटल का किस उद्योग में प्रयोग किया जाता था ?

- (a) लौह एवं इस्पात (b) हथकरघा
(c) रेलवे (d) सूचना एवं प्रौद्योगिकी

उत्तर (b) हथकरघा

20. 1934 में सनलाइट साबुन के कैलेंडर पर किस भगवान को आसमान से रोशनी लाते दिखाया गया था ?

- (a) विष्णु (b) शिव
(c) ब्रह्मा (d) ईसा मसीह

उत्तर (a) विष्णु

21. उत्पादक कैलेंडरों पर किन के चित्र छापते थे ?

- (a) देवी-देवता (b) शाही व्यक्ति
(c) राजा-महाराजा (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

22. इंग्लैंड में मानचेस्टर किस उद्योग के लिए प्रसिद्ध था ?

- (a) लौह-इस्पात (b) फिल्म निर्माण
(c) सूती कपड़ा (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (c) सूती कपड़ा

23. 1901 में भारत में सबसे बड़ा उद्योग था-

- (a) सूती कपड़ा (b) इलेक्ट्रॉनिक्स
(c) लोहा-इस्पात (d) रेल-निर्माण

उत्तर (a) सूती कपड़ा

24. इंग्लैंड प्रिंटर्स में दो जादूगरों की तस्वीर कब प्रकाशित हुई थी ?

- (a) 25 जून, 1900 (b) 26 जनवरी, 1901
(c) 14 मई, 1902 (d) 20 फरवरी, 1903

उत्तर (b) 26 जनवरी, 1901

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

25. 1911 ई. में भारत में अधिकांश उद्योग किन राज्यों में स्थापित थे ?

- (a) बिहार और सिंध प्रांत
(b) बंगाल और बम्बई
(c) मध्य प्रांत और संयुक्त प्रांत
(d) मद्रास और पंजाब

उत्तर (b) बंगाल और बम्बई

26. लेबल ही चीजों की गुणवत्ता का प्रतीक था। जब किसी लेबल पर मोटे अक्षरों में क्या लिखा दिखाई देता है तो खरीददारों को कपड़ा खरीदने में किसी तरह का डर नहीं रहता था ?

- (a) मेड इन इंडिया (b) मेड इन चीन
(c) मेड इन मैनचेस्टर (d) मेड इन अमेरिका

उत्तर (c) मेड इन मैनचेस्टर

27. 1928 ई. के ग्राइप वॉटर के कैलेंडर पर किस भगवान का चित्र अंकित था ?

- (a) बाल कृष्ण (b) विद्या देवी सरस्वती
(c) भगवान विष्णु (d) धन देवी लक्ष्मी

उत्तर (a) बाल कृष्ण

28. विश्व बाजार में कौन-कौन से भारतीय उद्योग एवं दस्तकारियों का बोलबाला था ?

- (a) जूट और कागज (b) सूती और रेशमी कपड़े
(c) जेवरात और हस्तशिल्प (d) बर्तन और काँच

उत्तर (b) सूती और रेशमी कपड़े

29. 1860 ई. के दशक में बुनकरों के सामने कौन-सी समस्याएँ खड़ी हो गई ?

- (a) उन्हें अच्छी कपास नहीं मिल पा रही थी
(b) उन्हें मनमानी कीमत पर कपास खरीदना पड़ रहा था
(c) कारखाने में बने कपड़े बाजार में भरे पड़े थे
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

30. 20वीं शताब्दी में आयातित कपड़ों के मैनचेस्टर के लेबल पर किस प्रकार के चित्र छपे होते थे ?

- (a) भारतीय नेताओं के
(b) भारतीय फूलों के
(c) भारतीय पशु-पक्षियों के
(d) भारतीय देवी-देवताओं के

उत्तर (d) भारतीय देवी-देवताओं के

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

31. 1934 ई. के सनलाइट साबुन के कैलेंडर पर किस भगवान का फोटो छपा था ?

- (a) विष्णु भगवान (b) कृष्ण भगवान
(c) शंकर भगवान (d) गणेश भगवान

उत्तर (a) विष्णु भगवान

32. 1912 ई. में जे.एन.टाटा ने भारत का पहला लौह और इस्पात संयंत्र किस जगह स्थापित किया ?

- (a) जमशेदपुर (b) बंबई
(c) मद्रास (d) अहमदाबाद

उत्तर (a) जमशेदपुर

33. गिल्ड्स क्या थे ?

- (a) व्यापारियों के संगठन (b) नाविकों के संगठन
(c) विद्वानों के संगठन (d) उत्पादकों के संगठन

उत्तर (d) उत्पादकों के संगठन

34. भारत में सूती कपड़े का उत्पादन कब दोगुना हो गया ?

- (a) 1890 ई. से 1895 ई.
(b) 1900 ई. से 1912 ई.

(c) 1905 ई. से 1918 ई.

(d) 1909 ई. से 1920 ई.

उत्तर (b) 1900 ई. से 1912 ई.

35. प्लाइंग शटल से क्या तात्पर्य है ?

- (a) हवाई जहाज का एक यंत्र है
(b) रस्सियों और पुलियों के जरिए चलने वाला एक यांत्रिक औजार है
(c) औद्योगिक यंत्र जो इस्पात उद्योग के लिए उपयुक्त होता है
(d) एक कृषि यंत्र

उत्तर (b) रस्सियों और पुलियों के जरिए चलने वाला एक यांत्रिक औजार है

36. 1900 ई. में किस म्यूजिक कंपनी ने संगीत की किताब प्रकाशित की थी ?

- (a) सोनी (b) वीनस
(c) ई.टी. पॉल (d) एच.एम.वी.

उत्तर (c) ई.टी. पॉल

37. नई वस्तुओं को खरीदने के लिए किस प्रकार से लोगों को प्रेरित किया जाता था ?

- (a) विज्ञापनों द्वारा और लेबल लगाकर
(b) कैलेंडरों पर देवताओं के चित्रों द्वारा
(c) राष्ट्रवादी संदेशों के विज्ञापनों द्वारा
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

38. बंगाल में पहली जूट मिल कब शुरू हुई ?

- (a) 1860 ई. में (b) 1855 ई. में
(c) 1848 ई. में (d) 1845 ई. में

उत्तर (b) 1855 ई. में

39. गिल्ड्स किस प्रकार के कार्य करते थे ?

- (a) गिल्ड्स से जुड़े उत्पादक कारीगरों को प्रशिक्षण देते थे
(b) प्रतिस्पर्धा और मूल्य तय करते थे तथा व्यवसाय में नए लोगों को रोकते थे
(c) उत्पादकों पर नियंत्रण रखते थे
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

40. ई.टी. पॉल म्यूजिक कंपनी ने सन् 1900 में संगीत की एक किताब प्रकाशित की थी जिसकी जिल्द पर दी गई तस्वीर में

क्या ऐलान किया गया था ?

- (a) नई सदी के उदय (b) दुनिया बदल गई
(c) दुनिया सिमट गई (d) दुनिया का दौर

उत्तर (a) नई सदी के उदय

41. कलकत्ता में किस पूँजीपति ने पहली भारतीय जूट मिल को स्थापित किया था ?

- (a) उरिका नाथ टैगोर (b) डिनशा पेटिट
(c) जमशेदजी नुसरवानजी टाटा (d) सेठ हुकुमचंद

उत्तर (d) सेठ हुकुमचंद

42. ईस्ट इंडिया कंपनी के बुनकरों पर निगरानी रखने, माल इकट्ठा करने और कपड़ों की गुणवत्ता जाँचने के लिए वेतनभोगी कर्मचारी तैनात कर दिए जिन्हें कहा जाता था—

- (a) जॉबर (b) कंपनी सुपरवाइजर
(c) गुमाश्ता (d) कंपनी ट्रेडर

उत्तर (c) गुमाश्ता

43. 1840 ई. के दशक तक इंग्लैंड का कौन-सा उद्योग सबसे बड़ा उद्योग बन चुका था ?

- (a) लोहा-इस्पात उद्योग (b) सूती वस्त्र उद्योग
(c) कागज उद्योग (d) काँच उद्योग

उत्तर (b) सूती वस्त्र उद्योग

44. इंग्लैंड में किस नई प्रौद्योगिकी की शुरुआत से महिलाएँ चिढ़ती थीं—

- (a) हार्वेस्टर मशीन (b) स्पिनिंग जेनी
(c) फुलर (d) स्टेपलर

उत्तर (b) स्पिनिंग जेनी

45. उद्योग में कोई पुराना और विश्वस्त कर्मचारी होता था। वह अपने गाँव से लोगों को लाता था, उन्हें काम का भरोसा देता था, उन्हें शहर में जमने के लिए मदद देता था और मुसीबत में पैसे से मदद करता था उसे कहा जाता था—

- (a) गुमाश्ता (b) मजदूर संघ के नेता
(c) मजदूर ठेकेदार जॉबर (d) जॉबर

उत्तर (d) जॉबर

46. पहले विश्वयुद्ध तक कौन-सी यूरोपीय प्रबंधकीय एजेंसियाँ भारतीय उद्योगों के विशाल क्षेत्र का नियंत्रण करती थीं ?

- (a) हीगलर्स एंड कंपनी (b) एंड्रयू यूल
(c) जार्डिन स्किनर एवं कंपनी (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

47. स्पिनिंग जेनी का आविष्कार किसने किया था ?

- (a) एम. मैथ्यूज (b) जेम्स वॉट
(c) एमेनुअल कांट (d) जेम्स हरग्रीब्ज

उत्तर (d) जेम्स हरग्रीब्ज

48. सूती कपड़ा मिल की रूपरेखा किसने तैयार की ?

- (a) जॉन राइट (b) रिचर्ड आर्कराइट
(c) एंड्रू कार्नेगी (d) जेम्स वॉट

उत्तर (b) रिचर्ड आर्कराइट

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. 1850 में, भारत शुरू हुआ।

उत्तर : मशीन युग

2. प्रथम जूट मिल की स्थापना द्वारा भारत में की गई थी।

उत्तर : सेठ हुकुमचंद

3. द्वारकानाथ टैगोर 1830 में भारत में छह संयुक्त कंपनियों की स्थापना करने वाला एक भारतीय था।

उत्तर : उद्यमी

4. उद्योग इंग्लैंड का उत्कर्ष उद्योग था।

उत्तर : लोहा और इस्पात

5. इंग्लैंड का पहला औद्योगिक शहर है।

उत्तर : लंदन

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

सही या गलत बताइए

1. कालीकट में पहली जूट मिल स्थापित की गई।

उत्तर : गलत

2. फुलर का काम कपड़ा इकट्ठा करना था।

उत्तर : सही

3. भारतीय निर्माताओं द्वारा विज्ञापन में शायद ही कोई राष्ट्रवादी संदेश दिया गया हो।

उत्तर : गलत

4. एल्लिन मिल कानपुर में स्थापित की गई थी।

उत्तर : सही

5. कपड़ा तैयार होने के बाद, परिष्करण लंदन में किया जाता था और इसे 'परिष्करण केन्द्र' के रूप में जाना जाता था।

उत्तर : सही

अति लघु उत्तरात्मक प्रश्न

1. कौन सा परिदृश्य भारतीय परिस्थितियों में औद्योगिक परिवर्तन का एक स्वरूप था ?

उत्तर :

भारत में ग्रामीण क्षेत्र की निर्धनता।

2. ब्रिटिश हाथों में सौंपने से पहले किस यूरोपीय शक्ति के पास बम्बई के सात द्वीपों का नियंत्रण था ?

उत्तर :

पुर्तगाल।

3. असेंबली लाइन का क्या अर्थ है ?

उत्तर :

असेंबली लाइन का अर्थ है किसी मशीन के अलग-अलग कलपुर्जों को विभिन्न स्थान पर बनाने के बाद उसे एक स्थान पर लाकर उन सभी आवश्यक पुर्जों को जोड़कर मशीन का रूप दिया जाता है।

4. गुमास्ता का क्या कार्य था ?

उत्तर :

1. बुनकरों पर निगरानी रखना,
2. माल इकट्ठा करना,
3. कपड़ों की गुणवत्ता परखना।

5. 19वीं सदी में विश्व अर्थव्यवस्था के उदय से भारत में क्या परिवर्तन आया ? एक उदाहरण दें।

उत्तर :

19वीं सदी में विश्व अर्थव्यवस्था के उदय से भारत में छोटे पैमाने पर ही सही परंतु परिवर्तन आया। पंजाब में ब्रिटिश भारतीय सरकार ने अर्द्ध रेगिस्तानी परती जमीनों को उपजाऊ बनाने के लिए नहरों का जाल बिछा दिया जिससे निर्यात के लिए गेहूँ और कपास की खेती की जा सके। नई नहरों की सिंचाई वाले इलाकों में पंजाब के अन्य स्थानों के लोगों को बसाया गया।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

6. बम्बई (मुम्बई) में सूती वस्त्रों की पहली मिल की स्थापना किस वर्ष में हुई थी ?

उत्तर :

1854 में।

7. केनाल कॉलोनी किसे कहा जाता था ?

उत्तर :

पंजाब में कृषि को उन्नत बनाने के लिए नहरों का जाल बिछा दिया गया। नहरों के सिंचाई वाले इलाकों में पंजाब के अन्य स्थानों के लोगों को लाकर बसाया था। उनकी बस्तियों को केनाल कॉलोनी (नहर बस्ती) कहा जाता था।

8. नए लोगों की भर्ती करवाने के लिए उद्योगपति प्रायः किसको नियुक्त करते थे ?

उत्तर :

जॉबर।

9. 19वीं शताब्दी में विश्व अर्थव्यवस्था के उदय का भारतीय अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर :

19वीं शताब्दी में दुनिया में कई आर्थिक परिवर्तन हुए। विश्व में बड़े पैमाने पर खेती की जाने लगी थी जिससे ब्रिटिश कपड़ा मिलों की मांगों को पूरा किया जा सके।

10. किसने न्यूकॉमेन द्वारा बनाए गए भाप के इंजन में सुधार किए ?

उत्तर :

जेम्सवाट ने।

11. औपनिवेशवाद का क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर :

औपनिवेशवाद का प्रभाव—

1. उपनिवेश में अधीन बस्तियों के विकास होने लगे थे। अधीन बस्तियों में पूँजी का निवेश बड़े पैमाने पर हुआ।
2. यातायात और संचार के विकास से कई परिवर्तन हुए।

12. द्वारकानाथ टैगोर कौन थे ?

उत्तर :

एक प्रसिद्ध उद्योगपति।

13. बंगाल के पटसन के व्यापार पर महामंदी का क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर :

बंगाल के पटसन के उत्पादक कच्चा पटसन उगाते थे, जिससे कारखानों में टाट की बोरियां बनाई जाती थीं। अतः जब टाट का निर्यात बंद हो गया तो कच्चे पटसन की कीमतों में 60 प्रतिशत से ज्यादा गिरावट आ गई। बंगाल के पटसन उत्पादक कर्ज में डूबते चले गए।

14. फ्लाई शटल से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर :

फ्लाई शटल रस्सियों और पुलियों के जरिए चलने वाला एक यांत्रिक औजार है, जिसका बुनाई के लिए इस्तेमाल किया जाता है। यह क्षैतिज धागे को लंबवत् धागे में पिरो देता है। फ्लाई शटल के आविष्कार से बुनकरों को बड़े करघे चलाने और चौड़े अरज का कपड़ा बनाने में काफी मदद मिली।

15. अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक व्यवस्था क्या है ?

उत्तर :

अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक व्यवस्था राष्ट्रीय मुद्राओं और मौद्रिक व्यवस्थाओं को एक-दूसरे से जोड़ने वाली व्यवस्था है। ब्रेटन वुड्स व्यवस्था निश्चित विनिमय दरों पर आधारित होती थी। इसमें राष्ट्रीय मुद्राएँ जैसे रुपया, डॉलर आदि के साथ एक निश्चित विनिमय दर से बंधा हुआ था। एक डॉलर के बदले

में कितने रुपये देने होंगे ये स्थिर होता था। उस समय डॉलर का मूल्य भी सोने से बंधा था और एक डॉलर 35 औंस सोने के बराबर थी।

16. जॉबर कौन थे?

उत्तर :

जॉबर उद्योग में काम करने वाला कोई पुराना और विश्वस्त कर्मचारी होता था। उद्योगपति नए मजदूरों की भर्ती के लिए प्रायः एक जॉबर रखते थे। जॉबर अपने गांव से लोगों को लाता था, उन्हें काम का भरोसा देता था। उन्हें शहर में जमाने के लिए मदद देता था और मुसीबत में पैसे से मदद भी करता था।

17. विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने अपना काम कब शुरू किया? इसमें अमेरिका की क्या भूमिका है?

उत्तर :

विश्व बैंक और आई.एम.एफ. ने 1947 में औपचारिक रूप में काम करना प्रारंभ किया। अमेरिका विश्व बैंक और आई.एम.एफ. के किसी भी फैसले को वीटो कर सकता है।

18. स्पिनिंग जेनी से क्या तात्पर्य है?

उत्तर :

ऊन से ऊन के कपड़े बनाने वाली धागे की मशीन को स्पिनिंग जेनी कहा जाता था। जेम्स हर्ग्रीव्स द्वारा 1764 में बनाई गई इस मशीन ने कताई की प्रक्रिया तेज कर दी और मजदूरों की मांग घटा दी। एक ही पहिया घुमाने वाला एक मजदूर बहुत सारी तकलियों को घुमा देता था और एक साथ कई धागे लगने लगते थे।

19. इंग्लैंड में किस तकनीक के लागू होने से महिलाओं में आक्रोश पैदा हुआ?

उत्तर :

स्पिनिंग जेनी।

20. वैश्वीकरण के लिए स्थापित तीन अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के नाम बताइए।

उत्तर :

वैश्वीकरण के लिए स्थापित तीन अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएँ कार्य करती हैं—

1. आई.एम.एफ. (I.M.F.) अर्थात् अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष।
2. विश्व बैंक।
3. विश्व व्यापार संगठन।

21. भारत में पहली जूट मिल कहाँ लगाई गई थी?

उत्तर :

बम्बई में।

22. वह कौन-सा पूर्व-औपनिवेशिक बन्दरगाह था जो भारत को खाड़ी के देशों और लाल सागर के बन्दरगाहों से जोड़ता था?

उत्तर :

सूरत।

23. भारत के किस स्थान पर 67% (प्रतिशत) वृहत उद्योग 1911 में स्थित थे?

उत्तर :

बंगाल एवं बम्बई।

24. प्राच्य शब्द का अर्थ बताइए।

उत्तर :

भूमध्यसागर के पूर्व में स्थित देश को प्राच्य कहा जाता था। आमतौर पर यह शब्द एशिया के लिए इस्तेमाल किया जाता है। पश्चिमी नज़रिए में प्राच्य इलाके पूर्व आधुनिक, पारंपरिक और रहस्यमय थे।

25. ई.टी. पॉल कौन था?

उत्तर :

वह एक लोकप्रिय म्यूजिक कंपनी का प्रकाशक था।

26. भारत आने वाली पहली दो यूरोपीय जातियाँ कौन सी थीं?

उत्तर :

डच तथा पुर्तगाली।

27. यूरोपीय मैनेजिंग एजेन्सियाँ किस प्रकार के उद्योगों में रुचि रखती थीं?

उत्तर :

चाय बागान।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

28. वे कौन से लोग थे जिन्होंने इंडोनेशिया को अपने अधीन किया?

उत्तर :

डच लोग।

29. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बताइए—

1. स्टेपलर
2. फुलर
3. कार्डिंग

उत्तर :

1. **स्टेपलर**— ऐसा व्यक्ति, जो रेशों के हिसाब से ऊन को **स्टेपल** करता है या छाँटता है।
2. **फुलर**— ऐसा व्यक्ति, जो **फुल** करता है यानी चुन्नटों के सहारे कपड़े को समेटता है।
3. **कार्डिंग**— वह प्रक्रिया, जिसमें कपास या ऊन आदि रेशों को कताई के लिए तैयार किया जाता है।

30. इंग्लैंड में सबसे पहला कारखाना किस दशक में खुला था?

उत्तर :

1730 के दशक में।

31. इंग्लैंड के कपड़ा व्यापारी किससे ऊन खरीदते थे?

उत्तर :

स्टेप्लर्स से।

32. स्पिनिंग जेनी नामक यंत्र का उपयोग किस वस्तु को काटने में किया जाता था ?

उत्तर :

धागा।

33. कपड़ा उत्पादन प्रक्रिया के कौन-से चरण थे ?

उत्तर :

कपड़ा उत्पादन प्रक्रिया में तीन मुख्य चरण थे।

1. कार्डिंग
2. ऐठना व कताई
3. लपेटना।

34. जेम्स वॉट द्वारा बनाए गए भाप के इंजन के नए मॉडल को किसने बनाया था ?

उत्तर :

मेथ्यू ब्रूटन ने।

35. स्टेपलर क्या कार्य करता था ?

उत्तर :

स्टेपलर रेशम के हिसाब से ऊन को स्टेपलर करने अथवा छाँटने वाला व्यक्ति था।

36. इंग्लैंड में मैनचेस्टर के वस्त्र उद्योग को प्रतिस्पर्धा से बचाने के लिए भारतीय वस्त्रों पर क्या बढ़ाया गया ?

उत्तर :

आयात शुल्क।

37. इंग्लैंड का कौन-सा शहर फिनिशिंग सेंटर के रूप में प्रसिद्ध हुआ ?

उत्तर :

लंदन, इंग्लैंड में फिनिशिंग सेंटर के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

38. जमशेदजी नुसरवान जी टाटा ने इंग्लैंड को किस निम्न वस्तु का निर्यात करके पैसा कमाया ?

उत्तर :

कपास।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

39. गुमाशते कौन थे ?

उत्तर :

ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा भारतीय बुनकरों से लेन-देन का हिसाब रखने के लिए वेतन पर रखे गए कर्मचारी थे।

40. हथकरघों में किस के प्रयोग से उत्पादन तेज हुआ और श्रम में कमी आई ?

उत्तर :

फलाई शटल।

41. सूरत बंदरगाह के जरिए भारत किन बंदरगाहों से जुड़ा था ?

उत्तर :

सूरत बंदरगाह के जरिए भारत खाड़ी और लाल सागर के बंदरगाहों से जुड़ा हुआ था।

42. किस दशक से पूरे इंग्लैंड में रेलवे स्टेशन बनने लगे थे ?

उत्तर :

1850 के दशक में।

43. ब्रिटेन के उस समय के सबसे फलते-फूलते उद्योग कौन-से थे ?

उत्तर :

कपास तथा सूती उद्योग।

44. हेनरी पतूलो किस वर्ष ईस्ट इंडिया कंपनी के अफसर थे ?

उत्तर :

1772 में।

45. भारत की पहली जूट मिल किसने, कब तथा कहाँ लगाई ?

उत्तर :

भारत की पहली जूट मिल एक मारवाड़ी सेठ हुकुमचंद ने 1917 में वर्तमान कोलकाता में लगाई।

46. ईस्ट इंडिया कंपनी ने किस दशक में कर्नाटक में राजनीतिक सत्ता स्थापित की थी ?

उत्तर :

1770 में।

47. भारत से किस कच्चे माल का निर्यात होता था ?

उत्तर :

भारत से मुख्यतः कपास, अनाज, गेहूँ, अफीम और नील का निर्यात किया जाता था।

48. फैक्ट्रियों में मजदूरों की नौकरी कौन लगवाता था ?

उत्तर :

जॉबर।

49. 19वीं शताब्दी के किन्हीं चार प्रसिद्ध भारतीय व्यवसायियों के नाम बताओ।

उत्तर :

1. सेठ हुकुमचंद
2. द्वारकानाथ टैगोर
3. डिनशॉ पेटिट
4. जमशेद जी नुसरवान जी टाटा।

50. 1911 में भारत में लगे उद्योगों का कितना प्रतिशत हिस्सा बंगाल और बम्बई में स्थित था ?

उत्तर :

67 प्रतिशत।

51. कुछ मौसमी उद्योगों के नाम बताओ जिनमें श्रमिकों की मांग घटती-बढ़ती रहती थी।

उत्तर :

1. शराबखाने

2. बुक बाइंडिंग
3. गैसघर।

52. स्पिनिंग जेनी मशीन के प्रयोग का विरोध क्यों किया गया?

उत्तर :

स्पिनिंग जेनी मशीन के प्रयोग का विरोध बेरोजगारी की आशंका के कारण हाथ से ऊन कातने वाली औरतों ने उन पर हमला करके किया।

53. प्रथम विश्वयुद्ध तक किन यूरोपीय प्रबंधकीय एजेंसियों का भारतीय उद्योगों पर नियंत्रण था?

उत्तर :

1. बर्ड हीगलर्स एंड कंपनी,
2. एंड्रयू यूल,
3. जार्जिन स्किनर एंड कंपनी।

54. फ्लाई शटल वाले करघों के प्रयोग के कौन-से दो महत्वपूर्ण परिणाम निकले?

उत्तर :

1. कामगारों की उत्पादन क्षमता तथा उत्पादन में वृद्धि हुई।
2. श्रम की मांग कम हो गई।

55. किस सदी में कताई उद्योग का पतन हो गया?

उत्तर :

19वीं सदी में।

56. फैक्ट्रियों में मजदूर किन क्षेत्रों से आते थे?

उत्तर :

प्रारंभ में मजदूर आसपास के क्षेत्रों से आते थे परंतु बाद में मजदूर दूर-दूर के क्षेत्रों से आने लगे, जैसे संयुक्त प्रांत के लोग बम्बई की कपड़ा मिलों और कलकत्ता की जूट मिलों में काम करने के लिए आने लगे।

57. 1900 से 1912 में भारत में सूती कपड़े का उत्पादन पहले की तुलना में कितना बढ़ गया था?

उत्तर :

तीन गुना।

58. स्वदेशी आंदोलन का एक प्रभाव लिखिए।

उत्तर :

स्वदेशी आंदोलन के दौरान राष्ट्रवादियों ने लोगों को विदेशी कपड़े के बहिष्कार के लिए प्रेरित किया।

59. इंग्लैंड के सबसे फलते-फूलते दो उद्योग कौन-कौन से थे?

उत्तर :

सूती उद्योग तथा लोहा उद्योग।

60. प्रथम विश्वयुद्ध का भारत के औद्योगिक विकास पर पड़े प्रभाव का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :

प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान ब्रिटिश कारखाने सेना की आवश्यकताओं को पूरा करने में व्यस्त थे। युद्ध के लंबा खिंचने के कारण भारतीय कारखानों में भी फौज के लिए जूट की बोरियाँ, फौजियों के लिए वर्दी के कपड़े, टेंट और चमड़े के जूते आदि बनने लगे। कई नए कारखाने लगाए गए।

61. इंग्लैंड का कौन-सा नगर उत्तम माल के लेन-देन के लिए प्रसिद्ध हुआ?

उत्तर :

लंदन।

62. भारतीय व्यापारियों के निर्यात व्यापार का नेटवर्क किस एक मुख्य कारण से टूटने लगा था?

उत्तर :

यूरोपीय कंपनियों के भारत आने से।

63. उत्पादन प्रक्रिया कार्डिंग, ऐंठना व कताई और लपेटना किस उद्योग से संबंधित हैं?

उत्तर :

वस्त्र उद्योग से।

64. भारतीय निर्माताओं के विज्ञापनों की क्या विशेषता थी?

उत्तर :

भारतीय निर्माताओं के विज्ञापन राष्ट्रवादी संदेश देते थे। इसका आशय यह था कि यदि आप राष्ट्र का सम्मान करते हैं तो भारतीयों द्वारा बनी वस्तुएँ ही खरीदिए। इस प्रकार से विज्ञापन स्वदेशी के प्रतीक थे।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

लघु उत्तरात्मक प्रश्न

1. औद्योगिक क्रांति का क्या अभिप्राय है? इस क्रांति के दो आर्थिक और दो अनुकूल प्रभाव लिखिए।

उत्तर :

1. **औद्योगिक क्रांति का अभिप्राय-** यंत्रों या मशीन का प्रयोग करके कम समय में अधिक उत्पादन करने की दिशा में मानव जाति का आगे बढ़ना।
2. **औद्योगिक क्रांति के दो आर्थिक प्रभाव-**
 - (a) कुटीर व छोटे पैमाने के उद्योग समाप्त हुए।
 - (b) व्यापार, वाणिज्य, यातायात, संचार माध्यम, शहरीकरण तथा उच्च जीवन स्तर को प्रोत्साहन एवं बढ़ावा मिला।
3. **औद्योगिक क्रांति के दो अनुकूल प्रभाव-**
 - (a) कम समय और कम परिश्रम से अधिक उत्पादन। इसके परिणामस्वरूप वस्तुएँ सस्ती और पर्याप्त रूप से उपलब्ध हुईं।

(b) ढाँचागत सुविधाओं यथा-सड़क निर्माण, रेल निर्माण, जलयान निर्माण, डाक एवं तार व्यवस्था आदि का विकास।

2. इंग्लैंड में आधुनिक औद्योगीकरण, परम्परागत उद्योगों को पूर्णतः हाशिए पर नहीं ढकेल सका। किन्हीं चार उपयुक्त तर्कों द्वारा इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर :

1. नए उद्योग परम्परागत उद्योगों को इतनी आसानी से हाशिए पर नहीं ढकेल सकते थे। 19वीं सदी के आखिर में भी तकनीकी रूप से विकसित औद्योगिक क्षेत्र में काम करने वाले मजदूरों की संख्या कुल मजदूरों में 20% से ज्यादा नहीं थी।
 2. कपड़ा उद्योग एक गतिशील उद्योग था, लेकिन उसके उत्पादन का बड़ा हिस्सा कारखानों में नहीं बल्कि घरेलू इकाइयों में होता था।
 3. खाद्य प्रसंस्करण, निर्माण, पॉटरी, कांच का काम, चर्मशोधन, फर्नीचर और औजारों के उत्पादन जैसे बहुत सारे गैर-मशीनी क्षेत्रों में जो तरक्की हो रही थी वह मुख्य रूप से साधारण और छोटे-छोटे आविष्कारों का ही परिणाम थी। मशीनें अक्सर खराब हो जाती थीं और उनकी मरम्मत पर काफी खर्चा आता था। वे उतनी अच्छी नहीं थी जितना उनके आविष्कारकों और निर्माताओं का दावा था।
 4. नई तकनीक महँगी थी। सौदागर व व्यापारी उनके इस्तेमाल के लिए फूँक-फूँककर कदम बढ़ाते थे।
- 3. औद्योगीकरण का अर्थ सदैव कारखानों की स्थापना ही नहीं होता है।** इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर :

1. औद्योगीकरण में कारखानों में वृहत् स्तर पर वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है। किन्तु यूरोप में वस्तुओं के उत्पादन की एक ऐसी अवस्था देखी गई जब वहां कोई कारखाना नहीं था। इसे ही आदि-औद्योगीकरण की अवस्था कहा जाता है।
2. शहर के गिल्ड्स से परेशान होकर सौदागर गांवों की ओर जाने लगे। उन्होंने किसानों तथा सौदागरों को पेशगी की रकम दी जो जीविका-विहीन किसानों ने तुरंत स्वीकार कर ली। इन कामगारों को अंतर्राष्ट्रीय बाजारों के लिये वस्तुओं के उत्पादन हेतु प्रोत्साहित किया गया।
3. किसानों तथा कारीगरों ने अंतर्राष्ट्रीय बाजारों के लिये वृहत् स्तर पर वस्तुओं का उत्पादन किया। इससे उन्हें न केवल रोजगार मिला बल्कि बिना फैक्ट्री की स्थापना के भी वस्तुओं के उत्पादन के उच्च स्तरीय लक्ष्य को भी प्राप्त किया जा सका।

अतः यह कहा जा सकता है कि औद्योगीकरण का अर्थ हमेशा कारखानों की स्थापना ही नहीं होता है।

4. कारखाना प्रणाली का क्या तात्पर्य है? इस प्रणाली के उभरने के दो कारण भी लिखिए।

उत्तर :

कारखाना प्रणाली का तात्पर्य-आधुनिक फैक्ट्री सिस्टम को कारखाना प्रणाली कहा जाता है। इस प्रणाली से पहले औद्योगिक उत्पादन कुटीर या बहुत ही लघु पैमाने अथवा लघु स्तर (Cottage industry and Small Scales industries) के अंतर्गत परंपरावादी उपकरणों और तरीकों से प्रायः किसी परिवार के लोगों द्वारा घर पर या कुछ शिल्पकारों द्वारा उत्पादन किया जाता था लेकिन कारखाना प्रणाली में प्रायः आधुनिक मशीनों, उपकरणों और सुविधाओं का बड़े पैमाने पर अधिक संख्या में मजदूरों द्वारा एक विशिष्ट प्रशिक्षित प्रबंधन की देख-रेख में उत्पादन किया जाता है।

कारखाना प्रणाली या पद्धति के उभरने के दो कारण-

1. मनुष्य की नित नए अनुसंधान करने की प्रवृत्ति से कम समय में बड़े पैमाने का उत्पादन करने वाली मशीनों की खोज।
2. औपनिवेशिक या साम्राज्यवादी मनोवृत्ति।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

5. 1750 का दशक आते-आते भारतीय सौदागरों द्वारा नियंत्रित व्यापारिक नेटवर्क टूटने लगा था। इस कथन की पुष्टि कीजिए।

अथवा

1750 के दशक तक यूरोपीय कंपनियाँ शक्तिशाली होने लगी थीं। इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर :

1. 1750 का दशक आते-आते यूरोपीय कंपनियाँ स्थानीय दरबारों से व्यापारिक छूट तथा एकाधिकार प्राप्त कर शक्तिशाली होने लगी थीं।
2. सूत तथा हुगली जैसे बंदरगाहों, जहाँ से भारतीय सौदागर अपनी व्यापारिक गतिविधियाँ चलाया करते थे, का पतन हो चुका था। अब कलकत्ता तथा बम्बई जैसे नए बंदरगाह उभर कर सामने आए। इन बंदरगाहों पर यूरोपीय व्यापारियों का कब्जा था।
3. चूंकि निर्यात में कमी आ चुकी थी, स्थानीय बैंकर धीरे-धीरे दिवालिया होते गए। अब भारतीय सौदागरों को यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों द्वारा विकसित व्यापारिक नेटवर्क के अंतर्गत ही काम करना पड़ता था।

6. भारत के उद्योगों में काम करने वाले मजदूर किन क्षेत्रों से आते थे?

उत्तर :

1901 में भारतीय फैक्ट्रियों में 58400 मजदूर काम कर रहे थे। 1946 तक यह संख्या बढ़कर 2436000 हो चुकी थी। ये मजदूर ज्यादातर औद्योगिक इलाकों में अपने आसपास के

जिलों से आते थे। जिन लोगों को गांव में काम नहीं मिलता था, वे औद्योगिक क्षेत्रों की तरफ जाने लगते थे। 1911 में बम्बई के सूती कपड़ा उद्योग में काम करने वाले 50 प्रतिशत से ज्यादा मजदूर पास के रत्नागिरी जिले से आए थे। यही स्थिति कानपुर की मिलों में काम करने वाले ज्यादातर मजदूरों की थी।

जब औद्योगिक नगरों का तेजी से विकास हुआ तो यहाँ पर दूर-दूर से लोग काम करने के लिए आने लगे। उदाहरण के लिए संयुक्त प्रांत के लोग बम्बई की कपड़ा मिलों और कलकत्ता की जूट मिलों में काम करने के लिए जाते थे। हालांकि मिलों की संख्या बढ़ती जा रही थी और मजदूरों की मांग बढ़ रही थी, लेकिन रोजगार चाहने वालों की संख्या रोजगारों के मुकाबले हमेशा ज्यादा रहती थी।

7. औद्योगिकीकरण के फलस्वरूप खेती करने के तरीके कैसे बदले? औद्योगिक क्रांति के दौरान प्रचलन में आए यातायात और संचार से जुड़े तीन महत्वपूर्ण आविष्कारों के नाम भी बताइए।

उत्तर :

खेती करने के तरीकों में बदलाव-

1. हैरो मशीन, यांत्रिक ड्रिल, ट्रैक्टर, हारवेस्टर (Harvester) इत्यादि नई मशीनों से कृषि की जाने लगी।
2. विस्तृत (extensive) कृषि की जगह गहन (intensive) कृषि ने ले ली।

यातायात और संचार के क्षेत्र में तीन महत्वपूर्ण आविष्कार-

1. **यातायात-**
 - (a) सड़क निर्माण की नई विधि (स्काटलैंड के मैकेडम इंजीनियर द्वारा),
 - (b) ब्रिज वाटर नहर (ब्रिडले इंजीनियर-1761),
 - (c) वाष्पचालित नाव (राबर्ट फुल्टन-1803),
 - (d) वाष्पचालित इंजन (जार्ज स्टीवेंसन-1814),
 - (e) पेट्रोल इंजन (1880)।
2. **संचार-**
 - (a) पेनी पोस्टेज वाली डाक व्यवस्था (1840),
 - (b) टेलीविजन प्रणाली (सैमुअल मोर्स-1844),
 - (c) तार प्रेषण की बिल लाइनें (1866 अमेरिका),
 - (d) टेलीफोन का आविष्कार (ग्राहम बेल, 1876)।

8. औद्योगिकीकरण के लिए कौन-कौन सी परिस्थितियाँ बहुत अनुकूल हैं?

उत्तर :

1. पूँजी (Capital)- देश में पूँजी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होनी चाहिए।
2. खनिज संपत्ति (Natural Resources)- देश में लोहा और कोयला जैसे प्राकृतिक साधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध

होने चाहिए।

3. कच्चा माल (Raw material)- देश में कच्चा माल जैसे-कपास, जूट और गन्ना आदि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होने चाहिए।
4. बाजार या मंडियाँ (Markets)- कारखानों में बने हुए माल की बिक्री के लिए देशी व विदेशी मंडियाँ होनी चाहिए।
5. शक्ति के साधन (Power Resources)- बिजली, पेट्रोलियम एवं कोयला आदि शक्ति के साधनों की कमी नहीं होनी चाहिए।
6. यातायात के साधन (Transportation)- देश में पक्की सड़कें, रेलें, जलयान तथा वायुयान होने चाहिए ताकि माल को आसानी से लाया व ले जाया जा सके।
7. श्रम (Labour)- देश में कुशल मजदूर पर्याप्त संख्या में और उचित मजदूरी पर काम करने के लिए तैयार हों।
8. अनुकूल राजनैतिक व्यवस्था (Politically favourable)- देश में शासन पद्धति एवं राजनैतिक व्यवस्था इस प्रकार की होनी चाहिए कि वह उद्योग-धंधों को प्रोत्साहन व संरक्षण दे सके।
9. प्रशिक्षण एवं अनुसंधान की व्यवस्था (Training and research facilities)- तकनीक तथा विज्ञान की नई-नई पद्धतियों को सिखाने की व्यवस्था होनी चाहिए।
10. अनुकूल जलवायु (Favourable Climate)- देश में अनुकूल जलवायु होनी चाहिए जिससे श्रमिक कठोर मेहनत करने पर भी कम-से-कम थकान महसूस करें।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

9. वाष्प इंजन की शक्ति ने इंग्लैंड में औद्योगिकीकरण का विकास करने में क्या योगदान दिया?

उत्तर :

वाष्प इंजन की शक्ति के उपयोग से इंग्लैंड में औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया तेजी से फैलती चली गयी। औद्योगिकीकरण के प्रचार-प्रसार में इसका योगदान इस तरह रहा-

1. सर्वप्रथम 1712 में न्यूकॉमेन ने खानों (कोयला आदि) से पानी निकालने के लिए वाष्प इंजन का आविष्कार किया। इससे खनन उद्योग में बड़ी मदद मिली। ज्यादा लोहे या कोयले की खुदाई से कच्चा माल ज्यादा मिला तथा लौह-इस्पात उद्योग की गति बढ़ गई।
2. 1769 में जेम्स वाट ने वाष्प शक्ति को और अधिक उपयोगी बनाकर औद्योगिक क्षेत्र में वाष्प शक्ति के व्यापक उपयोग का मार्ग प्रशस्त कर दिया।
3. 1814 में वाष्प शक्ति चालित रेल इंजन बनाकर यातायात के क्षेत्र में स्टीफेन्सन ने क्रांति ला दी। अब मानव एवं माल का आवागमन बहुत ही सस्ता, शीघ्रगामी तथा सुविधाजनक हो गया।
4. इसी दौरान 1807 में एक अमेरिकी राबर्ट फुल्टन ने वाष्प शक्ति का प्रयोग नौका चालन में करते हुए प्रथम

वाष्पचालित नौका बनाई जिसके कारण वाष्प शक्ति से चलने वाले विशाल जहाजों (जलयानों) का निर्माण संभव हुआ और समुद्र पार का यातायात सस्ता एवं शीघ्रगामी हो गया।

10. जॉबर (Jobber) किसे कहते थे? उसके कार्यों का उल्लेख करें।

उत्तर :

मिलों की संख्या बढ़ने के साथ मजदूरों की मांग बढ़ रही थी और रोजगार चाहने वालों की संख्या रोजगारों के मुकाबले हमेशा अधिक रहने के कारण नौकरी पाना कठिन था। मिलों में प्रवेश भी निषिद्ध था। उद्योगपति नए मजदूरों की भर्ती के लिए प्रायः एक जॉबर रखते थे। जॉबर प्रायः कोई पुराना और विश्वस्त कर्मचारी होता था। वह अपने गांव से लोगों को लाता था, उन्हें काम का भरोसा देता था, उन्हें शहर में बसने के लिए सहायता करता था और मुसीबत में आर्थिक सहायता भी करता था। इस प्रकार जॉबर शक्तिशाली और मजबूत व्यक्ति बन गया था। बाद में जॉबर मदद के बदले पैसे व उपहार मांगने लगे और मजदूरों के जीवन को नियंत्रित करने लगे।

11. 19वीं शताब्दी में ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीय व्यापारियों पर लगाए गए किन्हीं तीन प्रतिबंधों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :

1. भारतीय व्यावसायियों के लिए वह सिकुड़ती गई जिसमें वे कार्य कर सकते थे।
2. उन्हें अपना तैयार माल यूरोप में बेचने से रोक दिया गया।
3. वे मुख्य रूप से कच्चे माल और अनाज, कपड़े, कपास, अफीम, गेहूँ और नील का ही निर्यात कर सकते थे जिनकी अंग्रेजों को जरूरत थी।
4. धीरे-धीरे उन्हें जहाजरानी व्यवसाय से भी बाहर धकेल दिया गया।

12. यूरोप के नए सौदागरों को औद्योगिक क्रांति से पहले शहरों में अपने उद्योग लगाने में जिन समस्याओं का सामना करना पड़ा—ऐसी तीन प्रमुख समस्याओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

1. शहरों में हस्तशिल्प और व्यापार संघ बहुत शक्तिशाली थे। वे नए सौदागरों को उत्पादन कार्य शुरू नहीं करने देते थे।
2. ये उत्पादकों के संघ थे जो कारीगरों को प्रशिक्षण देते थे। उत्पादन पर नियंत्रण रखते थे। प्रतिस्पर्धा को एक सीमा तक नियंत्रित करते थे तथा उद्योग या व्यापार में नए लोगों के आने पर रोक लगाते थे।
3. इन उत्पादन संघों ने यूरोप के देशों की सरकारों के उत्पाद विशेष के उत्पादन और व्यापार के मामले में विधिक एकाधिकारिता प्राप्त की थी। इन कारणों से किसी नए सौदागर को नगरों में उत्पादन इकाइयाँ लगाना लगभग असंभव था।

13. ब्रिटेन में प्रौद्योगिकीय बदलावों की गति धीमी थी। इसके लिए तीन कारण लिखिए।

उत्तर :

1. नयी तकनीक महंगी थी जिस कारण सौदागर व व्यापारी उनके इस्तेमाल के सवाल पर फूँक-फूँक कर कदम बढ़ाते थे। उनमें से कुछ नई तकनीक पर पूँजी निवेश करने से डरते थे, क्योंकि फर्म में काम करने वाले श्रमिक अनपढ़ अथवा कम पढ़े-लिखे थे।
2. मशीनें अक्सर खराब हो जाती थीं और उनकी मरम्मत पर काफी खर्चा आता था। आरंभिक अवस्था में नई मशीनों को प्रयोग करने की जानकारी कम थी, जिसके कारण अधिकांश मशीनें खराब हो जाती थीं।
3. वे उतनी अच्छी भी नहीं थी। फैक्ट्री मशीनों की प्रयोग विधि से अवगत नहीं थी। ऐसी दशा में मशीनों से उत्तम उत्पादन नहीं करवाया जा सकता था।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

14. 19वीं सदी के मजदूरों के जीवन का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

उस समय के मजदूरों की दशा निम्नलिखित प्रकार से थी—

1. **काम के लिए अथक प्रयत्न करना—** श्रमिकों की संख्या ज्यादा होने के कारण काम आसानी से नहीं मिलता था। साधारणतया जान-पहचान या सामाजिक संपर्क या दोस्ती या किसी निकटतम संबंधी के माध्यम से ही नौकरी मिलने की संभावना होती थी अन्यथा कई बार कई सप्ताह तक इंतजार करना पड़ता था।
2. **रैन-बसेरों में रहना—** बेरोजगार मजदूरों को पुलों के नीचे या रैनबसेरों में रहना पड़ता था। आश्रयस्थल गरीब लोगों के लिए कानून आयुक्त की देखरेख में चलाए जाते थे। इनमें हर एक व्यक्ति की डॉक्टरी जाँच करके यह पता लगाया जाता था कि व्यक्ति बीमार तो नहीं है, उनका शरीर पूरी तरह साफ है या नहीं और उनके कपड़े मैले तो नहीं हैं। उन्हें कठोर परिश्रम भी करना पड़ता था।
3. **अस्थायी काम—** बहुत सारे उद्योगों में मौसमी काम के कारण कामगारों को बीच-बीच में खाली बैठना पड़ता था। कई लोग वापिस गाँव चले जाते थे और कुछ शहरों में छोटा-मोटा काम ढूँढ़ते थे। इस प्रकार उनकी स्थिति शोचनीय रहती थी।

15. 18वीं शताब्दी में हुए आविष्कारों का उत्पादन प्रक्रिया पर प्रभाव व लाभों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

18वीं शताब्दी में हुए आविष्कारों का उत्पादन प्रक्रिया पर प्रभाव व लाभ निम्नलिखित थे—

1. प्रति मजदूर उत्पादन में वृद्धि हुई।
2. वस्त्र उद्योग में पहले से ज्यादा मजबूत धागों व रेशों का उत्पादन होने लगा।

3. रिचर्ड आर्कराइट द्वारा सूती कपड़ा मिल की रूपरेखा बनाने के पश्चात् मशीनों को कारखाने में लगाया जा सकता था।
 4. कारखाने में सारी प्रक्रियाएँ एक ही छत के नीचे और एक मालिक के हाथों में आ गई थीं।
 5. अब उत्पादन प्रक्रिया पर निगरानी, गुणवत्ता का ध्यान रखना और मजदूरों पर नजर रखना संभव हो गया था।
- 16.** उन तरीकों को तीन बिंदुओं में स्पष्ट कीजिए जिनकी सहायता से ईस्ट इंडिया कंपनी ने निर्यात के लिये वस्त्रों की नियमित आपूर्ति को सुनिश्चित किया।

अथवा

ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीय बुनकरों से सूती और रेशमी वस्तुओं की नियमित आपूर्ति पर किस प्रकार कब्जा जमा लिया? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

1. ईस्ट इंडिया कंपनी ने कपड़े के व्यापार से जुड़े हुए व्यापारियों तथा दलालों को धीरे-धीरे खत्म करना शुरू कर दिया। इसने बुनकरों पर अपेक्षाकृत अधिक प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित किया।
 2. कंपनी ने वेतनभोगी कर्मचारी नियुक्त किये जिन्हें गुमाश्ता कहा जाता था। ये लोग कंपनी के बुनकरों पर निगरानी रखते थे, माल इकट्ठा करते थे तथा कपड़ों की गुणवत्ता जांचने का कार्य करते थे।
 3. कंपनी ने बुनकरों को अपने विरोधियों के साथ सौदा करने पर रोक लगा दी इसके लिये उसने बुनकरों को अग्रिम राशि दी। बुनकरों को वस्तुओं के उत्पादन हेतु कच्चे माल की खरीद के लिये ऋण भी उपलब्ध कराये।
- 17.** 19वीं शताब्दी में लोगों द्वारा नई वस्तुएँ खरीदने के लिए किस प्रकार के प्रयास किए गए?

उत्तर :

नए उपभोक्ता बनाने के लिए व्यापारियों और उद्योगपतियों ने निम्नलिखित तरीके अपनाए-

1. **विज्ञापनों द्वारा-** विज्ञापन विभिन्न उत्पादों को जरूरी और वांछनीय बना देते हैं। वे लोगों की सोच बदल देते हैं और नयी जरूरतें पैदा कर देते हैं। इसीलिए औद्योगीकरण के प्रारंभ से ही विज्ञापनों ने विभिन्न उत्पादों के बाजार को फैलाने में और एक नयी उपभोक्ता संस्कृति रचने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
2. **लेबलों का प्रयोग-** वस्तु पर लेबल लगाकर कंपनी का नाम व उत्पादन की जगह का उल्लेख किया जाता था। इसका खरीददार पर गहरा प्रभाव पड़ता था। अगर कपड़ा मैनचेस्टर का निर्मित होता तो खरीददार बिना किसी डर के खरीद लेता था। लेबलों पर तस्वीरें बनाकर लोगों को आकर्षित किया जाता था।
3. **कैलेंडरों का प्रयोग-** कैलेंडरों द्वारा अशिक्षित व्यक्तियों

को प्रभावित किया जाता था। इन कैलेंडरों का प्रयोग लोग घरों, दुकानों, दफ्तरों आदि में करते थे। प्रतिदिन देखने के परिणामस्वरूप उनमें उस वस्तु को प्रयोग करने की उत्सुकता व लालसा पैदा होती थी। इन कैलेंडरों को आकर्षक बनाने के लिए महत्वपूर्ण व्यक्तियों, सम्राटों आदि की तस्वीरों का प्रयोग किया जाता था।

- 18.** उन आविष्कारों का संक्षेप में वर्णन कीजिए, जिनसे कपड़ा उद्योग का विकास हुआ-

उत्तर :

कपड़ा उद्योग का विकास करने वाले और उसमें क्रांति लाने वाले विभिन्न आविष्कार निम्नलिखित थे-

1. **स्पिनिंग जेनी (Spinning Jenny)-** 1764 ई. में **हारग्रीव्स** ने स्पिनिंग जेनी का आविष्कार किया जिससे सूत तेजी से काता जाने लगा।
2. **फ्लाईंग शटल (Flying Shuttle)-** फ्लाईंग शटल का आविष्कार **जॉन के.** ने किया जिससे कपड़ा तेजी से बुना जाने लगा।
3. **वाटर फ्रेम (Water Frame)-** **आर्कराइट** ने हारग्रीव्स के चरखे में कुछ ऐसे परिवर्तन किये जिससे इसे पानी की शक्ति से चलाना संभव हो गया। इस नये चरखे का नाम **वाटर फ्रेम** रखा गया।
4. **म्यूल (Mule)-** **क्राम्पटन** ने **म्यूल** नामक एक ऐसी मशीन का आविष्कार किया जिसमें हारग्रीव्स और आर्कराइट दोनों की मशीनों के लाभ मिलने लगे।
5. **पावरलूम (Powerloom)-** **कार्टराइट** ने **पावरलूम** का आविष्कार किया। यह मशीन भाप से चलती थी जिसमें बड़ी तेजी से कपड़ा बुना जा सकता था।
6. **जिन (Jin)-** **एलिहटन** नामक एक अमेरिकी व्यक्ति ने रुई और बिनौले को अलग करने की मशीन का आविष्कार किया। यह मशीन हाथ की अपेक्षा तीन सौ गुना रुई तैयार करती थी। इस मशीन का नाम **जिन** रखा गया।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

- 19.** 18वीं सदी में नए आविष्कारों की शृंखला ने सूती वस्त्र उद्योग की उत्पादन प्रक्रिया के प्रत्येक चरण में कुशलता को किस प्रकार बढ़ाया? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

18वीं शताब्दी में उत्पादन के क्षेत्र में कई आविष्कार हुए जिससे इस प्रक्रिया में प्रत्येक स्तर में कुशलता बढ़ गई विशेषतया सूती वस्त्र उद्योग में।

1. इन आविष्कारों से प्रत्येक कारीगर की उत्पादन क्षमता बढ़ गई। अब प्रत्येक कारीगर अधिक उत्पादन करने में सक्षम हुआ। इससे धागे और यार्न को अधिक मजबूत बनाने में सहायता प्राप्त हुई।
2. इस समय सूती वस्त्र फैक्ट्रियाँ या मिलें सामने आईं। इस कारण सूती कपड़े का उत्पादन घरों से निकलकर मिलों

में चला गया।

3. इन आविष्कारों के कारण महँगी मशीनें खरीदी गईं तथा उन्हें एक ही छत तथा प्रबंधन के नीचे स्थापित किया गया। इससे उत्पादन की प्रक्रिया, चीजों की गुणवत्ता तथा श्रमिकों पर ठीक प्रकार से निगरानी रखने में सहायता मिली। मिलों के आविष्कार के बिना गाँवों में यह सब संभव नहीं था।

20. ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीय बुनकरों से सूती और रेशमी वस्तुओं की नियमित आपूर्ति पर किस प्रकार कब्जा जमा लिया? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

1. ईस्ट इंडिया कंपनी ने कपड़े के व्यापार से जुड़े हुए व्यापारियों तथा दलालों को धीरे-धीरे खत्म करना शुरू कर दिया। इसने बुनकरों पर अपेक्षाकृत अधिक प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित किया।
2. कंपनी ने वेतनभोगी कर्मचारी नियुक्त किये जिन्हें गुमाश्ता कहा जाता था। ये लोग कंपनी के बुनकरों पर निगरानी रखते थे, माल इकट्ठा करते थे तथा कपड़ों की गुणवत्ता जाँचने का कार्य करते थे।
3. कंपनी ने बुनकरों को अपने विरोधियों के साथ सौदा करने पर रोक लगा दी। इसके लिए उसने बुनकरों को अग्रिम राशि दी। बुनकरों को वस्तुओं के उत्पादन हेतु कच्चे माल की खरीद के लिये ऋण भी उपलब्ध कराये।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

21. इतिहासकार इस बात को क्यों मानने लगे हैं कि उन्नीसवीं सदी के मध्य का औसत मजदूर मशीनों पर काम करने वाला नहीं बल्कि परम्परागत कारीगर था?

उत्तर :

1. बाजार में अक्सर बारीक डिज़ाइन और खास आकारों वाली चीजों की काफी माँग रहती थी। उदाहरण के लिए, ब्रिटेन में उन्नीसवीं सदी के मध्य में 500 तरह के हथौड़े और 45 तरह की कुल्हाड़ियाँ बनाई जा रही थीं। इन्हें बनाने के लिए यांत्रिक प्रौद्योगिकी की ही नहीं, बल्कि इंसानी निपुणता की भी जरूरत थी।
2. उच्च वर्ग के लोग, कुलीन और पूंजीपति वर्ग, हाथों से बनी चीजों को तरजीह देते थे। हाथ से बनी चीजों को परिष्कार और सुरुचि का प्रतीक माना जाता था।
3. हाथों से बनी चीजों की फिनिश अच्छी होती थी, उनको एक-एक करके बनाया जाता था और उनका डिज़ाइन अच्छा होता था।

22. कंपनी काल में भारतीय बुनकरों और कंपनी एजेंटों के मध्य टकराव हुए। इसके क्या कारण थे? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

1. नये गुमाश्ता बाहर के लोग थे। उनका गाँवों से पुराना

सामाजिक संबंध नहीं था। वे दंभपूर्ण व्यवहार करते थे। सिपाहियों व चपरासियों को लेकर आते थे और माल समय पर तैयार न होने की स्थिति में बुनकरों को सजा देते थे। सजा के तौर पर बुनकरों को अक्सर पीटा जाता था और कोड़े बरसाये जाते थे।

2. कंपनी के साथ भारतीय ग्रामीण बुनकर मोलभाव नहीं कर सकते थे और न किसी और को माल बेच सकते थे। उन्हें कंपनी से जो कीमत मिलती थी वह बहुत कम थी पर कर्जों की वजह से वे कंपनी से बँधे हुए थे।
3. कंपनी के अत्याचारों के कारण ही कर्नाटक और बंगाल में बहुत सारे स्थानों के बुनकर गाँव छोड़कर चले गये। वे अपने रिश्तेदारों के यहाँ किसी और गाँव में करघा लगा लेते थे।
4. कई स्थानों पर गाँव के व्यापारियों के साथ मिलकर बुनकरों ने ईस्ट इंडिया कंपनी का जबरदस्त विरोध किया।
5. कुछ समय बाद बुनकर कर्ज लौटाने से इंकार करने लगे। उन्होंने करघे बंद कर दिए और खेतों में मजदूरी करने लगे।

23. उन्नीसवीं सदी के आते-आते भारतीय कपास बुनकरों के समक्ष उपस्थित किन्हीं दो समस्याओं को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

19वीं सदी के मध्य में भारत के जुलाहों को किन दो समस्याओं का सामना करना पड़ा था?

उत्तर :

लेखक स्थानीय बुनकरों के सामने उत्पन्न समस्याओं की चर्चा कर रहा है जो ब्रिटिश फैक्ट्रियों में मशीनों द्वारा उत्पादित सस्ती वस्तुओं के भारतीय बाजारों में आयात के कारण हैं।

1. भारतीय वस्त्रों के अंतर्राष्ट्रीय बाजारों के पतन तथा स्थानीय बाजारों के सिमट जाने के कारण बुनकरों को अपने उत्पादों को बेचने में समस्याओं का सामना करना पड़ा।
2. उन्हें ऊँची कीमतों पर कच्चा कपास खरीदने के लिये मजबूर किया गया। वे अपने उत्पादों को ऊँची कीमतों पर बेच नहीं सकते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि बुनकर अपने पारंपरिक काम को छोड़ने लगे तथा दूसरी नौकरियों की खोज में एक जगह से दूसरी जगह भटकने लगे।

24. भारत में मैनचेस्टर का माल आने पर बुनकरों के समक्ष कुछ समस्याएँ उत्पन्न हुईं। वे समस्याएँ क्या थीं? संक्षेप में चर्चा कीजिए।

उत्तर :

1. **माँग में गिरावट-** इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के गतिशील होने के उपरांत ब्रिटेन की सरकार और उद्योगपतियों का कंपनी पर दबाव पड़ा कि वे भारत में ब्रिटेन के बने हुए सूती वस्त्रों की बिक्री बढ़ायें। धीरे-धीरे भारत में मैनचेस्टर

की मिलों में बने कपड़े आने लगे। इससे सूती वस्त्रों का निर्यात और घरेलू बाजार की बिक्री बहुत घट गई।

2. **बेरोजगारी**— मशीनों से बनाए गए वस्त्र भारतीय बुनकरों द्वारा बनाए गए वस्त्रों से बहुत सस्ते थे। इसलिए भारत का सूती वस्त्र निर्यात प्रभावित हुआ जिससे बुनकर, कारीगर और श्रमिक बेरोजगार हो गए।

3. **कपास का निर्यात इंग्लैंड को होने से वस्त्र निर्माण प्रभावित**— गृह-युद्ध के पश्चात् जब अमेरिका से कपास का निर्यात इंग्लैंड को बंद हो गया तो ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत से कपास का निर्यात इंग्लैंड को करना आरंभ कर दिया। कच्चे माल के अभाव में भारत का वस्त्र निर्यात बंद होने की स्थिति में पहुँच गया।

4. **भारत में ही बड़े उद्योगों की स्थापना**— 19वीं सदी के अंतिम वर्षों में बुनकरों और कारीगरों के सामने एक और समस्या आ गई। अब भारतीय कारखानों में उत्पादन होने लगा और बाजार मशीनों की बनी चीजों से पट गया था। इस तरह मिलों की भारत में स्थापना से भी बुनकरों के हित प्रभावित हुए।

25. भारत के औद्योगिक विकास पर प्रथम विश्व युद्ध के क्या प्रभाव पड़े? तीन बिंदुओं में स्पष्ट कीजिए।

अथवा

भारतीय उद्योग पर प्रथम विश्व युद्ध के प्रभाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

1. भारत में मैनचेस्टर में उत्पादित वस्तुओं के आयात में कमी आई। जल्दी ही बाजार को भारतीय उद्योगपतियों द्वारा उत्पादित वस्तुओं से भर दिया गया।
2. युद्ध आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये भारतीय उद्योगपतियों द्वारा नई-नई फैक्ट्रियाँ स्थापित की गईं। उन्होंने पुरानी पड़ चुकी फैक्ट्रियों को कई-कई शिफ्टों में चलाना शुरू कर दिया।
3. वस्तुओं की माँग में वृद्धि के कारण मजदूरों की माँग में भी वृद्धि हुई। अतः रोजगार के बड़े-बड़े अवसर पैदा होने लगे तथा औद्योगिक उत्पादन तेजी से बढ़ने लगा।

26. प्रथम विश्व युद्ध के बाद भारतीय बाजार में ब्रिटेन को पहले वाली हैसियत कभी हासिल नहीं हो पाई। व्याख्या करें।

अथवा

ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था पर प्रथम विश्व युद्ध के प्रभाव का उल्लेख करें।

उत्तर :

1. पहले विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश कारखाने सेना की जरूरतों को पूरा करने के लिए युद्ध सम्बन्धी सामान बनाने में व्यस्त थे। इसलिए भारत में मैनचेस्टर के माल का आयात कम हो गया।

2. युद्ध के बाद भारतीय बाजार में मैनचेस्टर को पहले वाली हैसियत कभी हासिल नहीं हो पाई। आधुनिकीकरण न कर पाने और अमेरिका, जर्मनी व जापान के मुकाबले कमजोर पड़ जाने के कारण ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था चरमरा गई थी। कपास का उत्पादन बहुत कम रह गया था और ब्रिटेन से होने वाले सूती कपड़े के निर्यात में जबरदस्त गिरावट आई।

3. उपनिवेशों में विदेशी उत्पादों को हटाकर स्थानीय उद्योगपतियों ने घरेलू बाजारों पर कब्जा कर लिया और धीरे-धीरे अपनी स्थिति मजबूत बना ली।

27. 19वीं शताब्दी में निर्माताओं द्वारा भारत में अपने बाजार में विस्तार के लिए उठाए गए किन्हीं तीन तरीकों की विवेचना कीजिए।

उत्तर :

19वीं शताब्दी के निर्माताओं द्वारा भारत में अपने विस्तार के लिए निम्नलिखित तरीके अपनाए गए—

1. **कंपनी के लेबल**— उत्पादित माल पर बड़े-बड़े लेबल लगाये जाते थे जो माल की गुणवत्ता को व्यक्त करते थे।
2. **देवी-देवताओं के चित्र**— लेबलों पर भारतीय देवताओं के चित्र होते थे। देवी-देवताओं के चित्रों के बहाने निर्माता यह दिखाने का प्रयास करते थे कि ईश्वर भी चाहता है कि लोग उस वस्तु को खरीदें। कृष्ण या सरस्वती के चित्र देखकर भारतीयों को विदेशों में बनी वस्तु भी जानी-पहचानी सी लगती थी।
3. **कैलेंडर**— माल के विज्ञापन के लिए निर्माताओं ने सुंदर चित्रों वाले कैलेंडर भी छपवाये। ये कैलेंडर घरों तथा दफ्तरों में सारा साल लटकते रहते थे तथा माल को खरीदने की प्रेरणा देते रहते थे।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

28. 20वीं शताब्दी के पहले दशक में भारत में औद्योगिक क्षेत्र में क्या-क्या बदलाव किए गए? व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

19वीं शताब्दी में अपने बाजार के विस्तार के लिये भारतीय निर्माताओं ने जो तीन मुख्य तरीके अपनाये वे निम्नलिखित हैं—

1. उन्होंने ब्रिटिश सरकार के अनुचित नियंत्रण का खूब विरोध किया और भारतीय वस्तुओं के संरक्षण के लिये आंदोलनकारी मार्ग अपनाया।
2. उन्होंने विज्ञापनों का सहारा लिया क्योंकि वे विभिन्न उत्पादों की आवश्यकता को जरूरी बना देते हैं
3. भारतीय निर्माताओं विशेषकर कपड़ा उद्योगपतियों ने मैनचेस्टर के उद्योगपतियों की भाँति अपने कपड़े के बंडलों पर आकर्षक लेबल लगाने शुरू कर दिये जो कपड़े की गुणवत्ता का प्रतीक बन गए। इससे खरीददारों को कपड़े के निर्माताओं, उनकी कंपनी तथा उनके निश्चित स्थान का

पता चल गया।

29. नये उपभोक्ता पैदा करने के लिए विज्ञापनों का क्या महत्व है? मैनेजमेंट के उद्योगपतियों ने भारत में अपना कपड़ा बेचने के लिए इसका किस तरह प्रयोग किया?

उत्तर :

मनुष्य मन की यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि ध्वनि, चित्र, संकेत, शब्द आदि की बार-बार आवृत्ति होने पर उसमें चीजों का स्वरूप अंकित हो जाता है और स्थान-विशेष पर पहुँचते ही उसकी जिज्ञासा उन चीजों को परखने, चखने, छूने और उनका उपभोग करने की बनती है। अखबारों, पत्रिकाओं, भित्ति-लेखन, पोस्टर, होर्डिंग आदि में उपभोक्ता वस्तुओं के नए आकार-प्रकार दिखाकर उपभोग की प्रवृत्ति को बढ़ाया जाता है। इससे व्यापार का विस्तार होता है।

मैनेजमेंट के उद्योगपतियों द्वारा विभाजन का प्रयोग-

1. कपड़े के बंडलों पर लेबल लगाना। लेबल का फायदा यह होता था कि खरीददारों को कंपनी का नाम व उत्पादन की जगह पता चल जाती थी।
2. लेबल ही चीजों की गुणवत्ता का प्रतीक भी था। जब किसी लेबल पर मोटे अक्षरों में **मेड इन मैनेजमेंट** लिखा दिखाई देता तो खरीददारों को कपड़ा खरीदने में किसी तरह का डर नहीं रहता था।
3. इन लेबलों में से भारतीय देवी-देवताओं के चित्र भी छाप देते थे ताकि लोग धर्म-भावना से प्रेरित होकर मैनेजमेंट का कपड़ा ही खरीदें।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. 20वीं सदी के दौरान भारत से वस्त्र निर्यात में कमी का एक लंबा दौर देखा गया। ऐसा क्यों हुआ? इसके प्रभावों के बारे में लिखिए।

अथवा

19वीं सदी के प्रारम्भ में भारतीय कपड़ा निर्यात बाजार क्यों ध्वस्त हुआ और स्थानीय बाजार क्यों सिकुड़ने लगा? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

1. ब्रिटेन में सूती वस्त्र उद्योग के विकास के साथ ही वहां स्थानीय व्यापारियों के कपास के आयात पर शुल्क लगाने की माँग शुरू कर दी। ईस्ट इंडिया कंपनी को भी ब्रिटिश उत्पादों को भारत में बेचने के लिये तैयार किया गया।
2. 1860 का दशक आते-आते हालात ऐसे हो गए कि भारत में बुनकरों को अच्छी गुणवत्ता वाली कच्ची कपास की पर्याप्त मात्रा में आपूर्ति में भी बाधा पहुँचने लगी।
3. उपरोक्त कारणों से, निर्यात बाजार गिर गया तथा स्थानीय बाजार भी सिमट गया। यह भारत में स्थानीय बुनकर

उद्योग के लिये घातक साबित हुआ।

2. 19वीं शताब्दी में ब्रिटेन में औद्योगीकरण की गति की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

ब्रिटेन में औद्योगीकरण की गति की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित थीं-

1. **प्रथम चरण के उद्योग-** प्रथम चरण में कपास उद्योग और सूती उद्योगों का विकास हुआ। 1840 के दशक तक कपास उद्योग सबसे बड़ा उद्योग बन चुका था। अगले दो दशकों में इंग्लैंड और उपनिवेशों में रेलवे के विस्तार के कारण लोहे और स्टील उद्योगों में उन्नति हुई। 1873 तक ब्रिटेन से लोहे और स्टील के निर्यात का मूल्य 7.7 करोड़ पाँड था। यह राशि इंग्लैंड के कपास निर्यात के मूल्य से दोगुनी थी।
2. **परंपरागत उद्योगों की स्थिति-** औद्योगीकरण परंपरागत उद्योगों को समाप्त नहीं कर सका। 19वीं शताब्दी के अंत में विकसित औद्योगिक क्षेत्र में मजदूरों की संख्या लगभग 20 प्रतिशत थी। अभी भी कपड़ा उद्योग में बड़े भाग का उत्पादन घरेलू इकाइयों में होता था।
3. **गैर-मशीनी क्षेत्रों में उन्नति-** खाद्य प्रसंस्करण, निर्माण, पॉटरी, काँच के काम, चर्म शोधन, फर्नीचर और औजारों के उत्पादन जैसे बहुत सारे गैर-मशीनी क्षेत्रों में जो तरक्की हो रही थी वह मुख्य रूप से साधारण और छोटे-छोटे आविष्कारों का ही परिणाम थी।
4. **नयी तकनीक का महँगा होना-** नयी तकनीक महँगी थी अतः उसका प्रयोग काफी सोच-विचार कर किया जाता था। उनकी मरम्मत भी महँगी थी। इसके अतिरिक्त इनकी विशेषता उनके निर्माताओं के कहे अनुसार नहीं थी। ऐसी परिस्थितियों में उनका प्रयोग धीमी गति से हो रहा था। जिससे औद्योगीकरण की गति तुलनात्मक रूप से धीमी रही। उदाहरण के तौर पर 19वीं सदी के प्रारंभ तक पूरे इंग्लैंड में भाप के सिर्फ 321 इंजन थे। इनमें से 80 इंजन सूती उद्योगों में, 9 ऊन उद्योगों में और बाकी खनन, नहर निर्माण और लौह कार्यों में प्रयोग हो रहे थे। इस प्रकार मजदूरों की उत्पादन क्षमता को कई गुना बढ़ाने की संभावना वाली सबसे शक्तिशाली प्रौद्योगिकी को अपनाने में भी उद्योगपति हिचकिचा रहे थे।
3. मशीन उद्योगों के युग से पहले अंतर्राष्ट्रीय कपड़ा बाजार में भारत की स्थिति क्या थी? वर्णन कीजिए।

उत्तर :

1. अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भारतीय कपड़े की काफी माँग थी क्योंकि भारत में पैदा होने वाला कपास महीन (बारीक) किस्म का था। आर्मीनियन और फारसी सौदागर पंजाब से अफगानिस्तान, पूर्वी फारस और मध्य एशिया के रास्ते यहाँ की चीजें लेकर जाते थे। यहाँ के बने महीन कपड़ों

- के थान ऊँटों की पीठ पर लाद कर पश्चिमोत्तर सीमा से पहाड़ी दर्रों और रेगिस्तानों के पार ले जाए जाते थे।
- मुख्य पूर्व औपनिवेशिक बंदरगाहों से फलता-फूलता समुद्री व्यापार चलता था। गुजरात के तट पर स्थित सूरत बंदरगाह के जरिए भारत खाड़ी और लाल सागर के बंदरगाहों से जुड़ा हुआ था। कोरोमंडल तट पर मछलीपटनम और बंगाल में हुगली के माध्यम से भी दक्षिणी-पूर्वी एशियाई बंदरगाहों के साथ खूब व्यापार चलता था।
 - भारतीय व्यापारी और बैंकर निर्यात व्यापार में निम्नलिखित प्रकार से सक्रिय थे-
 - (a) निर्यात व्यापार के नेटवर्क में कई भारतीय व्यापारी और बैंकर भाग लेते थे।
 - (b) वे उत्पादन में पैसा लगाते थे, वस्तुओं को लेकर जाते थे और निर्यातकों तक पहुँचाते थे।
 - (c) माल भेजने वाले आपूर्ति सौदागरों के माध्यम से बंदरगाह नगर देश के भीतरी क्षेत्रों से जुड़े हुए थे।
 - (d) ये आपूर्ति सौदागर बनुकरों को पेशगी देते थे, बनुकरों से तैयार कपड़ा खरीदते थे और उसे बंदरगाहों तक पहुँचाते थे।
 - भारत के प्रारंभिक उद्यमियों के कार्य, योगदान, उपलब्धियों आदि पर संक्षिप्त लेख लिखिए।

उत्तर :

भारत के प्रारंभिक उद्यमियों के कार्य, योगदान और उपलब्धियाँ-

- संयुक्त उद्यम (Joint Enterprises)**- अफीम के व्यापार से धन कमाने के बाद कुछ व्यवसायी भारत में औद्योगिक उद्यम स्थापित करना चाहते थे। बंगाल में द्वारकानाथ टैगोर ने चीन के साथ अफीम के व्यापार में खूब धन कमाया और वे उद्योगों में निवेश करने लगे। 1830-1840 के दशकों में उन्होंने 6 संयुक्त उद्यम स्थापित किए।
- पारसी, मारवाड़ी और बिड़ला उद्यमी**- पारसी व्यापार घराने (टाटा नाम से प्रसिद्ध) ने चीन और इंग्लैंड को कपास का निर्यात करके धन कमाया। कलकत्ता में देश की पहली जूट मिल लगाने वाले मारवाड़ी व्यवसायी सेठ हुकुमचंद ने चीन के साथ व्यापार किया था। यही काम प्रसिद्ध उद्योगपति जी. डी. बिरला के पिता और दादा ने भी किया।
- पूँजी संचय (Capital Formation)**- पूँजी इकट्ठा करने के लिए अन्य व्यापारिक नेटवर्कों का सहारा लिया गया। मद्रास के कुछ सौदागरों ने बर्मा (म्यांमार), मध्य-पूर्व और पूर्वी अफ्रीका के देशों के साथ भी कई वस्तुओं में व्यापार किया।
- कुछ वाणिज्यिक समूह भारत में ही व्यवसाय करते थे। वे एक जगह से दूसरी जगह माल पहुँचाकर और ब्याज पर

पूँजी ऋण उपलब्ध कराकर धन कमाते थे। जब उद्योगों में निवेश के अवसर मिले तो उनमें से बहुत से व्यापारियों ने कारखाने (फैक्ट्रियाँ) लगा लिए।

- यूरोपीय प्रबंधकीय एजेंसियों की भूमिकाएँ (Roles of European Management Agencies)**- पहले विश्व युद्ध तक यूरोपीय प्रबंधकीय एजेंसियाँ भारतीय उद्योगों के विशाल क्षेत्र का नियंत्रण करती थीं। इनमें बर्ड हीगलर्स एंड कंपनी, एंड्रयू यूल, और जार्जिन स्किनर एंड कंपनी सबसे बड़ी कंपनियाँ थीं। ये एजेंसियाँ पूँजी जुटाती थीं, संयुक्त उद्यम कंपनियाँ लगाती थीं और उनका प्रबंधन सँभालती थीं।

ज्यादातर मामलों में भारतीय वित्तपोषक (फाइनेंसर) पूँजी उपलब्ध कराते थे जबकि निवेश और व्यवसाय से संबंधित फैसले यूरोपीय एजेंसियाँ लेती थीं। यूरोप के व्यापारियों और उद्योगपतियों के अपने वाणिज्यिक परिसंघ थे जिनमें भारतीय व्यवसायियों को शामिल नहीं किया जाता था।

- औपनिवेशिक अवरोध (Colonial Hindrances)**- भारतीय व्यापार पर औपनिवेशिक शिकंजा कसता गया और भारतीय व्यवसायियों के लिए जगह सिकुड़ती गई। उन्हें अपना तैयार माल यूरोप में बेचने से रोक दिया गया। अब वे मुख्य रूप से कच्चे माल और कपास, अफीम, गेहूँ और नील का ही निर्यात कर सकते थे क्योंकि अंग्रेजों को इनकी जरूरत थी। धीरे-धीरे उन्हें जहाजरानी व्यवसाय से भी बाहर धकेल दिया गया।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

- भारत के आधुनिक उद्योगों में काम करने के लिए मजदूर कहाँ से आये? उनकी प्रारंभिक स्थिति और कठिनाइयों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :

मजदूरों की आपूर्ति-

- ब्रिटिश शासनकाल में 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में बड़े पैमाने के उद्योग या फैक्ट्रियाँ लगाई गईं। फैक्ट्रियों के विस्तार से मजदूरों की माँग बढ़ने लगी। 1901 में भारतीय फैक्ट्रियों में 584000 मजदूर काम करते थे। 1946 तक यह संख्या बढ़कर 2436000 हो चुकी थी।
- इन औद्योगिक क्षेत्रों के मजदूर आसपास के जिलों से आते थे। जिन किसानों और कारीगरों को गाँव में काम नहीं मिलता था वे औद्योगिक शहरों में काम ढूँढ़ने आ जाते थे। 1911 में मुंबई के सूती कपड़ा उद्योग के आधे से ज्यादा मजदूर रत्नागिरी जिले से आये थे। कानपुर की मिलों में काम करने वाले कानपुर जिले के गाँवों से आते थे।

स्थिति और कठिनाइयाँ-

- मिल मजदूर बीच-बीच में अपने गाँव जाते रहते थे। वे फसलों की कटाई व त्यौहारों के समय गाँव लौट जाते थे।

कालांतर में, जब नये कामों की खबर फैली तो दूर-दूर से भी लोग आने लगे। उदाहरण के लिए, संयुक्त प्रांत (उत्तर प्रदेश) के लोग मुंबई की कपड़ा मिलों और कलकत्ता की जूट मिलों में काम करने आने लगे।

2. समय के साथ फैक्ट्री मजदूरों की संख्या बढ़ने लगी लेकिन कुल औद्योगिक श्रम शक्ति में उनका अनुपात बहुत छोटा था।
3. मिलों की संख्या बढ़ती जा रही थी और मजदूरों की माँग भी बढ़ रही थी लेकिन उनकी पूर्ति माँग की तुलना में कई गुना अधिक रहने से उनका शोषण होता था।
4. उद्योगपति नये मजदूरों की भर्ती के लिए प्रायः एक जॉबर (Jobber) या काम दिलाने वाला दलाल रखते थे। जॉबर कोई पुराना और विश्वस्त कर्मचारी होता था। वह अपने गाँव से लोगों को लाता था, उन्हें काम का भरोसा देता था, उन्हें शहर में जमाने के लिए मदद देता था और मुसीबत में पैसे से भी मदद करता था। इस प्रकार जॉबर एक ताकतवर और मजबूत व्यक्ति बन गया था। बाद में जॉबर इस मदद के बदले पैसे व तोहफों की माँग करने लगे और मजदूरों को परेशान करने लगे।
6. 19वीं शताब्दी के भारत में वस्तुओं की बिक्री बढ़ाने के लिए किस प्रकार के लेबलों का प्रयोग किया जाता था? 19वीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में इस क्षेत्र में क्या परिवर्तन हुआ?

उत्तर :

विभिन्न प्रकार के लेबल तथा विपणन व्यवस्था (Various Types of Labels and Marketing System)–

1. लेबलों पर सिर्फ शब्द और अक्षर ही नहीं होते थे, उन पर तस्वीरें भी बनी होती थीं जो अक्सर बहुत सुंदर होती थीं। अगर हम भारत एवं ब्रिटेन के पुराने लेबलों को देखें तो उनके निर्माताओं की सोच, उनके हिसाब-किताब और लोगों को आकर्षित करने के उनके तरीकों का अनुमान लगा सकते हैं।
2. इन लेबलों पर प्रायः भारतीय देवी-देवताओं की तस्वीरें होती थीं। देवी-देवताओं की तस्वीर के बहाने निर्माता ये दिखाने की कोशिश करते थे कि ईश्वर भी चाहता है कि लोग उस चीज को खरीदें।
3. उदाहरणार्थ कृष्ण या सरस्वती की तस्वीरों का फायदा यह होता था कि विदेशों में बनी चीज भी भारतीयों को जानी-पहचानी सी लगती थी।
4. देवताओं की तस्वीरों की तरह महत्वपूर्ण व्यक्तियों, सम्राटों, नरेशों व नवाबों की तस्वीरों का भी विज्ञापनों व कैलेंडरों में खूब प्रयोग होता था। इनका संदेश अक्सर यह होता था– अगर आप इस शाही व्यक्ति का सम्मान करते हैं तो इस उत्पाद का सम्मान भी कीजिए; अगर इस उत्पाद को राजा इस्तेमाल करते हैं या उसे शाही निर्देश से बनाया गया है तो उसकी गुणवत्ता पर सवाल खड़ा नहीं

किया जा सकता।

5. उन्नीसवीं सदी के आखिर में निर्माता अपने उत्पादों को बेचने के लिए कैलेंडर छपवाने लगे थे। अखबारों और पत्रिकाओं को तो पढ़े-लिखे लोग ही समझ सकते थे लेकिन कैलेंडर उनको भी समझ में आ जाते थे जो पढ़ नहीं सकते थे।
6. चाय की दुकानों, दफ्तरों व मध्यवर्गीय घरों में ये कैलेंडर लटके रहते थे। जो इन कैलेंडरों को लगाते थे वे विज्ञापन को भी हर रोज, पूरे साल देखते थे। इन कैलेंडरों में भी नये उत्पादों के चित्र के साथ देवताओं की तस्वीर होती थी।
7. **राष्ट्रवादी संदेश (Nationalist Message)**– जब भारतीय निर्माताओं ने विज्ञापन बनाये तो उनमें राष्ट्रवादी संदेश साफ दिखाई देता था। इनका आशय यह था कि अगर आप राष्ट्र की परवाह करते हैं तो उन चीजों को खरीदिए जिन्हें भारतीयों ने बनाया है। ये विज्ञापन स्वदेशी आंदोलन के संदेशवाहक बन गए थे।
8. **निष्कर्ष (Conclusion)**– उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि औद्योगिकरण के युग में कई तरह की प्रौद्योगिकी अस्तित्व में आई। फैक्ट्रियों का उदय हुआ और नई औद्योगिक श्रमशक्ति अस्तित्व में आई।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

7. उन्नीसवीं सदी के यूरोप में कुछ उद्योगपति मशीनों के बजाय हाथ से काम करने वाले श्रमिकों को प्राथमिकता क्यों देते थे?

अथवा

विक्टोरिया कालीन उद्योगपति इंग्लैंड में मशीनों का प्रयोग करने के इच्छुक क्यों नहीं थे? कोई चार कारण बताइए।

अथवा

19वीं शताब्दी के कारखानों में तकनीकी परिवर्तन धीरे-धीरे क्यों हुए हैं? कोई चार तर्क दीजिए

उत्तर :

उन्नीसवीं शताब्दी में यूरोपीय उद्योगपति मशीनों की बजाय मानव श्रम को प्राथमिकता देते थे, क्योंकि–

1. उद्योगपतियों को मानव श्रम की कमी या वेतन के मद में भारी लागत की कोई परेशानी नहीं थी।
2. बहुत सारे उद्योगों में श्रमिकों की माँग मौसमी आधार पर घटती-बढ़ती रहती थी। गैसघरों और शराब खानों में जाड़ों के दौरान खासा काम रहता था। इसलिए इस समय श्रमिकों की अत्यधिक जरूरत होती थी।
3. क्रिसमस के समय बुक बाइंडरों और प्रिंटरों को भी दिसम्बर से पहले अतिरिक्त मजदूरों की दरकार होती थी। जिन उद्योगों में मौसम के साथ उत्पादन घटता-बढ़ता रहता था, वहाँ उद्योगपति मशीनों की बजाय मजदूरों को ही काम पर रखना पसंद करते थे।

4. बहुत सारे उत्पाद केवल हाथ से ही तैयार किए जा सकते थे।
5. विक्टोरिया कालीन ब्रिटेन में उच्च वर्ग के लोग-कुलीन और पूंजीपति वर्ग हाथों से बनी चीजों को तरजीह देते थे।
8. उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में भारत के कपड़ा निर्यात में गिरावट आने के क्या कारण थे? उसके क्या परिणाम हुए?

उत्तर :

कारण- भारत के कपड़ा निर्यात में कमी या गिरावट के निम्नलिखित कारण थे-

1. ब्रिटिश सरकार द्वारा आयातित कपड़े पर आयात शुल्क लगा दिया गया। इंग्लैंड में कपास उद्योग विकसित होने के पश्चात् उद्योगपतियों ने सरकार द्वारा आयातित कपड़े पर आयात शुल्क लगाने के लिए दबाव डाला ताकि उनका कपड़ा इंग्लैंड में बिना प्रतिस्पर्धा के बिक सके।
2. ईस्ट इंडिया कंपनी पर भारत में ब्रिटिश कपड़ा बेचने का भी दबाव डाला गया।

परिणाम-

1. 1850 तक सूती कपड़े का आयात भारतीय आयात का 31 प्रतिशत हो गया और 1870 में यह बढ़कर 50 प्रतिशत पहुंच गया था।
2. भारतीय बुनकरों के लिए निर्यात बाजार समाप्त होने लगा तथा स्थानीय बाजार भी कम होने लगा क्योंकि वे इंग्लैंड के सस्ते और टिकाऊ कपड़े का मुकाबला नहीं कर सकते थे।
3. बुनकर क्षेत्रों में कमी तथा बेकारी में वृद्धि हुई।
4. 19वीं शताब्दी के अंत में भारतीय कारखानों में उत्पादन होने से बाजार मशीनी माल से भर गया। ऐसे में बुनकरों के द्वारा बनाया गया कपड़ा मशीनी कपड़े के समक्ष नहीं टिक पाया और बुनकर उद्योग को गहरा आघात पहुंचा।
5. 1860 के दशक में अच्छी कपास नहीं मिल रही थी क्योंकि अमेरिकी गृहयुद्ध के कारण अमेरिका से कपास की सप्लाई बंद होने से ब्रिटेन भारत से कपास मंगाने लगा। इससे कपास की कीमत में अत्यधिक वृद्धि हुई जिसके परिणामस्वरूप बुनकरों की आर्थिक दशा काफी खराब हो गई।
9. भारत में अंग्रेजी शासन ने आधुनिक उद्योगों के विकास में रुकावटें किस तरह खड़ी कीं? उनके विकास को रोका या धीमी गति पर ही चालू रखा?

उत्तर :

1. **विदेशी पूँजी एवं नियंत्रण :** विदेशी पूँजीपतियों ने भारत में उद्योग स्थापित किये। उन्हें कई प्रकार की सुविधाएँ सरकार की ओर से मिलीं। भारत में उन्हें कच्चा माल तथा मजदूर भी सस्ते मिलते थे। इन उद्योगों में नियंत्रण भी उन्हीं का था। इस स्थिति में भारतीय उद्योग स्थापित करना कठिन काम था। व्यापार की तरह उद्योगों में भी

अंग्रेजों ने एकाधिकार स्थापित कर लिया।

2. **आधुनिक उद्योगों की प्रगति की चाल का धीमा रहना :** भारतीय उद्योग विदेशी पूँजी के कारण दास बने रहे, इसलिए भारतीय उद्योगों का सर्वांगीण विकास न हो सका और उनकी गति धीमी रही। 20वीं सदी के चौथे दशक तक भारतीय औद्योगिक प्रगति सूती कपड़े, चीनी, सीमेंट तथा जूट और बागान तक ही सीमित रही। यूरोपीय देशों के मुकाबले यह प्रगति प्रायः नगण्य थी।
3. **सरकार की भेदभाव की नीति :** उद्योगों के प्रति सरकार का रवैया पक्षपातपूर्ण था। विदेशी उद्योगपतियों के माल पर कम भाड़ा तथा उत्पादन कर में छूट थी, परंतु स्थानीय उद्योगपतियों को उत्पादन पर अधिक कर देना पड़ता था। रेल भाड़े आदि में भी उन्हें किसी प्रकार की छूट नहीं मिलती थी।
4. **आधारभूत एवं भारी उद्योगों का अभाव :** हमें अपने उद्योगों को स्थापित करने के लिए विदेशी मशीनों तथा कल-पुर्जों पर निर्भर रहना पड़ा। भारी मशीनों को विदेशों से माँगने तथा विदेशी तकनीशियनों द्वारा ही उनकी मरम्मत कराने के कारण हम दूसरों पर निर्भर रहने लगे। देश में आधारभूत तथा भारी उद्योग न रहने के कारण हम औद्योगिक तरक्की न कर सके।
5. **औद्योगिक सुविधाओं की ओर उदासीनता :-** नए उद्योगों को प्रोत्साहित करने के लिए भारतीय उद्योगपतियों को न तो ऋण सुविधा प्राप्त थी और न ही बीमा सुविधा, जबकि विदेशी उद्योगपतियों को ये सारी सुविधाएँ प्राप्त थीं। संचार एवं यातायात के साधनों में सुधार पर भी सरकार का ध्यान न था। तकनीकी प्रशिक्षण के लिए केवल सात इंजीनियरिंग कॉलेज पूरे देश के लिए पर्याप्त न थे। मंडियों के विकास की ओर भी ध्यान नहीं दिया गया।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

NCERT पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

1. निम्नलिखित की व्याख्या करें-

1. ब्रिटेन की महिला कामगारों ने स्पिनिंग जेनी मशीनों पर हमले किए।
2. सत्रहवीं शताब्दी में यूरोपीय शहरों के सौदागर गाँवों में किसानों और कारीगरों से काम करवाने लगे।
3. सूरत बंदरगाह अठारहवीं सदी के अंत तक हाशिये पर पहुँच गया था।
4. ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में बुनकरों पर निगरानी रखने के लिए गुमाशतों को नियुक्त किया था।

उत्तर :

1. **ब्रिटेन की महिला कामगारों ने स्पिनिंग जेनी मशीनों पर हमले किए-** जेम्स हरग्रीव्स ने स्पिनिंग जेनी मशीन का आविष्कार 1764 ई. में किया था। स्पिनिंग जेनी ने सूत

कताई की प्रक्रिया को तेज कर दिया। इसके प्रभावस्वरूप मजदूरों की माँग घटने लगी। एक ही पहिया घुमाने वाला मजदूर एक साथ अनेक तकलियों को घुमा देता था, जिससे पहले की तुलना में ढेर सारा धागा बन जाता था। स्पिनिंग जेनी के आने से सूत कताई के क्षेत्र में बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न हुई, चूँकि इस क्षेत्र में महिलाएँ अधिक थीं, अतः इसका सर्वाधिक प्रभाव महिलाओं पर पड़ा। ऐसे में जिस मशीन के कारण महिलाओं का रोजगार छिना उस पर (स्पिनिंग जेनी पर) महिलाओं ने हमला शुरू कर दिया।

2. **सत्रहवीं शताब्दी में यूरोपीय शहरों के सौदागर गाँवों में किसानों और कारीगरों से काम करवाने लगे-** सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में यूरोपीय शहरों के सौदागर गाँवों की ओर रुख करने लगे। सौदागर किसानों और कारीगरों को पैसा देते थे और उनसे अन्तर्राष्ट्रीय बाजार के लिए उत्पादन करवाते थे। उस समय विश्व व्यापार के विस्तार और विश्व के विभिन्न भागों में उपनिवेशों की स्थापना के कारण वस्तुओं की माँग बढ़ने लगी थी। इस माँग को पूरा करने के लिए केवल शहरों में रहते हुए उत्पादन नहीं बढ़ाया जा सकता था। क्योंकि शहरों में शहरी दस्तकारी और व्यापारिक गिल्ड्स अधिक शक्तिशाली थे। अतः नए शहरी व्यापारी शहरों में कारोबार नहीं कर सकते थे। इसलिए वे गाँवों की तरफ जाने लगे। गाँवों के गरीब काश्तकार और दस्तकार सौदागरों के लिए काम करने लगे। छोटे और गरीब किसान इस समय अपना काम चलाने के लिए जीविका के नए साधन तलाश रहे थे। गाँवों में बहुत से किसानों के पास छोटे-छोटे खेत थे, लेकिन इन खेतों से पूरे परिवार का भरण-पोषण कर पाना संभव नहीं था। शहरों के यूरोपीय सौदागर जब गाँवों में आए और उन्होंने माल पैदा करने के लिए पेशगी रकम दी तो किसान और कारीगर काम करने के लिए तत्काल तैयार हो गए। ये लोग गाँव में रहकर अपने खेतों को सँभालते हुए, सौदागरों का काम भी कर लेते थे। इस व्यवस्था से शहरों और गाँवों के बीच एक घनिष्ठ संबंध विकसित हुआ। सौदागर शहरों में रहते थे लेकिन उनके लिए काम अधिकतर गाँवों में चलता था। वस्तुओं का उत्पादन कारखानों के बजाय घरों में होता था और उस पर सौदागरों का पूर्ण नियंत्रण होता था।
3. **सूरत बंदरगाह अठारहवीं सदी के अंत तक हाशिये पर पहुँच गया था-** उद्योगों में मशीन के उपयोग से पहले के युग में भारत के रेशमी और सूती उत्पादों की अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में बहुत माँग थी। भारत में पैदा होने वाला कपास महीन किस्म का था। आर्मीनियन और फारसी सौदागर भारत से रेशमी व सूती उत्पादन अफगानिस्तान, पूर्वी फारस और मध्य एशिया के रास्ते यहाँ से ले जाते थे। गुजरात के तट पर स्थित सूरत बंदरगाह के माध्यम से

भारत, खाड़ी और लाल सागर के बंदरगाहों से जुड़ा हुआ था। 18वीं सदी के अंत में यूरोपीय उपनिवेशकों ने बम्बई बंदरगाह का विकास किया। इस प्रकार बम्बई बंदरगाह ने समुद्र मार्ग से निर्यात पर नियंत्रण कर लिया। उपनिवेशक सूरत बंदरगाह का इसके लिए उपयोग नहीं करना चाहते थे, अतः 18वीं सदी के अन्त तक सूरत बंदरगाह से समुद्री व्यापार धराशायी हो गया।

17वीं सदी के आखिरी सालों में सूरत बंदरगाह से होने वाला व्यापार का कुल मूल्य 1.6 करोड़ रुपये था। 1740 ई. के दशक तक यह गिरकर केवल 30 लाख रुपये रह गया था। इस प्रकार 18वीं सदी के अंत तक सूरत बंदरगाह हाशिए पर हो गया था।

4. **ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में बुनकरों पर निगरानी रखने के लिए गुमाशतों को नियुक्त किया था-** ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा 1764 ई. के युद्ध के बाद भारत में राजनैतिक सत्ता स्थापित होने पर कंपनी ने व्यापार पर अपना एकाधिकार कायम करने के लिए बुनकरों से प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित करने का प्रयास किया और इस कार्य हेतु गुमाशतों की नियुक्ति की गयी। यह कार्य कंपनी द्वारा दो चरणों में पूरा किया गया।

प्रथम चरण- कंपनी ने कपड़ा व्यापार में सक्रिय व्यापारियों और दलालों को समाप्त करने तथा बुनकरों पर पहले से अधिक नियन्त्रण स्थापित करने का प्रयत्न किया। कंपनी ने बुनकरों की गतिविधियों पर दृष्टि रखने, माल एकत्रित करने और कपड़ों की गुणवत्ता का आकलन करने के लिए वेतनभोगी कर्मचारी नियुक्त किए जिन्हें गुमाश्ता कहा जाता था।

द्वितीय चरण- कंपनी को माल बेचने वाले बुनकरों पर किसी अन्य खरीददार को माल बेचने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। इसके लिए बुनकरों को पेशगी रकम दी जाती थी। एक बार काम का आर्डर मिलने पर बुनकरों को कच्चा माल खरीदने के लिए ऋण दे दिया जाता था। जो कर्ज लेते थे उन्हें अपना बनाया हुआ कपड़ा गुमाश्ता को ही देना पड़ता था। उसे वे किसी और व्यापारी को नहीं बेच सकते थे। जैसे-जैसे ऋण मिलते गए वैसे-वैसे महीन कपड़े की माँग बढ़ने लगी। अधिक कमाई की आशा में बुनकर पेशगी स्वीकार करने लगे। लेकिन जल्दी ही बहुत सारे गाँवों में बुनकरों और गुमाशतों के बीच टकराव की स्थिति आने लगी। नए गुमाश्ता बाहर के लोग थे। उनका गाँवों से संबंध नहीं था। ये गुमाश्ते अपने सिपाहियों और चपरासियों के साथ आते थे और माल समय पर तैयार नहीं होने पर बुनकरों को सजा देते थे। सजा के तौर पर बुनकरों को प्रायः पीटा जाता था और उन पर कोड़े बरसाए जाते थे। अब बुनकर न तो दाम के लिए मोलभाव कर सकते थे और न ही किसी दूसरे को अपना माल बेच सकते थे। कंपनी द्वारा बुनकरों को माल की जो कीमत

मिलती थी वह बहुत कम होती थी, लेकिन वे कंपनी से माल के लिए मोलभाव नहीं कर सकते थे क्योंकि वे शुरू से ही उनके द्वारा दिए गए कर्ज के बोझ तले दबे थे।

2. प्रत्येक वक्तव्य के आगे सही या गलत लिखें-

1. उन्नीसवीं सदी के आखिर में यूरोप की कुल श्रम शक्ति का 80% तकनीकी रूप से विकसित औद्योगिक क्षेत्र में काम कर रहा था।
2. अठारहवीं सदी तक महीन कपड़े के अन्तर्राष्ट्रीय बाजार पर भारत का दबदबा था।
3. अमेरिकी गृहयुद्ध के फलस्वरूप भारत के कपास निर्यात में कमी आई।
4. फ्लाई शटल के आने से हथकरघा कामगारों की उत्पादकता में सुधार हुआ।

उत्तर :

1. गलत
2. सही
3. गलत
4. सही

3. पूर्व-औद्योगीकरण का मतलब बताएँ।

उत्तर :

प्रारंभिक फैक्ट्रियों की स्थापना से औद्योगीकरण का इतिहास आरंभ होता है। इंग्लैण्ड और यूरोप में फैक्ट्रियों की स्थापना से पहले ही अन्तर्राष्ट्रीय बाजार के लिए बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण उत्पादन होने लगा था। यह उत्पादन फैक्ट्रियों में नहीं होता था। अनेक इतिहासकार औद्योगीकरण के इस चरण को पूर्व-औद्योगीकरण कहते हैं। इस पूर्व-औद्योगीकरण की अवस्था में व्यावसायिक आदान-प्रदान होता था। इस पर सौदागरों का नियंत्रण था और चीजों का उत्पादन कारखानों की बजाय घरों पर होता था। उत्पादन के प्रत्येक चरण में प्रत्येक सौदागर 20-25 मजदूरों से काम करवाता था। औद्योगीकरण से काफी पहले तथा फैक्ट्रियों की स्थापना से भी पहले के उत्पादन कार्य को आदि-औद्योगीकरण कहा जाता था।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

WWW.CBSE.ONLINE

मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. छापेखाने का आरंभ सबसे पहले किस देश में हुआ?

- (a) चीन में (b) जापान में
(c) कोरिया में (d) भारत में

उत्तर (a) चीन में

2. जापान में छापेखाने का आगमन किस देश से हुआ था?

- (a) भारत से (b) कोरिया से
(c) चीन से (d) अमेरिका से

उत्तर (c) चीन से

3. यूरोप में मुद्रण कला का आगमन किस वर्ष में हुआ?

- (a) वर्ष 1294 में (b) वर्ष 1295 में
(c) वर्ष 1296 में (d) वर्ष 1297 में

उत्तर (b) वर्ष 1295 में

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

4. यूरोप में मुद्रण कला को चीन से कौन लेकर आया था?

- (a) मार्टिन लूथर (b) गुटेन्बर्ग
(c) इरैस्मस (d) मार्को पोलो

उत्तर (d) मार्को पोलो

5. मार्को पोलो का संबंध किस देश से था?

- (a) इटली से (b) जर्मनी से
(c) जापान से (d) चीन से

उत्तर (a) इटली से

6. वुडब्लॉक प्रिंटिंग का आविष्कार किस देश में हुआ था?

- (a) इंग्लैंड में (b) इटली में
(c) चीन में (d) जापान में

उत्तर (c) चीन में

7. प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार किसने किया?

- (a) गुटेन्बर्ग ने (b) मार्टिन लूथर ने

(c) मार्को पोलो ने

(d) इरैस्मस ने

उत्तर (a) गुटेन्बर्ग ने

8. किसने कहा, मुद्रण ईश्वर की दी हुई महानतम देन है।

- (a) इरैस्मस ने (b) मार्टिन लूथर ने
(c) गुटेन्बर्ग ने (d) मार्को पोलो ने

उत्तर (b) मार्टिन लूथर ने

9. अठारहवीं सदी के मध्य में पुस्तकों से संबंधित क्या विश्वास प्रचलित हो गया था?

- (a) ज्ञान का उदय होगा
(b) निरंकुशतावाद उड़ जाएगा
(c) छापाखाना प्रगति का सबसे ताकतवर औजार है
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

10. हस्तलिखित पुस्तकों को कहते थे—

- (a) पांडुलिपियाँ (b) ग्रंथ
(c) पुस्तकें (d) अभिलेख

उत्तर (a) पांडुलिपियाँ

11. भारत में प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना सबसे पहले कहाँ हुई?

- (a) दिल्ली में (b) मुंबई में
(c) गोवा में (d) चेन्नई में

उत्तर (c) गोवा में

12. बंगाल गजट नामक साप्ताहिक पत्रिका का संपादन कब आरंभ हुआ?

- (a) 1760 ई. में (b) 1770 ई. में
(c) 1780 ई. में (d) 1790 ई. में

उत्तर (c) 1780 ई. में

13. संवाद कौमुदी का प्रकाशन किसने किया?

- (a) राजा राममोहन राय ने (b) ज्योतिबा फुले ने
(c) पेरियार ने (d) जयदेव ने

उत्तर (a) राजा राममोहन राय ने

14. आमार जीवन किसकी आत्मकथा है?

- (a) रोकैया शेखावत हुसैन की (b) रशसुंदरी देबी की
(c) कैलाशबाशिनी देवी की (d) पंडिता रमाबाई की

उत्तर (b) रशसुंदरी देबी की

15. गुलामगिरी की रचना किसने की?

- (a) पेरियार ने (b) ज्योतिबा फुले ने
(c) बी. आर. अंबेडकर ने (d) राजा राममोहन राय ने

उत्तर (b) ज्योतिबा फुले ने

16. किताबें भिनभिनाती मक्खियों की तरह हैं, दुनिया का कौन-सा कोना है जहाँ ये पहुँच नहीं पाती हैं? ये शब्द किसने कहे?

- (a) इरैस्मस ने (b) मार्टिन लूथर ने
(c) गुटेन्बर्ग ने (d) मार्को पोलो ने

उत्तर (a) इरैस्मस ने

17. इक्वीजीशन क्या थी?

- (a) एक प्रिंटिंग प्रेस (b) एक धार्मिक अदालत
(c) एक राजसत्ता (d) एक व्यापारिक संस्था

उत्तर (b) एक धार्मिक अदालत

18. प्रोटेस्टेंट धर्म सुधार आंदोलन का नेता कौन था?

- (a) इरैस्मस (b) मेनोकियो
(c) मार्टिन लूथर (d) गुटेन्बर्ग

उत्तर (c) मार्टिन लूथर

19. इटली का वह किसान जिसे इक्वीजीशन ने बाइबिल के नए अर्थ निकालने पर मौत की सजा दी-

- (a) जेम्स ऑगस्टस हिककी (b) मार्को पोलो
(c) कितागावा उतामारो (d) मेनोकियो

उत्तर (d) मेनोकियो

20. द फोरबिडेन बेस्ट-सेलर्स ऑफ प्री-रिवॉल्यूशनरी फ्रांस पुस्तक किसने लिखी?

- (a) रॉबर्ट डार्नटन ने
(b) जेम्स लॉकिंगटन ने
(c) मेनोकियो ने
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर (a) रॉबर्ट डार्नटन ने

21. ये शब्द किसने कहे, छापाखाना प्रगति का सबसे ताकतवर

औजार है, इससे बन रही आँधी में निरंकुशवाद उड़ जाएगा।

- (a) डार्नटन ने (b) मर्सिए ने
(c) जेम्स लॉकिंगटन ने (d) मेनोकियो ने

उत्तर (b) मर्सिए ने

22. राजा रवि वर्मा क्या थे?

- (a) चित्रकार (b) लेखक
(c) कवि (d) गायक

उत्तर (a) चित्रकार

23. मार्टिन लूथर कौन था?

- (a) वैज्ञानिक (b) धर्म सुधारक
(c) राष्ट्रवादी नेता (d) लेखक

उत्तर (b) धर्म सुधारक

24. केसरी समाचार पत्र का प्रकाशन किसने किया था?

- (a) बाल गंगाधर तिलक (b) बिपिनचंद पाल
(c) महात्मा गाँधी (d) जवाहरलाल नेहरू

उत्तर (a) बाल गंगाधर तिलक

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

25. बंगाली भाषा में प्रकाशित सबसे पहली संपूर्ण आत्म-कहानी कौन-सी थी?

- (a) आनंद मठ (b) गीतांजलि
(c) आमार जीवन (d) दुर्गेश नंदिनी

उत्तर (c) आमार जीवन

26. निम्नलिखित में से किस दार्शनिक की रचनाओं ने फ्रांस में क्रांति के लिए परिस्थितियाँ पैदा कर दी थीं?

- (a) रूसो (b) जॉर्ज इलियट
(c) रिचर्ड एम. हो (d) जेम्स लॉकिंगटन

उत्तर (a) रूसो

27. 19वीं सदी के मध्य तक किसने शक्ति चालक बेलनाकार प्रेस को कारगर बना लिया?

- (a) रॉबर्ट डार्नटन (b) रिचर्ड एम. हो
(c) मैक्सिम गोर्की (d) मार्टिन लूथर

उत्तर (b) रिचर्ड एम. हो

28. वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट कब लागू किया गया?

- (a) 1872 ई. (b) 1875 ई.
(c) 1878 ई. (d) 1880 ई.

उत्तर (c) 1878 ई.

29. ज्योतिबा फुले ने 1871 ई. में जाति प्रथा के अत्याचारों पर कौन-सी पुस्तक लिखी थी?

- (a) गुलामगीरी (b) स्त्री धर्म
(c) आमार जीवन (d) कथा सागर

उत्तर (a) गुलामगीरी

30. 1857 ई. में बाल-पुस्तकें छापने के लिए प्रेस किस देश में स्थापित हुआ?

- (a) जर्मनी (b) इंग्लैण्ड
(c) भारत (d) फ्रांस

उत्तर (d) फ्रांस

31. हे निरंकुशवादी शासकों, अब तुम्हारे काँपने का वक्त आ गया है। आभासी लेखक की कलम के जोर के आगे तुम हिल उठोगे। यह कथन किसका है?

- (a) सेबेस्तिऑ मर्सिए (b) रॉबर्ट डार्नटन
(c) जेम्स लॉकिंगटन (d) इरैस्मस

उत्तर (a) सेबेस्तिऑ मर्सिए

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

32. किताबें भिनभिनाती मक्खियों की तरह हैं, दुनिया का कौन-सा कोना है, जहाँ ये नहीं पहुँच जाती? हो सकता है कि जहाँ-तहाँ एकाध जानने लायक चीजें भी बताएँ, लेकिन इनका ज्यादा हिस्सा तो विद्वत्ता के लिए हानिकारक ही है। यह कथन किसका है?

- (a) इरैस्मस (b) रिचर्ड एम. हो
(c) जेन ऑस्टिन (d) जॉर्ज इलियट

उत्तर (a) इरैस्मस

33. एकपैसिया किताबें बेचने वालों को कहा जाता है—

- (a) जिल्दसाज (b) फेरीवाला
(c) बुक सेलर (d) चैपमेन

उत्तर (d) चैपमेन

34. पॉकेट बुक के आकार की किताबों को क्या कहा जाता है?

- (a) छोटा बुक (b) पॉकेट रीड
(c) चैपबुक (d) लिटल बुक

उत्तर (c) चैपबुक

35. मुद्रण की सबसे पहली तकनीक कौन-से तीन देशों में आई थी?

- (a) चीन, जापान, कोरिया

(b) पाकिस्तान, कोरिया, भारत

(c) चीन, बांग्लादेश, भारत

(d) भारत, चीन, पाकिस्तान

उत्तर (a) चीन, जापान, कोरिया

36. 1448 ई. में गुटेनबर्ग ने कौन-सी पहली पुस्तक छपी थी?

- (a) रामायण (b) कुरान
(c) महाभारत (d) बाइबिल

उत्तर (b) कुरान

37. भारत में प्रेस का जनक किसे कहा जाता है?

- (a) राजा राममोहन राय (b) इरैस्मस
(c) हिककी (d) गोविंद मोहन

उत्तर (c) हिककी

38. जापान की सबसे पुरानी पुस्तक डायमंड सूत्र कब छपी थी?

- (a) 858 ई. (b) 868 ई.
(c) 878 ई. (d) 889 ई.

उत्तर (b) 868 ई.

39. रामचरितमानस के पहले संस्करण का प्रकाशन कब और कहाँ हुआ?

- (a) 1780 ई. में सूरत में
(b) 1790 ई. में लाहौर में
(c) 1800 ई. में बनारस में
(d) 1810 ई. में कलकत्ता में

उत्तर (d) 1810 ई. में कलकत्ता में

40. निम्नलिखित में से कौन-सी पुस्तक भारत में गरीबों और निम्न जातियों की दशा का बखान करती हैं?

- (a) संवाद कौमुदी (b) पांथेर पांचाली
(c) गुलामगीरी (d) गोदान

उत्तर (c) गुलामगीरी

41. हस्तलिखित पांडुलिपियों की माँग सीमित रही क्योंकि—

- (a) वे नाजुक होती थीं, उनके रख-रखाव में मुश्किलें आती थीं
(b) उनके लाने ले जाने में मुश्किलें आती थीं
(c) उन्हें आसानी से पढ़ा नहीं जा सकता था
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर (d) उपर्युक्त सभी

42. 1876 ई. में प्रकाशित आमार जीवन नामक आत्मकथा

किसने लिखी थी?

- (a) रशसुंदरी देवी (b) शिवानी
(c) आशापूर्ण देवी (d) कैलाशबाशिनी देवी

उत्तर (a) रशसुंदरी देवी

43. कम्पोजीटर से क्या तात्पर्य है?

- (a) पुस्तक का चित्रकार
(b) पत्रिका के स्तंभकार
(c) छपाई के लिए इबारत कंपोज करने वाला व्यक्ति
(d) पुस्तक को हाथ से लिखने वाला

उत्तर (c) छपाई के लिए इबारत कंपोज करने वाला व्यक्ति

44. भारत में प्रिंटिंग प्रेस पहले-पहल निम्नलिखित में से किसके साथ आई?

- (a) डच धर्म प्रचारकों के साथ
(b) पुर्तगाली धर्म प्रचारकों के साथ
(c) फ्रांसीसी धर्म प्रचारकों के साथ
(d) अंग्रेज धर्म प्रचारकों के साथ

उत्तर (b) पुर्तगाली धर्म प्रचारकों के साथ

45. भारत में सबसे पहले किस भाषा में पुस्तकें छपी थीं?

- (a) मलयालम (b) तेलुगु
(c) तमिल (d) कोंकणी

उत्तर (d) कोंकणी

46. लोकगीत का ऐतिहासिक आख्यान जिसे गाया या सुनाया जाता है, कहा जाता है-

- (a) वीरांगना (b) गाथा गीत
(c) गैली (d) लोक संगीत

उत्तर (b) गाथा गीत

47. गैली क्या थी?

- (a) सभागार में एक दीर्घा
(b) प्रिंटिंग प्रेस की एक तकनीक थी
(c) धातुई फ्रेम, जिसमें टाइप बिछाकर इबारत बनाई जाती थी
(d) पुस्तक छापने की एक विधि थी

उत्तर (c) धातुई फ्रेम, जिसमें टाइप बिछाकर इबारत बनाई जाती थी

48. जाम-ए-जहाँनामा और शम्सुल अखबार नामक फारसी अखबार कब प्रकाशित हुआ?

- (a) 1882 ई. (b) 1885 ई.
(c) 1887 ई. (d) 1889 ई.

उत्तर (a) 1882 ई.

49. जेम्स ऑगस्टन हिककी ने बंगाल गजट नामक साप्ताहिक पत्रिका का संपादन कब शुरू किया?

- (a) 1770 ई. (b) 1772 ई.
(c) 1775 ई. (d) 1780 ई.

उत्तर (d) 1780 ई.

50. पश्चिमी यूरोप के दो देशों के नाम बताइए जहाँ उपन्यास ने पहले जड़ें जमाईं?

- (a) इटली और स्पेन (b) इंग्लैंड और फ्रांस
(c) नीदरलैंड और जर्मनी (d) रूस और टर्की

उत्तर (b) इंग्लैंड और फ्रांस

51. बेलम क्या होता था?

- (a) चर्म पत्र या जानवरों के चमड़े से बनी लेखन की सतह
(b) मुद्रण संस्कृति से पहले की पुस्तकें
(c) हस्तलिखित पुस्तक को बेलम कहा जाता था
(d) प्रिंटिंग प्रेस का एक यंत्र था

उत्तर (a) चर्म पत्र या जानवरों के चमड़े से बनी लेखन की सतह

52. गीत गोविंद की रचना किसने की थी?

- (a) जयदेव (b) समीर
(c) रविराय (d) हसरत जयपुरी

उत्तर (a) जयदेव

53. 1821 ई. से संवाद कौमुदी का प्रकाशन किसने शुरू किया?

- (a) दयानंद सरस्वती (b) राजा राममोहन राय
(c) विवेकानंद (d) विनोबा भावे

उत्तर (b) राजा राममोहन राय

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

54. लेखक जो हस्तलिखित पांडुलिपियाँ लिखते थे उन्हें कहा जाता था-

- (a) कातिब (b) मुंशी
(c) लेखाकार (d) दस्तकार

उत्तर (a) कातिब

55. चाँद, सूरज की गति, ज्वार-भाटा के समय और लोगों के दैनिक जीवन से जुड़ी कई अहम जानकारियाँ देता वार्षिक प्रकाशन कहलाता है-

- (a) खगोलशास्त्र (b) भू-शास्त्र

(c) पंचांग (d) भूगोल

उत्तर (c) पंचांग

56. राजकाज की ऐसी व्यवस्था जिसमें किसी एक व्यक्ति को संपूर्ण शक्ति प्राप्त हो और उस पर न कानूनी पाबंदी लगी हो न ही संवैधानिक। उसे क्या कहा जाता है?

(a) राजतंत्र (b) निरंकुशवाद
(c) सामंतवाद (d) अधिनायकवाद

उत्तर (b) निरंकुशवाद

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. हिंदुओं का मानना था कि शिक्षित होने पर एक साक्षर लड़की विधवा हो जाएगी।

उत्तर : रूढ़िवादी

2. प्रिंटिंग प्रेस 16वीं शताब्दी के मध्य में वृद्धि के साथ पहली बार भारत में में आया था।

उत्तर : गोवा

3. प्राचीन भारत में, को ताड़ के पत्तों या हस्तनिर्मित कागज पर प्रतिलिपित किया जाता था।

उत्तर : पांडुलिपियाँ

4. ने नए लेखन का तरीका तैयार किया।

उत्तर : मुद्रण

5. अधिनियम को आइरिश प्रेस लॉ पर बनाया गया था।

उत्तर : वर्नाक्यूलर प्रेस

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

सही या गलत बताइए

1. प्रिंटिंग प्रेस की बढ़ती संख्या की स्थापना के साथ, दृश्य छवियों को आसानी से कई प्रतियों में पुनः पेश किया जा सकता है।

उत्तर : सही

2. गुटेनबर्ग मुद्रण को यूरोप में लाया।

उत्तर : गलत

3. 1870 के दशक में, पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में कैरीकेचर और कार्टून प्रकाशित किए जा रहे थे।

उत्तर : सही

4. पंजाब-बटाला क्षेत्र लोकप्रिय पुस्तकों की छपाई के लिए समर्पित था।

उत्तर : गलत

5. मैकेनिकल प्रेस द्वारा पहली मुद्रित पुस्तक बाइबिल थी।

उत्तर : सही

अति लघु उत्तरात्मक प्रश्न

1. हस्तलिखित पांडुलिपियों का प्रचलन कम क्यों था?

उत्तर :

क्योंकि ,

- वे नाजुक होती थी और उनका रखरखाव मुश्किल था।
- उन्हे सभी जगह नहीं ले जाया जा सकता था।
- उन्हे आसानी से नहीं पढ़ा जा सकता था।

2. किसे आधुनिक भारतीय साहित्य का प्रणेता (अग्रणी) माना जाता है?

उत्तर :

भारतेन्दु हरिश्चंद्र।

3. पुस्तकों का पेपरबेक संस्करण कब प्रस्तावित हुआ था ?

उत्तर :

महामंदी (1929-30) की शुरुआत में।

4. जापान की सबसे पुरानी छपी पुस्तक का नाम बताओ। यह किस वर्ष छपी गई थी?

उत्तर :

डायमंड सूत्र जापान की सबसे पुरानी छपी पुस्तक है। यह पुस्तक 868 ई. में छपी थी।

5. किस देश में मुद्रण की सबसे पहली तकनीक विकसित हुई?

उत्तर :

चीन में।

6. पांडुलिपियों का व्यापक दैनिक प्रयोग क्यों नहीं होता था।

उत्तर :

- पांडुलिपियाँ नाजुक होती थीं। इन्हें बड़ी सावधानी से पकड़ना पड़ता था।
- इनमें लिपियों को अलग-अलग तरीके से लिखा जाता था। इन्हें पढ़ना सरल नहीं था।

7. 868 ईसवी में प्रकाशित जापान की प्राचीनतम पुस्तक का नाम बताइए।

उत्तर :

डायमंड सूत्र।

8. मार्टिन लूथर ने कौनसा नया धर्म चलाया?

उत्तर :

मार्टिन लूथर ने धर्म सुधार नामक नया धर्म चलाया। यह चर्च की कुरीतियों के विरोध में अस्तित्व में आया।

9. कौन ज्ञानोदय चिंतक है जिसके लेखों ने फ्रांस में क्रांति के लिए अनुकूल परिस्थितियों की रचना की?

उत्तर :

रूसो।

10. छापेखाने का आविष्कार किसने किया ?

उत्तर :

छापेखाने का आविष्कार सबसे पहले जर्मनी निवासी गुटेनबर्ग ने 1448 ई. में किया।

11. कौन-सी पुस्तक गुटेनबर्ग द्वारा छपी पहली पुस्तक थी ?

उत्तर :

बाइबिल।

12. मार्टिन लूथर कौन था ?

उत्तर :

मार्टिन लूथर जर्मनी का एक महान धर्म सुधारक था। उसने चर्च की कुरीतियों के विरोध में **धर्म-सुधार** नामक आंदोलन शुरू किया।

13. किसने भारत में सबसे पहले प्रिंटिंग प्रेस की शुरुआत की ?

उत्तर :

पुर्तगाली धर्म-प्रचारकों ने।

14. भारत में पहला प्रिंटिंग प्रेस कब और किसने लगाया ?

उत्तर :

भारत में पहला प्रिंटिंग प्रेस पुर्तगालियों द्वारा गोवा में 16वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में लगाया गया।

15. कौन वुड ब्लॉक प्रिंटिंग (तख्ती की छपाई) की तकनीक को यूरोप में लाया ?

उत्तर :

मार्को पोलो।

16. मैक्सिम गोर्की कौन था ?

उत्तर :

मैक्सिम गोर्की एक क्रांतिकारी रूसी लेखक था। उसने **मेरा बचपन और मेरे विश्वविद्यालय** जैसी प्रसिद्ध रचना लिखी।

17. किसने प्रेस कानून (प्रेस लॉज) में संशोधन करना मान लिया ?

उत्तर :

गवर्नर जनरल विलियम बेंटिक।

18. मुंशी प्रेमचन्द के एक प्रसिद्ध उपन्यास का नाम लिखें

उत्तर :

गोदान मुंशी प्रेमचन्द का एक प्रसिद्ध उपन्यास है।

19. फ्रांस में सस्ते नीले आवरण वाली घटिया कागज पर छपी छोटी और कम कीमत की किताबों को क्या कहा जाता था ?

उत्तर :

चैप बुक्स।

20. स्वामी दयानन्द सरस्वती ने किस पुस्तक की रचना की ?

उत्तर :

सत्यार्थ प्रकाश।

21. कौन सी पुस्तक जाति और वर्ग शोषण के बीच संबंध दर्शाती है ?

उत्तर :

गुलामगिरी।

22. लेखिका बेगम रोकैया ने धर्म के नाम पर महिलाओं को पढ़ने से रोकने पर क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की ?

उत्तर :

जानी-मानी शिक्षाविद और लेखिका बेगम रोकैया शेखावत हुसैन ने 1926 में बंग महिला शिक्षा सम्मेलन को संबोधित करते हुए, धर्म के नाम पर महिलाओं को पढ़ने से रोकने के लिए पुरुषों की निंदा की। उनके अनुसार यह सरासर गलत है कि शिक्षित महिलाएँ उद्दंड हो जाएगी। उन्होंने कहा कि यह इस्लाम द्वारा औरतों को बराबरी की तालिम का हक देने के बुनियादी उसूल के खिलाफ है। अगर मुसलमान पुरुष पढ़-लिखकर नहीं भटकते, तो महिलाएँ कैसे बिगड़ जाएगी।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

23. राजा राममोहन राय ने 1821 में कौन-सा समाचारपत्र प्रकाशित किया ?

उत्तर :

संवाद कौमुदी।

24. चीनी राजतंत्र बड़ी संख्या में किताबें क्यों छपवाता था ?

उत्तर :

सिविल सेवा परीक्षा के लिए।

25. पश्चिमी यूरोप के दो देशों के नाम बताइए जहाँ उपन्यास ने पहले-पहल जड़े जमाई।

उत्तर :

1. इंग्लैंड और
2. फ्रांस।

26. जापान में छपाई की तकनीक कौन लेकर आए ?

उत्तर :

चीनी बौद्ध प्रचारक।

27. उस देश का नाम लिखिए जो लंबे समय तक मुद्रण सामग्री का प्रमुख उत्पादक रहा।

उत्तर :

चीन अथवा चीनी राजतंत्र।

28. धारावाहिक शब्द की परिभाषा लिखिए।

उत्तर :

धारावाहिक – ऐसी पद्धति जिसमें कहानी को किस्तों में छापा जाता है और हर किस्त पत्रिका या अखबार के अगले अंक में छपती है, धारावाहिक कहलाती हैं। धारावाहिक रेडियो अथवा टी.वी. पर भी सुनाए या दिखाए जाते हैं।

29. 19वीं शताब्दी में महिलाओं के लिए प्रकाशित होने वाली पत्रिका की क्या विशेषता थी?

उत्तर :

पेनी मैगजींस या एक पैसिया पत्रिकाएँ खास तौर पर महिलाओं के लिए होती थीं। इसमें महिलाओं की सही चाल-चलन और गृहस्थी सिखाने वाली निर्देशिकाएँ होती थीं।

30. स्त्री विचार धर्म के लेखक कौन थे?

उत्तर :

राम चड्ढा।

31. निम्न-जातिय आंदोलनो के मराठी प्रणेता कौन थे और उन्होंने कौन-सी पुस्तक लिखी?

उत्तर :

निम्न जातिय आंदोलनो के मराठी प्रणेता ज्योतिबा फुले थे। उन्होंने अपनी पुस्तक गुलामगिरी (1871) में जाति प्रथा के अत्याचारों पर लिखा।

फ्रांस- फ्रांस में बिब्लियोथीक ब्ल्यू का प्रचलन था। ये किताबें सस्ते कागज पर छापी जाती थी और यह नीले जिल्द में बंधी छोटी किताबें हुआ करती थीं। नए पाठकों में रुची बढ़ाने के लिए सस्ती कीमतों पर किताबें उपलब्ध करायी गई थीं।

32. फारसी अखबार जान-ए-जहाँनामा तथा शम्सुल अखबार कब प्रकाशित हुए?

उत्तर :

1882 में।

33. तुलसीदास की रामचरित मानस का पहला मुद्रित संस्करण (कोलकता से) कब प्रकाशित हुआ?

उत्तर :

1810 में।

34. 19वीं सदी के दौरान छापेखाने की तकनीक में हुए सुधारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

19वीं सदी के दौरान छापेखाने की तकनीक में निम्नलिखित सुधार हुए-

1. 18वीं सदी के अंत तक प्रेस धातु से बनने लगे थे।
2. न्यूयार्क के रिचर्ड एम. हो ने शक्तिचालित बेलनाकार प्रेस का आविष्कार किया। इससे प्रति घंटे 8000 शीट छप सकते थे।
3. 19वीं सदी के अंत तक ऑफसेट प्रेस बन गया जिससे एक साथ छह रंगों की छपाई संभव थी।
4. बिजली से चलने वाले प्रेस प्रचलित हुए।
5. इसके अतिरिक्त कागज डालने वाली विधि में सुधार हुआ। प्लेट की गुणवत्ता में वृद्धि हुई। स्वचालित पेपर-रील और रंगों के लिए फोटो विद्युतीय नियंत्रण का प्रयोग होने लगा।

35. किस काल में यूरोप के बहुत से देशों में छापेखाने स्थापित हो गए?

उत्तर :

1450 से 1550 ई. के मध्य।

36. कातिब किसे कहते हैं?

उत्तर :

हाथ से लिखकर पांडुलिपियों को तैयार करने वालों को कातिब या सुलेखक कहा जाता था।

37. वह कौन-सा कानून था जिसके द्वारा ब्रिटिश सरकार ने भारतीय भाषा में छपने वाले समाचार-पत्रों पर अंकुश लगाने का प्रयत्न किया था?

उत्तर :

वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट।

38. आमार जीवन किसने लिखी?

उत्तर :

रशसुंदरी देवी।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

लघु उत्तरात्मक प्रश्न

1. नई प्रिंटिंग तकनीक का आविष्कार किसने किया? नई तकनीक हाथ से बनी किताबों का स्थान पूर्ण रूप से क्यों नहीं ले पाई?

उत्तर :

1. नई प्रिंटिंग तकनीक का आविष्कार योहान गुटेनबर्ग ने 1448 में कर लिया था। उसने जैतून प्रेस को ही प्रिंटिंग प्रेस का मॉडल या आदर्श बनाया और साँचे का उपयोग अक्षरों की धातुई आकृतियों को गढ़ने के लिए किया।
2. नई तकनीक के हाथ से बनी किताबों का स्थान पूर्ण रूप से स्थान न लेने के कई कारण थे। उन पुस्तकों को सजावटी शैली में लिखा जाता था। उनके हाशिये सजावटी होते थे तथा चित्र भी बनाए जाते थे। उनमें जो विशिष्टता थी वह नयी तकनीक में नहीं थी। हालांकि प्रारंभिक छपी हुई पुस्तकों का रंग-रूप और साज-सज्जा हस्तलिखित पांडुलिपियों जैसी थी, धातुई अक्षर हाथ की सजावटी शैली का अनुकरण करते थे। हाशिये पर फूल-पत्तियों की डिजाइन बनाई जाती थी और चित्र पेंट किए जाते थे। अमीरों के लिए बनाई गई पुस्तकों में छपे पन्ने पर हाशिये की जगह बेलबूटों के लिए खाली जगह छोड़ दी जाती थी ताकि प्रत्येक खरीददार अपनी रुची के अनुसार डिजाइन और पेंट स्वयं तय करके उसे सुंदर बना सके।

2. 17वीं शताब्दी तक शहरी संस्कृति के विकास के साथ छपाई के प्रयोग में विविधताओं का उल्लेख कीजिए। इसका क्या कारण था?

उत्तर :

छपाई के प्रयोग में निम्नलिखित विविधताएँ थी-

1. मुद्रित सामग्री के उपभोक्ता विद्वानों और अधिकारियों के साथ व्यापारी भी प्रतिदिन के व्यापार की जानकारी प्राप्त करने के लिए इसका प्रयोग करने लगे।
2. लोगों में पढ़ने की रुचि में वृद्धि हुई और नये पाठक वर्ग ने काल्पनिक किस्से, कविताएँ, आत्मकथाएँ, शास्त्रीय, साहित्यिक कृतियों के संकलन और रूमानी नाटक पढ़ने में रुची दिखाई।
3. अमीर महिलाओं ने भी पढ़ना शुरू किया और कुछ ने स्वरचित काव्य और नाटक भी छापें। इस प्रकार छपाई के प्रयोग में वृद्धि और विविधता आई।

छपाई के प्रयोग में विविधता आने का कारण 19वीं शताब्दी के अंत में पश्चिमी शक्तियों द्वारा चीन में अपनी चौकियाँ स्थापित करना था। इन चौकियों की स्थापना के साथ पश्चिमी मुद्रण तकनीक और मशीनी प्रेस का आयात भी हुआ। शंघाई प्रिंट संस्कृति का नया केंद्र बन गया और धीरे-धीरे हाथ की छपाई का स्थान मशीनी यांत्रिक छपाई ने ले लिया।

3. गुटेनबर्ग कौन था? मुद्रण के क्षेत्र में उसके योगदान का आकलन किजिए।

अथवा

प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार किसने किया? उसने प्रिंट तकनीक का विकास कैसे किया?

अथवा

प्रथम मुद्रित बाइबिल की किन्हीं तीन विशेषताओं का वर्णन किजिए।

उत्तर :

गुटेनबर्ग एक व्यापारी का बेटा था। वह सुनारी के कार्य में माहिर था। प्रिंटिंग प्रेस के क्षेत्र में गुटेनबर्ग का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण था।

1. उसने सांचे का उपयोग अक्षरों की धातुई आकृतियों को गढ़ने के लिए किया था।
2. उसने जो पहली किताब छपी, वह थी बाइबिल।
3. तकरीबन 180 प्रतिमा बनाने में उसे तीन साल लगे। इसके साथ ही प्रिंटिंग के एक नए युग का आरंभ हुआ।

4. भारत में मुद्रण संस्कृति का विकास किस तरह से हुआ? कोई तीन तथ्य लिखें।

उत्तर :

1. 16वीं सदी में पहले-पहल भारत में एक मिशनरी गोवा में छपाई मशीन साथ लाई।
2. 1674 में लगभग 50 धार्मिक पुस्तकें कोंकणी और कन्नड भाषाओं में छपी गई।
3. छपाई का सिलसिला चल पड़ा। 1579 में कोचीन में कैथोलिक पादरियों ने पहली तमिल पुस्तकें प्रकाशित की। इसी तरह से 1713 में पहली मलयालम पुस्तक का प्रकाशन हुआ।

4. अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी के आगमन के बाद ही अंग्रेजी भाषा की पुस्तकों का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। बाद में भारतीयों ने समाचार-पत्रों का प्रकाशन शुरू किया।

5. स्पष्ट करें कि किस तरह से मार्टिन लूथर मुद्रण कला की प्रशंसा करता है?

उत्तर :

1. मार्टिन लूथर ने 95 थीसिस लिखकर रोमन-कैथोलिक चर्च में फैली बुराइयों का पर्दाफाश किया।
2. लूथर के लेखन कार्य को फिर से प्रकाशित किया जा सकता था जिन्हें लाखों लोग पढ़कर चर्च के कारनामों की जानकारी पा लेंगे।
3. न्यू टेस्टामेंट के अनुवाद की 5000 प्रतिमाँ कुछ सप्ताहों में ही बिक गई थीं।
4. लूथर के विचारों को पढ़ने के बाद रोमन कैथोलिक चर्च में दरार पड़ गई। अतः नये धर्म प्रोटेस्टेंट का प्रादुर्भाव हुआ जिसके लाखों समर्थक बन गये थे।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

6. मुद्रण युग से पहले की हस्तलिखित पांडुलिपियों की किन्हीं तीन विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

प्रिंटिंग से पूर्व हस्तलिखित पांडुलिपियाँ ही एकमात्र ऐसा साधन थी जिसका प्रयोग लैखिक संचार के लिए किया जाता था। इन्हें बनाना, संभालना, सर्कुलेट आदि करना आसान नहीं था। हस्तलिखित पांडुलिपियों की मुख्य विशेषताएँ-

1. पांडुलिपियाँ अत्यधिक महंगी और खर्चीली होती थी। इन्हें एक-एक करके लिखने में अत्यधिक समय खर्च होता था।
2. इनको लाने-ले जाने और रखरखाव में तमाम मुश्किलें थी।
3. लिपियों के अलग-अलग तरीके से लिखे जाने के चलते उन्हें पढ़ना भी आसान नहीं था।
4. पांडुलिपियों का व्यापक दैनिक इस्तेमाल नहीं होता था।
7. चीन में किताब की छपाई संस्कृति की संक्षिप्त चर्चा कीजिए।

उत्तर :

1. आरंभ में चीन में हाथ की छपाई द्वारा किताबें तैयार की जाती थी जिसमें स्याही लगी तख्ती पर कागज को रगड़ा जाता था।
2. 16वीं सदी में सिविल सेवा के परीक्षार्थियों की संख्या में वृद्धि के कारण छपी हुई किताबों की मांग बढ़ने लगी।
3. 17वीं सदी में शहरी संस्कृति में विस्तार के कारण एक बार फिर छपी सामग्रियों की मांग में वृद्धि हुई।
4. 19वीं सदी में पश्चिमी मुद्रण तकनीकी तथा मशीनी प्रेसों का आयात किया गया।

इस तरह चीन धीरे-धीरे हाथ की छपाई से मशीनी मुद्रण की ओर बढ़ चला।

8. प्रिंटिंग प्रेस ने पुस्तकों तक पहुँचने-पढ़ने की एक नई संस्कृति को जन्म दिया। तीन उदाहरणों द्वारा अपने उत्तर की पुष्टि किजिए।

उत्तर

पुस्तकों और संस्कृति में चोली-दामन का साथ है। आधुनिक युग में प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार ने पुस्तकों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि की और नए-नए पाठक (महिला, मजदूर, वृद्ध, बालक और सामान्यजन) की संख्या बहुत बढ़ा दी। इस प्रकार से पुस्तकों के द्वारा पढ़ने के शौक और अवसरो ने सर्वत्र एक नई संस्कृति को जन्म दिया। इस संदर्भ में हम निम्न उदाहरण दे सकते हैं-

1. छापाई मशीन आने से पूर्व पुस्तकों तक केवल सम्पन्न वर्ग की ही पहुँच होती थी अर्थात् वे इतनी महँगी होती थी कि जन-साधारण उन्हें नहीं खरीद पाता था।
 2. मुद्रण कला के विकास के साथ ही पुस्तकें अब सस्ती हो गई और वे घर-घर तक पहुँचने लगी थी।
 3. छापाई के विकास के साथ ही सुनने वाले लोग अब बदल कर पढ़ने वाले लोग बन गये थे।
 4. पुस्तकों के आगमन के साथ अब लोगो की रुचि शिक्षा की ओर होने लगी थी। लोग घर बैठ कर ही पुस्तकों के माध्यम से शिक्षा के साथ मनोरंजन भी कर सकते थे।
9. मुद्रण से विचारों के व्यापक प्रचार-प्रसार और बहस के द्वार किस प्रकार खुले? तीन बिंदुओं में लिखें।

उत्तर :

1. मुद्रण संस्कृति का विकास होने के साथ ही मानव-जाति की चेतना विकसित हुई और उन्होंने राष्ट्र, राज्य या गणतंत्र अथवा प्रजातंत्र लाने के लिए राजतंत्र, तानाशाही, कुलिन तंत्र आदि का उन्मूलन किया। आज विश्व के एक चौथाई देश भारत की तरह ही लोकतंत्रात्मक गणतंत्र हैं। अमेरिका, फ्रांस, रूस, जर्मनी, इटली, पोलैंड आदि देशों की क्रांतियाँ मुद्रण संस्कृति के विकास का ही परिणाम हैं।
 2. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के विभिन्न समझौते, विश्व के देशों की अर्थव्यवस्थाओं का संगमन और लगभग सभी क्षेत्रों में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अभिकरणों एवं विभागों का बनना।
 3. विश्व में शिक्षा का त्वरित प्रसार, अनगिनत व्यापार और व्यवसायों का जन्म।
 4. सूचना की सहज और सत्वर उपलब्धता।
 5. इलैक्ट्रॉनिक संचार साधनों तथा मनोरंजन साधनो आदि का विकास।
10. उन्नीसवीं सदी के भारत में मुद्रण संस्कृति ने महिलाओं को किस प्रकार प्रभावित किया? स्पष्ट किजिए।

अथवा

19वीं सदी में भारत में महिलाओं पर मुद्रित पुस्तकों(छपी किताबों)के किन्हीं तीन प्रभावों की व्याख्या किजिए।

अथवा

बताएँ कि भारत में 19वीं सदी के अन्त में मुद्रण संस्कृति ने महिलाओं के जीवन में किस प्रकार परिवर्तन किया।

उत्तर

1. प्रिंट के विकास के साथ ही महिलाओं ने अपने जीवन तथा अनुभवों के बारे में लिखना शुरू कर दिया। कई पत्रिकाओं द्वारा उनकी शिक्षा का समर्थन किया गया तथा इस दिशा में विशेष प्रयास भी किए गए।
 2. कुछ महिला लेखिकाएँ जैसे बंगाल में कैलाशबाशिनि देवी, महाराष्ट्र में ताराबाई शिंदे तथा पंडिता रमाबाई आदि आगे आई तथा उन्होंने महिलाओं के दयनीय जीवन के बारे में लिखा। उन्होंने उपन्यास तथा आत्मकथाएँ लिखी और उनमें महिलाओं की समस्याओं पर चर्चा की।
 3. आरंभिक बीसवीं सदी में महिलाओं द्वारा संपादित कुछ ऐसी पत्रिकाएँ भी थीं जिनमें विभिन्न मुद्दों जैसे- महिला शिक्षा, वैधव्य, विधवा पुनर्विवाह एवं राष्ट्रीय आंदोलन आदि पर चर्चा की गई। इन पत्रिकाओं में फैशन के पाठ तथा छोटी कहानियाँ एवं धारावाहिक उपन्यासों के रूप में महिलाओं के मनोरंजन के लिए सामग्रियाँ भी होती थीं।
11. मुद्रण तकनीक किस तरह यूरोप पहुँची? प्रिंटिंग प्रेस के आगमन से पहले किताबें किस तरह बनाई जाती थी? हस्तलिखित किताबों कि कोई दो कमियाँ बताइए।

उत्तर :

1. मार्को पोलो चीन से वुडब्लॉक प्रिंटिंग तकनीक लेकर यूरोप पहुँचा।
2. वुडब्लॉक प्रिंटिंग से पहले यूरोपीय लोग मुंशियों की सहायता से चीनी कागज पर हस्तलेखन द्वारा किताबें तैयार करते थे।
3. पांडुलिपियों की दो कमियाँ निम्नलिखित थी-
 1. किताबों की नकल करने में बहुत ज्यादा खर्च पड़ता था तथा समय भी अधिक लगता था।
 2. हस्तलिखित किताबें भारी होती थी, उन्हें इधर-उधर लाना ले जाना कठिन था तथा पढ़ने में भी कठिनाई आती थी।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

12. 17वीं सदी के बाद मुद्रण प्रौद्योगिकी में सुधार हेतु किए गए किन्हीं तीन तकनीकी परिष्कारों का उल्लेख किजिए।

उत्तर

1. इसने प्रतिवर्ष निर्मित होने वाली किताबों की संख्या में वृद्धि की तथा इस तरह से अधिक से अधिक लोगों तक किताबों की पहुँच को संभव बनाया।
2. इसने लोगो तथा सूचना, ज्ञान, संख्या एवं सत्ता के बीच संबंध में बदलाव लाकर उनके जीवन को बहुत प्रभावित किया।

3. इसने लोकप्रिय धारणाओं को प्रभावित किया तथा चीजों को नए तरीके से देखने का एक नया नजरिया पैदा किया।

13. भारत में छापाखाना आने से पूर्व विभिन्न भाषाओं में पुस्तकें किस तरह तैयार की जाती थीं?

उत्तर :

1. हाथ से बनाए गए कागज, भोजपत्र या ताड़ के पत्तों में सुलेखन से संस्कृत, अरबी, फारसी तथा कई क्षेत्रीय भाषाओं में पुस्तकें लिखी जाती थीं।
2. भोजपत्र और ताड़ के पत्तों को बाद में परस्पर सिल कर बाहर से लकड़ी का समान माप का चौरस टुकड़ा ऊपर और नीचे रखकर जिल्दबंदी कर दी जाती थी।
3. यह प्रक्रिया खर्चीली, असुरक्षित और अत्यधिक समय खपाऊ थी।
4. हस्तलिपि भिन्न-भिन्न शैली की होने से इन्हें पढ़ने में भी परेशानी होती थी।
5. एक ही पुस्तक से उन दिनों समूची कक्षा को पढ़ाया जाता था क्योंकि सभी छात्रों को पुस्तकें उपलब्ध कराना बहुत कठिन था।
6. 18वीं सदी में ऋग्वेद के कुछ पृष्ठ मलयालम भाषा में लिखे गए। **हाफिज का दीवान (1824)** और जयदेव का **गीत गोविंद** आदि सुलेखन रचित पुस्तकें हैं। इनमें बहुत सुंदर चित्रकारी की गई है।

14. आप यह किस तरह साबित कर सकते हैं कि पुस्तकें प्रगति एवं प्रबुद्धता के प्रसार का एक प्रभावशाली माध्यम हैं और ऐसा ही यूरोप में 19वीं शताब्दी में समझा गया?

अथवा

19वीं सदी के अंत तक नई दृश्य संस्कृति रूप ले रही थी। स्पष्ट किजिए।

उत्तर :

1. पुस्तकों को पुरुषों तथा महिलाओं दोनों का ही सर्वश्रेष्ठ मित्र समझा जाता था क्योंकि वे केवल समय गुजारने का माध्यम नहीं बल्कि प्रगति, ज्ञान एवं समाज में प्रबुद्धता का भी प्रसार करती थीं। जैसा यह आज सत्य है—वैसा ही 17वीं तथा 18वीं शताब्दी में भी समझा जाता था।
2. 18वीं शताब्दी के मध्यांतराल में सर्वसाधारण की अवधारणा बनती चली गई कि पुस्तकें प्रगति का प्रसार तथा प्रबुद्धता फैलाने की महत्वपूर्ण साधन हैं। बहुसंख्यक लोगों का यह मानना था कि पुस्तकें विश्व को बदल सकती हैं। पुस्तकें निरंकुशवाद तथा अत्याचार (जुल्म) से समाज को मुक्त कर सकती हैं, कुशल नेतृत्व प्रदान करते हुए पुस्तकें ऐसा समय ला सकती हैं—जब बुद्धि एवं तर्क ही शासन करेंगे।

18वीं शताब्दी के फ्रांस में एक उपन्यासकार लुई सेबेस्तिएँ मर्सिए (Louise-Sebastien Mercier) ने

घोषणा की थी—प्रिंटिंग प्रेस का छापाखाना प्रगति का सर्वाधिक शक्तिशाली औजार है, इससे बन रही जनमत की आँधी में निरंकुशवाद उड़ जाएगा।

3. मर्सिए के कई उपन्यासों के नायक पाठक ही चुने गए हैं। वे पुस्तकों के प्रति इतने निष्ठावान हो जाते हैं कि किताबों की दुनिया में ही खो जाते हैं तथा स्वयं भी लेखक बन जाते हैं।

4. ऐसी रचनाओं में यह विश्वास समाया रहता था कि पुस्तकें प्रबुद्धता लाती हैं तथा निरंकुशवाद को समूल नष्ट कर देती हैं। मर्सिए ने घोषणा की थी— बहुत ही भयंकर है ये तानाशाहों या आतंक फैलाने वालों की दुनिया लेकिन आभासी लेखक की कलम के आगे यह दुनिया काँप उठेगी।

15. वुडब्लॉक (काठ की तख्ती) वाला छपाई यूरोप में 1295 के बाद आई। इस कथन को स्पष्ट करने के लिए कोई तीन कारण लिखिए।

उत्तर :

1. यह तकनीक पहले चीन के पास मौजूद थी।
2. मार्को पोलो यह ज्ञान अपने साथ लेकर लौटा। वह काफी साल खोज करने के बाद इटली वापस पहुँचा।
3. वर्ष 1295 में मार्को पोलो इटली पहुँचा और उसने वुडब्लॉक तकनीक से यूरोप को अवगत करवाया। जल्द ही यह तकनीक बाकी यूरोप में फैल गई।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

16. पेनी चैपबुक्स के महत्व के कोई तीन सूत्र लिखें।

उत्तर :

1. ये पॉकेट बुक के आकार की पुस्तकें होती थी, जिन्हें आमतौर पर फेरीवाले बेचते थे।
2. ये सोलहवीं सदी की मुद्रण क्रांति के समय से लोकप्रिय हुई।
3. इनमें अनेक प्रकार की मुद्रित सामग्री शामिल होती थी जैसे—पैम्फलेट, राजनीतिक तथा धार्मिक पर्चे, नर्सरी की कविताएँ, काव्य, लोक-कथाएँ, बच्चों का साहित्य तथा वार्षिक कैलेंडर आदि।

17. यूरोप की मुद्रित सामग्री ने भारतीय राष्ट्रवाद के उदय में अपना योगदान कैसे दिया?

उत्तर :

रूसो, पेन, जान स्टुअर्ट मिल तथा अन्य पाश्चात्य विचारकों को उनकी पुस्तकों से समझकर भारतीयों को स्वतंत्रता के महत्त्व का बोध हुआ और राष्ट्र भक्ति को उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति की प्रथम शर्त माना। मेट्सिनी, गैरीबाल्डी तथा आयरलैंड के राष्ट्रवादी नेता उनके राजनीतिक आदर्श बन गए और उन्होंने भी ब्रिटिश सरकार को अपने सत्याग्रहों, असहयोग और सविनय अवज्ञा जैसे कृत्यों से

हिलाकर रख दिया। विभिन्न देशों के साहित्य, तकनीकी ज्ञान, इतिहास, विज्ञान, गणित आदि के ज्ञान से अपना मानसिक स्तर ऊँचा उठाने के लिए राजा राममोहनराय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जैसे कई समाज सुधारकों ने पाश्चात्य शिक्षा में निहित विकृतियों का सार पाने के लिए प्रस्तावित किया—उन्हें अपनाने के लिए नहीं बल्कि तुलना करने के बाद उनका त्याग करने के लिए। विभिन्न देशों में होने वाली क्रांतियों और स्वतंत्रता आन्दोलनों तथा वहाँ के क्रांतिकारियों के जीवन दर्शन को पढ़कर भारतीय युवा वर्ग में भी नई जागृति आई।

18. हाथ की छपाई की अपेक्षा मशीनी छपाई ने मुद्रण में क्रांति ला दी थी। स्पष्ट किजिए

उत्तर :

1. 1450 से 1550 तक के 100 वर्षों में यूरोप के अधिकतर देशों में छापेखाने स्थापित हो चुके थे।
2. काम की खोज तथा नए छापेखानों को शुरू करने में सहायता करने के लिए जर्मनी से प्रिंटरों ने दूसरे देशों में जाना शुरू कर दिया। जैसे ही अनेक प्रिंटिंग प्रेसें स्थापित हुई, पुस्तकों के उत्पादन में भारी उछाल आ गया।
3. 15वीं सदी के दूसरे हिस्से में यूरोप में 2 करोड़ छपी पुस्तकों की प्रतियों की बाढ़ आ चुकी थी। यह संख्या 16वीं सदी में लगभग 20 करोड़ प्रतियां हो गई।
4. इससे लोक चेतना बदली और चीजों को देखने का नजरिया बदला।

19. प्रेस एक्ट, 1908 अथवा समाचार अधिनियम, 1908 पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर :

1. भारतीय प्रेस केवल गवर्नर जनरल की गलत एवं प्रतिक्रियात्मक नीतियों की कटु आलोचना कर रहा था। बंगाल विभाजन के उसके गलत निर्णय से राष्ट्रवादी भड़के हुए थे। ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध बढ़ती हुई भावनाओं तथा कटु आलोचनाओं को रोकने तथा राजनीति में उग्रदल के उदय एवं विकास से उत्पन्न स्थिति से निपटने के लिए 1908 में दी न्यूजपेपर्स एक्ट (समाचार पत्र अधिनियम) पास किया गया।
2. इस अधिनियम के अधीन ऐसे किसी भी समाचार के प्रकाशन के परिणामस्वरूप, जिससे हिंसा अथवा हत्या को प्रेरणा मिले, मुद्रणालय तथा उसकी संपत्ति को जब्त किया जा सकता था।
3. इस अधिनियम के अंतर्गत जो बात नई थी वह यह थी कि मुद्रणालय जब्त होने के पश्चात् 15 दिन के अंदर न्यायालय में अपील की जा सकती थी।
4. इस अधिनियम के अंतर्गत अंग्रेजी सरकार ने भी समाचार-पत्रों के खिलाफ कार्यवाही शुरू की तथा सात मुद्रणालयों को जब्त कर लिया। इसी अधिनियम के अंतर्गत अनेक क्रांतिकारी समाचार-पत्रों के मालिकों के विरुद्ध कठोर

कार्यवाही की गई तथा उन्हें जेल भेज दिया गया। इनमें से कुछ समाचार-पत्रों के नाम थे—युगांतर एवं संध्या एवं वन्दे मातरम् जिनके प्रकाशन पूर्णतया रोक दिये गये।

20. भारत में उन्नीसवीं शताब्दी में मुद्रण ने न केवल विभिन्न समुदायों के विरोधाभासी विचारों के प्रकाशन को प्रेरित किया, अपितु उन्हें आपस में जोड़ा भी। इस कथन की उदाहरणों सहित पुष्टि किजिए।

उत्तर :

उन्नीसवीं सदी के अंत में जाति भेद के बारे में तरह-तरह पुस्तिकाओं और निबंधों में लिखा जाने लगा था। निम्न-जातिय आंदोलनों और निबंधों में लिखा जाने लगा था। निम्न-जातिय आंदोलनों के मराठी प्रणेता ज्योतिबा फूले ने अपनी गुलामगिरी में जाति प्रथा के अत्याचारों पर लिखा। बीसवीं सदी में महाराष्ट्र के भीमराव अंबेडकर और मद्रास के ई.बी. रामास्वामी नायका ने जो पेरियार के नाम से जाने जाते हैं, जाति व्यवस्था की कुरितियों के बारे में लिखा। छपी हुई पुस्तिकाओं और अखबारों ने न केवल नए विचारों का प्रचार-प्रसार किया, बल्कि उन्होंने बहस की शक्ति भी तय की। मुद्रण संस्कृति ने समुदाय के बीच सिर्फ मत मतांतर ही नहीं पैदा किए, बल्कि इसने समुदायों को अंदर से और विभिन्न हिस्सों को पूरे भारत से जोड़ने का प्रयास भी किया।

21. भारत में मुद्रण से पहले की हस्तलिपि पांडुलिपियों की किन्हीं तीन विशेषताओं को स्पष्ट किजिए।

अथवा

मुद्रण युग से पहले की हस्तलिखित पांडुलिपियों की किन्हीं तीन विशेषताओं को स्पष्ट किजिए।

अथवा

भारत में मुद्रण युग से पहले की पांडुलिपियों कि कोई तीन विशेषताएँ लिखें।

उत्तर

1. 19वीं सदी के अंतिम चरण में मुद्रण के आगमन से पहले भारत में संस्कृत, फारसी, अरबी तथा दूसरी स्थानीय भाषाओं में हाथ से लिखी गई पांडुलिपियाँ तैयार करने की समृद्ध और पुरानी परंपरा थी।
2. इन पांडुलिपियों की हाथ से बनी कागज या भोजपत्रों पर प्रतियाँ तैयार की जाती थीं। कभी-कभी पांडुलिपियों में सुंदर चित्रण भी किया जाता था।
3. पांडुलिपि के पन्नों को संरक्षित करने तथा किताब जैसा आकार देने के लिए या तो लकड़ी की तख्तियों के बीच रख दिया जाता या फिर इन्हें आपस में सिल दिया जाता था। ये पांडुलिपियाँ बहुत ही नाजुक होती थीं, अतः इनका सावधानीपूर्वक उपयोग किया जाता था।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

22. मुद्रण युग से पहले भारत में सूचना और विचार कैसे लिखे जाते थे? भारत में मुद्रण तकनीक का चलन किस प्रकार नजर आया? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

इन्हें भोजपत्र या हाथ से बनाए गए कागज पर सुलेखन पद्धति से लिखा जाता था। ऐसी पुस्तकों के दोनों ओर बराबर आकार की लकड़ी की पट्टियाँ रखकर उन्हें आपस में मिला दिया जाता था। इस तरह मजबूत जिल्दसाजी से पुस्तकें लंबे समय तक सुरक्षित रहती थीं। सबसे पहले भारत में पुर्तगाली धर्म-प्रचारक आए। उन्होंने कोंकणी भाषा को सीखा और इस भाषा में पहली बार अपने उपदेशों को छपवाया। पूर्ण रूप में मुद्रित पहली पुस्तक तमिल भाषा में लिखी गई थी। यह कैथोलिक ईसाईयों द्वारा कोचीन में 1579 में छापी गई। सुलेखन की तकनीक से तैयार की गई पुस्तकें जयदेव का **गीत गोविन्द** और **हाफिज का दीवान** थी। 1674 में यहूदी पादरीयों ने कोंकणी और कन्नड़ भाषा में 50 पुस्तकें छापीं। 1710 में डच प्रोटेस्टेन्ट ने तमिल भाषा में 32 पुस्तकें छापीं। इनमें अधिकतम पुस्तकें प्राचीन ग्रंथों के तमिल भाषा में अनुवाद वाली थीं।

23. फ्रांसीसी क्रांति के लिए रास्ता तैयार करने में मुद्रण की भूमिका के पक्ष में दिये जाने वाले तर्कों की चर्चा कीजिए।

अथवा

मुद्रण संस्कृति ने फ्रांसीसी क्रांति के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ रचीं। तीन तर्क देते हुए, कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर

फ्रांसीसी क्रांति के लिए रास्ता तैयार करने में मुद्रण की भूमिका के पक्ष में निम्नलिखित तर्क दिए गए—

1. मुद्रण ने ज्ञानोदय चिंतकों के विचारों को लोकप्रिय बनाया। इसने चर्च के तथाकथित पवित्र सत्ता तथा राज्य की निरंकुश सत्ता को चुनौति दी। इसने रिवाज एवं परंपरा की जगह तर्क के शासन संबंधी विचार को फैलाने में सहायता दी।
2. इसने संवाद एवं बहस की एक नई संस्कृति पैदा की जिसमें कि एक तरह की सामाजिक क्रांति फैली। क्रम व्यवस्था पर प्रश्न खड़े किए। इसने इसे उजागर किया कि किस तरह राजशाही वर्ग विलासिता में डूबा हुआ है तथा आम लोगों की आवश्यकताओं की उसे तनिक भी चिंता नहीं है। इन सभी प्रयासों ने राजशाही के विरुद्ध विद्रोह की भावना पैदा करने में सहायता की।

24. हाथ से लिखी हुई पुस्तकों की तकनीक पूर्णतया छापेखाने की नई तकनीक का स्थान क्यों नहीं ले सकी थी? कोई तीन बिंदुओं में उत्तर दीजिए।

अथवा

पांडुलिपियाँ क्या हैं? इनका प्रयोग व्यापक स्तर पर क्यों नहीं किया जाता था? पांडुलिपियों की प्रमुख खामियाँ लिखिए।

उत्तर :

हाथ से लिखी हुई पुस्तकें ही पांडुलिपियाँ कहलाती हैं। इनका व्यापक प्रयोग अग्रलिखित कारणों से नहीं किया जा सकता था—

1. सुलेख लिखने वाले लेखक बहुत कम होते थे और उनका कुल उत्पादन या हाथ से लिखी हुई पुस्तकों की संख्या बहुत सीमित थी।
2. पांडुलिपियों को सीमित स्थानों या पुस्तकालयों में ही रखा जाता था जहाँ प्रायः हर पाठक के लिए यातायात के साधनों की कमी एवं यात्रा में लगने वाले समय के कारण पहुँच नहीं हो पाती थी।
3. पांडुलिपियों में भिन्न लिपिकों की लिखाई अलग-अलग होती थी। प्रायः उन्हें तेजी के साथ बड़ी गति से हर पाठक के लिए पढ़ना आसान नहीं होता था। कुछ लेखकों की लिखाई बहुत गंदी होती थी और पढ़ी भी नहीं जा सकती थी।
4. किताबों की नकल करने में बहुत ज्यादा खर्च पड़ता था तथा समय भी अधिक लगता था।
5. हस्तलिखित किताबें भारी होती थीं, उन्हें इधर-उधर लाना ले जाना कठिन था तथा पढ़ने में भी कठिनाई आती थी।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

25. प्रिंटिंग प्रेस के आगमन ने पढ़ने की संस्कृति को किस तरह प्रभावित किया? तीन बिंदुओं में व्याख्या कीजिए।

अथवा

छापेखाने के कारण पढ़ने की संस्कृतियों में कौन से तीन परिवर्तन आए?

अथवा

अठारहवीं सदी के यूरोप में उपन्यासों की लोकप्रियता के किन्हीं तीन कारणों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर

प्रिंटिंग प्रेस के आगमन ने पढ़ने की संस्कृति को निम्नलिखित रूप से प्रभावित किया—

1. इसने किताब के निर्माण की लागत को कम कर दिया तथा निर्मित किताबों की संख्या बढ़ा दी। अतः पाठकों की संख्या कई गुणा बढ़ गई।
2. इसने पढ़ने की एक नई संस्कृति पैदा की। यदि पहले अधिकतर सुनने वाले लोग थे तो अब अधिकतर पढ़ने वाले लोग तैयार हो गए।
3. जो पढ़ नहीं सकते थे उनके लिए प्रकाशकों ने लोकप्रिय गाथा-गीत, लोककथाएँ तथा चित्रात्मक किताबें प्रकाशित करनी शुरू कर दीं।

इन सब चीजों ने पाठकों के एक नए वर्ग को जन्म दिया।

26. जापान में छपाई की प्रगति का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर :

1. बुद्ध धर्म प्रचारकों (मिशनरियों) ने लगभग 768-770ई. के आसपास चीन से आकर जापान में हाथ-छपाई तकनीकी को प्रारंभ किया। जापान में सबसे पुरानी पुस्तक 868ई. में छपी गई थी। इस पुस्तक का नाम **डायमंड सूत्र** है। इस पुस्तक में पाठ के साथ-साथ काठ पर खुदे चित्र भी हैं। वस्त्र, ताश के पत्ते और कागजी मुद्रा पर भी विभिन्न चित्र छापे गए।
2. मध्यकालिन जापान में कवियों एवं गद्य लेखकों को नियमित रूप से छपा जाता था। इसलिए जापान में पुस्तकें सस्ती (कम कीमत वाली) थीं तथा वे बड़ी संख्या में उपलब्ध थीं।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. 17वीं शताब्दी के चीन में मुद्रण प्रौद्योगिकी की स्थिति की चर्चा कीजिए। 19वीं शताब्दी में यह पश्चिमी प्रौद्योगिकी से किस प्रकार प्रभावित हुई?

अथवा

किस प्रकार मुद्रण चीन से यूरोप में आया? व्याख्या कीजिए।

अथवा

17वीं सदी में चीन में छपाई के इस्तेमाल में विविधता किस प्रकार आई? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

1. 17वीं शताब्दी के चीन में मुद्रण प्रौद्योगिकी-

1. शहरीकरण बढ़ने से मुद्रण-संस्कृति अपनी कई विधाओं में प्रस्फुटित हुई। व्यापार और व्यवसाय में भी भिन्न-भिन्न किस्म के मुद्रित दस्तावेज प्रयोग होने लगे। उपनियम एवं विधियाँ बनाई गई।
2. गल्प साहित्य, कथा साहित्य, काव्य, आत्मकथा, साहित्यिक प्रसंगों के संग्रह तथा रोमांचकारी नाटक इस सदी में बहुत विकसित हुए।
3. धनी महिलाओं में पढ़ने के प्रति विशेष रुची जागी और उनमें से कई महिलाएँ कविताएँ तथा नाटक लिखने लगीं।

2. **चीन में पश्चिमी मुद्रण प्रौद्योगिकी का प्रभाव-** चीन में नई अध्ययन संस्कृति के साथ-साथ पश्चिम से नई मुद्रित प्रौद्योगिकी का पदार्पण हुआ। पश्चिमी मुद्रण तकनीक एवं यंत्रिकरण का 19वीं शताब्दी के अंतिम चरण में पश्चिमी देशों से चीन में आयात किया गया। उन्होंने अपने उपनिवेश बाहर स्थापित कर रखे थे। शंघाई शहर नई मुद्रण संस्कृति का प्रमुख केन्द्र बन गया और इस प्रौद्योगिकी का प्रयोग स्कूलों में पश्चिमी ढंग से किया जाने लगा। अब स्कूलों में

हस्तलिखित पुस्तकों के स्थान पर मशीनों द्वारा छपी हुई सामग्री का प्रयोग होने लगा।

2. मुद्रण संस्कृति का फ्रांसीसी क्रांति में योगदान का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

1. मुद्रण संस्कृति का फ्रांसीसी क्रांति में योगदान के पक्ष में निम्नलिखित तर्क दिए जा सकते हैं-
 1. ज्ञानोदय के चिंतकों ने परंपराओं, अंधविश्वास और निरंकुशवाद की आलोचना की। उन्होंने रीति-रिवाजों के स्थान पर विवेक और तर्क का प्रयोग करने पर जोर दिया। उन्होंने चर्च की धार्मिक और राज्य की निरंकुश सत्ता का विरोध किया। वॉल्टेयर और रूसो के विचारों का अध्ययन करने वाले वर्ग ने आलोचनात्मक और तर्क के आधार पर विचार करना प्रारंभ कर दिया।
 2. वाद-विवाद की नई संस्कृति के अंतर्गत पुराने मूल्य, संस्थाओं और नियमों का मूल्यांकन प्रारंभ हुआ जिससे सामाजिक क्रांति के नए विचारों का सूत्रपात हुआ।
 3. छपाई खाने के परिणामस्वरूप 1780 के दशक तक ऐसा साहित्य काफी मात्रा में छप चुका था जिसमें राजशाही और उसकी नैतिकता की आलोचना की गई थी। कार्टूनों और कैरिकचरों द्वारा यह दर्शाया गया कि जनसाधारण तो भूखा मर रहा है जबकि राजशाही भोगविलास में डूबी है।

2. विपक्ष में तर्क-

1. कुछ विद्वानों का यह भी विचार है कि मुद्रण संस्कृति का फ्रांसीसी क्रांति में योगदान नहीं था। उनके अनुसार लोग हर तरह की सामग्री पढ़ते थे। एक तरफ वे अगर रूसो और वॉल्टेयर को पढ़ रहे थे तो दूसरी ओर चर्च और राज्य का प्रौपगैंडा भी पढ़ रहे थे।
2. लोग हर पढी या देखी वस्तु से तो सीधे प्रभावित नहीं हो सकते थे।
3. लोग कुछ विचारों को स्वीकार करते थे तो कुछ को नकारते भी थे।
4. लोग वस्तुओं व विचारों की अपने ढंग से व्याख्या करते थे।

इस प्रकार मुद्रण ने अलग ढंग से सोचने की संभावनाएँ भी खोली।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

3. मुद्रण ने ज्ञानोदय के चिंतकों के विचारों को लोकप्रिय बनाया स्पष्ट करें।

अथवा

18वीं शताब्दी यूरोप में विज्ञान, तर्क और विवेकवाद के विचार लोकप्रिय साहित्य में किस प्रकार जगह पाने लगे?

उत्तर :

1. सामूहिक रूप में उनका लेखन परंपरा, अंधविश्वास तथा तानाशाही पर विवेचनात्मक टिप्पणियां करता था।
2. विद्वानों तथा चिंतकों ने रीति-रिवाजों की जगह विवेक के शासन पर बल दिया। उन्होंने माँग की कि प्रत्येक बात का निर्णय विवेक के आलोक में होना चाहिए।
3. उन्होंने पवित्र गिरजाघरों के अधिकारियों तथा सरकार की तानाशाही शक्ति पर प्रहार किए और इस प्रकार प्रथाओं पर आधारित सामाजिक व्यवस्था की वैधता पर प्रश्नचिन्ह लगाया।
4. वॉल्टेयर और रूसो जैसे दार्शनिकों की पुस्तकें भारी मात्रा में पढ़ी जाने लगीं। जिन्होंने उनकी पुस्तकें पढ़ी उन्होंने उन्हीं की आँख से देखा और ये आँखें प्रश्नपूर्ण, विवेचनात्मक तथा तर्कपूर्ण थीं।
4. 17वीं और 18वीं शताब्दी में पाठकों की संख्या बढ़ाने के लिए प्रकाशकों ने कौन-कौन से कदम उठाए?

अथवा

यूरोप के प्रकाशकों ने आम लोगों में मुद्रित पुस्तकों के प्रति रुचि पैदा करने के लिए क्या प्रयास किए?

उत्तर :

1. गाँवों, उपनगरों और नगरों में अपने कर्मचारियों को भेजा जो पंचांग, कलेंडर तथा डायरियाँ निःशुल्क बाँटने लगे और सस्ती कीमत वाली पुस्तकों को भी लोगों के बीच पढ़कर सुनाने लगे।
2. समूचे देश के कौन-कौन से लेखकों ने ऐतिहासिक और लोक-प्रचलित मान्यताओं, आस्थाओं, घटनाओं और प्रसंगों को एकत्रित किया तथा अपनी पुस्तकों में उनका लोकप्रचलित सरल भाषा में संदर्भ दिया।
3. समाचार-पत्र और पत्रिकाओं के संवाददाता, पर्यवेक्षक और रिपोर्टर गाँव से लेकर शहरों तथा विभिन्न देशों (यूरोप के) का भ्रमण करके नई घटनाओं को एकत्रित करने लगे। लेखकों ने शृंखलाबद्ध शैली में उन घटनाओं को पुस्तकों की विषय-वस्तु बनाया।
4. रोमांचक साहित्य या प्रेम और रोमांस वाली कथाओं एवं प्रेम प्रसंगों ने पुस्तकों में स्थान पाया।
5. चैप बुक्स, पेनी बुक्स और बिलोथेक्यू ब्लेयूई जैसी कम पृष्ठ वाली मनोरंजन और उत्तेजना से भरपूर पुस्तकों को सार्वजनिक स्थानों में घूम-घूम कर बेचने की व्यवस्था की गई। ये बहुत ही सस्ती थीं अतः इन्हें समाज के सभी लोग खरीदने लगे।
5. मुद्रण ने समुदाय के बीच केवल मत-मतांतर नहीं पैदा किए, बल्कि इसने समुदायों को अंदर से और विभिन्न भागों को पूरे

भारत से जोड़ने का काम भी किया। इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

1. **धार्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक मुद्दों पर बहस-** 19वीं सदी के प्रारंभ से ही धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक मुद्दों को लेकर गंभीर वाद-विवाद चलता रहा था। अलग-अलग समूह औपनिवेशिक समाज में हो रहे परिवर्तनों से जूझते हुए, धर्म की अपनी-अपनी व्याख्या कर रहे थे। कुछ तो वर्तमान रीति-रिवाजों की आलोचना करते हुए उनमें सुधार चाहते थे जबकि अन्य समाज सुधारकों के तर्कों के विरुद्ध थे।
2. **वाद-विवाद पर प्रभाव-** ऐसे वाद-विवाद प्रायः सार्वजनिक बहस व मुद्रण में चलते रहते थे। छपी पुस्तिकाएँ व अखबार न केवल नए विचारों का प्रचार-प्रसार करते बल्कि बहस को एक आकार भी दे देते थे।
3. **नए विचार तथा बहस-** इन बहसों में व्यापक जन-समुदाय भी भाग ले सकता था और अपने विचार रख सकता था। विभिन्न मत-मतांतरों से नए विचार सामने आने लगे।
4. **भारतीय पहचान-** अखबार समाचारों को एक से दूसरे स्थानों तक पहुँचाते थे जिससे अखिल भारतीय पहचान उभरती थी। समाचार-पत्र औपनिवेशिक कुशासन पर रिपोर्ट करते थे तथा राष्ट्रवादी गतिविधियों को बढ़ावा देते थे।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

6. विभिन्न समुदायों ने अपने धार्मिक संदेशों को पहुँचाने के लिए मुद्रण का किस प्रकार उपयोग किया? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

1. मुद्रण और मुस्लिम-

- i. **उलेमा तथा प्रिंट-** उत्तर भारत में उलेमा मुस्लिम राजवंशों के पतन को लेकर चिंतित थे। उन्हें डर था कि कहीं औपनिवेशिक शासक धर्मांतरण को बढ़ावा न दें या मुस्लिम कानून न बदल डालें। इससे निपटने के लिए उन्होंने सस्ते लिथोग्राफी प्रेस का प्रयोग करते हुए धर्मग्रंथों के फारसी या उर्दू अनुवाद छापे व धार्मिक अखबार और गुटके निकाले।
- ii. **देवबंद स्कूल-** सन् 1867 में स्थापित देवबंद सेमिनरी ने मुस्लिम पाठकों को दैनिक जीवन जीने का सलीका और इस्लामी सिद्धान्तों के अर्थ समझाते हुए हजारों फतवे जारी किए।
- iii. **कई इस्लामी समुदाय-** पूरी 19वीं सदी के दौरान कई इस्लामी संप्रदाय और सेमिनरी पैदा हुए जिन्होंने धर्म को लेकर अपनी-अपनी व्याख्याएँ दीं। हर कोई अपना संप्रदाय बढ़ाना चाहता था और दूसरे के प्रभाव

को काटना चाहता था। उर्दू मुद्रण ने इस वैचारिक लड़ाई में सहायता की।

2. **मुद्रण तथा हिन्दू-** हिन्दुओं में भी छपाई से खासतौर पर स्थानीय भाषाओं में धार्मिक पढ़ाई को पर्याप्त बल मिला।
 - i. तुलसीदास की 16वीं सदी की पुस्तक **रामचरितमानस** का प्रथम मुद्रित संस्करण 1810 में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।
 - ii. 19वीं सदी के मध्य तक सस्ते लिथोग्राफी संस्करणों से उत्तर भारत का बाजार भर गया।
 - iii. 1880 के दशक से लखनऊ की नवलकिशोर प्रेस और बंबई की श्री वेंकटेश्वर प्रेस में अनेक भारतीय भाषाओं में धार्मिक पुस्तकें छपीं।
 - iv. छपी पुस्तकें सस्ती तथा लाने ले-जाने में सुगम थीं। इन्हें किसी भी स्थान पर किसी भी समय ले जा सकते थे। इन्हें पढ़कर निरक्षर विशाल नर-नारी समुदाय को सुनाया जा सकता था।
 - v. धार्मिक पुस्तकें बड़ी संख्या में व्यापक जन-समुदाय तक पहुँच रही थीं, जिनसे विभिन्न धर्मों के बीच और उनके अन्दर वाद-विवाद और तर्क-वितर्क की नई स्थिति पैदा हो गई।
7. मुद्रण संस्कृति ने किस प्रकार भारत में राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने में योगदान दिया?

उत्तर :

1. **राष्ट्रवाद-** यह एक राजनीतिक विचारधारा या वाद है। इस विचार से एक विशिष्ट भौगोलिक भू-भाग यथा- भारत का उप-महाद्वीप, जिसकी जलवायु, ऋतु परिवर्तन क्रम, दिक्मान, तापमान, जलमंडल, वनस्पति आच्छादन आदि की उपलब्धता उसको अन्य भू-भागों से स्वतः ही अलग दर्शाती है-एक राष्ट्र के नागरिकों का स्वयंभू रंगमंच (राज्य) है। हालाँकि स्व-हित साधनों और मानव वासनाओं की आँधी ने इन्हें कृत्रिम विभाजन कराकर नौ देशों में बाँट दिया है। राजनैतिक दृष्टि से भारत एक राष्ट्र है जिसकी अन्योक्ति भारत-माता के रूप में सुप्रतिष्ठित और मान्य है। इसकी प्रतिष्ठा को व्यष्टि, समुदाय, संघ, धर्म आदि-आदि से असंख्य गुणा अधिक मानने का भाव एवं अनुभाव और इसके समस्त प्राणी थलचर, नभचर जलचर, स्वेदज, अंडज, डिम्बज तथा इनको सततजीवी बनाए रखने वाला पर्यावरण, पारिस्थितिक तंत्र तथा मंडल (स्थल, जल, वायु, जीव, क्षोभ, शून्य) के सहजीवन और संपोषण सहित जीवित रहने का भाव रखना ही प्रत्येक व्यष्टि का राष्ट्रवाद है।
2. **19वीं शताब्दी और भारत में प्रेस का विकास-**
 1. 16वीं शताब्दी का तुलसीकृत **रामचरितमानस** 1810 में कलकत्ता की प्रेस में मुद्रित हुआ।

2. 1880 के दशक से आगे बंबई की श्री वेंकटेश्वर प्रेस और लखनऊ की नवलकिशोर प्रेस ने क्षेत्रीय भाषा में बहुत से धर्मग्रंथों को छापना शुरू किया।
3. **बांबे टेलीग्राफ एण्ड कोरियर** (6 जनवरी, 1849) में उल्लेख है कि कृष्णाजी त्रिम्बक रानाडे ने मराठी भाषा में एक समाचार-पत्र प्रकाशित करने का निश्चय किया। इसमें आग्रह किया गया है कि ज्ञान के प्रसार और जन-कल्याण के लिए ऐसे समाचार-पत्र को प्रकाशित करने की आवश्यकता है जो पुरालेखों, सांख्यिकी तथा देश के इतिहास और भूगोल के प्रति जिज्ञासा से जुड़े सत्यान्वेषण और आगम या अनुमान पद्धति में निपुण लोगों के वार्तालाप, संवाद, परिचर्चा आदि को प्रमुख स्थान दे।

नेटिव ओपीनियन का 3 अप्रैल 1870 का अंक कहता है कि भारत के समाचार-पत्र और राजनैतिक संगठनों/दलों की भूमिका इंग्लैंड की संसद में बैठे विपक्षियों जैसी है। सरकारी नीतियों के इन हिस्सों की कतर-ब्याँत करने में सक्षम ऐसे समाचार ही अस्तित्व में रहेंगे जो जन-हितैषी या जनकल्याणकारी नीतियों को ही लागू होने देंगे।

4. 1870 के दशक में व्यंग चित्र और रेखाचित्र/जीवनवृत्त भी अस्तित्व में आए। राजा रवि वर्मा ने पुराणों के आख्यान अनुसार घटनाओं के दृश्यचित्र बनाने शुरू कर दिए थे (राजा ऋतुध्वज द्वारा मदालसा को राक्षसों से छुड़ाए जाने जैसे चित्र)।
5. परिवार का दबाव रहने पर भी लुक-छिप कर पढ़ने वाली रशसुन्दरी देवी (नव-विवाहिता) ने **आमार जीवन** शीर्षक से अपनी आत्मकथा 1876 में लिखी। कैलाशबासिनी जैसी महिलाओं ने दयनीय और शोषित अवस्था का चित्रण अपनी पुस्तकों में किया। खालसा ट्रैक्ट सोसाइटी ने **स्त्री धर्म विचार** छपा। ज्योतिबा फूले ने **गुलामगिरी** लिखी तथा कानपुर के काशीबाबा (मिल-मालिक) ने 1938 में **छोटे और बड़े का सवाल** नामक पुस्तक लिखी। इस तरह मुद्रण-संस्कृति ने 20वीं शताब्दी में चरम उत्कर्ष को प्राप्त किया।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सप ग्रुप में ऐड करें।

8. यूरोप में मुद्रणकला का संक्षिप्त इतिहास लिखिए।

अथवा

यूरोप में मुद्रण संस्कृति का विकास किस प्रकार हुआ?

अथवा

गुटेनबर्ग के बाद प्रिंटिंग प्रेस के विकास का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

मुद्रण मशीनों का आविष्कार-

1. मुद्रण यंत्र-तंत्रों के आविष्कार से पुस्तकें लिखने को पढ़ने को प्रोत्साहन मिला। 1448 के इस आविष्कार का श्रेय गुटेनबर्ग और कैस्टर को दिया जाता है। छपाई के कारण पुस्तकों का क्रमशः प्रसार बढ़ना स्वाभाविक ही था।
2. 15वीं सदी के अंतिम दौर तक यूरोप में कुल उपलब्ध पुस्तकें काफी कम थीं। पहली मुद्रित पुस्तक **गुटेनबर्ग की बाइबल** थी जो 1456 ई में प्रकाशित हुई थी।
3. मुद्रण के आविष्कार के पहले पुस्तकें हस्तलिपियों के रूप में होती थीं। लिपिक इनकी प्रतिलिपियाँ तैयार करते थे। ये हस्तलिपियाँ अधिकतर ईसाई मठों के पुस्तकालयों में ही मिलती थीं। पढ़ सकने वाले लोग भी इन हस्तलिपियों को बड़ी कठिनाई से ही प्राप्त कर सकते थे। मगर अधिकांश लोग पढ़ना-लिखना नहीं जानते थे। अनुमान लगाया गया है कि 15वीं सदी के पूर्वार्द्ध में यूरोप में करीब 1,00,000 हस्तलिपियाँ उपलब्ध थीं।
4. मुद्रण के आविष्कार के बाद, पचास साल की अवधि में ही, पुस्तकों की संख्या 90 लाख पर पहुँच गई। यह एक महत्वपूर्ण परिवर्तन था, पर इसका प्रभाव लक्षित होने में लंबा समय लगा। मुद्रित पुस्तकें महँगी होती थीं। इसलिए केवल धनी लोग ही इन्हें खरीदने में समर्थ थे। अधिकांश लोग तो अनपढ़ ही थे। पढ़े-लिखे लोग अधिकतर मध्य वर्ग के थे। इनकी संख्या बढ़ती गई और नए साहित्य का नए दृष्टिकोण के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

9. मौखिक संस्कृति मुद्रित संस्कृति में किस प्रकार दाखिल हुई तथा छपी सामग्री मौखिक अंदाज में किस तरह प्रभावित हुई? उदाहरण देकर वर्णन करें।

उत्तर :

मौखिक संस्कृति मुद्रण में निम्नलिखित तरीकों से दाखिल हुई-

1. मुद्रकों ने लोकप्रिय गाथा, गीतों तथा लोक-कथाओं का प्रकाशन आरम्भ किया।
 2. किताबें आमतौर पर तस्वीरों से खूब सजीधजी होती थीं।
- छपी सामग्री को मौखिक रूप में निम्नलिखित तरीकों से प्रसारित किया-**
1. इन्हें गाँवों, शराबखानों तथा शहरों में गाया-सुनाया जाता था।
 2. इन्हें सार्वजनिक सभाओं में सुनाया जाता था। उदाहरण के लिए भारतीय उपन्यासकार बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय अपने उपन्यासों को सभाओं में पढ़ कर सुनाया करते थे।

10. आधुनिक भारत की पाँच भाषाओं (तीन उत्तर भारत से और दो दक्षिण भारत से) के साहित्य की प्रगति का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

1. उत्तर भारत की भाषाएँ-

- i. **मराठी-** 1918 में मराठी साहित्य ने उपन्यास और व्याकरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया। कालांतर में इस भाषा में **केसरी, संदेश और काल** जैसी पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होने लगीं। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का मराठी भाषा में रचित **गीता रहस्य** एक पठनीय और अनुकरणीय ग्रंथ है। हरभान आपटे और एन.सी.फड़के जैसे साहित्यकारों का भी मराठी भाषा में उल्लेखनीय योगदान रहा।
- ii. **गुजराती-** दलपत राय और नर्मदा शंकर तथा बेहरामजी गुजराती साहित्य के सृजक साहित्यकार माने जा सकते हैं। नंद शंकर, तुलाशंकर और के.एम. मुंशी तीनों ने गुजराती भाषा और साहित्य की उन्नति के लिए बहुत ज्यादा प्रशंसनीय प्रयास किए।
- iii. **हिन्दी-** प्रश्न में पूछी गई अवधि में दयानन्द सरस्वती का **सत्यार्थ प्रकाश** शुद्ध हिन्दी भाषा के प्रयोग का जीवंत ग्रंथ है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य का जनक माना जाता है। राजा लक्ष्मण सिंह ने कालिदास के **मेघदूत** और **शकुंतला** का हिन्दी भाषा में अनुवाद किया। लाला श्रीनिवास दास, प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट और बद्री नारायण चौधरी तथा महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने पत्रकारिता के क्षेत्र को प्रशस्त किया और समकालिक सामाजिक दशा और उस काल में आम-लोगों के मानसिक और भावात्मक विकारों का उनकी गुलामी की दशा के समरूप होने का दर्शन कराया। पंडित माधो प्रसाद मिश्रा, गोपाल राम गहमारी, गोविन्द नारायण मिश्र, चन्द्रधर शर्मा **गुलेरी**, पूरण सिंह आदि द्विवेदी युग के प्रमुख साहित्यकार रहे। जयशंकर प्रसाद, रामचन्द्र शुक्ल, रामधारी सिंह **दिनकर**, बाबू सुन्दर दास, अयोध्यासिंह उपाध्याय **हरिऔध**, मैथिलीशरण गुप्त, प्रेमचन्द, सुमित्रानन्द पंत, महादेवी वर्मा, डॉ. हरिवंश राय बच्चन तथा अन्य कई कवि तथा लेखक द्विवेदी युग के परिवर्ती काल के हैं।

2. दक्षिण भारत की भाषाएँ-

- i. **मलयालम-** मलयालम साहित्य को अपना पुनर्जीवन त्रावणकोर शासकों मार्तंड वर्मा और राम वर्मा के संरक्षण में मिला। केरल का एक महान कवि कुंचन नंबियार का भी विशेष योगदान रहा। अठारहवीं सदी के केरल में कथकली साहित्य, नाटक और नृत्य का भी पूर्ण विकास हुआ। मंत्रमुग्ध कर देने वाली वास्तुकला और भित्ति चित्रों से सज्जित पद्मनाथन राजप्रसाद अठारहवीं शताब्दी में बनाया गया था।
- ii. **तमिल-** तमिल में सित्तर काव्य प्रस्फुटित हुआ सित्तर को इस भाषा का प्रवर्तक माना जाता है। तमिल भाषा के आधुनिक साहित्यकारों में सुब्रह्मण्यम

भारती ने अपनी कविताओं में राष्ट्रभक्ति, वीरता और बलिदान का हृदयस्पर्शी वर्णन किया है। कविमणि देसिका विनयागम पिल्लई एक उच्च श्रेणी के कवि हैं। श्री नामकल और रामअलिंगड पिल्ले ने गाँधीवादी विचारधारा को तमिल साहित्य के माध्यम से तमिलनाडु में लोकप्रिय बनाया। गोपाल कृष्ण भारती, श्री सुधानन्द भारती, एम.पी. पेरियार-स्वामी और थूरन तथा कंबा दासन इस भाषा के प्रमुख संगीतज्ञ हैं।

11. 1952 ई. के मुद्रण आयोग के प्रमुख उद्देश्यों एवं सुझावों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

प्रेस आयोग, 1952 ई. के मुख्य उद्देश्य तथा सुझाव- स्वतंत्रता के उपरांत सन् 1952 में सरकार ने एक प्रेस आयोग की स्थापना की थी। इस आयोग में कुल 11 सदस्य थे। इस आयोग के चेयरमैन (अध्यक्ष) न्यायमूर्ति जी.एस.राजाध्याय थे। इसका कार्यकाल दो वर्ष रहा। इसने 1954 ई. में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की थी। इसके निम्नलिखित उद्देश्य थे-

1. भारत में विचारों की अभिव्यक्ति नामक मौलिक अधिकारों की रक्षा करते हुए प्रेस की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अनिवार्य सुझाव देना।
2. पत्रकारों के आपत्तिजनक व्यवहार पर प्रतिबंध संबंधी सुझाव देना।
3. पत्रकारों एवं संपादकों में उत्तरदायित्व एवं जनता की सेवा की भावना को प्रोत्साहित करना।
4. जन कल्याण एवं जनता की भलाई एवं जानकारी के लिए आवश्यक सूचनाओं को छापने के लिए प्रेस को जिम्मेदार बनाना।

सुझाव- 1954 में प्रेस आयोग ने निम्नलिखित सुझाव दिए-

1. इस आयोग ने ऑल इंडिया प्रेस काउंसिल की स्थापना की सिफारिश की। इसके सुझावनुसार इस परिषद में 25 सदस्य होते थे जिसमें कम-से-कम 13 पत्रकार वर्तमान अच्छे (मान्यताप्राप्त) समाचार-पत्रों में कार्य कर रहे हों। इस परिषद का चेयरमैन (अध्यक्ष) कम-से-कम उच्च न्यायालय का कोई सेवानिवृत्त या कार्यशील हो तथा उसकी नियुक्ति के लिए भारत के मुख्य न्यायाधीश उसे नामजद करें।
2. इस आयोग ने सुझाव दिया कि पत्रकारिता व्यवसाय में पत्रकारों की चयन विधि में सुधार लाया जाए।
3. प्रेस के कुछ ही हाथों में केन्द्रीयकरण की प्रवृत्ति को रोका जाये तथा पत्रकारों एवं संपादकों को अच्छा, प्रगतिशील, निष्पक्ष, कर्तव्यनिष्ठा वाला प्रशिक्षण भी दिया जाये।
4. इसने सुझाव दिया कि अखबारों में क्रॉस-वर्ड पजल की प्रतियोगिता के छपने पर पाबंदी लगनी चाहिए। किसी भी अखबार में 40 प्रतिशत भाग से ज्यादा विज्ञापन नहीं

छपना चाहिए।

आयोग के उपर्युक्त अधिकांश सुझावों को सरकार द्वारा मान लिया गया तथा इन्हें कानून में स्थान दे दिया गया।

कृपया सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए 8905629969 को अपनी कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड करें।

NCERT पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न

1. निम्नलिखित के कारण दें-

1. वुडब्लॉक प्रिंट या तख्ती की छपाई यूरोप में 1295 ई. के बाद आई।
2. मार्टिन लूथर मुद्रण के पक्ष में था और उसने इसकी खुलेआम प्रशंसा की।
3. रोमन कैथोलिक चर्च ने सोलहवीं सदी के मध्य से प्रतिबंधित किताबों की सूची रखनी शुरू कर दी।
4. महात्मा गाँधी ने कहा कि स्वराज की लड़ाई दरअसल अभिव्यक्ति, प्रेस और सामूहिकता के लिए लड़ाई है।

उत्तर :

1. वुडब्लॉक या काठ की तख्ती की छपाई वाली तकनीक चीन में विकसित हुई थी। जब 1295 ई. में मार्को पोलो नाम का महान खोजी यात्री चीन में काफी साल तक खोज करने के बाद अपने देश इटली लौटा तो वह वुडब्लॉक की छपाई का ज्ञान अपने साथ लेकर लौटा। अतः इतावली भी वुडब्लॉक की छपाई का प्रयोग करके किताबें छापने लग गए और जल्द ही यह तकनीक बाकी यूरोप में भी फैल गई।
2. मार्टिन लूथर जर्मनी का एक प्रसिद्ध धर्म सुधारक था। वह मुद्रण कला का बहुत बड़ा समर्थक था। वह चाहता था कि वह अपने संदेश को छापकर अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचा सके ताकि लोग रोमन कैथोलिक चर्च की कुरीतियों को जान सकें। उसने रोमन कैथोलिक चर्च की कुरीतियों की आलोचना करते हुए अपनी पिच्चानवें स्थापनाएँ लिखीं। इसकी एक छपी प्रति विटेनबर्ग के गिरजाघर के दरवाजे पर टाँगी गई। इसमें लूथर ने चर्च को शास्त्रार्थ के लिए चुनौती दी थी। जल्दी ही लूथर के लेख बड़ी गिनती में छापे और पढ़े जाने लगे। इसके परिणामस्वरूप चर्च में विभाजन हो गया और प्रोटेस्टेंट धर्म सुधार की शुरुआत हुई। कुछ ही सप्ताह में न्यू टेस्टामेंट के लूथर के तर्जुमे या अनुवाद की 5000 प्रतियाँ बिक गईं और तीन महीने के भीतर ही दूसरा संस्करण निकालना पड़ा। प्रिंट के प्रति तहेदिल से कृतज्ञ लूथर ने कहा, **मुद्रण ईश्वर की दी हुई महानतम देन है, सबसे बड़ा तोहफा है।**
3. छपे हुए लोकप्रिय साहित्य के बल पर कम पढ़े-लिखे लोग धर्म की अलग-अलग व्याख्याओं से परिचित हुए। सोलहवीं शताब्दी में इटली के एक किसान मेनोकियो ने अपने क्षेत्र में उपलब्ध पुस्तकों को पढ़ना आरंभ कर दिया था। उन पुस्तकों के आधार पर उसने बाइबिल के नए अर्थ लगाने आरंभ कर दिए और उसने ईश्वर और सृष्टि

के बारे में ऐसे विचार बनाए कि रोमन कैथोलिक चर्च उससे क्रुद्ध हो गया। ऐसे धर्म-विरोधी विचारों को दबाने के लिए रोमन कैथोलिक चर्च ने प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं पर कई तरह की पाबंदियाँ लगाई और 1558 ई. से प्रतिबंधित पुस्तकों की सूची रखने लगे।

4. गाँधी जी ने 1922 में असहयोग आंदोलन के माध्यम से देश की आजादी की लड़ाई लड़ते हुए ये शब्द कहे थे। उनका मानना था कि विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, प्रेस की आजादी और सामूहिकता की आजादी ही वे माध्यम हैं जिनके रास्ते पर चलकर देश की आजादी के सपने को हासिल किया जा सकता है। उनका मानना था कि औपनिवेशिक भारत सरकार इन तीन ताकतवर औजारों को दबाने का प्रयत्न कर रही है। अतः स्वराज की लड़ाई, सबसे पहले तो इन संकटग्रस्त आजादियों की लड़ाई है।

आप अपनी कक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार की अध्ययन सामग्री हमारी वेबसाइट www.rava.org.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

2. छोटी टिप्पणी में इनके बारे में बताएँ-

1. गुटेनबर्ग प्रेस
2. छपी किताब को लेकर इरैस्मस के विचार
3. वर्नाक्यूलर या देशी प्रेस एक्ट

उत्तर :

1. **गुटेनबर्ग प्रेस**- गुटेनबर्ग ने 1448 ई. में एक प्रिंटिंग प्रेस मॉडल बनाया। इस प्रेस में स्क्रू से लगा एक हैंडल होता था। हैंडल की सहायता से स्क्रू घुमाकर प्लेटेन को गीले कागज पर दबा दिया जाता था। गुटेनबर्ग एक व्यापारी का बेटा था जो एक बड़ी रियासत में पला-बढ़ा। उसने बचपन से ही तेल और जैतून पेरने की मशीनें देखी थीं और बड़ा होने पर पत्थर की पॉलिश करने की कला, सोने और शीशे को इच्छित आकृतियाँ गढ़ने में निपुणता प्राप्त की। गुटेनबर्ग ने रोमन वर्णमाला के तमाम 26 अक्षरों के लिए टाइप बनाए और जुगत लगाई कि इन्हें **इधर-उधर** मूव कराकर या घुमाकर शब्द बनाए जा सकें। अतः इसे **मूवेबल टाइप प्रिंटिंग मशीन** के नाम से जाना गया। इस मशीन की सहायता से जो पहली किताब छपी, वह बाइबिल थी, जिसकी 180 प्रतियाँ बनाने में तीन वर्ष लगे थे। यह उस समय की सबसे तेज छपी किताब थी। इस तरह से गुटेनबर्ग प्रेस मुद्रण और छपाई के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन का प्रतीक था। यही अगले 300 सालों तक छपाई की बुनियादी तकनीक रही। हर छपाई के लिए तख्ती पर खास आकार उगाने की पुरानी तकनीक की तुलना में अब किताबों का इस तरह छापना निहायत तेज हो गया। इसके परिणामस्वरूप गुटेनबर्ग प्रेस एक घंटे में 250 पन्ने (एक साइड) छाप सकता था।

2. छपी किताब को लेकर इरैस्मस के विचार-

- i. लैटिन भाषा का विद्वान और कैथोलिक धर्म सुधारक इरैस्मस ने कैथोलिक धर्म के ज्यादातियों की आलोचना की। लेकिन उसने लूथर से एक दूरी बनाकर रखी। प्रिंट को लेकर वह बहुत आशंकित था।
- ii. 1508 ई. में उसने **ऐडेजेज** में लिखा कि किताबें भिनभिनाती मक्खियों की तरह हैं। दुनिया का कौन-सा कोना है, जहाँ ये नहीं पहुँच जातीं? लेकिन इनका ज्यादा हिस्सा तो विद्वता के लिए हानिकारक ही है।
- iii. किताबें बेकार ढेर हैं क्योंकि अच्छी चीजों की अति भी हानिकारक ही है, इनसे बचना चाहिए।
- iv. मुद्रक दुनिया को सिर्फ तुच्छ किताबों से ही नहीं पाट रहे बल्कि बकवास, बेवकूफ, सनसनीखेज, धर्मविरोधी, अज्ञानी और षड्यंत्रकारी किताबें छापते हैं और उनकी तादाद ऐसी है कि मूल्यवान साहित्य का मूल्य ही नहीं रह जाता। इरैस्मस की छपी किताबों पर इस तरह के विचारों से प्रतीत होता है कि वह छपाई की बढ़ती तेजी और पुस्तकों के प्रसार से आशंकित था, उसे डर था कि इसके बुरे प्रभाव हो सकते हैं तथा लोग अच्छे साहित्य के बजाय व्यर्थ व फिजूल की किताबों से भ्रमित होंगे।

3. **वर्नाक्यूलर या देशी प्रेस एक्ट**- अंग्रेजों ने भारत की किसी भी भाषा को राष्ट्रीय भाषा नहीं माना था क्योंकि संसार भर के देशों में उनके उपनिवेश होने के कारण उन्होंने अंग्रेजी को ही अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बना दिया था। उनके लिए भारत की सभी भाषाएँ क्षेत्रीय थीं। वर्नाक्यूलर या देशी प्रेस एक्ट 1878 ई. में लागू किया गया। 1875 ई. के विद्रोह के बाद ज्यों-ज्यों भाषाई समाचार-पत्र राष्ट्रवाद के समर्थन में मुखर होते गए, त्यों-त्यों औपनिवेशिक सरकार में कड़े-नियंत्रण के प्रस्ताव पर बहस तेज होने लगी और इसी का परिणाम था 1878 ई. का वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट। इससे सरकार को भाषाई प्रेस में छपी रपट और संपादकीय को सेंसर करने का व्यापक हक मिल गया। अगर किसी रपट को बागी करार दिया जाता था तो अखबार को पहले चेतावनी दी जाती थी और अगर चेतावनी की अनसुनी की जाती थी तो अखबार को जब्त किया जा सकता था और छपाई की मशीनें छीन ली जा सकती थीं। इस तरह यह एक्ट देशी प्रेस का मुँह बंद करने के लिए लाया गया था।

3. उन्नीसवीं सदी में भारत में मुद्रण-संस्कृति के प्रसार का इनके लिए क्या मतलब था?

1. महिलाएँ
2. गरीब जनता
3. सुधारक

उत्तर :

1. **महिलाएँ**– उन्नीसवीं सदी में भारत में मुद्रण संस्कृति के प्रसार के कारण महिलाओं की जिंदगी और उनकी भावनाएँ बड़ी साफगोई और गहनता से लिखी जाने लगीं। इसलिए मध्यवर्गीय घरों में महिलाओं का पढ़ना भी पहले से बहुत अधिक हो गया। उदारवादी पिता और पति अपने यहाँ औरतों को घर पर पढ़ाने लगे और उन्नीसवीं सदी के मध्य में जब बड़े-छोटे शहरों में स्कूल बने तो उन्हें स्कूल भेजने लगे। कई पत्रिकाओं ने लेखिकाओं को जगह दी और उन्होंने नारी-शिक्षा की आवश्यकता को बार-बार रेखांकित किया। उनमें पाठ्यक्रम भी छपता था और आवश्यकतानुसार पाठ्य-सामग्री भी, जिसका प्रयोग घर बैठे स्कूली शिक्षा के लिए किया जा सकता था।
2. **गरीब जनता**– उन्नीसवीं सदी के मद्रास के कस्बों व शहरों में पुस्तकें चौक-चौराहों पर बेची जा रही थीं, जिसके चलते गरीब लोग भी बाजार से उन्हें खरीदने की स्थिति में आ गए थे। सार्वजनिक पुस्तकालयों के खुलने के कारण गरीब जनता की पुस्तकों तक पहुँच आसान हो गई। अमीर लोग शहरों, कस्बों या संपन्न गाँवों में पुस्तकालय खोलने में अपनी शान समझते थे।
3. **सुधारक**– उन्नीसवीं सदी के आखिर से जाति-भेद के बारे में तरह-तरह की पुस्तिकाओं और निबंधों में लिखा जाने लगा था। **निम्न-जातीय** आंदोलनों के मराठी प्रणेता ज्योतिबा फुले ने अपने पुस्तक **गुलामगिरी** (1871) में जाति-प्रथा के अत्याचारों के बारे में लिखा। बीसवीं सदी के महाराष्ट्र में भीमराव अंबेडकर और मद्रास में ई. वी. रामास्वामी नायकर ने जो पेरियार के नाम से बेहतर जाने जाते हैं, जाति पर जोरदार कलम चलाई और उनके लेखन पूरे भारत में पढ़े गए। स्थानीय विरोध आंदोलनों और संप्रदायों ने भी प्राचीन धर्मग्रंथों की आलोचना करते हुए, नए और न्यायपूर्ण समाज का सपना बुनने के संघर्ष में लोकप्रिय पत्र-पत्रिकाएँ और गुटके छापे।

कानपुर के मिल-मजदूर काशीबाबा ने सन् 1938 में छोटे और बड़े सवाल लिख और छापकर जातीय तथा वर्गीय शोषण के मध्य का रिश्ता समझाने का प्रयत्न किया। सन् 1935 से सन् 1955 के बीच सुदर्शन चक्र के नाम से लिखने वाले एक और मिल-मजदूर का लेखन **सच्ची कविताएँ** नामक एक संग्रह में छपा गया।

WWW.CBSE.ONLINE